

क्रिश्र त्योय लिट स्मर्क्ता सुर प्यर्थे । अशा दिया वर्षे देव दीव स्मर्थ स्मर्था स्मर स्मर्थे ।

वियः यद्या या यह स्मृत्यः यञ्चरः वीसः यासुरसा

गाव सुदु की देवाका द्ये सुव ।वर ।

হ্যান্তর্বার্থ ক্রিন্ম ক্রিন্ত্রার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্ত্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্ত্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্তর্বার্থ ক্রিন্ত্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বার্থ ক্রিন্ত্বার্ব ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্বার্ব ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্য ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন্ত্বর্বার্থ ক্রিন

गाव सुदुः से देवा या द्यो सुव (वटा)

*5गा*म:क्र्या

त्रीरःग्रेषा	3
क्रेब रूप र र्धे दे च ने क्रेब र बिया में र्श्लेब र बिया होता	7
য়ৢয়৽ঀয়ৼ৾ৼয়য়৽য়৾য়৽য়য়৾য়য়ৢয়৽য়	. 7
क्रु-५८-में हे द विदायस्य पी ५ त्य हो ५ त्या	47
র্ষবা'য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৢয়ড়ৢয়য়য়য়য়ৢঀয়য়য়ৣয়ৢঀৼৢঀয়য়য়য়ৣৢঀৼয়য়য়য়ৢৢ	ोदःश्चरःच
প্রমন্ত্রিথ র্প্র্ন।	47
र्र में श्रुवाका वक्षेत्र हिर्पय रहत श्रीका न्या वहत सर्हर मा	47
१ वर्षे ५ : ५ ५ म १ औ ५ म् में दि : वक्ष ५ मुंदि ।	48
२ हो महामा महित्य के दिश्य कर्ति ।	50
द्यर्देन्याकृषाः मुन्द्रम्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाया	52
वाद्रेश्यः वर्ष्ट्विरः वाद्यः वर्षः श्रीश्रार्द्धवाशः श्रीदः सुदः वर्षः श्रीदः सुदः वर्षः श्रीदः वर्षः वर्षः व	53
क्रेब-५८-सॅर-हिअ-ध-र्स-र्स-र्स-र्स-राम्य-१ क्रिय-क्रिय	56
क्रेब माक्रेश पति च ने क्रेब लिय मी र्श्केब खिना	64
श्चित्रशादर्जेदिः र्ब्र्सायाम्बदःच।	64
शुनकातर्जेदीनक्षुनानुः नृगुःनक्षृत्य।	67
सर्क्रममः क्रिंदाबाया या दुसमा	68

५गार:कवा

चर्रियां सर्ह्याया सर्वा स्थान विष्या विषय
70
१८ में निर्ने न उत्र मुं के निर्मे कु क्षुन पर सुषान।
चनेचाउदाक्चीः विदायान् न्यतः ध्वदार्थेदाच्छूदाया
वनेवारुदाकुन्द्वार्थावसूदाया 79
বণ্ণত্ব স্ত্ৰী মৈন্ম স্থ্ৰিণ্ন শ্বৰ্ণ
वरेच उद क्षे वदुर क्षे व्यव हुद क्षे व्यव हु
क्रुं महेश्य र केंग्य न सम्बन्धित क्रिंद न मृत्य ।
५८.स्.क्ष्यं व्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच
ধ্বনা.বস্থ্য.বস্থ্য.বস্থ্য.বস্থ্য ব্যা
क्रैब महिकापर हिकापर देशों इसकार यहिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका हिन्दा क्रिका हिन्दा विद्या विद्य
वेद न्या शुक्ष प्रते प्रदे केद विद यो श्चेद विद । 113
মর্ক্রমমার্ক্র্র্র্র্র্রেশ্বাব্রমার্কা
सुब् सुम्र कें न्या प्राप्त के न्या विश्व का विष
র্দ্ধীন শ্রুন শ্রু
सर्केन् प्रते प्यत् प्यन् प्रमृत्या

*5्रगा*र:कवा

বন্বার্থরার্জন্মান্ত্র্বর্বনের্থরার্ক্রন্থা	122
वन्वार्धेशःर्षेत्रशःशुःश्रःवञ्चरःवतेःश्रर्केन्द्राःदी	127
धीर्ग्चीशः श्रुवा चति अर्केर् या	132
बूँब.जब.कूँचय.मु.जपूर्य.	134
वर्क्षेत्र्यःनुबुद्द्यःग्रीःअर्केत्र्या	135
ট্র'ব্রবা'দ্ভ'মমন্ত্রী'মর্ক্রি'ম'ব্যপ্রদ্বা	136
यू नः अर्केन् 'युत्थ'न्न नर्केन्द्वअश'ग्री'न्वें अ'य'नक्षृद्या	137
বশম:শ্ব্রীম: ব্যাক্তিয়: বর্ম বর্ম বা	139
বৰ্ষাশ্ৰমন্ত্ৰ-প্ৰধান্তৰ বিশ্ব	141
५८ में ब्रीव पते ५ वे न	141
यावेद र्चे क्ष्रिंचरा चलि	143
र् १८:र्रे:हेब:की:क्रेंचर्यःकी	143
मृ माद्रेयायास्त्रम् त्वीत्रायते क्षेत्रयाते ।	144
र्थं नाश्चारा र्शेर कुन् पते हेंन्य है।	146
र् नले.त.चाडेब.त्	147
ब्रेंटरहेर् नर्झे अप्य हो ज्ञान हु न ब्रुव या	150
यनेब पत्रे प्रस्थे र्रें अपहें र्प	152

५गार:कवा

भू नाशुक्षायो भेषानाडिना नी रेर्नि रायो दुषानादुषा हुँय।	153
মধুনা মঘর বিশে না ব্যক্ষা	155
क्रेब् नाशुक्षायम् द्विकायार्थे के इक्षणायार्श्वेषास्त्रुमार्द्ध्यार्श्वेषाद्वेषार्श्वेषाद्वेषास्त्रीयार्श्वेषा	157
कुँब मले मत्रे मने केब लेम मी क्रिक खिना	165
মর্কমমার্শ্বীমান্ত্রমার্শা	65
हेश सु थे रद वी था द या व	170
र्केशःग्रीःवर्वेरःवे नर्भेरःचरःभ्रुवःचवे	171
शुःदबः त्यस्य से तद्वः चरः वार्से त्यः चः तद्वे चर्त्यः यदः त्यवः त्यवः	173
বর্ষ্ট্ বনী অধ্	174
য়ৢৢ৽য়য়ৢয়৽য়৽য়ৢ৾য়য়৽য়য়য়৽য়য়ৢঢ়৽য়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়	175
बेबब नक्षेत्र द्र सुनय र्बेब सुर नक्ष्य पा	175
वेना के द : बुद कें र मी : श्रुप्त श : तर्से दे : विर : पर : पति : पर : पति : विर : पति : विर : पति : विर : पति : विर :	179
र्बें ब. प्रह्म मी से सम प्रमें देश का प्रमें व. के सम प्रमा के सम प्रमा के प्रम के प्रमा के प्रम	181
चिर-क्रुच-हु-बोस्पर-चक्क्केट्र-धर्व-धर्यद-चक्क्षद-ध	186
শ্বর্ম শ্রম্ম শ্রম্ম শ্রম শ্রম শ্রম শ্রম শ্	187
ব্রী:ব্রনা র্ক্কুর ঝিমঝা শ্রী:বর্মুব ব্রাঞূ:বঙ্গুর শা	189

*5गा*म:क्र्या

বহুনা শংশ্বর্ম শংশু শুন শুন শুন শুন শুন শুন শুন শুন শুন শ
क्रुं नवि न मुेव र्र्स्रेव प्यम नवा प्यम सर्वम स्थान क्रियम स्थान वि व
श्चिरवनोग्रायाद्वरवरक्षर्भार्यसङ्क्षित्रया
मुनि क्रिन स्थापन न स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्य
क्रम् अ ले द त्य है 'त ने विश्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स
बिरानेराङ्ग्रीकामाध्याप्रतिःसुरार्हेग्यापास्त्रस्य।
মহ্বা'মরব'লেম'বাব্মশা
क्रेब नले न र हिमारा में में इससाय क्रेंस कुना ईया क्रेब हो न नवर न
মহ্বা মেপ্রবি বর্ষ্ট শ্রুরা

चुःतः तत्वायः वीतः विष्यायः भ्रीताः विष्यायः भ्रीतः चुनः विष्यायः भ्रीतः विष्यायः भ्रीतः विष्यायः भ्रीतः विष्यायः भ्रीतः विषयायः भ्रीतः विषयः भ्रीतः भ्रीतः विषयः भ्रीतः भ्रीतः विषयः भ्रीतः भ्रीतः विषयः भ्रीतः विषयः भ्रीतः विषयः भ्रीतः विषयः भ्रीतः विषयः

म्रेट याली

यर्शेन् त्रम्यान्यया श्रीया मुस्तायते हायाया। यारःशक्यं चायायायाययः याद्याः सुरः तया ग्रारः।। न्यम् यदे स्याध्यस स्वाकु ख्रेवाया ने सा श्लेयायदे तद्वा सूर्वा तुमायदे सूर्या वाव वा ।। यःक्यायःयङ्गःन्यरःदेवःत्रेतःत्वःय।। शे हें ना नासुर नी नासर न देना से र दिख्या। क्रेव न्या स्ट नुद्र रेगा या व्या क्रेका क्री र्याग्रीसुन्।वस्यायायाः सून्।यदेःह्ना। यायायार्थेन सूर्यायारायायायायारायारी अहेरि।। ल.चेयार्ट्र.हेय.कैयोया.ग्रीया.घट.यप्राचरता। अर्वा अविवास हेवा विदः ह्रेट तुर विवा श्रीय विदेशा न्ययाश्ची रे या पतुवाया ने पन्या वी अवीत्।। শ্রীদ্র মের মের বে প্রদ্র ক্র ক্র ক্র ক্র আমা স্ক্র দ্রিম। बैनिवे स्टावर्ने न प्येन मुज्जिन मुज्यमा। र्देव ये द श्वायते द्या यी श्वे र्यो यस्यया। उट: येट् विषयायः व विषयायः दे यद्याः वी स्वर्वेदि।। यायम् न्राप्तम् न्यात्रः में लेगायम् मायविषा

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्कः श्रेयःय वरः यक्त्याः वीः लयः गर्युरः।

म्र्रियः प्रति स्वायः विष्यः व्ययः व्ययः व्यव्हा वर् अह्यान्त्रे न केत् येवा श्रुवी रागुत्। श्चीत वित्र केंग्र र तदी त्राय सें त्यत्र प्रसूयया। न्न रवरावकुर्यंतरे रेट या या वेंद्रा लेट ॥ भ्री रवर्ष वर्ष यदि तुष सु स स्री स स्री <u> ५५:केथ. शुःष्ट्रे, कु. स्वा. यीया।</u> न्धुन् तहें वा श्वेया यदि हैन तहें व तने व श्वेया। यद्राच्या श्री यदेव हे ग्रायाय सकेय विदा। ययद्र भेर्व संस्था श्रीत या साह्य ह्या ग्राह्म इयान्यायने केवालेटानु क्रीटेयायदी। श्चेन विन केंबा की नगत स्वेन तने न तकी न। ये जी दिवया ग्रीया वर्षे रावती से रावाया या सिवा योडेकायते श्रेवा वीकायम् वा हे त्वर्देवा माण्या। र्ने व स्व अंत्र प्रते ह्या दव मिल्य प्रते के या। यरे केत्र विर विर केत्र केत्र केत्र भुर वुर दिवा। देवर है अप देवर वे क्या की क्षेत्र या प्रयासक्रम स्रोत स्त्रा यदे प्रयास स्त्री यादःद्याःवर्ड्यःख्र्यःवद्यःदेःचत्वेयःयानेवायःयःद्याःवर्ड्यःयःयदयः ग्रेष्यया क्क्यायवीं वे चे वे प्राप्त वा यो प्राप्त के के विष्य पर देश के के प्राप्त के वा प्राप्त वा वा वा वा वा वा वा व ह्नेन्यया देखा वेषान्या येयया उत्तान्तिया वीया या साम्या विवासीया या साम्या विवासीया या साम्या विवासीया विवासीय

र्थेव मृत प्रसूत परि केंबा की इस ज्ञारका राष्ट्री राष्ट्री प्राप्ती प्रमुत परि ने प्राप्ती हैं। <u> २ अत्र पत्र व्यक्ष व्यक्ष</u> वर्दे वा में मान के मान म्रोग्रायायायाः स्ट्रेन्यते त्रद्वानेया न्याने स्ट्रेन्य स्ट्रीया न्याने स्ट्रेन्य म्याने स्ट्रेन्य वहिवाहेबःक्वीविस्रसासे प्रीपित्वसासेब से विवास स्वाप्त विवास स्वाप्त विवास स्वाप्त विवास स्वाप्त विवास स्वाप्त यर्येत्र.सेयं.श्रर.तूर्य.क्ष्य.क्री.र्यंत्राचेर्या.पट्टी.ज.धेय.यंत्राचेर्याच्यु.क्षी.श्रक्ट्यंत्र्य. यम्याबिराश्चीन्यते श्चान्त्र वस्याया उत्तर्वाया है। रताया वदाया है या देवा या व मः अनः ह्र्यायात्राद्यात्रात्रह्यात्रहेयात्रक्ष्यात्रयाद्यीत्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र स्रोत्रायते तहेवा हेव क्षित्रस्याय क्षेत्रा व्याप्त्या स्याप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स स्राध्यायाने स्रोत् भी तहेवा हेव । वस्या सम्राध्या स्राध्या स्राध्य स्राध्या स्राध्या स्राध्य स् नगर हे है के सन्दर्भ या वाद सु देवा वीय सदय हु या देन द्वा सेन ही: यक्ष्यः दरः यदे । यः उत्रः श्चीः लेटः यीः प्रेतः हत् । श्चितः दुः तथयायायः इत्रयः विषाद्रयः देशः द्रायः दिः । चैदःद्रवादःवदेःवयः संग्वतः वादेवाःदेदेः द्विवासः सुः च्वेदः द्वातसंदः दससः केदे । । विसः ५८। देनविष्या स्ट्रिंब द्यो स्ट्रिंब र को स्ट्रिंब र की स्ट्रिंड का की स्ट्रिंब स्ट्रिंब स्ट्रिंब र की स्ट्रिंब र चरुतःचर्नुदःर्सुवःदेष्टिःस्नुदःद्व। ययःद्वःश्चीयःवर्क्वदःचदेःयोयस्यःस्वःधीवःष्यदःर्क्वयः बिट देर ह्ये वर विवा डेवा ह्ये अला सम्मान ह्ये वर्ष की वर्ष हिन हिन ने ख़ुदे क्रेंब

त्रभाभाज्ञीयः मित्रप्राचर्याः तर्ष्यः भ्राक्षितः भ्रत्याः भ्रत्याः भ्रत्याः भ्रत्याः भ्रत्याः भ्रत्याः भ्रत्या भूरःग्राटः सर्देत् :यदः ग्रिकाः इः तर्यः ईस्यः यः ५८ । सेस्यः श्रीयः ५५ :यः श्रीयः य। यम्पर्याययात्रीं सुरावार्ड्या श्चीयता प्रतिप्यापरावस्त्रा वर्द्देन व्यस्तर स्ति हे स्सर्वर अन् चुन मी केंब्र कुंब्र वर्न है। व्यव्य यन्य सुः अन्तर में के यन वर्चुन में अदे ल्वा श्चित्। व्यरः येदः श्चृत्वाः यदेः श्चेत्रः केत्। यदः व्युदः हेत्वायः यः स्त्रीदः हेत्या यदः योशर होयो सुदुः अहूरे वहूरे। वयो शरे योशर यो रेयर हीयो योध योशे अपूर्या गदि नक्रुन दिहेत। देश दें त नसूत पदि क्रिंत से। दग देग क्रु नदि नद पें सियां. शुर्रं संप्रुं स्पर्यः मिया देवः मिश्चे स्वर्गः स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स श्रीयायबर देव में के अर्क्या मी लिया सृत्व राजादव राजादि अधिया है मिया के व पार्टी बर खुर हें बाबा यहूते दवात र्क्या द्वा वेंद्र स्वाबुद वर्षु वर्षु स्वते से ह्वेया वेंदि ब्रैंब दुबारा ब्रेंद ख़्व दुर्बेच ब्रेंद ख़्व ख़्वा ख़्वा वा चगाव अदे क्रुंबे अवव गर्य या शुं अ न्यरः वयः र्नेत्रः श्वेषायः विनः न्यरुयः यः स्ट्रियः स्यायः यद्याः स्वायः स्वायः स्वायः यसे या केत्र र्ये व्यार्थ व्यार्थ व्यार्थ हो त्यार्थ हो त्यार्थ वित्य स्मूयव्या वित्य हो केत्र नु:बु:चदे:बानुव्य:बु:बु:अ:द:बानुव्य:यदे:न्बो:चक्केद:वें:ब्रें:बार्डे:बुव्य:न्न:खूद:अट:र्टेंबाव्य: यान्युत्यानते केंग्राञ्जायात्री नने केंत्र लिट मी ब्रुना मकेंद्र केंत्र में प्राचित्र श्चेत्र विदः वयः व्यव्यक्ति श्चेत्रः देवा । व्यव्याः विदः देवः विद्यव्याया विद्याः विदः वेदः वेदः वेदा व्येत स्वत्या क्षेत्र स्वत्य स्वतंत्र स्वतंत्य स्वतंत्र स श्चित्राग्राम् । व्रि.पर्वीयोत्राम्बीम् याग्रीः योव्याप्त प्रमृत्यः व्रीतः व्रीयोत्रा याद्धम् क्रूया । विद्यामः है निवित पति हमारायेत नियम विन श्री वान्यया वर्ष श्री विन्ता सूरया शेशशःक्षीः प्रविषाः व्यवा प्रतिषाशःक्षीः कुंद्वा अर्क्षः प्रविष्या श्राम्या

यर्क् यो १ की कि प्राप्त के प्राप्त के अपने के मीर्यामर्शेयाचायनेवर्यास्त्रीय। धीन् श्रीर्यान्न न्यानीन स्वर्धेया मार्थेयाया श्चित्रवार्शे.वर्ग्ने.क्या श्रममाञ्चरका श्रीदाई.वर्श्वेमान्यूद्रवा शर्देरावाराया यर पर्या यर् र हिते शुं कर पर्रे र सुं र प्रक्षिश यद रहें य दे पर् सुं हो। येर यो य यार्याचेत्र'याः भूः तुतिः पञ्चेत्रां योद्याः योद्याः योद्याः याद्याः याद्याः याद्याः याद्याः याद्याः याद्याः य इंश.ब्र्य.श्ची.शपु.कें.शें.२.केंट.चपु.ब्र्जा.ब्रीश.बच्च.श्रेट.क्र्य.क्ची.व्रि.ज.चीश.क्षेच्च.जथ. योश्रास्य हेरा विषय अधिय विषय स्वित स्व नर्गेन् डेटा नर्रे केव लया शे न् श्रीयादि विस्वयादि सामित सन्त्रा सुटा सियां मूर्यः तर्ह्येषुः पर्ययः सियोमाना प्राप्तः वियः पर्वे गीयः ह्ये प्राप्तः स्थाना यकेंग'नञ्जेन। ने'वयान्वरयाञ्चेनयाञ्चे'में याजी श्चे'श्चे'यार नावयार्या श्चेयायात्व। विषायार्ड्या क्षेत्रान्तरायो न्युष्यायायात्र्युवाणि विष्ययायायात्रात्रात्रायायायात्रा न्याचेरावहेन्यते वासुरावी र्येयासे दे। वास्यान्या स्नुस्यते स्वाप्त स्वाप्या सन् र्ज्ञवाची र्श्चेष् प्राप्ते अरदा लेटा र्ज्जिया अर्थे प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्येष्ट प्राप्ते अर्येष्ट प्राप्ते अर्थेष्ट प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्येष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्येष प्राप्ते अर्येष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर्थेष प्राप्ते अर प्राप्ते अर्येष प्राप्ते अर्येष प्राप বর্বান্তবা'বা্ঝার্ম্রবি'ঊর্বম'শ্রীঝ'বর্ন'ঝ্নার্ন্র্রিম'র্মা।

हैव-५८-धेंदि-मने केव-बैट-मी-श्लेव-बिना

मुन-द्रवर ह्र्याय केत यदि सुमा श्रेया तर यदि यकेंद्र यहेंद्र

र्याम्युयायरयाः क्रियाययययः उद्ग्यीः देनि देनियाद्यायः विद्राक्षाय्यायः विद्राक्षायः विद्राक्षायः विद्राक्षायः

वियायन्त्र यगायान्त्रेनासर्हेन्याञ्चासासर्ह्यायान्त्रेनास्त्रेनास्त्रासा देव चे केदे लवरा क्षेत्र या दे या यो दाया या या वे विषा दवा हु वहुद दे गुरा परा या युवा तक्याब्रिटाश्चीयमास्यामकेव्। विद्यानाब्रमास्यमास्य सम्मास्य स्थान क्रीयानम्पर्यात्रात्राच्या यादाची लयान चरान स्वाप्त्रात्राच्या स्वाप्त्राच्या स्य सर्दराच्याः बेटा । सर्क्रन्द्रयेदेः मृत्रेदेः चेतुः तत्तुः मृत्रयः नराः तर्मेः गृतः सेवाः मै यर् ५ के राष्ट्रिया । श्रुवाका हे तद्या सागा तु वका दुष्ट्रका के ता सुका की । विरुषा विषय प्रदेश । विषय प्रवास प्रमुष्ट प्रवास प्रदेश विषय प्रवास के विषय के सर्वेरःश्चेर्या । पर्ने पञ्च व रेर्न न्यम सेन ने रे में मिल यर श्चे व रया याच्चियाया । तर्द्यान्तिः क्रीर-नुःयज्ञः क्रुवाः येः तर्वोः वाः वान्न-सूर-क्रुरः ग्रुरः ग्रुरः ग्रुरः । । अ বাধ্যমামর্হ্র মের ই বি বাইবা নমুষ ন্মাম্য প্রবাধ্য মহমা ক্রুষা মার্ক্র স্থ্রীয়া বিদ্যা र्ज्यूटकात्व्यूर्याः स्वेयाः त्रमः त्रम् त्रद्धायायम् द्वार्यः वृत्तः व्यव्यायः व्यव्यायः विद्यायः यहूरातपुःक्रियःर्येवाःयकूर्याःयक्षित्रःरतः। विध्यवाःइःजीरःकूर्यात्रःश्रधःतादःयविः यदयः यदः विवायः विद्रायः स्थ्यः पदिः वहुवायः उता विविदः वद्यः क्रॅबर्सूर हें वाबायते सेंट केंद्र या । इ.सेट व्हर इ.संचाबाया वार्स्याया वर्नवया वियानुःगुत्रायन्त्रितःवर्चे वः इयान्त्रेतः वित्रेतः । इ.सेर्वरं नेरायरः यो । तह्यायायो मुद्दारायदे ल्वययायायायियायायदेवया । विकुद्रायायुर्याचीया व्यान्वित्यायते स्वाकेत हेवाया । सूरावित्यवर ध्वेत केवा सुति क्वा स्वीत यहेला । यार्नेन् स्वते सर्वोद संस्था सुर लुवाकाया । यहेवाका सेन स्वेद एवं प्र यम्य त्रात्राचा । त्र्रीत्याच मुत्रीत्याच मुत्रीयाच मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मुत्रीय मु

मूचमा ।द्वैः द्वाःभ्रयःक्र्यःग्रीःनदीरमःग्रीःस्चरःय। ।र्याःगयंभायरमः कुषागुव क्षेटे रे रे हेरा । रूट बोयब के बाज़ूर यहें व ख्या हें व यह रूपा । इर वदः त्रः या अर्केषाः या गर्वेषः वा विद्याः वा विद्याः वा विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्या श्चरा । गारः लेगा गारोरः स्राकेंगा स्टानलेन से स्वाधा गान्या मान्या सङ्घारा प्रकार गुर्वेर हुन्दर। । मार्नेरया गुर्वेर तुरे देर ग्रीय सुद या येया सहर या देवा मादया यदेः त्युः इस्रयः वादः धेवः दृदः। वाद्यः उवः देरः वे द्वयः क्रीयः देवः विदः स्वः हुः न्वातः चतिः रेवाः यः तद्देवः यः वारः धोवः य। । ने : न्वाः वस्रस्यः उत् : वरः चः न्रस्यः देवे रः शूर द्युत पते वार्युट १५व द्येर व १२ र वार्व वार्या वीवा वार र वा र्युवाय पत्रुत सेंहर मी'यहेमा'हेब'वा । यदे'मिलेमार्था होंच'स्र स्मुर्यामार सु'दम । देर'यदेर'दस यदे केंब्रा क्री कर दिवेचका क्रीका विषय स्पर्य देने साम्यक्ष कर दिने रामिका व निया । त्रमामायदे सम्माया तृया सार्वे वा होता मेत्र मामाया विष्या वा विष्या वा विष्या वा विष्या वा विष्या वा व इ.ब.क्र.य.लुर्या विज्ञान्येय.शुष्या.क्र.स्ट.क्र्र्ये.व्रह्मे.श्रूय्याया व्रि.वर्सेज.लुर.क्र्य. म्रामा स्थान स बिया विष्य व या प्रवत् चित्र या । या ने या वेया या या सुद सूव या नु न से विष्य ही । ञ्चा । पन्ना नीय श्रेव श्रेय श्रेय दिन स्वर्थ । । याद विवा या हव श्रे श्री प्राप्त । याद विवा या हव श्रेय श्री यात्रयात्रार्केनाः शुर्राया । द्रोनि सर्केना यात्रुयाः शुः भेति प्रतास्त्रयाः स्री हिया । दे यः देरः नेषः इत्रः श्चेवः परः देः चलेवः हे। । वश्चयः चः श्चेः चः विषाः वर्षः व पटा । निर्मित् सर्केना सर्कत विराध । विराध सर्वे विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध सर्वे विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध सर्वे विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध सर्वे विराध सर्वे विराध सर्वे विराध । विराध सर्वे विराध सर् रेत केत सूर्वे म्यादरा । वन से कुथान ते मात तदी गुराय से केता । व्याधी अन्दर्भः प्रतः वर्षे वः श्चे वः अन्। । श्वायः प्रयः नवः प्रतः श्वेः श्वे स्वयः । २८। विद्यायात्रीयाद्यीस्त्रीस्रास्ययाद्यास्या विश्वयात्रम् स्त्रीत्राद्यीया यर:बुर्च । प्राष्ट्रभन्नः श्रुर्देर:यदे:बिरायान्यना देवर:मा स्वा:प्रेर:श्रुर:वा:मा स्वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:श्रुर:वा:प्रेर:वा: मतः र्क्ष्यातर्देन देव महेर उद्यो वेर या देवे के या र्क्षण या स्तानिक स्तानिक स्तानिक स्तानिक स्तानिक स्तानिक स मक्रमान्यम् मन्दर्भे स्थान्य स यदियाः या निष्ठाः स्था के सार्चे सार्चे सार्चे सार्च सार्चे सार्च सार्चे सार्च सार्चे सार्च सार्चे सार्च सार्चे सार्च सार्चे सार व्यित्रम् केष्वः विद्विद् केष्वः व्यविद्वाम् यदः मस्ययः विद्या दे द्वान् देवदे केषः यरे केंत्र बिर विर यथर। । देवर बिर सकेंत्र दर गर्डेंग बिर सूय दर गर्डेंश बिर वित्तर्र म्यूया की देव सूनया मुख्या हु कर न बिया होत् की प्येत् व वदी द्या प्यया भ्री द्विया भेरि। देव ग्राम्स पर्से माना पर्मे के प्राप्त के माने प्राप्त के यद्देवित्। यद्धेन्विद्विन्धेन्श्चेन्ययन्नेनुयक्षेत्रयास्कृ न्वें यासूयासूर हो हान न्दरल्या च्राह्म सहिवास्या महिवास्या महिवास्य महिवास त्वातः रेषः षाञ्चवाः रेटः वीः यस्यायायायाः तहेसायर। यात्रवाः से तिर्देसायाः तहत्य। श्चैतः नगर में सेन् त्याय सुर त्र का र्येट या वा ने देना र्येट से सिन् में ते ने सेन

गल्द त्दी क्षु गहेश यद क्षे क्लें पदे पा शेस्र य त्दी द क्रु ते के गड़िया देश रुआयानसुर्मुदे में रेपेन नर्गेषा मुषामर्वित सुषासूर भेषायर म्रायास्त्र सूर चिष्याःक्षाः वार्षाः वार्षः वार्षः वार्षाः वार्षाः वार्षः वारः वार्षः वार्षः वा <u> लुवानु तर्वो नुषाक्री ह वे वी वाषा वासुसावा सृत्ये व षावा स्त्री वा केवा विदाय र रे वे बा</u> र्बेर्-कें-ध्री-मत्रे-वें-क्रुम-नवर-व-रे-व-१व-१व-१वेर-वेर-१ रे-वे-सून-नवर-नवर-यःविषाःभिवः प्रथमः स्वाप्तवः भरःभिनः श्रीनः स्वा त्यादः रेषः तिनः स्वाप्तः स्वापः स्वापः स्वापः स्वापः स्वापः त्युवायालेया: यहेन् सेन्। देव : यह सु सूर साधिव : यह सू सूर हें सूर हे सालेवा सुन यर होत्या भ्रेष्ट्रिय्य भी स्वाप्त विष्ट्रिय स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत वादावार्वेष्वयासेन्। विष्यास्यायार्वसास्त्रीयासेन्। यस्स्रीवसूत्राने। दार्केशास्यः धुँवारायायराययरायविराचिरान्यरायायाः हैन् विराधया सुःयानवो प्रतिप्रवेशः यानेत्र स्वाया यसूत्र तिहेत् श्रीस्रोय केत्र के प्याया यान्य यान्य प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प ८४.जम्बाद्यस्य प्रत्याचम्रम् सावायम् मृत्यम् मृत्यम् स्राप्यम् स्राप्यम्यम् स्राप्यम् स्राप्यम् स्राप्यम् स्राप्यम् स्राप्यम् स्राप्यम्य म्बर्गाम्यर सेन्यर बेंग् ११०४ १९०४ न्य बेंग् १०८ १०८ सेन्यर सेन्यर सेन्यर प्र ৾য়য়৽ঀ৾৽ঀ৽য়ৢ৾৾ঽ৽য়ৼ৻য়৽য়ৼ^{৽৻৻য়}ড়ৼৼ৻ৼড়ড়ৼ৸ড়য়৽য়ৼয়৽য়য়৽য়য়৽ঢ়৽ঢ়ড়য়৽ঢ়৽ঢ়ড়ড়৽ वरत्रभूरदेश। दे:देरद्रकेश्वर्भवर्भेक्ष्यप्ता वायानेःसद्धेवःवीःवार्शेवः महिषाग्री सर्वस्थाय में द्वाराणीय द्वारा ने नुषा के लिया ग्रान में स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स प्रमान्त्री महित्यानेषात्। द्राधी द्राद्राद्रा द्रावनतः भी प्रनतः स्थानितः स्थानितः स्थानितः स्थानितः स्थानितः वकै'च'न'त्रु'सनुब'वा वेंब्र बतर ने र वार्ने र वो ब हो न पति न पति वा वो न र वि र विवायक्रेयाव न वार्च न क्रिं सूर वी साम केर या भी वा ने वया महत्र्या वार्या यान्वीं वान्ति स्वाप्ति वान्ति क्वें चरेते क्वें बूद दरा तरी चरे खें अर क्वें दाये वाह्य चरेते तर्व या विवाय बुवा याध्येत्र हो । यद्या क्रुया पर्डे या पृत्र वद्या ग्रीया क्रेया ग्रीपा हेया ग्रीया विकास मार्थिया गर्यस्यायान्त्र। भ्रुयानुःग्र्याय्युयान्चीःययान्चीःत्रेयायायान्त्रायान्त्रान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्र नमून विरा अर्देन अर्दे अर्वे प्रेश के त्या अर्थे न स्था अर्थे का स्था अर विर्यः प्रते सूर्या प्रस्था या वा प्रते प्रस्था स्था । देवर से स्था स्था । न्वीं यार्ने वान्याञ्चानयान्दरायद्यम् व्यानी याने या वाद्येया वे या या वाद्याया वाद् ने गहिषा विवास ते व्यक्ष वसूत्र सर्वे । निते स्त्री स्त्री स्त्री स्त्रुत से स्त्री के स्राप्ते स्त्रुवा सान्द बिर्तायर बिर श्रुवा वर्केनायाय वर्ते स्वयं ये किंदि केंया स्नाया वित्त बिना प्येत यर वयसाया वै वें र त्युव भीव। वें कुर त्यें र च र ख़ तहें व य ग्रायर र से ग्राय वि व युःशेवकुवायवेश्येवाकुरः वेद्या देवरः श्चेरः श्चेते कुर्वेरः वयवायावया वर्षः वर्षे श्चितः श्चितः प्रसः तर्दे दः श्चेत्। त्रेवः श्चादः त्यायः श्चित्रः श्चीयः त्यायायायायाये त्याये द्यायाः व्याया विषाः सेन्द्रात्यन् पर्देन् विद्रायाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स्वापाः स सूना भ्रुवा अभ्यतः भ्रुवा की त्यसंगा रदः अर्वी रदः वीस वर्ष्ट्री र वा से सावित द्वाः त्रमुद्राच। वाल्वन क्रीमाचसूमान क्रीन्यायमाण्या वाल्वन क्रीमाचसूमाच्या प्राप्त हो। र्श्वेन व्ययास्य वन्या श्वेर वने श्वेन नरें या वे वन स्रोस्य श्वेन वया हेन नर्शेय श्वे नेरायाह्नेन्त्र। ध्वेत्रकुर्वेरायेन्याङ्केन्ययायने क्किन्यस्य स्वयायायने कि त्युरः व्यव्यायो १ वरः वीः यदेः श्चीतः होतः वय्यादेः वे द्रायायो केवायायायायाय

थॅर्नःयः यः भेर दें। । नेयः दःदः उषाः षीः स्नानयः देवः नवरः चुदेः स्नेरः येदि। अर्केन्द्र-तिरःश्च्रिनःत्र-तिरःविनःवास्याः अष्ठसःनुःवर्देशःयः विवाःधिवः चेरःनुसा वर्तः मार्युत्रा श्रीः वित्रः यम् स्वीः मारा। से से देशे महिन् में के लेखा है के से मिर्ट में मिर्ट में मिर्ट में इस्रायान्द्राचेन् त्यसाची कावसावकन् नविस्ताने। ने मस्स्राची देशे वृतायने चःक्रतः ब्री:बिटः विस्रसः सूचा चस्रयः चा प्रतः त्रसः सेटः चरे स्त्रीतः व्यट्सः स्त्रीतः स्त्रसः स्त्रसः ৾ౙ৾ঀ৶৽৸ঽ৽ঀ৾ঀৠড়ৣঀ৽৸ৼড়৾ঀ৽ঀ৾ৼ৽<u>ৠ</u>ৢঢ়ৢ৾ঀ৽ড়৾ঀ৽৸৽য়য়৻৶৽৸ৼ৻ড়ৢঀ৽৾য়ঀ৽ড়ৼ৽৻ঽড় यर्दुरयाधेदायावादालेवा इयायादी। यर्केदायाददा। श्रुवायाददा। वकन विन धोन की विन ध्या है। बिन स्यर्केन ख्री सार्वे स्थित हुं स्था हुं स्थित हुं स्थित हुं स्थित हुं स्थित हुं स्था हु स्था हुं स सर्केर्-यःस्थान्यः नर्यात्रक्षेत्रम्य स्थान्त्रक्षेत्रम्य स्वितः स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान नश्चेत्रभ्रेत्रभ्रात्रभ्रात्महेषाः श्चेत्रभ्रात्यभ्रात्महेषाः हेत्रभ्रेत्रभ्रम्भ्रम्भ्रम्भ्रम्भ्रम्भ्रम्भ याहेशस्त्रम्यश्वादेवाः हुः हेवाश्वाय्य सहोत् स्यान्ता वितः वितः ग्रीशः हेवाश्वावहेशः वितः यर इव <u>क्</u>रिया शासी विषय हो स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्य स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत वह्रमः हे वि र्रा वे माने माने स्थाने स् मुद्री । तर्दरम्यर मुद्रिन्य ध्येष लेखा लेट सिन् केषाय षातु या यदे या उत्र ही: यम्प्रम्भव व्यानि स्त्रा वित्र स्त्रा स् म्रोध्यास्त्री श्रीस्यान्यत्रीत्वरात्रीय वर्षात्राच्यान्यत्री बेषाचर्हेन् ग्रामात्वायाचाने र्डमाभी के चित्राचनम् रहुया येन् सेन्। सुनेवाषा यदे र्दुव्यः विवा सेन्। नेवरः न्येरः व विरायरः व वित्रः चरायः सेवा सेनः याः वसा वर्षे वित्रः मारः च क्ष्यं बदर। विरम्भद्र ब्रियामा ने सर्वोत्राया भी क्षेत्र माने माने प्रविद्यामा क्षेत्र प्रविद्यामा क्षेत्र प्र स्र र धु स्रू र त्वतर लेग चु र त्वा रे लेग स्रु र च त्या र वे प्यू य छी प्यू य वे र वि र वयमाञ्चीतर्मात्वा क्ष्रीर-रेषामाळर्पायं प्रमान्ने स्थानामा <u>२८.ज.रूटमाम्मेयाम्,यात्र्यं प्रभावत् वर्षायत् वर्षायत् वर्षायः भूतः त्र्यात्वयः तत्रः द्वीतः वर्षाय्वयाः वर्ष</u> बूर्वकारे: न्दः तस्रन् याश्चेन् अन्। देव् ग्राटः विनः करः भ्रीः तर्वो चः नवा रे विवान् स्थायः यः भेः नृषायः नृष्ठः । विदेशः धेरः त्यायः । विदेशः धेरः त्यायः । विदेशः धेरः तुः च ङ्या योषा लिट विद् प्रमुद् प्रतट खेट प्रति त्यापाया मुष्य विद् प्रति हम्रा रहेम स्रेन प्रा प्रमु देशक्षक्षक्षात्रेन्यते स्वाति । स्वाति गठेगाया में से सामाहर वा सुर्या सुष्ठी महिका की सामा विकेश के सामा की की के राया रहा। दे'चलैक'ञ्चक'चर्डक'च्चेद'यर'यद'क्द'यकाञ्चक'यदे'द्वा'व्याक्षक्रक'क्वाकेका गादिः न्भेग्रयास्यायाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः निष्याः वर्षाः वर्यः वर्षाः यार्ने व विवादा सुर्वात्वा केंद्र केंद्र खूब लिया द्यों वा है। वा व तु खु क्या यी वा वहिया है व ब्रियायदे वु माल्या देवा श्रुप स्वाप्त द्वार स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स वितः विया सेन् रहें सा श्री सा स्वाप्ता ने सा ता सरा मालता से रित है कि रित से सि गयाके नदी यस गादि ने नस्य स्टार स्वासुस गर्डेट विवासून नवेंसा ने देट र्केश र तदीर पेट देव वे केश बुव दर केश श्रुव यदि के द पेव के केश श्रुव यावि व ने रूट हेन धेव व रूट वेश यदे ग्रन्ग्या म्वि व देवे येश हमा धेन ग्रम् स्व देवा देवा श्चिमार्क्रमाञ्चादायर हो दादावीया देवदा सुमाश्चिमा के स्विमा स्विमा स्विमा स्विमा स्विमा स्विमा स्विमा स्विमा स वयःग्यायः पर्वे वयः स्रिन् १६ ४ ५ ५ वर्षियः विदः। दणः वीयः विः विवास्तरः स्रे स्रिनः स्रिनः स्रिनः स्रिनः स्रि वेयाप्यरावम्यावात्रयावत्र्रात्वह्यायवरार्स्नेतिष्ठिरायार्सेरावरार्नुत्याक्रुतातुष्ठण क्र्याक्र्यायाः क्री म्यूयाः ययाः पतितः दुः द्याः पर्यः प्रतितः द्योत् । विष्ठीः म्यायाः पर्यः स्थायः

यर्चेत्रकार्यकार्त्रपुर्तिकार्याः स्मेर् कः स्मृताः यश्चिताः यत्यत् स्मेर् स्मेर्याः स्मित्राः स्मित्राः सम्भिताः बूदायाञ्चा देवावे तदी श्रीवा त्यान्य प्राचान्य पान्तु दास्ते सर्वत विदेश होता है । न्यरनुः स्नुन्कः त्रदः स्रीतः स्रूप्तेषायायनन्यः प्यीतः स्रोत्। यनन्ययायनन्यों सा केंद्र'य'र्ड्य'दु'्य'वद्र'युर्य'द्रदः'भेद्'ग्री'ये'द्रयो'य'व्यय्यय'ठद्'ग्रीदः'यर'यत्वद्'र्द्ध्रर'ठ्रदः'ग्री' मिष्ठाः श्चानाः सर्वितः समान्तिः वानिहेन निष्यानु स्वानितः समा द्वीके प्यानः श्चीः श्चा नर्रा क्वीं नम्रम्भात्रम् । त्री भारती क्वीं नम्प्रमान्य । त्री भारती क्वीं स्वाप्त । त्री भारती क्वीं स्वाप्त रवा तर्केर श्रेन सेन सुर प्यर इव लेख वना पेन श्री का बेव पर श्री का नरा खूरःषदःवाषदःवःश्चेःध्वेवःयरःर्केन्ःवहेवःद्वेन्ःयवेःवःवेःवःवेवाःर्धेन्यःन्नः वहर्ते । देवदातुः चुष्ठवा वद्देय वदुषा सदा के वेषा वे स्ट्रेव वर्षे का सम्मान स्वापन यवितः भेता है अन्ता क्षेर न्त्र या वित्र वि वया अनुवयाविवादिव केवान्न यापरायाविवया । ययादर हेव सेवया इमार्थेशम्बेरायाणी स्थियायादम्यायद्यायास्थ्रीयायदेश्वेरा स्थिवीयदे केव प्रविर र्ये दे क्विव पु न विषय । । इव प्र प्रेश प्रविव गुव गुव ग्वर प्र विषय । योश्जा विश्वासास्त्रमञ्जीरान्त्रस्थान्य । विश्वासास्त्रमञ्जी विश्वासास्त्रमञ्जी विश्वासास्त्रस्थाः हुःचान्त्रःइस्यायतेःह्याःसुःइतःन्दःवेयायवितःगुतःग्रादःयवेरयासुःवार्येयःयाधेतःया नेतर-इव-५८-वेश-विव-वे-वर-वो-व्येट्श-विद-व्यव-ध्य-प्रश्नेव-व्यव-व्यव-व्यव-देव प्रमायायमा भी प्योप्त मान में केंगा की क्षेत्र केंद्र हैं के त्या प्रमाय माने केंद्र हैं के कि प्रमाय माने केंद्र हैं के प्रमाय माने केंद्र हैं के कि प्रमाय माने कि दे'क्षेत्र'द'र्वेर'तु'तु'ठवा'वीत्रार्केत्र'तकद'य'द्रद'कृत'य'र्डकासाञ्चद'द'दुद'र्ङ्गेत्राक्ववा'

न्वेषा व वेद वया व वुद स्थे स्थेया क्वा न्वेष स्था की सर्वेद स्थेद थ। म्बर्यायर मुः अदिः इया वर्षे राद्यः द्राया वर्षा मुक्ता की मुरादे के विदायी वा स्वीता प्रमुखा ग्रीयायवर् होता देखा हो सुर्वे हें स्वया ग्रीया सुर्वा हेया या वदी। द सूर्व यक्चित्रव्यत्वर्द्द्राक्ची देःवाश्चाश्चीद्वर्ष्ट्यायात्राक्चित्राक्चीत्वर्ष्ट्यायात्रीत्वर् विस्रयात्र स्पेर् यासे मृत्या सेस्रया स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या श्रेःश्चेर्यःश्चेतरः देवेःश्चर्याःश्चाहेर्ययाययादेः दयाःयः विदःयरः दःश्चेर्याः श्चेर्याः स्ट्राः श्चर-द्र-तह्वा-दर्वोत्रा श्चेर-श्चेत्राक्चवा-छेत्राय-५-उट-(ववा-ये-श्चेर-प्यट-श्चेर्य-प्यत्वेवा-युर्यायभिताने। धुरियासुर्द्देन्यास्य स्वास्त्रीयासुन् सुर्पित्याने राया वता वता युषार्थितिने वदार्थेदावराष्या। है स्नूदा वषाद्रात्म केदादरायोक्षेत्राचरायाया व य। ।हिरावहें त्रायुषा ग्रीकु प्रविदेश । विषामासुर सामा सुर वर्षा दिया। व क्रुं य र्क्ट प्रया शुर्या क्रुं क्रुं प्रया य र १ व्यव र वि र व द क्रुं दे र यो प्रया केर केर केर वि र व द र्वार्थात्रात्रात्रात्रात्रम्थात्रात्रेष्वालयात्र्वात्रम् । वर्षात्रात्र्यात्रेषाः वर्षात्रात्रम् । वर्षात्रात् श्चिन्द्री ।दे.चलेव्हेट्टेख्टेव्चित्रक्षेत्रयम्बाख्यम्बुर्यम्बाद्धेद्रन्दे। देवेःह्यु मक्य वे म्यामा म्या हेवा वी तर्से तर् वे हीव त्विवायाया सु त्वे विवायाया है त्वे वे न्वादःस्वाःकवासःस्टःवीः बुवाः दुः स्रोन्यरः स्वुरः वः नेः स्रें स्रोस्रासः त्यः वार्से रेः र्वेनः यः थेव विरा युषायेयया हैयाया हेव दरायहेव यदीयाया ५ उरा के से। न्येरः वा येययः न्यादः न्यः सुः न्योनः या सुवाः पदः न्यः सुः येवाः वयः सक्षीयाववुदावावी हेवाद्यावहेवायतीयावार्येदायस्या । विति श्वीयास्यास्या यदे व त्युकायदे त्या युका क्षेत्रका महिकागा यदे व व द को द त्य द कि द र यदे त्युका क्रैंचर्यास्टरनुवायाग्रीयामुकार्यादा। वाल्यायादायाद्वीस्यायुक्तात्वाद्वीदाव्यास्याय्या ष्ठीः सरः ख्रेते 'स्या ना त्रुना सः ना त्रुना सः से दः क्रीः विस्तर स्त्रीः विदेतः स वरुषान्वो वदे व्यवाशी वर्षेन् वयुषायार्थेवा यान्य भुत्र नु वयुषाया व्यव्याया व्हेंब्रचर्झ्यान्वेंब्रचीं अचित्रचर्झ्यायात्र स्त्रीच्यार सी सुब्रा से विष्या निवान व्हेन सिव्या से विष्या से विषया से विष्या से विष्या से विष्या से विषया से विषया से विषया से विष्या से विषया से विष्या से विषया से विषय वन्यायदेः लैट विस्रयायने या उत् नुः क्षुं यर क्षेत्राक्कृता नर्वो या या क्षेत्रा के विस्तर्य। नेतर मने मास्त्र मुं के माले दे पर में के में के माने मास्त्र में मास्त्र मास्त्र में मास्त्र मास् **चेन्-पुत्य-य-न्ययातुत्र-य-र्वत्र-नु-सः अन्-स्ट्र-प्य-न्ययातुत्र-य-त्वेन-नुन्य।** नःरेकातुःक्वाःकेंकाःविनःवाःबेन्काःविनःवर्केवाकान्वीकाःविनःकेंकाःबुदाःरेःरेवेःसह्वाःष्ठुः भ्रुंबाक्क्यान्वीयायेन। भ्रुंबाक्क्यायराद्गायेदायीयायेदान्याया वक्कवःयर्रोद्यार्वेदःद्वीर्यार्थे। ।देःयःविदःचनदःयःवायःकेःश्रे। यःचनदःवःर्रः वियाः वीं तुरु। वीं या देवरा देव यराया यदि के दारु प्येव से दारा यराया यदि स्त्रा क्षिया दे इ.किय.कु.ईर.चं.८८.५२। ह्या.यमभायक्षित्र.कु.धु.र.त्रु.धु.मूमाक्ष्याकुर्यः श्रीयश्चित्रायात्वीद्योरात्वा वयायर्रेशाने स्वायात्वना वतरादे हिन्या <u>ब</u>्चार्यर क्षेत्र्वेर पुर्वेष्वयाचीर क्षेत्र प्राप्त प्रक्षिता सर्वे र या ध्येत्र । प्रेतर तुः स्वार्केयाः रदे वर में मर से तमाय रे हे हैं वर्ष के से राया विरूप सामी प्रति हैं वर्ष स्नाम वर्देविःर्क्वेष्यायाः वायाः दुः विदास्याः विदास्याः विदास्यायाः विदास्यायाः विदास्यायाः विदास्यायाः विदास्यायाः म्बरमा वक्रीवर्वार्वार्वार्थार्थेवासुरः हेर्ड्र हेराङ्कार्विरः वमावर्षे सुरावीया यदेवर्यात्राम् वर्षाः वर्षाः वर्षेत्रः वरवर्यः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः याः श्री राष्ट्रेव तर्वे दिः केवारे निर्देश स्वित होता स्वारा स्व क्र्याःमः भ्रम्याः बुदः दर्नः गुर्याः माल्यः प्रयाः यः स्टः योग्यः स्टः ग्रीयः विः विः विद्याः ययाः यर शुरु श्री यात्रयात्रर योषा श्रीत सुष्य यात्रीया श्रुद र वित्र । यात्र स्पेट से ति र वरःश्चेरः दर्गेषः व। भेः वेरः धुग्वाषः गशुभः वहिँयः दर्गेष। श्चेः प्रविदेः द्रथयः प्रविः न्र-नर्गेषा कैन्यस्य त्यसन्तर्गेन्त्रीया वित्यस्त्रुन्निन्न्निस्त्रत्ने रमान्यतः क्र्याची त्यमानु (बुवायान्य पर्योत् न्यम्य वर्षावार्म्य वर्षायाः वर्षायः वर्षायः वर्षायः वर्षायाः वर्षायः वर् द्री वर्श्वर्यसम्बद्धाः सद्धः स्रीयान्यस्य स्थान्यस्य । वर्ष्यान्यस्य । प्रथात क्रि. श्री-रक्षिय प्रविद्या प्रविद्या प्रविद्या विद्या प्रविद्या प्रविद्य प्रविद्या प्रवि यर्थातायक्कै.जद्मायोद्भयः यद्भवि.क्षरः द्यापा विषयः लटः क्रु.क्षे.क्षरः तर्रटः क्वान्वीयाने। क्रेंड्राचन्द्रार्यार्ड्यायार्ड्यन्यायार्यन्तुत्रुवार्यारायां वासुना बुट.जीय.चित्रया.चट्र.घट.चु.सैचया.यी.क्र्य.चुच.या.चर्चेच.या स्याता.जीया.याया ह्यरक्त्रधीकें व वके विवेश्यकें सर्वे वर्षे प्राप्ते सर्वे वर्षे वरमे वर्षे वर चेष्य : चेंच्य : चेंच અર્જે ખે 'ત્રેંત્ર' તુવદ' રદ' ર્જે અ ખેંદ્ર' શું અ ' कर ' पश्चद' त्र ' कें अ ओ द ' ले ' चें ' च जा ' श्लें द ' कें ते ' दें त ल.यर्ट. मुंबे. शु.रब्र्ज. ब्रांच देवु. श्चेर. क्र्य. श्चेय. व्या. क्र्र. ता व. केंबा क्षेत्र यदे देव केंबा क्षेत्र होत द्वेंबा होत द्वेंबा होते द्वेंबा संस्था क्षेत्र यदेंबा सम्बन्ध संस्था हो बा श्री: भेट स्रो वादयेय श्री सर्वी वर्ज़िय के स्वर्वी वर्जिय के स्व यर्झेर.क्रेम्। बेरायासूराधेराधेरायरादेवायान् स्वापितः स्वेतायाः स्वापिताः श्रेययःग्रीयःर्केयःश्च्रवःयःर्केद्रःहेर्दे । ।देदेःर्केद्रःह्यंकेःह्यःत्यःद्रयःद्वेणःवर्गेद्रःव।

कुयः वें केतः यें लेवा ५८ व्यव वार्यवा ५व८ से ५ डेवा वीय त्यया गास्त्रुवः यदे त्या व र्श्रेवर्याक्याक्चीवित्तायराज्येत्ते । वितरास्रेयसाक्चिताच्चात्वेत्त्राच्चेर्यात्रात्तेत्र्रेसायसात्त्र्युविष्या र्धे बिया त्याया भी बुर्या हेया व र्थे में मब्बिय तुर्ख्या मीया तक मुन्य स्थित। ५ रेषार्ङ्क्रीयायान्दान्यस्यायदेविदाङ्कृताक्षेत्रावनानत्त्वाचे सीसेदेदात्त्वा मिक्टिन्यदेक्षेत्रा यर्षा र्र्यायस्य देशायर्था यक्षायर्थर्भा यक्षायर्थर्भा स्थान नर्वोका नेकान कॅटा सका द्या पर्व पानिस प्रविका वीका क्षेरिया सुसा केवा दिया दु सहर्ने मुस्रम् स्यान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स श्चित्रयास्या गुरायदेः ग्रम्याद्वे । तर्ने । तर्ने । तर्ने । तर्ने । वर्ने । वर्ने । वर्ने । वर्ने । त्देतिःग्रव्यः श्रृंद्रः श्रीः श्रेःद्रः प्राः श्रृं यायाः ग्रव्यः वयः केदः या ५५:५: प्रेंदः यदेः या वयः য়য়ৢঀ৾য়ৢয়য়৴৴য়ৼড়ৣঀয়৻৴ৼ৻৸ঽয়৻য়৻ড়৾৻৻য়ঽঢ়৻য়৾ঽয়৻ড়য়৻৸৻ मुक्ताः हुः मान्त्र स्यर्थेन्स्यत् स्येन् स्यरः स्यक्त्यः नुः दर्केन् सः सेन् स्या नः नुदः न्योः वनुतः ्रश्चायर वी न्यीय न्युका वार्ड विति तर्वा वावका सुप्तारी निष्ट्रीया सर्हर या है। अर्हेन यह्रेन्त्रे। व्यवःक्षेवःत्रःश्रूपःक्ष्यःलरःग्रुषःत्रयःलपःव्यःयक्षःयक्षःय यहूर्यान्यूरातान्यूर्यारान्यायाः श्रीयाकः सश्चर क्रीःश्रीयद्यात्यूष्ट्रायश्चराचीताः विद्यात्त्र्याः ईशाओन:नु:वान्दःवाखाःभीन:वा[ँ] विनेत्रःनवींश्रायवीःन्वदःवीशःनवोःवनुनःयःत्रदः मीयासुमायानययानवेयाने। वेदयायनेते केन्यन्त्रीयाने मानुत्यानु वे वियान मान्या

चर्या क्षि:क्रें अञ्चालिया विवा विवा प्रवेश सूत्रा परि प्रवेदिया विवि प्राप्त विवा प्रवेश प्रकर त्यों द्राया वर प्राची प्राची वर्ष के लिया सके वा प्राची व विष्या या के या । वयानञ्चनान्यस्यात्रस्यात्रस्यात्रम् न्यते ज्ञास्याः स्यान्यस्य स्यान्यस्य स्यान्यस्य स्यान्यस्य स्यान्यस्य स्य निः सूना प्येत प्यदा स्रोधिका या नेदार मुक्ता को निष्या सुन्य मित्र स्राप्त स्रोधिका यायायायादेव क्रीके वदे अर्के ह्यायाद्या यावन पर क्रव यर वस्ने राया होत लार्चायाच्यी व्राच्छाक्रास्यायम्यायद्याराक्ष्यायोर्पायदे प्रतिस्थित् विष्टा ष्ठीः यः अर्दे वः यः नृदः। यदः रेष्ट्रिया या या विया व वर्षः श्रुवा या कुनः न वर्षः स्वरः हे देः क्वयः श्चित्राद्यत्रास्त्रे। वर्गेत्रायायावर्ष्ठात्रात्र्द्रस्यायायरे। ।गुत्रावसूर्वायायरे। नम् सेन् इस्यायायाचे । विद्यायदे विस्याया सेन् येदि यस या ह्या प्रविदाया प्र ने सीत् सी क्षु में से र्ज राज्या वन सोस्या उत्वास्य उत् दिर प्रते सकेन ग्री तर् लेया यदियात्रात्रादेश्चेत्रात्रेदात्र केंद्रात्रीय स्थाना स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स यासर्देव सुस्राम्मार्था स्वरामार्स्य स्वरामार्स्य स्वरामार्थे स्वरीता । दे नित्वते न दि हिसामार्थे स्वरीते । र्देशः वर्षः चन्द्रन् वर्दः वार्थेवः चेदिः श्रुच्यः वह्वाः लुः या नै चेदिः चर्चे हेवः वहेवाः या कॅं वर्रे द्वे महेषायी रे देवा प्याप्य र्गोव सर्वेन मह्मा की पाया मे। यास्यायाञ्चा तर्त्राक्षित्रे देवे त्रास्य स्वायत्य यास्या प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्र बिट राधिन सेन् प्रमान हिमाया सित्र स्थाया सित्र सेन्य प्रमान सिन्य स्थाया सिन्य सि यदः मुद्दः ययः यः सुर्वेयः यदिवाः वादः वः यदि। देवेः सुर्वेदः विवः वादिवाः यादिवाः

वर्त्रेयः प्रेत्रः प्रमुत्त्रः या अविदः ह्या हे दिरः ह्यूयः ह्यु दरः यावतः र्यः प्रेतः या ने न्दरत्व न्दर्युया श्रेषा ठेवा यदे श्री ह्रस्य ही हे धेया हुँ राया वसूया धुवार्या श्रीरायर तर्तु रह्या दे स्ट्रास्य रह्त वार्वेवा त्याविवा तह्ये वार्थे र मर्ते । दे से त प्या रे वाय रे स्थान स चन्नवः स्ट्रांचावाः व्यान्यां स्ट्रांचा विद्युकाः वर्षेत्रांचारेवाः विद्याः वि केंग्राम ने मान केंग्राम केंग् तपुरवर्षयामान्याजाय स्रेस्ट्रेर्यायामान्यामान्यास्य स्रित्यामान्यामान्यामान्यामान्या यर्ज्यानुः याचन् पर्जुन् लिनः पचनः प्रते प्यन्या छिन्। न्यायते र्जुत्यान् युतिः प्रेनः पृतः स्यायाचे तर्वते सर में यलुग्रास्य ५ मुरायदे ते ग्राया मार्यस्याया साम्याया स्थापन कुर् स्रुकार्स्त्वार् पत्रुवारायायायेर्वार्यार्थे रिवस्त्राची सर्वस्य स्तुवार्यो स्त्रिक्ष्य स्तुवार्यः र्थेन् यदे देन् वयायावर या वितार्थेन् तायान्त्र स्वत्यायान्य स्वत्य वितार्थेन् । वितार्थेन् स्व चगुर-वर्ते प्यारवर्षात्रयादिः श्रेवायायुग्यायास्त्र द्वार्यादात्र म्वतः वर्षेत्र पुरुष्यायास्य ध्वेते:नुसःरवसःग्रीसःनेन्द्रसःवन्वाःवीसःवनैरःविस्तरःविरःनेःवीसःसर्वीर्रंसःवर्देतः त्रम्भियाचुरा देःवाळेबाचन्द्रम्भवसाळेबाचिद्रवळेबाबालेबाचाराचन्द्रम्भासः चयुःक्र्याच्री अरमःम्बराक्र्यान्दरन्वोत्तन्त्वाम्युयायमःसूदःहेवायायस्यितः देव यहिषा सुव सुव सी या की या राजी या राजी या प्रवास की या प्रवास की प्रवास महिषायामहिमायाम वितायदेन समायान्य नियामविषाया विश्वाया विश्वाय विश्वा देवर हे भूत हु। यह विया यह वीया क्याया चया वा विदेव यहिया सक्य हित उत्र दे के शा विश्व प्रति वाद विवाद देन कवाश दर व्याप प्रविवा प्रदेत प्रति । यदः वीया वर्देद् : कवाया दृदः व्याया यया यदेव : योव : योव : विदः यदेव : विव्याया : योव : य यक्य हेर क्य हेर्ग याय के र्या ५८ । देव के खेर खेर खेर खेर की खेर खेर जी र केंग भी विषयन्दर्भे प्रतिः श्रुविषा स्युवान्दर्भ ते न्त्रीत् सकेंवा वासुसा विषय हैंग न्गेंब्र सर्वेषा वदे हेन् धोव प्यथाव। हे स्नून नु। क्क्रेंव्य प्यात्व सेन् न्या वेंब्र पेव यें के। विशः भ्रेनियामा गृतायया ग्रामा द्वारा से दाय दे दिया परि के या परि से सामा यास्त्रा देव:क्षेत्र:व:क्षेत्र:य:वर्डस:ख्रेव:वद्य:ग्री:वव्य:वय:ग्राम:। द्य:वे:ब्रिट: ज. घर. पषु. घपरा पर्सेष. की। विर. प. रूप. ज. रूप. जरा पर्सेष. पर स्क्रीया विरा ताःसैरारेशात्तवःक्र्यायसेषायस्यायस्यायः स्वात्तवाः वर्षात्रक्षायः स्वात्तवः स्वात्तवः स्वात्तवः स्वात्तवः स्वा जातम्रीरामामाम्यामा द्वात्रम्यमार्म्भामाम् स्वात्रम्यमामाम् यय। व्रियः हेर् वि च चर्ष्ट्रव व्या सुन्द्र वर्षा विषयः यस्य वर्षे च स्या स्था मुंजायाज्यशमुंजायम् अह्र द्वरायाञ्चलायाज्यशङ्केतायम् तस्य ह्या । दे सूर क्रमाञ्चेत्रायदे व्यवस्यामाने वासास्यास्यास्यास्यान् सार्वेत्रायदेत्रायि सार्वेत्रायाः स्रीतास्या बुषायाने नियो में बिक्क स्वरायन निया स्वरा श्चितः व्यवस्य सानुद्रः चितः द्रयो द्रदा । स्टारे वित्र चित्र स्वेसस्य स्वर व्यवः हेर्न चर्णाः क्यायाशीयन्यास्य मृत्विर प्रवित प्रेन्य परिया परिया स्वीत श्रीय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय व केंग न गेंव सकेंग वने यग न म से सिव क्षुन्य ग्वय सार्वे म न धीव सान म क्रेंबरनेदर रह क्रुन या क्रुवर नवेंबर या लेवा प्येवर यदी वावन हें वाबर या बात वा रह रे भून् न्यायर्केत् त्र वेषा याकेत् येति केंबान्य प्रति शक्या क्या क्षेत्र प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य क्षेत्र प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य क्षेत्र प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य क्षेत्र प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य प्रति केंबान्य क्षेत्र प्रति केंबान्य क्षेत्र प्रति केंबान्य क म्नेरल्याया ५.२५२ म्या.त.क्य.त्रुप्त.जीयायात्री.मैत्यायम् मूर्यात्राप्त.त्र्या.म् कुराःक्रीरःजःधरमः रग्निरःमक्र्याः यश्चित्रःक्रीः वयरमःश्रामक्रः वरुषः बुरा वैरःक्ष्यःभक्र्याः हुः श्रेभश्यः पश्चेदः दे। श्चेतः दरः दह्याः पदः पश्चादः वादः र्दः रस्याम्बेर्याम् रदह्वायर वियान्नरस्य स्याप्तरस्य । के त्यसः स्वायाः स्रीक्रियः श्चॅरलुग्रथाने द्वाराया स्टाराया स्टाराया अस्त्रीय साम्राम्य स्टार्य साम्राम्य साम्राम्य साम्राम्य साम्राम्य स ૡ૽ૻૡ૽૽ૼૹ૽ૢૺઽૢૻઽૣઽૡ૽ૡ૽૽ૼૹૢૣઽૡ૽૽ૹૢૢૢૢ૽૾૽ૡ૽૽ૹૢઌ૽૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱ त्यातः रे वे यालव देव क्केंब या क्षेया यो यहें द सूर शर्ड श यश देव या यालव देव यर र्वेषात्ररः देवार्ड्याप्परः श्रुवार्द्ध्यायी वेषाया द्येरावा योक्रे र्वेषाया तुर्विरः ब्रैंब य है यबिव से तरेंद्र य सम्मायस्य यबिव ब्रेट रु सेंद व्यवस रद में साम्य है। र्मेयो.यर्केल.क्.शपुर,विर.मू.श.र्स्र.यपुर,कृष्ण.कंयो.यर्केल.क्षे.श.क्र्र.जुष.त.स्टर.पर्स. यर व्ययाद्य स्थायदि इया श्चीत श्चीतव्यया तुः स्याप्त स्थाप श्चीदः प्रवितः तु। श्चीय श्चीर बुद्रियसःसूर्वायस्यासुः सदिः सर्वेद्राव्यस्य दुः दद्वेवसः याविद्रात्वेद्र। देःसूरः सदः म्बर्भायम्बर्भायम्बर्भास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त र क्रुंब दियं क्या कृत्र से के अपविषय प्रति प्रति मान क्रियं क्रि म्रेन्येबाक्षेक्त्यवार्क्रम्बर्ध्यस्य द्वारा ध्वीद्वीत्वार्यस्य वाष्ट्रवार्याया विषाः साम्रह्मः प्रमार्थेषाः प्रेष्ट्राः स्वाप्तः मित्रः मित्रः मित्रः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्व रैवाबार्को । तवादःरेबादर्ने सूरःसूबासूं रहः हटः दर्दा व दवा हटः रहः वकाव हरः य. टे.जम. क्रैयो.त. ट्यो.श्रीर. प्रवृत्र. यपु. यी. योषयो. क्रीयो. टर. प्रययो. त.जम. क्रुम. ४ म. ट्यो. त्यतः विवा सी श्रुवा ता रदः वे देर व्रे वा सी सुदः सुदः विवा प्येव ध्या तहेवा हेव । व न्येर। रु: भूर-चक्किः वर अवशा । ली.जी.श.च.कुची ह्या । वीशः यम्रमः भी स्टाम्मे स्टामे मे स्ट्रीय स श्चव लिया में । तहिया हेव शेरी प्राय अपने अपने अपने प्राय प्रीय स्थित स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान र्डमायाः भूरे। क्रेंट विवेर येषाः श्रुर विवेश क्रुंयाये क्रियाये प्रत्य क्रिया विवासी क्रिया विवासी न्नरः परः क्षेः सः न्रुत्यः चतेः क्षेतः हें रुं शुरः यः ररः म्वन् गाुनः यः मङिमः सर्हर रूः प्येत्। देश्यत्।वार्येन् यम् पुरस्केत् यदे तदे श्चेष्मित्र मित्र स्वायः यात्र द्वादः स्वायः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः वर्दरः केंबान्वन् नुवेश्वेंबान्विने व्यानस्यात्। येषा योषान्यस्य यस्ति वर्षियाः ग्री र्मायायायवेत्रात्रात्रात्यायायात्रात्रात्या केंच्याक्यात्यायाक्यायायात्रात्रात्रात्रात्यात्रात्रात्रात्यात्रा वैवा⁻स्रो रूटःवाब्रवःवाहेशः ५८ व्ययः स्वायः वाहेशः यः व्ययः वः स्विवः हुः वयःतपुःश्चितःजन्नात्वात्तात्वात्तात्वात्तात्वात्तात्वात्तात्वात्तात्वात्त्रात्तात्त्वात्तात्त्वात्त्रात्तात्त्व वसूरद्यार्ट्यो कुर्केर् द्रायायसूर्या स्यु विराद्यायस्य विरादे राष्ट्र स्थाप्य कें देव से देवें विश्व विष्य विश्व विष्य व यर्वः क्वें त्वेर्यायाया के सेर्वा विष्याया के सेर्वा स्ट्राया स्ट्राय स्ट्राय स्ट्राय स्ट्रा बुर्वायात्रयात्रम् वित्वायाः द्वीसीयायात्रम् वित्वायात्रम् वित्वायाः वित्वायाः वित्वायाः वित्वायाः वित्वायाः व यमामक्षम्यान् मुंद्रिया मुंद्रियामाने साया भीतक्षेत्राय मार्चीमाया यस्त्राया वहिया सुराया दे ने प्रमाणा केरों निवर न स्वेत प्रमान मान स्वापन र्देव क्रुं के लेट क्रुंट रेट प्रदे द्रियायाय दुव त्या प्राप्त क्रिया विवास प्रदेश विवास प्राप्त होता है । रदः हेन् क्री कें द्वी अर तन्द क्विया शे लेखा यर आ बन्। अदः हेव त्वी त्वी त्या ते द श द्वी । अर्बेट वर रट वरे देव महेर की व मलम कुट कुट चलर रेव ओर धतर ह्या र जाया यत्रेश्वा श्रेश्वाचेत्रात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः यात्र्याः व्यायाः यात्र्याः व्यायाः विषाः

ल्रा नेशन स्रीयाची यश्चा ही जाता है साम होता है से स्थान है से स्थ येन नुः श्रूम वित्र वित् त्रकेष्म् अन्ति । विद्यायम् प्रत्यायद्यायीया विष्यायदे । द्यायदे विष्यः प्रत्यस्य । विष्यः क्रवशक्तिंगःवग्रथा वेयःयःने हिन्यवन् हिन्। ने नन्यः अध्यःनु ने व स्वर कें अ'ग्री'ग्रें वा अ'ये वि अ'यो हें न 'न वो अ'या हो। ज्ञा अराह्म अअ'या वा ह्म स्पर्ध या न वा ये र्टानमून्यतियावित्यावित्यावित्यायायायायावित्राचेता व्याप्त्राच्यायाया यः बेरायम् वायान्य व्यक्तियानमञ्जूष्य वर्षे अस्ति । विभागनन वर्षे व्यक्ति वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे यानिवन्तु। रदाम्बनायदी ध्रीते मदे खन्या क्रीना यो कर्म स्वापनी श्चें यातिर्यातियात्रात्राचित्राद्धा १ वर्षा १ ग्रुचा संवे प्रचे तर्दे र सूग प्रस्था से तर्दे र या दे त्र में प्रसे ते से मार्च साद्वा सामित য়৾য়য়৻ঽঀ৾৾৻ঀ৾৾ঀ৴য়৻য়য়য়৻৴ৼ৾৻ড়৾ঀ৾৻য়য়৻ঀ৾য়য়য়ড়ৣ৾ৼয়৻য়৾৻ড়ৣ৾ৼ৻ড়৾ৼৢ৻ देवर केंग्र र ग्राट प्रवेश हैं। हैं। केंग्रिय प्रवास केर ये व क्या के केंग्रिय प्रवास के स र्केंग्रथं यात्रव्या विते पुरार्कें प्रायम् विषया सुरायन प्रायम प्रायम प्रायम प्रायम प्रायम विषय विषय विषय विषय र्क्ष्मियायाधीत्र स्त्रिन्। वे हियासदीन सुदीनुषासुदि सुरार्क्ष्मियायान्द समयाउद [य:र्य]:क्ट्रायर:वर्ह्य:ब्रुय:धवे:ह्य]वर्ह्य दे अट्व वेयाये प्राया स्था सुरा स्वा याडेया ह्या खार डेया विकाह्या यर प्रायत या दे विकाया कथा खार रेरा तव्यः।वःसरः ने देरः रदः रे से से रतव्यायः वदे विषेत्रः से मुग्ना सम्वरः विषायसूषाः तपुरविष्रः पदुः क्रूमाने। वर्षमा सम्बदः वर्षा सुमान्यः वर्षा सम्बद्धाः

खूरा नश्मश्राध्यस्तर्ह्नायरावश्चरावर्ष्वराचावर्षिराचाररामी केशिन्देना भेत्रत् यर.सूर्-कुर्या.ज.यं.क्र्या.पर्ट्र.केंट.कूट.कूट.र्या.र्येया.ग्रीया.पर्ह्या.तर.र्ट्याया र्ट्याय. दे देर विष्पर भे वर्गेन्य विष्य देश विष्य प्रतामी वार्ष विष्य प्रतामी वार्ष विष्य प्रतामी विष्य विषय विष्य विषय क्रिंदर्नर तर्ज्ञेन पदि विभागवत क्रिंट प्राप्त क्रिंग प्राप्त क्रिंग प्राप्त क्रिंग प्राप्त क्रिंग प्राप्त क्रि वर्देन् प्रबेत् नु व्यव्यादेश प्रस्था अन्। न्र में प्र लेश मान्या माने विदेश सुर में न्र । नेव्याद्यः वियान्त्रेयायरान्सुदान्ये त्युयायेययान्त्रेयान्यदार्थे स्यान्यस्य र्रवा चया नुषा कें वार्षवा ता स्र्वा स्वा वार्षिया वार्षिया या या तार्षिया या या तार्षिया या या वार्षिया वार्ष्या वार्षिया वार्या वार्षिया वार्ष्या वार्षिया तपुः क्रिं ब्र्र्रात्वरा क्रिं भेगा क्ष्या ब्रिंगा पवित्रात्तरा अत्यास्य स्था विद्रात्ति । चर्लर ब्रियाम्। यो न केर्ना वर्षन प्रमास्त्र क्षेत्रा ये वर के क्ष्या ये क्षित्र स्त्र क्ष्या ये क्ष्या ये क्ष स्रवास्त्र प्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र स्राचित्र श्राश्चरत्वेरत्वश्चात्वस्थात्वाभारत्वेराद्वताद्वाभारत्वेषाः विष्याः त्वस्याः विष्याः विषयः व विवात्यः स्टायमें र विवासे प्यान्य स्थाने वा ने स्थेवः नः नुस् विश्वावनः वार्वनः वी मृगानम्या नरार्देते तिव्यासूरानी सुगानम्या सुःसारदार्शेरानी सुगा वर्ष्यः श्रेव्यायः यय्ययः द्वे दिन्त्र । वर्षः व्यव्यायः स्वर्तः यद्वे विदः। यक्ष्य.योष्ट्रेट.श्रव.योषट.जा.श्री.पियो टे.श्रव.योषव.रचव.क्ष्ये.श्रट.तद्व.यह्यात्रा.स्रीयो. डेवाः अनुत्र नुः पेनिः वेनि। दः वेन्तिः उदः सुत्र के चतिः नवदः वीवान्यो स्वा व्यदः हेतः गर्भेर कुदे प्रवाद के जो या दे पेर ले क्वेर में राम के या दर्भ की या दर तर्दा विषया हे रदा होता स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर् वीयातके प्रसार सुराया वायाया किन्या लेवा नेया त्रा के त्रुवा सी होने वीना वाया चनवःचवः भेः वाःभेन् साःभे देः न्वाव व्युचः से दिनः सस्व वाहेन् सानः वा विवासः विवासा विवासः श्रीत्। देःश्रीत्रःग्वत्रः चरःद्विःतस्यरः देरः चर्चेदः तुषः वितः तुः तहेग्रयः यदेः श्रूः चर्वेः र्टा लट्चर्यम्परमम्बर्धा क्षेत्रम्थयम्बर्धाः र्रेयो.पर्रेज.४८.र्रेट.२.'एयय.त.सूर्योत्र.ज.यत्रात्रात्रेयो.पेत्र.पश्चीत.पर्र.पर्वीर.पप् र्केन् प्येत्र र्येन्। वेत्र ग्राम्प्रमा मे सूत्र केषायते न्यम मीषा क्षु वन्य सीवाया प्येत्। र्कुयानेरावसूत्रात्रात्राचाहेत्रावरास्रवे तर्वे वात्रम् न्या समस्य स्त्रम् हेते पुराधेता यर पत्रवारा या स्मित्र स्विता ह्वा साल्या द्वा पालेश सर्वेद हिंदा या प्येद । देश वःश्चेरायदेः द्यायर दिवेषाः विद्या श्चेत्राय श्चेत्राय श्चेत्राय श्चेत्राय श्चेत्राय श्चेत्राय श्चेत्राय श्चेत कर्तायाओर्नायरात्वीराययायायर्थे यहिराकी क्षेत्राची विषयरक्षिया की स्वराकी स्वरामी न्रम्यायुषानेयायि तितुरानिति निष्यायालि । शेयषा इयानेषा वे व्यवस्त्रीः इंशासुरवादान्त्रमानीयार्थेन सूदायार्थे स्वाराद्या स्वार श्रीतक्षीत्रम्भभाषाः प्रदान्तराम् भ्रीतिन्त्रम्भभाषाः प्रदान्त्रम्भभाषाः स्राप्ति । स्रा व्रवासिन नामुद्रीत्युषाह्रेवातद्वित्रभ्रेटाव्यामायाकेवावटामी देवाकेवाधरावदित्यसा ब्रें विवा बेब प्येट स्नुय स्रे। वु:व कुट टु:र्डव र्डिवा व्यावाय केव टु: क्रें वस्रु:वर वर्दे हैन्यायाकेव्यक्तुः भीव्यन्यी नेव्यक्तेव्यन् नुप्ति क्षित्रे व्यन्यस्य पर्देव्यम् स्थान्त्रे व्यवस्य स्थान्त्रे र्नेन कुर कें तिरेति द्वा मालमा क्या रे म्यून्य नया केंन्य में ने पानि हों के मानुन ति हो है स्थान वार्य यातयवाषायरावन्द्री ।देवद्वुचुक्वावीषायःवेदळेषावन्द्रायद्वदःव्युवायः व्यायार्च्या क्रीयां केंवा क्रियां त्राच्यां व्यायान्य दिन्ता सेयायान्य हिया नुषायक्षा देव प्रथमायदे स्निर्मे स्निया श्री त्या यो वा त्या सुरा है प्रथमाय प्र

पश्चेरायः नुषाया अध्यायः विषाः चेन् द्र्येषा नः श्चेर्यः यहः याव्यवः याद्रीयः यः द्र्यायः विषाः चेन् विषाः विषाः चेन् विषाः वि २८.क्रि.४। क्र्य.४८.क्रिंच.वोषट.क्रिंच.क्रिश.क्रु.इ.चट.क्र्ट.। त्वा.रूप.क्रीश. कृषायानकतः क्रें वृष्ठाः वर्षः प्राप्तः वर्षे वा वर्षे वा हे वा वर्ष्या वर्षे वा वर वर्षे वा वर्षे वा वर्षे वा वर्षे वा वर्षे वा वर्षे वर तर्माक्षावित्रः स्रुपः स्रेप्तस्त्रा केषाः स्याप्तायम् । स्याप्तः मान्याः स्रीः स्रीः चर्वेवायोवें कुट कुट वीयात्यावद्वायाया विवाया केंया द्वाया हेवा विवाया या त्य्वायायर कें क्षेत्र अर्थ त्याया नु त्य केंद्र प्रति । यह वा त्याया वा त्याया विष्णा वि तद्वीस्य में बिया पेर्वा देवर मुस्य स्थानी में स्थान स्थानी स्थानी ह्यायाने न्दायहर्वे । दिवादातु उया वीवाने खूरा वी ने पदि खूरा होना उवा यन्याः योश्यः स्याः वर्तेषः श्रुदः श्रुदः योः श्रुषः यने यने यने वर्ते वित्रः यश्रुदः वृश्यः यश्राः येयाः यः यसः व्यानितः क्षुत्र प्रत्वे द्रा यसः द्रम् यसः वसः व्यानितः से समानितः वस्ति। चालवः त्यरः क्रूचायः चयाया श्रीचः श्रीटः चीः श्रीः साधवः त्यया या लेवा त्येदः या प्यवा चनुवः ५८। देवे न्वत् वस्य उद्यासम्बद्धाः निष्य क्षेत्रः स्वतः स्वतः स्वा देः चलैक हैं नाम केंक न दें मा नालिये हमा मा यो का प्याप्त वा प्राप्त वा प्राप्त का प्राप्त ঀ৾য়৽ৼৼড়ৣৼৼৢৢঢ়ঽ৾য়৽য়ঀয়৽য়ৢ৻ঀ৾ঽয়ৢ৾ঀৼয়ঀ৽য়য়য়ৢয়৻ঀয়৻য়য়৻য়য়ঢ়ৼয়ৢ৽য়ৢঢ় बरयावनन्त्री विन्यनन्यायवर्त्रेषाविन्न्स्क्षेत्विन्ष्रिषार्येन्य। ने महिषायका श्चेत हिर में या पारे ताय पार श्चेत वित्यम् । पन्त स्टुया यतर क्रियायायन द्राप्त प्रमान क्रियायया क्रियाया चीयायते स्नुवाक द्राप्त याह्रयाक्ष्याचार्द्धस्य वार्त्यस्य वार्त्यस्य वार्त्यस्य वार्त्यस्य विद्रान्ते प्रत्यस्य विद्रान्ते प्रत्यस्य यर्द्धेन यानग्रिन्द्रयान्त्रन्ते। वियायार्थे स्रोत्रः क्षेत्राकुना सूर्या स्राप्तः नक्ष्रन्। नेतर त्युका ग्रीतर्जा स्ट्रास्य स्वास्ट्रास्य स्वास्त्र विष्या विषय । स्वास्त्र स्वास् योशियाक्षीः इत्राक्षीः प्रतिरा त्रियाक्षेत्राया विषया विषया । सदः स्ट्रेट दु विष्वुवरु दूर खूवा सर्वेट बुट ख्वेय क्री हुय खर्चे र वस्र या वितर विराध रवामिक्रेशन्दराहेशासुःतविधावासे। अध्यानविमान्यायावान्यासुःतुःदराहेशार्वेवः श्चुः याः सः त्तुते १९ स्राकाः यो तः श्चीः या व ५ । ग्याः र श्चिया या उत्तरा स्वतः प्रवेतः साहे ५ उदः । वैषालिट विद् दर्देषाया गुवास विवास विदास वी मासुट विवास वारा कर है। हेन् अप्तशुरः सूरः वास्रवरः प्ययः सँवायः विविधाना विवानी सूरः तयः वयन सुन्धान्य स्ति। देव:ग्राट:देर:ब्रुषा:तुःश:तु:चु:ठवा:वी:केंश:विद:हे:स:चिह:ध्र:वेंदिव:वेद:वेद:स्राय:वा र्केन् भुष्यायात्रन्दान्यदान्यदानीयायने याञ्चानु भुष्यते मुण्यते स्वायायस्या भुष्या भुष्या र्डमः र्ह्सेमः है। सुःमः नदः सर्वोदः ये वितः नयमः सेनः नहीरः सेनः नुः सेमः या सुः निवः यर् कुंवार्टा रे प्रवित क्रिंग्यन् परि क्रिंप्या रे व्यवर केंत्र प्रवा क्रिंप क्रिंप कर यव्हार श्रीत हो । विषय श्रीयाषा स्वार्थिय । यस्त्र विषय । यस्त्य । यस्त्र विषय । यस्त्र विषय । यस्त्र विषय । यस्त्र विषय । यस्त् सु:होरा:सेंट पा:पीदा दुरा:दे दरा दाया साम्या मी प्राप्त के वा से हा पा पर हा यभ्रिमात्वेद्यात्रमाञ्चराष्ट्रार्यार्यः राष्ट्रात्वात्वराष्ट्रम् विष्ट्रात्वेत्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् मुड्या डेबा प्रस्या सूत्र विं मुडिया दिरा मी दुषा मुडिया वदी व्या वर्दे सामाधित। दे सूत्र वर्हें अयायायात्र त्रेरां में वर्हे रास्रह्मर देन ने केता विरामित की क्रायायात्र वा निर्माण क्रम्यायात्रम् स्वाप्तम् व्यापियाच। यम् स्वाप्ति त्युर्त्यति स्वेत् स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व ने वा प्याप्य निष्ठा नि याञ्चा र्क्या क्ची प्रवा तर्दे व स्विव मुग्न प्रस्था या लेखा प्रदेश व वहेया में व स्वा प्रवास व स्वा वेथाञ्ज क्षु विराधानुषाक्कुत भेषा कष्ट्रास्त्र स्त्रीं वा वेट्रासे स्त्रास स्त्राभी वो विद्यासे वा वि

न्भेग्रायात्रयाचीयायात्वेगायीयाया तर्ने हेन् क्री हो ह्या की सेट नर्दे या है हो स्वाया म्चिनालनामालेमार्रा । देते देव वे तरे हेन स्वा हुट प्या नित्र में देव'न्य'यदे'क्र्रेय'त्रदे वास्ट्र'वी'वाबन्'तर्स्याययात्। नुस्यास्याक्राक्रायदे विवा क्य। नर्ग्रेट्याम्बुन्न्त्रास्यते द्वीतास्ययात्रदेवायाया सुरामा वसास्रायते स्त्रींगः मी'वियोबानादे, रेतुषु मोर्चेयोबान्य देवे रे. यमूर्य रे. योच्या प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य व्यायम्बायायतः स्रीतः विवा वी । । ५ वि । भीवा नेय ने र वे स्थाप्तरः विवा स्थार । विवा स्थापितः विवा स्थापितः व विविद्दे हो क्षेत्रायापञ्चित्र यह या क्षेत्र यह स्थित या स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान क्रियाय ब्रिट पञ्चेस्य यः शुवाय प्रसूद श्चीय प्रवीट यः वार्ययः श्चीः स्नृदः वायदः प्रवार स्टर । न्गेर्वि सक्ता मध्या था श्लेट वया श्लीपया सुरक्षी वियाय तरीय श्लीपया तर्ची न्टा शेसराउदादिवादीया से सामिता से स सिया.पक्त.प्रकूट.पर्यंत.क्रूंया.क्रेंट.घष्रका.क्ट.यचेयाया । रेयो.ज.लु.प्रट्य.क्रूय. विविद्यान अस्ति । अस्ति विद्यान विद्या यर्क्ने विशासदः क्र्याः मिटः याश्रुअः श्रीशः प्यवाः यत्त्वः यः प्रदः यरुशः श्रुवः स्रीतः श्रेव क्री क्रिक्ट तर्वे प्रदेश स्वाया प्रमुप्त ग्राया क्रीया क्रीया प्रमुप्त प्रदेश प्रदेश विद्या स्वाया प्रदेश स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय या.याद्यंत्रा.क्वी.यावर.कु.जंदर.यक्षेष.लूर.कु.वी भरेष.त्रांचर.पर्यंच.कुंदर.तस्यः गुत्र-५८-५व्रेर-भे५-थ। । इसायास्र स्रुव्य देहित वात्रसावासुसायस्य । ५ गारः न्यर यद्येद न्यादे त्ये प्रस्ति स्त्री मार्थि हिया । विष्य त्य द्व स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स

नक्केन्द्रिमानसून लेटा क्षुरायटा सुवाया गति तेन्त्र सहिटा स्वीदा न्वान्तरः व्यान्त्रम् वितः स्वान्या । व्यान्त्रते स्वाया । व्यान्त्रते स वया । पन्याकित्यावित्युयार्देहिः इयात्वित्या । विन्त्यमः श्रुराने ह्वा यदिः *बु*ज्ञरागर वेस्रा । बिरायदे स्यान्तर स्थान मुवार्याचीर प्रवित्र स्रोत् स्रेति प्रवित्र स्याप्त स्वत्य । स्रित् वार्याय सम्याप्त स्वाप्त स व्यापदे के राष्ट्री द्वी वर्षा विदेव से दिन में राष्ट्री में राष्ट्री से राष्ट मिलेया । पोरलेया मिलेया ग्लॅर-र्नुष्ण विशवास्त्रे स्वानाम्रदास्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वायान्य स्वयान्य स्वयाय स्वयायस्य स्वयाय र्हेज्यायाकेत्यंदिःजात्रायसूत्रिं। । लेयायहेर्ज्या स्वीतायहेर् र्थेति द्रमें र्र्या देव मिलि त्रव्या द्रवेर से द्राष्ट्री मित्र मिलि स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ब्रेन न्दर्वयान के यान् ब्रैन्य विवायो भगाम्बिमान ब्रैन्य न्द्राया से यान् ब्रेन्स से स् वैवायायदेव क्षेत्रे देव प्यर प्रमुव वे । । ने प्यव कर क्षेत्र वे वि वे वे वे व्या मेन या प्रमुव वे बैक्राया नेतर न्दर श्चार्तिमा सासून यदि स्विमा मीका इसका क्या नार्ये रामारा र्वे वि गामित्रमा महिषा क्षेत्रा या प्रति प्रमुख्य प्रति स्त्री प्रति स्त्री स् केव विर विन वे वरे वेन स्वा वर्षेव क्षेत्र न सवा विन वे का वर्षेत्र स्व वुर्वे । नेतर नेव कुर पर्ने क्षेत्र नुष क्रुव र वा पर्नेव क्षेत्र पर्वो न्द ज्ञा यदे द्वा वर्त्तेरायान्त्रीत्राचीरातुषात्या केषान्त्रीत्रायान्यान्यान्त्रीत्राचीर्त्त्रीत्रा त्रमाक्की क्ष्याय देव सान्दा विदार्श्वेष मार्के विषय देव स्था से स्था सिन सी हैं। व.र्ज.य.र्थया.र्थ.पर्व.सुर.कुर.कुर्य.कुर्य.पर्वात्या तराव.यर्न.यर्थ.र्थ.सुरेयुवर.कु.युवर. मूर्टि-र्युट्-श्राह्म्योत्तर्पुर्व-श्रुट्-मी-यश्चाश्चार्य-र्ट्ट-पञ्चीट-हूर्याशः हूर्याश्चार्यः व्यास्त्राः क्चै-दश्चिम्ब-देश-वर्षाय-द्या म्बन-प्य-स्ये-प्य-दर्ग्य-प्य-स्याय-क्षियः यानः निर्दे सुद्रः नः अर्दे स्थायः सुदः त्रन्ने यः श्रीः अवः द्याः स्रो यायो राश्चीः अर्केदः क्रॅंट या नाया पुर्दर खुर बेर क्रिका खाक्कि न प्रतान प्रतान क्रिक्त क्रिका चित्र प्रतान क्रिका चेर ॔ख़ॣॸॱढ़क़ॸॱॶॺॱॿॖ॓ॸॱय़ॱय़ॻॾॗॗॗॸॱॿ॓ॺऻॱय़ॱक़॓ॺॱय़॔ढ़ॎऀॱक़ॕ॔ॺॱढ़ऀॱॾॗॗॕॸॱॻॱऒॴॺॱॻॾॗॊॸॱॸॴॱ। न्वेंबायबाद्या नेवार्वेवायययोन्नु सीत्र्राचादी प्रवस्थाया क्रुके पानु मास्त्री शेयशः ग्रीः गुतः ह्येदः प्येदः प्रथाद्या वदः भ्रूरः द्यायावशः म्याद्याः व्यायेयश्चरः গ্রীম'ব্রিন'ন্টন'। মীমম'ড়র'গ্রীম'বাম'ব্রিন'ঝ'থম'ব্দ'র্ন্টর'মিমে'ঘম'ব্রিন। त्रश्रद्भः भ्रत्यायश्राचार विचायाः भ्रवा चर्ष्याः क्रिया विच। देः सेर स्वा चर्षयः इस्राम्युस्राश्चित्रास्यद्गान्यदेश्येस्रस्य उद्गाद्मस्य उद्गिन्न वद्गास्य स्वर् रट.धेर.की.प्रियां स्वाम्यां अरावश्यास्य साम्यां स्वाम्यां स्वाम्यां साम्यां सा न्द्रायाचीन्याक्षीर्यायाची नेवरान्यास्त्रीतायायावीवान्द्रीवाकेवाचीया पश्चीरमायदः होत क्रेन् स्माप्तिता हे स्मर्थाय स्माप्ति स्माप्ति स्माप्ति स्माप्ति स्माप्ति स्माप्ति स्माप्ति स वयाने त्रदाणीव श्रीन स्नुयाया र्वयानु सी तिहेवा यय पीव सीव यर हिन श्री रिवायायया यहवार्यात्रीतः निष्याहरू विष्यात्रीयर्थान्य विष्यात्रीयः वतरः श्चीरः मुः यो दायायातुः विवा यो श्चीदः यया व दाया देते र दावी त्युया वदि ता स्या मुव विवान्दर। योग्रयान्देशयानेयाक्त्रुवानिवार्योद्दर्याय। देनविव्याम्याया

चर्चयात्र सुवा स्रोदः धीतः लीदः । देवदः स्रोतः यः यः यः सः स्रोदः स्रवा सः स बद्रा क्षेत्रयास्य सम्बद्धाः स्त्रीयगाय स्तर प्रसूच स्त्रेद हेत स्तुद सी पदित देव पविजानःसरमानमाग्रीरःकेषानमानम् । कुरामनमान्त्रीमान्नितः ह्रा र्श्चेर् श्रीरामावया भ्रीर्मेरायरायुर मवित स्त्रुप्तेरायरा स्त्रीय दे स्त्रूर रेया द्राप्त ख्राप्यर प्रेषाप्या तर्ह्ये र ख्रंद प्रति त्युषा हेत् स्त्र प्रेष्टा प्राप्य स्थापि स्वर्धे विष्टा प्राप्य स्वर भ्रम्यश्यवर र्धे लेग विव र्थेन प्रलेग न्या विव रही विव रहे हिन नेव स्थान है से स्व राज्य स्थान स्यान स्थान स য়৾য়য়য়ড়য়য়য়ড়ঽৼয়ৣয়৽য়য়ৄয়৽য়য়য়য়য়য়ঢ়৽য়ঢ়য়ৼয়ৣয়৽য়ৣ৽য়৾৽ तयर न्यायर तर्वे निया ने सूर तर्वे नित्र या ते सूर्य या नित्र सूर्य या स्व यदै:वुर:कुव:ब्रुव:यदै:युर:केंब:वक्षर:कृव:वःवह्षा:केंटः। देःकंब:दुःबःवः नर्या क्री क्षेट में नक्षेत्रायदे १४ यथ यो व या नहें व व या कुंवा निव कुंद या वहीं र न त्वेषा'चु'नवेषि'सूर्यायापीन'या'बुट्या'वेषा नेतर'वेषा'केव'कीकेष'न्रयापीयपुर' यर्ने क्रियोया क्री क्रिया यो त्यक्ष र क्रीय प्रीय क्रीया क्रीया मार हो र या यीया याया यर देवया बेन ने । १२ त्वर गुरु होर वर्डे अन्वे अध्यय अवना है स्नून नुगुरु अबिर होर क्रेन'यथ। विन्यर'मेग'क्रेन'नगे'च'क्रूपथ'र्येक्री मुर्हेर'च'शेशय'पश्चेन'नर्देश' योषु रस्रयायाया स्था । इसायाय सूर्यया भेर या सुन । । वसाय सञ्जीया तपुः कुर्याया इत्राचार्युत्राध्येत् । विद्याचार्युत्रयायाः भूत्र। वत्राव्यस्य प्रत्याप्यः वि विवा से क्षूय व ने र व न से र व ने र व न से र व यन्तित्रं भेत्रम्भययात्री हिः स्नून्त्। येत्त्रं स्म्यून्यः सुवायाने सार्केवाः वी। शुर्-व.शर्थाःक्रैशःश्चैयःजावयश्च्याःत। ।शर्थाःक्षेशःश्चैयःतपुःशःतुर्थःशःर्वूरः

बियान्या क्षेराहेते क्षेत्र हेते क्षेत्र या क्षेत्र होते विदाल्या קב मुत्रमानु क्वियास्यम् सम्मानु कृषि । विद्याम्यस्य सम्मानु । विद्यामानु । र्नेब[्]षीत्वासेत्यम्हेषाङ्केषाः क्षेत्रात्वाप्यतेब्रावायम्त्रः स्थात् । श्रुप्तान् । वे वे वे वे व्याप्ता वर्षेयाबिदा विद्यायस्तिन्त्रयाद्वीत्यवद्याद्वी वेदावदेश्यवास्यान्त्रया वह्रमः हे वर्देद् यदे प्युवः द्रायदे यदे यद्र याद्र या त्रयाची तह्या क्षेत्र्य प्रीत्र ने प्यत् द्रया चर्ष्यूय चुति तद्यय चु यादे व द्रु चुे द्राया प्रीत लेया यन्तरम् नेतरःश्चिरःस्वितःस्वनःस्टायायसःश्चुरुष्यःस्टान्नायःविषाःसेन्दन्निर्यः विदा देन्वीयायायार्चेवायम्बाह्याक्चीयर्चात्वह्वायायास्त्री येययास्त्र म्रम्भारून्याम्यास्त्रेकायायन्त्रेतिः मन् नुः सदः ह्या स्तराधीन् सी केवायते महितः विवासिन्। यरत्तुम श्चिराव केंबातक न यायव वे यहेव लेबा कव विवा धेव न वे बा कि न नेति क्रु सर्वत ते केंग तकन या गन्ता चुति क्रुन या यव यति क्षेत्र प्येव व । त्यःतर्दः नदःश्चेःतर्दः श्वः क्वेंत्रायः भेत्रः नर्गोक। तुषायाने योन वन यदि वन देशिया भीव यदि भूव यया भीन सेन स्थित भूव स्रेराचान्द्रावराचेन्यायकाष्ठ्रवकार्याचेन्या नेत्र्वाचाने स्रुक्तान्त्रम् र्नेग्रे. पर्किर. भुरुषा श्रीर. परायाता या स्वारा प्राया मार्थ राम्ये स्वार्थ र्कं नः सेवा नते सुत्र अर्केन प्येत प्यरः सुत्र प्याया संनेषात सुरः तर उत्र वा नुना तुः वश्चरः हेब प्यर केरों विंद होन रीका केंबा के सूर तकन केंबा प्रेंब लेबा दे ना लेवा ना निंद वा रट.र्जे.र्यंत्रा.यु.स्रुच.र्टात्यंत्रा.करता.क्रीता.यु.च्या.यु.स्य.र्टा.तं स्रुच.र्टा्यं.र्ट्या. यद्य-वृत्रान्त्रीत्तर्वात्त्रयाव्यव्यक्त्रम् । रटःक्रुवार्टायाः विद्या

रट कुँद हें ग्राय विटा रट हों रट या ब्रेंग हु या कुर या के के विहास का खेंदि सर्वायामहेषाविरासुरायाम्बर्गायामुरायाने हिन्याविरायववात्वय। हिन्योयायास्य म्बर्याय म्बर्याय स्वर्धाः विष्या विष्या मिल्ले म्बर्याय स्वर्धित स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः खिर क्षे: अर क्ष्मा नुष्प वालक प्रदेश प्रदेश स्ट प्रवास र प्रत्ये क्ष्मा से प्रवास क्षा स्ट प्रवास का क्षा क्ष यः वियाः श्रीवा अवतः प्ययाः श्रीयाः उतः वययः उतः यः यतः यययः श्रीत् यः यतः याः यतः कें विदेशयाया देवाकेवा धेवा रुटा वर्षे विहेंगा येनायती ये छे वह वे यटा ये विवा धेना देवरायायायरकी वर्षे यायायरकी वर्षे क्षेत्राद्येव याक्षेत्राद्येव द्वी वर्द्धित। ब्रेथमाने स्रीम्यायायी स्टाम्म्यायीय विषय ने विद्यविषयी स्वामित्रीय विषयी यर पर्दे दुवाया नुधन पालेवा चुका वृ । पान पालेवा बिरा नेः यः देन केंन्द्र ब्रिन् केंन्द्र विराकें बियायाय बिनानु। दयादायादा रहा यम्रमाबिदा ब्रिन्श्रीमाब्रिन्यादार्यसम्। विमाबित्यादार्यसम्। देव त्या बर्मा अन् र क्रीया ट र प्रायम् या वया र दा वा केया य र ति हैव या वा सूचा प्येव या या वा है:भ्रुन्तु। न्रन्धेन्त्रं लेखानन्यात्यः लेबास्युन्त्रं चिन्याः वीतन्याः वीतन्त्रं लेखान्त्रेयः। व्यःक्रम्बर्भुद्राय। विषयःयःसूरःदःद्दःदःधरःवद्देवःयःवदेनुदःवषःवःश्चेदःसःवेः यन्वायहें ब्रुव क्रें का क्री का स्वाया ध्येव। प्रायम्बाद का स्वायम्बाद का स्वायम स्वयम स्वायम स्वयम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वायम स्वयम स्व वहित्यावदीयार्थेवायरविवरावदीस्याये केन्द्रेरा देखाविवरावदीस्या पर्श्याश्चि:स.प.धु.क्योत्राज्ञास्य्येत्राज्ञास्य स्थात्राच्यास्य स्थात्राच्यास्य स्थात्राच्यास्य स्थात्राच्या वै'यन्याः येन् हिंयायायते वेयान्याधिव वा नेतर सुर वें व्यायहेव वया यन्याः हुः

विक्रम्यायात्री र्राचियाया शुवायाम् । वर्षा की वर्षा ये दार्थि । यद्वा <u>लय.लयो.ल.श्रूयोश.तपु.श्रूयोश.तप्र.यम्भेय.यभ्यायभेयोश.ता.लीश्रूयोश.पर.यो.मू.सू.</u> ब्रैंट.त.क्रुंश.क्री.चर्चा.मुर.लुब.लट.र्देट.। ब्रैंट.चोब्र.क्र्य.क्री.क्र्य.व्या.युवे.च.क्या. भ्रीत्रत्व देशः व स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्वानिकाः स्व मेन हेन्य रायते सिद्धेत पादी द्वारा प्रवासकात्। वित्र स्वासे स्वासे स्वासे स्वासे स्वासे स्वासे स्वासे स्वासे स श्र्वाशायशावरावाताञ्चेवायते हेर्वाञ्चेवाद्या वर्विरावाश्रुशाद्वशायर हेवायशा वस्रयास्त्र साधित्र यात्यास्त्रीयाययानेयास्त्रीय। दे सुदे स्त्रीयायानेयायास्यायास्य चक्रमायासुरमान् कासीन् विदेशसम्बरामिने मान्यासी मान्याया स्वापा स्वापा यदे:ब्रह्म अ:क्रीकी तयर ब्र्यून दर्गेषाओं ।दे:व्याव क्षेत्रा वदे:क्रुवा दर्ने क्रुवा क्रुवा दर्ने क्रुवा दर् र्देब'द्यायर'ग्रद'अर्थेव'य'येथ्यथ'ठब'द्द'ग्राद'विग्राचेव'य'यर्थ'क्विथ'वदेब'ग्र्युव' क्वा⁻कोन्ने। देव-न्वाहेन्यायदेन्देर-क्युन्द्व-व्ययन्दन्य-पन्दन्य-वन्य-पदेन विक्रावन्यार्रामध्याविदावेयान्दात्वेयानुः सहस्राहेन् प्येतान्देवे स्वीतान् विह्यायाः श्रीमात्रमा मार्केम । इसामादी देव सुनायायाय दिनामी । प्रीताद दरासा हेंग्रयायदे सेस्रयाक्त की देंग्र सेत्यायदे त्त्र्या सूर पेंद्रयाय क्रेंग्रह से दि रट क्रुन खेन क्री महामा मार्थ कर वा सुद होट सम्मान स्वर केर क्रिन क्रिक बेर्यायासाञ्च्या वरायार्वेराज्यावरायाधेता विसामसुरसायासूराह्मीर्वेरा भ्रानयाः ग्रीतकर् ग्रीत्रकर् ग्रीत्रे व्यापायह्याः व । यद्यतः प्रयापायः स्रोधयाः स्वर् । यः सरस्यः श्रुरः यः सेन् यसः ने न्ना की देन् न् नुन् र सुनः सुनः वर्ने न श्री से प्रेन् निर्मे । रेवर.इ.जैर.स.शर.बीर.त.चधुष.रंग.चै.रंट.चरेर.क्षूश्रश्च.तर.बीर.तयर.वीरश.ग्रीश. यात्यःक्रेन्। द्वायाने देवायां सर्द्वन्या श्रीत्रेयायायया श्राहः वियासेन्। देवा श्रीतः वर्देरःचन्द्रन्तुःद्रदेशकेःम्बद्रन्देवःक्षेटःह्रेवेःचश्रयःगुद्रायःविषाःर्यद्रन्द्रमेशः यन्तेरी । तन्निः यानन्यान्दायात्वन्नः नुः साम्यान्यः सुः त्वायायायायाः स्त्रीतः हेः स्त्रीनः न्वीयायाधीतालीता नेतान्यायायायायात्रात्वात्रात्रीयाधीतालीया तवावा या यो न या से दे । विषय यो दे । दिन विषय वा व्यव्याय । व्यव् सम्बद्धान्त्रीयायाः सेन् ग्रीः त्ते विवायम् कुन्याः साम्नीयात् । सम्बद्धायाः सेस्याः सम्बद्धाः स व्ययान्त्र-ताः वियापद्रास्त्रीतः है। या यवदावयाया विवास्त्री प्रमास्त्री स्वाप्ता कुरक्षिर रे हे लेख वहें र विथा वेर केरी रे वा वहवाय किर र धर र क्षेर हे के के चःकवाषालेबःन्दात्वेवाःचदिःवर्नेन्कवाषाःग्रीः इसायाः उत्रः श्लेदः हेदिः सेदः उद्याप्पदः यद्यायाः देवः योदः यः स्त्री प्राः क्रीः चुः च्याः योद्यायाः योद्यायः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायाः योद्यायायः योद्यायायः योद्यायः याद्यायः कवार्यालेका ने र्च्या के वाचक वाचक वाचित्रा में त्या त्यायर मुक्त से र पुरा हु ठमा मीर्या तदीर केंद्रा विदाना बदा दिए की तदा चरा श्चीत विदानी दाया केंद्रा तकदा क्ष्य मञ्जूषायाम्ब्रस्य र्ड्या श्रीया स्टाम्बर्य मिष्ठिया मिरा स्वर्धी सी सिर्म सिरम सिर्म सिरम सिर्म सिरम सिर्म सिरम सिर्म सिर्म सिर्म सिर्म सिर्म सिर्म सिर्म सिरम सिरम सिर्म सिरम ५८ वि न म्नव मिन्न मिन्न मार्ग्य स्ट स्ट मी की केंद्रे वि ज्ञानि कर के क्या देन को ५ दु खुर श्र्रा देन्वाक्षित्रः स्ट्राच्याका कोन्यातः नृत्युः सुवान्त्रते वाक्षेत्रः वाक्षात्रः स्वर प्रमानाम् । प्रमानाम । प्रम रार्देदः मेर द्राया मित्र विष्या मित्र विष्या मित्र विषया मित्र विषया मित्र विषया मित्र विषया मित्र विषया मित्र याप्पराञ्चीत् व्यूत्राच्या रवारतावाबनायते यातवीत् बुर्यायते त्वीया कॅनार्नेन स्थ विवा दिवेद रदा सर्वे रदा वी का बेंद्र पा विवा बास दिन हो प्रस्ते प्रसासी प्रसासी प्रसासी प्रसासी प्रसासी प्रसास वर्क्चित्रयासेत्रयास्य क्रुत्वरावदेः यस्रास्त्रे चेत्रया लेवासा सुदानस्र केत्रा वेत्रा त्रायी यक्कै.श्रूर.लर.जग्रन्द.मू.तपु.म.जग्रा.श.पत्रयामा दे.कें.यपर.क्रुम.मू.मू.मू. श्चार्श्वर वार्श्वर श्चित्र देव लिया यी स्वाप्त र विष्य देव हैं देव स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व यरः सुरायात्राधीतात्रमा देवि द्वीर स्टेंबार स्ट्रीन प्रवेश द्वी स्वर्थायात्रावर स्वराधीता स्वर् य भेदाया ५ में देश के या लुया के दार्प र में या के दार्प देश के दार्प प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्रा र्ने के के नियम के नाम क्षेत्रा अर्थे द्रश्य वर्ष प्रत्य त्रित्र वर्षेत्र या सुन्तु र स्री वर्षु र य र यस्र स्रो विक्रित वर्षेत्र व देवदान्त्रीयीव वदी पीव सार्केराचरायुदासदिरान्नेव पायादरानु दावनेव पाने राहे प्रविद्या ब्रि:क्रिया:पद्र:र्म्ब। यथा:व्याःयाद:प्यदर:हेब:पद्येय:अर्थे:वश्याःवश्याःवःसह्याःहः त्क्वास्री क्रूबाच्चापञ्चाद्वर्याच्युः वृत्र्युः स्रोत्से स्वाविष्यः स्वावञ्चे व्याविष्यः क्ष्याम्बर्ध्यान्दरः क्ष्याम्बर्ध्यान्द्वरा स्थानितः स्यानितः स्थानितः स्यानितः स्थानितः स्थानितः स्थानितः स्थानितः स्थानितः स्थानितः स्था

ञ्च भ्रुवा वाडेवा ग्राट से वर्ड वर प्रचेश व व सक्वा हैया से सावरे भ्राय समापार प्रचार प्रचेश स्ट्रा यर्ड् ख्रेत्रः ज्ञुन्य तकर कुं यो दाविषा हुः यर्षे विषय विषय प्रत्ये प्रत्य प्रत्य विषय । विषय विषय विषय विषय विषय विषय । क्ष्यायान्त्रीयायायते स्रीटा हे प्रस्तियाय र स्विता स्वारायस्याया वा वाराया स्वाराय स्वाराय स्वाराय स्वाराय स्व नवींका नेतर पर वाकी नवींका वालवा वातर प्रवींका वीर । पर वीका की वर्षेत्र यःमालवःश्चित्राःग्यादःश्चेरवर्देत्। यदमाः यदः द्वेदःश्चेवः स्वर्दः श्वर्यात्रः व्यव्यव्यव्यवेदः हो। ब्रिअ'नवतःर्करःम्क्रेत्रःके'नमातःसर्दतःसरःत्यसःग्रादःम्केसःससःतर्देन्'सःतदेःनम्ग्राग्रादः यालव क्षे विष्यास्य या किया स्था विस्तास्य विष्तास्य विस्तास्य विष्तास्य विस्तास्य विष्तास्य विष योन्या न्यूरिः स्नूनवाः श्रीमानेवः ने याहितः चलेवाः नेवः नेवः याहितः या वर्दे द्यार्टे अप्नेषायदे र्श्वेद दुवर्रे दुर द्राक्याय लेत् श्रीविद्येर याद्याये वर्दे सेत्। *૽૽ૡઽ૽ૡ૽૾ૺૡૢઽ*ૡૢ૽ૼૹ૽૽ૺઌ૾૱ઌઽઌ૱ઌૢૼૹઌઽઌૡ૽ૢૺૹ૱ઌ૱ૢ૽ૹ૽૽ૼઽઌ૽૱ઌ૽ૺ૱૱ૺ वेंद्र वी दर्रे अये देवा व द्वाद बिद्र अर्थेद व श्चीद पा बिवा वें वा प्येवा विवा वें विवासी व महेत्रचर्यायारेषायायोत्। मयाहे र्यसङ्ग्रीत् कीर्रेषासु से विदानाहर् त्रा वक्ष्यात् वाल्वनः भ्रीतः यस्य वर्षेतः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्षेतः यस्य वर्षेतः यस्य वर्षेतः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्येत्रः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्येत्रः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्येत्रः यस्य वर्षेत्रः यस्य वर्येत्रः यस्य ञ्चनःयरःवर्देनःय। ग्रावनःश्चेतिःहेर्यःवहेनःश्चेनःयःसेनःयर्वरःस्यान्,वसेःवःवदेःनगः वै तर्दे श्रेयमा यापीव वया वर्दे ता द दि स्थान सुर स्था समुद सम् शुर व तर्दे रु या शुर शहर यर्नेन र स्रुप्तर त्युर स्रुयाय दिया में । देश व स्यय उद ग्रीश स्वा प्रस्या से हींद यरःयदेःयःरे:ब्रेंयःवःसूत्राव्यवायवायःदवःसेदःयवेःयवस्यायःववदःवीःश्चेदःयःसूररे:धेवः षरः श्रुवः के श्रुवः दरः। श्रुवः दवः श्रुः रे धेवः षरः श्रुवः के श्रुवः क्रेवः विवाय। देवर ह्ने कुर यम दर ये प्रमाश्चिम सम्मर है द दर्ग देवम हिम भी देवम ग्रेत्रक्ष्यः भेर्द्रन्दः स्थान्यः स्थान्द्रः चरुषः यरः वित्रक्षः यदे वर्षायः यवदः र्येति स्ट्रेट त्र मार्सेट हे मार्से चित्र चुमायति स्ट्रा स्रोट पति स्रा पत्र मार्गी त्युमाया सूत्र प्रस्तिस न्वींका नेतरःक्षेरःरेःहेःबेकायार्चकात्वार्वीर्नेवाकःर्करःक्षेप्तन्त्वास्त्री श्रीरःक्षेरः हें वा बेबबार कर वा नुवेब वा परि क्षेत्र हे न्दा किया वा नुवेब वा परि क्षेत्र है। श्लेर हे लेका या है। यहे सुवा यर अदि प्युता क्रीका यसूका यदि के का आविते यार वियाय क्षेर हे यञ्जेरायात्र राष्ट्रीं र प्रवेश या ने प्रवेश के राया प्रवेश या तपुःश्चिरः इ.वे। क्रूबायर्था विद्यास्टरः मृ.स्चिर् क्र्या यपुः क्र्येच ता यप्याया विद्यापर नु:बुर्यायायोग्रयाञ्चराद्युव्यायदेः स्टायलेवाधेवायाये यावयास्ने हार्वे । । नेदेः स्रेट-दु-द्रश्रेष्यश्चार्यायेद-यदि-द्वेद्रिट-हे-दे। स्रेट-हे-प्युत्य-क्वीर्यय्याय-व्याप्य-ह्वेत्यः <u> </u> न्रीम् राष्ट्रेन प्रताय प्रते के राष्ट्रेन या न्रीम् रायते क्षेत्र हे ने के नाय के राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र तर्ते । देवरः भ्रम् अरः प्रथमः प्रवरः प्राप्त का त्यों भ्रमः विदा क्रमः प्रयापनः व.क्र्य.यु.राचल्.र्र.। यस्याव.वीययार्र.स्रीट.ह्यार्यरयात्र.वीट.क्र्य.ग्री.याया रेत ये के रदः मी कुद् या क्रेट केट की क्रमण यर है। दे या क्रेट या क्रमण यक्रेट प्रमा यालेबाया बोबाबाउदायवाच्याचे प्राप्त क्षेत्र प्राप्त विकास क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षे डेकायाधीदायाद्वत्यार्डकात्वुकाहेकादोव्वतायाञ्चीयार्केवायालेवाकाधीवाहे। हि:स्नुदा री श्रीट इंदि राजाया ने कार्या यो से दिन होता से साम होता स्थान स् इस्रकारी की विद्याचारी हराता से राय है राय है वा कुषा महिता वा है सामा है सामा है सामा है सामा है सामा है सामा

क्चीमालुर-विर-धीत-धराया वात्र मालव-धरादी-भ्रान्ता वार-धीर-पर्रे-हिन-क्चिया यदः वी मिन्यास्त स्वारा स्वारा विषयः संभित्रा स्वारा स्वार वृयाः भवतः चरः योश्रुः अप्तायाः व्यवसारो दः याः क्रुयः चतिः यो से सायहे सायादः विवास बेन्या नेवरक्तिन्द्वरक्षिरहेविन्द्वर्ताना द्वरहेविन्द्वरक्ति यद्रमाध्येत्रम्यात्। ययायार्स्सेनात्यात्रात्रात्रात्रात्रम्नात्वरात्रात्रात्रम्भवात्रात्रम्भवा શું ર્કેનિયા ફેનિયા વૈદા વિત્રાનુદા એસમા શુરાયો તેયા શું કેનિયા ફેનિયા પાયેત व। नर्देशम्बिन्द्रभेष्यभाग्यस्य स्थिति स्थिति स्थान्ति सम्बन्धित्र स्थान्ति सम्बन्धित्र स्थान्ति सम्बन्धित्र स यहेंशाग्रदाने न्दा हेशासु सार्वा यहेंशास्त्र वास्त्र विदार हेशास सुद्धा स्वीत लुय-तथाय-अर्हेर-धुर-इंग-प्रधिय-तर-धुर्वियाय-यंत्रा धिः यद्विय-पर्देर-क्रीय-मुग्रायाधीन'न्द्रोत्रायोन'न्दु'चर्योयाने'माययासून्यम्बर'न्त्युयान्नर'न्वयान'केयानेन्यया याययः मृत्युते वित्रे वित्र वित्र यो यो या यो या यो या वित्र । इस पर्वे पान्यायो भ्रम्यश्रु, देश्रम्थान्यश्रम् हर्ने सन्दर्मयान्त्रिः स्रम्भान्त्रम् स्रम्भान्यः य। हेश वितः श्रुप्ता सुरत्ति द्वो केवा वा श्रुप्ता सुरत्ति सेसवा उत्राय द्वीवा वा त्वा श्रुप्ता याः सः त्रिः क्वियाः पर्तेः स्ना प्रदासे वार्षे वार ५८:वडशयः क्षुः याः सुः तुरः विविरः वाशुयः विदेवः यो ५:५;वर्ष्ट्रे वरः विदः यवे । । श्लीः याश्रुयाद्रदायायदे द्यो स्तिया त्रुवाया वहुत के कुराया या स्त्रिया या प्राया वहुत । वेवा केव वराव क अव्वत वे अर्दे व यर हैं वा वा यर तर्कर कु वर भें दिन देवी वा यदि कु योद्दान्त्र व्यवस्थानेद्दायां विद्यविद्यात्र विद्यविद्यात्र व्यवस्थाने स्थानिक विद्यालया विद्याल योरीया. इं यीया प्रीया प्रीय प्रीया प्रीया प्रीया प्रीया प्रीया प्रीया प्रीया प्रीया प्रीय प्रीया प्रीय प्रीया प्रीया प्रीय प्री है। । ह्युः अरः में व्यवस्था भी नवस्था सुर्वे स्वरं । । ह्युः स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स

त्र व्यापासी । ने स्वीर तर्तः श्रुरिर्द्रशहेषाम्बर्धाराष्ट्रयाम्बर्धाराम्बर्धाराष्ट्रयाम्बर्धाराष्ट्रयाम्बर्धाराष्ट्रयास्य ঀ৾য়৻ঀ৻য়য়৻য়৻ড়ৣ৾৽ড়৻য়৻ঀৣৼ৻ড়ৢয়৻য়য়য়৻ৠৣ৽য়ৢ৻য়৽য়ৣ৾য়৻য়য়য়৻য়ৢ৻য়ঀঀ৻য়৾৻ঀয়ৗয়৸ देव्यायद्रम्यायात्त्र्रात्र्वयात्रीक्ष्यात्रकद्रायाय। सूनायात्रीत्रुवार्योद्रायायी र्वोब्राक्र्यत्री व्यव्यक्तिकःयाव्यव्यव्यक्तियात्रीःगीयःश्चरःत्रव्यव्यव्यः सूना ये निर्माद लिया निरम्भ के । तुन सूर निरम्भ ता सहति देन स् यासुर स्राक्ष्यास्य प्रति प्रति स्रोति स्रोति स्रोति स्रोति स्रात्य स्रोति स्रो चबुर् र्श्नेजः श्रुद्धः बुर विश्वराश्यः वरावा इत्रार्श्वा वा नव्यवा श्रात्वे वर्षः विश्वराष्ट्रः विश्वराष्ट्र श्चियान्दरम् महिषासुरमा सक्षियायाया । नेतर पुरामा सेन निर्देशका स्वीता स हेव'र्यार्श्वेर्'रिंग्रीमवर्यान्दायर्यायर्थाम्याया रदासूदान्वापदीस्राव्याप्याये ঀ৾৵য়ৣ৽ঀ৾ৼ৽৻ঀয়৵য়ৼ৾ঀ৽ঽ৾৽য়৾ৼ৽য়৻য়ৢঀ৽য়ড়ৢ৽৸ৼ৽য়৸ঽ৽ড়৾৻৸য়৾৾ঀ৽ঀ৵য়৾ঀ৽৻ৼ৾য়৵৽ यक्रेर.रेयो.त.प्रचित्रमाला,येथा.क्रैजा.यपु.रेग्रीजा.पंत्र्यालय,लरा वर.प्रिया. ब्रिंग्यदे भ्रेषा यस्य या सेन्सूर षी षा बुवाया यह्न तकर या यदिन हो सान्वा यदि ॱॺॣॸॱॻॱढ़ॸऀॱढ़ऀॱढ़ॿॎॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖख़ॱॻढ़ऀॱॺॗॣॸॱख़ॕॖॴॱऄ॔ॴॱऒढ़ॴॱऄॣॴऒड़ॱॶॹऻॴड़ऄ॔ॴऄढ़ॱॶॹऻॴड़ॸऀऄॱॶॱ याचीयःतरः वृत्रावता र से क्रूयः बीयपुः सैयत्रः शैयरः योवतायर्ट्रे वायतायह्याः हेत् क्षेप्र्यायात्राद्वादिरायते ब्रेट्र्यू प्रियाययायर यात्रया स्थापर प्राप्य प्राप्य प्राप्य प्राप्य प्राप्य क्चैं विद्राविस्रयासुद्रियायास्विद्रा दुयादी तद्या द्वीया क्चीयास्वित्र साम्यत्र प्राप्ति स्वास्त्र साम्यत्र स श्चिषायसूषायायापीत् यरायर्क्तयो द्वार्याया सुषाश्ची तुषादरा केषायर प्रायति ।

मूर्व या द्वायाया स्रोदे ग्वा त्वाया स्रा स्रो साय स्रोत्व या स्रोता या ते देन द्वाया स्रोता स्रो त्वाया स्रोता वयान्ता विवरः स्टायलेव स्रीयायायाते यो स्याप्येव साधीव स्यरः न्या सावस्यायाः तपुर्यं त्रे प्रति १६४ . प्रत्ये प्रश्ना क्षेत्र अप्रत्ये अप्रियं क्षेत्र प्रति विषये विषय हेंबा यहबाब निया यह स्वया यह स याबर क्रेन स्वाय ग्री मेवा पदे कुन नर हैं वाब रेग नर हैं वाब क्रेन भ्री वाबा बुःर्झुश्रामान्द्राच्यानाद्र्यामायायद्वासाम्बुश्चर्यामाञ्चर्यामाञ्चर्याम्बुद्रामाया तर्यायाम्यवान्दाः सून् नदान्यान्दा अवायाः स्वायाः विद्यायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्व त्राच्याया वावरायराष्ट्रीयान्येत्रायर्थाक्यातेन्।न्यवायोन्तरीयाय्यायते। ৽য়য়য়৻য়য়৻ঢ়ৣ৾ৼ৾য়ৼঀঀৼয়৻ৼৼ৾৻য়য়য়৻ঀৢৼ৾৻য়ৣ৽য়য়৻য়ৼ৻ড়য়য়য়ড়য়৻ড়য়৻য়য়৻ঢ় रदःवीःक्षेदः(वरःवेठाःकें:द्येवःक्षेतःद्वेद्र्यःयःविठवाःष्ठः श्रुरःहे। अर्वोवःयेःवेदः न्यवाः सेन् श्रीश्चवायाः सिक्षायाः विष्यः स्टार्थाः स्वतः स्टार्थायाः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । निः चलैत केंग वकर यदे क्वेंच न्येंत क्वेंश ग्राम क्षत या ये क्वेंच यदे क्वेंन या सत् वर्ने न ग्री यमः श्वरः ने प्रत्येतः क्षेत्रः सकेत् । यस्य स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स् गुर्राञ्चेद्वान्यर्द्धयाविस्रम् केसान्त्रम् मुक्तानुस्य क्षेत्रम् स्वर्धान्य स्वरत्य स्वर्यान्य स्वर्धान्य स्वर्धान्य स्वर्धान्य स्वर्धान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वरत्य स्वरत्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वरत्य १९४ म रें अधिर प्राप्त श्रुप्त पर्वे प्राप्त पर्वे प्राप्त विश्व के प्राप्त स्थाप के कि प्राप्त स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स त्रम्या वेजाः सुन्दः इसाम्यो स्यो न्यान्यस्य मान्त्रा स्मान्त्रस्य स्मान्त्र त्वेद्रायते वेषार्यायक्षायर ध्रेता दुवा कॅटा यर वुषा है। हत्र देवेषा श्रे । । देवटा यरे.य.क्ष.रे.क्षे.यपु.कें.यपु.क्ष्य.विर.धेष.याक्ष्य.त्र्र्य.तर्र्य.त्र्रे। क्षे.यपु.क्ष.

र्की:कूर्यायायवायाञ्चीय:ब्रैटि:रेट:याध्रेया ब्रोयायाचीट:क्यायक्या:धै:श्रुष्ययायञ्चेट. यन्दरम्ब्या क्रेवःश्चेवःवयम्वाययः सर्वस्य श्चेतः चन्दरः चलिः धैवःवा क्षेत्रा नसूत्र हे रदः वीत्र वी सु बिदः धीदः या वहें व यदे व व के दे हु। हे व मुंबाना मुन्दान्ते लेना नेतर हेन लेर विस्तर के ने विस्तर के नुः क्रें रायायति व रेष्ट्रेन् न्यायायने या उव क्षे तिरायस्यान्य यञ्जन प्रायास्य विवास न्यम् सेन् तिर्वर प्रकामस्य प्रदेवस्य । नेतर संस्थित या स्थित प्रसिस् यम्बारा स्वीरायरा से द हिंही वाया सुरत् सीतायर देवाया देवाया देवाया है। सुराधीताया धीतायरा *बेश'यदे'देश'बेश'च*श्चेद'य'र्ड्य'र्से । दिव'त्य'दे'खूर'रे अ'पीव'श्चेस'य'दे' खेर्स्स्यापीव' धेन् ग्रिका ब्रेटिंग उत् ब्रिका ग्राया हे क्रु निल त्युन त्र क्रिन ने मञ्जूका यम ब्रुम ग्रद्यास्य स्था देवसा के त्रिक्ष के त्रिक्ष के स्था है से स्था है योश्याक्तायावित्राचुषायञ्चेत्रात्रहेव्यायाद्वेत्रायाक्षेत्राचित्रायदेः क्र्यायानयवायाञ्चीताञ्चेदाविष्याञ्चनयाविष्यातुः तिव्युतायान्दरा। व्यवायाचुदारुवाः ष्रकृत्। भि.शृष्रश्राचर्षेत्रे न. त्रुवा व्यवतः चरावर्षेत्रा ने कृतः श्रुव । कृते ह्यूव । त्रा न्वायायनुब्राययावायञ्चुरावदेश्यह्वायङ्गिवदेख्यादर्देबन्दरायक्ष्यानुः र्वटा नेतर केश म्याय के न के सेसस्य तरी र स्वाप्त स्वाप्त ने न कर ही सेसस्य सु हु र द स्वाप्त दें। ।इसम्बान्ध्रियायदेः इतायरायहरा दयायि सेदा सेदा यायाया श्री हिराद हैता यहत्रयायाविराष्ट्रवायदेदेवायेन स्टायायायाये वार्या की स्था केवा हेवा वादा यहे । या उत्तर श्ची:बिर-विस्रायास्त्री:ब्रयावर्ट्याःसी:द्वीयायरव्दाव्याःसूर-प्येटा। व्दायोस्याःसूर-

केंबा भुति दे विति द्रम्म ना योद द्राया वित्त देवा देवा देवा देवा देवा देवा वित्त स्वापा योद श्री प्रदालवा देवा सहयानाधीत्। देति ध्वीरावदि क्षेत्राचमायात्राचदे चाउत् दुःश्चीचति श्चायमायात्राचित्रा शुःष्ट्रात्रप्रम्यतालकाः भिषात्रपुरायद्वर्था विष्ट्रात्रम् । अभिष्यः स्वर्श्वः म्बर्यान्द्राम्भी मेर्याया सुरावया यावित यावत प्रविव स्वन् योन् में विव स्वार स्वरं र यर्श्वेश्वरम् कुं, यथुं, रेट. रे. जंबा क्रीट. हेव. खेट. विश्वरा सूरे जंबे रे. या. कुं रे या. कुं रे या. कुं रे बुषायति वी दिव ही ह्वीया देखा द्वीया देखा देखा हिकाय विकास व क्षेत्राबि मान्याबेत्रायान्द्रायुम्याचेद्रान्द्राहेत्रान्द्रावेत्रायन्द्रान्द्रायुम्या यद्याः यद्रेन् अयावाः के प्येवः यो हेवावाः प्रदेशकेषाः स्नादः याद्रः यो प्रदः प्रयोधाः ववा प्रवादितः विवा यः बद्धिवाः ग्रामः त्येवायः ये विवाः ये विवाः ये विवाः यम् वदे वा उत्तः दुः क्रीः वदेः त्ययः क्रीकः यो दायाः य **୴ୖ୶୕୶**য়ॱয়ॢয়৾৾৽ৢৼয়৾৾৽ঢ়য়য়৽য়ৄ৾৾ঀ<u>৾</u>৾৾৾৾য়ৼয়ৼয়৽য়ৣ৽৻ঢ়য়ৼয় र्देव.र्यात.वु.र्टर.तपु.प्रेंचीयात्तर.वी.पपुर्व वियाचीशीरयात्तयायी क्रूयाजीर. चदः क्चें-द्रद्रायाध्येत्रायमा दे केदान्द्रायमा खेमान् । वेमानुः क्रायमा विमा रवात्यान्वरार्धेवायास्नेवने वास्त्रम् क्वीलियानु स्त्रीयायान्यान्यस्य स्त्रास्त्रम् वर्षे योवेयाबात्तरं योशेट ह्यूबाचीट क्रायेश कोट त्राये होट त्यहूय टेट चुबारचा ची ह्यूब्या हो ह्यूब्या हो ह्यूब्या देन्द्रअत्वेदन्ति । १८५-यायेदावन्ध्रुदाचरायर्द्दायवेग्ववुदाख्वायाधीकेयाञ्चद तवादः रेते स्ट्रेट वयाप्यरावन् स्यायन् स्यु स्वायाया विवायते नेया रवा ग्रीया विवा यर र्थे क्वें तर्देव वर वर बेंद्र डेंद्र क्वें या वक्क वा वर्षा श्रेद्र से ते हिर त्येंद्र वेंद्र खेंद्र प्यर यनरक्कुः योर रया रेया व कुं या देया केया केया राष्ट्र राया खेर यो राष्ट्र व रहे विवय यो रा केंद्र'दे। अ'देवे'क्केंद्र'कें ब्रिट व्यायहं अप्तहं अप्तावी व्याय केंद्र विष्या कर्षा कर वार द्राये केंद्र पर

वियःयन्याञ्चः यःयञ्चः श्रेयःय वरः यक्त्याः वीः लयः यास्टः।

चलैव रदः वी खेखका व रदः या खूद खेद छैवा खेद व रदेश छेवा खें। वावतः कृ खेरः युवा स्कु।वदी:म् न भें बिवा वीया सर्वा भें भें दिन न प्रा से के स्व भें भें से विवा से स्व भें भें से से प्रा स यश्रयात्रश्रायस्त्र। न्नाः स्वानः विषाः मीश्राः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः स्वानः न्यर में प्रवेश्यर प्रवेश प्रदेश पर्ने व प्रयः या स्त्री प्रवेश प यहवाक्षेत्रमान्त्रीयार्क्याक्षेत्राक्ष्याक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राच्या यद्यस्त्रीत्र्यायार्क्याक्षेत्रा मी अर्थेट सूट दु मह से हैं अर्थे ह से दिह हममा से द सूर से कि से स्वर्ध से हिंद से स्वर्ध से से से से से से से नेति: ध्वीर-१८१ प्याप्येत् व वी विष्ठवा केत् भ्री क्रुने रहा वा प्याप्येत् प्यते । । ते व्यास्म्रवका नेत यन्द्राचित्रः स्त्रेयाः यो त्यत्रुः सम्बद्धाः तद्दे स्थू स्ट्रान्ते स्वरः देशे स्वरः हित्रः स्वरः हित्रः स्वर् बूट न सबत प्राची विषया सेट ही र है वेट व है न हुन र व याच्चिया । १९११ क्रियाम् १८ के सम्बन्धियाम् स्थान्त्राम् । १९ मा स्थान्त्राम् सम्बन्धियाम् । वहिषाबाओन् द्यीर प्रविद्देश्वित षाबुद प्रविद्या विद्या के क्षेत्राम्मद षाबुद्या विद्या क्य.र.भ्रीयतुः भ्रीयतुः विद्यत्ति । योश्जायायनेयमास्युविषायमास्युविष्ठायास्युविष्ठायास्य त्युद्दित्रिया । क्रेंत्रदेतिः श्रूद्दाया सुराध्यस्य । प्रदेश्याक्ष्यः । प्रदेश्याक्ष्यः । या । वर्षास्त्रीत्राद्ययाश्चीरे वेरास्त्रीत्रात्रार्थेव । वेषास्त्रवाः महाविष्याः वीषाः मुन् श्चेर तथार्यायद्यायद्यायस्य सङ्घर विदा क्रियाय्याया विवाय प्राप्त स्था मक्या मिश्रामा मार्गेर तार्थ का महमारी विकास

कु: ५८: ये: हेव: लेट: विस्रका: भी ५: २०: क्री ५: या

व्या अर प्रश्रम स्थित क्रिया अक्या मुन्ति सुवा या त्र सुन्ति । देश प्रश्रम स्था प्रश्रम स्था प्रश्रम स्था स्था

ह्र्यायाञ्चीवाञ्चीदायायायमः द्वीवार्ष्या

हे स्वाका श्रीत स्थान कर स्थान विश्व स्थान स्था

र्ट्या श्वाका वर्श्चेर विराधर उत्र क्षेत्र राज्य वर्ष सर्हर या

विद्यास्त्रीयात्रयमात्र्यात्राच्यात्रयम् स्वरायम् स्वरायम्यम् स्वरायम् स्वरायम्यम् स्वरायम् स्वरायम्यम् स्वरायम्यम् स्वरायम् स्वरायम् स्वरायम् स्वरायम् स्वरायम् स्व

<u>षियः पर्यासः अपायः अपायः प्रकृताः वीः लयः वास्रुरः।</u>

वेंद्रायदेंद्रम् क्षेट्राहेयद्द्राया महिषाम् विकास

१वेर्-१५मा सेर्-ग्रीसर्वेविवस्र सुर्या

रट.तृ.पुट्ट.रत्तवा.श्रर्.श्री.शर्ट्पुट.इंश.श्री.पचट.यंश.चन्द्रता कूर्य.चस्रैज.च.रत्तवा. योन् नियान् नु सेन्य प्राप्त का प्रति सूर्य प्राप्त सूर्य का निया प्रति स्त्र प्राप्त के स्त्र स याक्रेव में तिहैव हेव द्वर धुव कुया में लिया चुन चुव के विर है हों न या ययायान्वर्यायायान्यमुन्यायीन्यार्थिनार्वेन्यये गुन्रस्य यो स्याप्तान्यम्य स्याप्तान्यस्य स्याप्तान्यस्य स्याप्त ब्रैंचर्यायान्दरः ब्रेंचें व्याय्यव्याये व्यक्ति । क्रियाया विवायवान्दराव क्रेंवायां व्यव्यायान्दराव क्रियाया बैयात्राचर श्रीट श्रीचया क्रीकिर होत्राचा वालव प्रट शे अर्थेट्या यदि श्रीवाया वाश्रीत यरयः यः द्योः श्चेरः क्रें यः श्चेर्यपुरः यावयः लेयः श्चः यदेः श्चेरः श्चेरः यावयः । यदयः श्चियः देवे विषय त्वर पश्चेत प्राप्त प्रम्य श्चित हे है है है से प्राप्त हत विर पर्से त त्वाु या श्ची में क.चर्चुर्या श्रीट.क्रेंचयाः यष्ट्र्चा.पै.शु.सै.ट्रट.क्रेंचयाः संचयाः क्रेव.ट्रट.केंव.तया यरयाक्चियाने हेन क्षेत्र स्वाप्त स्वाप चक्किन्यः व्यव्यान्त्रः विदः क्ष्यः श्रेश्यश्चर्यायः क्षेत्रः विवाः वीयः वार्वेन् : श्रुवायः वार्श्वेन् या के ले व। ने वे श्वाया श्वन्य राष्ट्रीन या स्रो क्रेव या स्टार राष्ट्रीय बिर्यर उर्व पश्चेर रे अरब क्रिया वाबव यय श्चेंब यय क्रिकेर वहन। रेवर ५८। ७५:यरविक्तिम् स्वायास्त्रिययान्दः क्रिन्यस्त्रस्याञ्चार्येनः त्रअ.ब्रुच्।श्रप्त अ.चर्श्चेट्र.त.प्रश्रप्त चीर्या श्रुच्या व्या हिया विषय योर्चयायाः वित्रः भूके तदः दरा विषयाः वृत्यत्यायद्याः क्षेत्र सर्दे वर्षः वर्षः कुः

यर-तुषाः खुत्र-देर-वेरकी विद्याचि विदेश वर्षाः चुत्रः व्याप्त विदेश विदेश विदेश विदेश विदेश विदेश विदेश विदेश व श्रेश्रश्च अर.मू.स्य.तयु.बुर.र्ने.य.स्ट.। श्रद्धाः अर.मू.श्रास्त्रीः त्राप्त्रयाः विवायकुः सूर्यः स्वायकुर् इ.स.वाडेवावीः लेट विस्रकाः हेत् दर वडकायते कुत्रः वर्गेदः ५८। क्यायान्द्वीतया थोःवेयान्दाः धेवः ५वः क्वीः कें त्यस्याः सूर्वेवायाया है सूरः थे:वेश:रद:बूद:वी:वर्गेद:याख्य:याख्य:था:बूद:वा दे:हेद:वाखे:वाद:थश:कुंथ:हे: ॔ऄ॔॔॔॔॔॔॔ॾऄ॔॔ढ़ॣॻऻॴय़ढ़ड़ॣ॔ॸॱॿऀॳॶॣॸॱ॔॔ऀॻॕऻ॔॔॔ॻ<u>ऀ</u>ॷॴॱऺ॔ॸॱॻक़ॴग़ऄॕॖॏ॒ॸॴऄ॔ॸॴऄॖ. न्याची भेर्व मृत्र सार्युका सरायक्षा विरायक्ष याव्य श्रीका त्याव मुं से निर् यर्द्धरम्यायोदायदे विदायरादु तयवायाय। दे द्वां वी प्येव प्रवाद पर्योदाया यञ्चा १ प्रमुषाया से प्रते त्रीत हो । दे प्रवाश्य वर्षे प्रमुप्त से प्रमुप्त वर्षे र प्रमुप्त वर्षे र से प्रमुप र्रात्त्र्यात्र्य्यात्र्यायात्र्यायते प्राप्ते वित्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र यरे क्रुट्रिन् वेर्द्र के क्रुट्रिन् वर्न् नु सेर्प्य स्तु स्तु स्तु संदेश के विषय स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स यदे क्रेंच्या क्रेंच्र नु चहरा दे खेद बिर विस्थाय वर्गे न केर मानु र चर नु या रे व्यय र्दर-वरःग्रायम् वय्यायाह्द्र-यरःया ३५। क्षेत्र-वयःवर्गुवःयवःकुरः ३गः यो द्यीः र्वो र्द्धवायाक्च के व विर क्वा येया येया येया या विष्ठा विर येया विषया प्र यह्मा हेन नियर ध्रुमा क्रिया येदि सन्ति नियम लिए। विस्था ने स्था नी लिया मार्चर पर रेसेन त्रमान्दात्वेयानते न्यानकतः सुरायदा सर्दायाया नुदास्त्रमा मुन्ता सुन्ता सर्वे यदे ह्रुक चहेन हो । गाुक अद्विक वहेन वा ह्यो होन की वा वा हिन वहेन

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

१क्षेट हे पहु: ५गार घेंदि सर्देद तकद कुंया

यिष्ट्रिया स्त्रीत है यह नियम स्त्रित अर्दे ते तक देखा वस्त्रीय वास्त्र स्त्रीय विश्व स्त्रीय यमायन्मायते सृत्रे र्या पुः सी प्युया स्त्रीट प्रतिति यहिवा हेत या न्यट स्त्रुर प्रति र विराधिका यद्वावायदेवात्रेवात्रेवात्रेवाच्याचे क्वायदेवित्त्यालेषाच्चायालेषाण्येत्। देःयाचुक्कायदेविः श्चीर ये लिया द्वाप्त वितु पाया कर्माया लिया वित्तु रूपा वित्तु रूपा वित्तु रूपा वित्तु रूपा वित्तु रूपा वित्तु जाययात्राद्यः क्रांत्राप्ताः विदालीया व्यवसाय हिताया सामा व्यवसाय हिताया सामा विद्यालया स्थान ता.शरश.मीश.द्रथ.क्रुथ.क्रीर.त्रु.खेश.वी.च.यहवा.हेष.वी.विश्वश्वाता.त्रूरश.शी.चीवाश.तपुर શ્રેમશ્ર'ન્વર ક્ષેન ક્ષેનશક્ત્રેન એ સામાન તામ કેનશ ક્ષેત્ર શામાના ક્ષેત્ર શામાના ક્ષેત્ર શામાના ક્ષેત્ર શામાના ढ़ोट विस्रयः गुरु त्यया विद्याय प्रत्याया को टाङ्का प्रताय होया या <u>ब</u>ुदा य राष्ट्रयाया नश्चेन्। नुसानकतः सहन् केन्। श्चेन्। कुलाये सेन्सा ग्रीसा हुन्। ग्रीसा थे। वर्षःवायोत्तात्रम्थाः वर्षः चलवा वार्षे सेन् क्षे हेर रे त्रहेव वार्षवा वी विर स्त्रवा त्य वर न्या त्रहेवा या व। ने प्रवित मिलेयाया प्रति केत स्त्रीप प्रवित द्वीत स्वया शी सह्य हिंगाया पहुरी हिंगाया रे प्रेरी

स्पुन्यस्य स्वतः स्व द्या ग्रद्या द्या प्रत्या दे द्या रे रेवद क्वित द्वा प्रयोद प्रया विदाय रहा तयम्बार्यात्रीत् यत्रे लितः श्चीत् यात्र वित्रायते वित्राप्त्र महत्वा विषया वित्र वित्र स्वर्धाया वित्र वित्र स ने नवा कुं के नदः क्रेन वादः यथा बुदः च नदः ने नवा वी क्रेन नदः च र नदः ध्री अदि अवदः य इस्रायरायहवास्रावेदाद्वीदायास्त्रा देप्दास्त्रम् देपावेदावस्यास्त्रीदस्य ঀ৾৴[৻]ঀয়য়[৻]ঀ৾৾৾ঀয়[৽]য়৾৽য়ৢয়৽য়য়য়ড়ৼ৽য়য়৻য়৾য়য়য়ড়৽ঢ়য়য়য়৸য়৾য়৾য়৾৴ शह्रें कुरा अवयः तथा मुश्या क्यें की अवूर् हैं या ही रार्ट है पर विश्वा की अवूर रे प्रा થી.જાદજા.[.][.] થી.જા.થી.જાજૂડુ.કુરિ.તા.થી.જાજૂ.જાલમ.તુરિય.તાડુ. દીત્રોજા.વાર્કીને.તેન.કુર્ય.તાજા.થી. मक्रुः लूट्यान्यान्य दुर्वा सम्मान्य स्थानियान्य सम्मान्य स्थाने निष्य सम्भाने यानेवार्यायः देत्र केत्र क्षेट येदि श्रुत स्ट्रम् स्वार्यायक्षेत्र स्ट्रम् द्वार्याय नेवार्यः यदः विदः विरायस्य। है स्त्रेन स्ट्रेंट विस्रमायहिया हेन की हो स्त्रेन स्वायान्य विरायस्य यदे:बैट मी:भेंत्र न्त्र न्ट तर्चे र वार्स्चियायायाँचेया नु वासूयायदे बैट विस्रयाया बुट वर मुग्रायाम्भ्रेन् केर भ्रेत्रायायान् रात्रायकतः सर्हत्। नेते केन्ते तेत्रात्रायान्याया योर्वेयायायाय्येयाळेवाळेवायायायायायायायायायायाया हिन्देन्या देंद्रअयात्र दे प्वतित्र म् ने मार्थाया केंद्र द्रायो ने अद्याम हु . केद्र या देंद्र सूद सम्मदाया विर द्वर वश्चरहो वास्रुर वी द्ववाय द्वूर वादर विर सक्द की स्रुर वस्द सह्रो ध्रेयायायभ्रीतः भ्रत्युदः वित्रत्यवायाः श्रीयायवतः प्रयायाः वित्रायते । यार्चेव द्रायास्य द्रया श्रीय श्रीट द्रव रहेट त्यया श्रीय प्राप्त या बेट्य प्रसूर्व श्रीट हेते. यन्द्रग्रम् क्रीअर्देदि हेश्य्युत्व्वन् व अर्वो व दिन्द्रन् न्यवा येद् क्रीश्राविन विस्राया व वृत्

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

व्याश्चायानञ्ची न न्यानस्य सहन् यदि श्रु सेदी हेवा सामि ने पीव यर वास्ट्या स्थित

अभेर् रे महिषा भीर्मिर का यात्रवाया सेर र सूनाया

सर्ने ने निष्या मित्र वित्यायात्र वाया सेन् नुसूत्र या निष्या स्वाया सेन् वित्या स्वाया सेन् वित्या स्वाया सेन् वर् अप्येव है। रद रे से से दि ह्ये वे विकाय दे हैं दूर वसूत वस सदे हैं वाहिस ही श्चित्राची श्चित्राचा में दिन्दु निविद्या स्था से निविद्या हो। श्चिम् व्याचित्र स्था स्था स्था स्था स्था स्था स मुवा यदे अर या क्रुया श्राट्या यो दार्शी या तुवा व्यायक्वा पर मुंगी यो वित्र प्राट्या देवा प्राय्य प्राय्य प्र चिर्यास्त्रभ्यायात्वेषाः वीयाः सुरायाः पश्चेत्रः यदे स्यास्य स्याप्तरः स्रेवाः वे विष्याः पास्ययः ग्रीभ कें भागी विवेर थें बार्य प्रीते ह्वें र्राट्य सक्समायर ह्वें रावा प्रीत व्या विर्वे हिर्पी ॔ख़ॣॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॹॴॾ॔ॴऒढ़ॣ॔ॻॿॖऀॸॱॿॖऀॴॻॱढ़ॾॹॱॻड़॓ॱॻढ़ॱॿॖऀॸॱॿॖऀॱॸढ़ॱॶॾॴॻॸॱक़ॗऀ॔ॸॾॣऀॸ॔ॱ याधीत। श्वायापश्चेत् क्वाके प्रतिक्रिक के प्रतिक्र के प्रतिक्र के प्रतिक्र के प्रतिक्र के प्रतिक्र के प्रतिक्र रवाचवायवे र्स्वा क्षेत्र हे यदादात्रार सूराधेवायश्वाकेशामादेवाकीमा कुरासूद्वा ইবা'অম'ম্বৰাম'নষ্ক্ৰীদ'ম'ৰ ম'অমম'ষ্ক্ৰীৰ'অম'উম্ম'ম্'ইবাম'মন্তি'নম'ফ্ৰী'ব্ৰী'দ্বিদ'দ্ব स्रम् स्रम् स्टेन् यम् यन्या वीयाययया स्री । । ने प्यत् कन् श्रीया सर्वेत से दिन्दन न्यवा योन् श्रीकान्द र्योत्रः सुन्नाकान्य सुन्नेन न्यानकतः यहाँन सुन्यः सुन्नेन स्वाप्त सन्ति । सन्ति सन्ति । सन्ति स 511

यभ्रियायायरान् ह्युराया विन्यायराज्य विकासीया स्वीया स्वीया विकास स्वीया <u> कुपःशेस्रयः द्यतः या केतः या राजात्रयः पोत्रा पर्देनः त्रालयाः पर्दतः श्रीयः श्रारः पर्दरः श्रीः ।</u> यर.वृष्यःभेद्। षर्याः क्रुष्यः वेद्दः द्यम् भेदः ग्रीष्यः दरः येः श्रुष्यायः वश्चेदः द्याः यउतः सर्दि-दुरावयान्द्र-तदि-सूर। ययानेव क्रीयातकेद नदि सेस्या उत्पीव पर র্ক্রমান্ত্রীন:ব্ন:অর্ক্রমঝামীব্:ব্রুঝামান্সানার্নির্বাঝান্বন:অন্বন্-উন:স্ক্রীর্বাঝমানচ্নার্ক্রব্ गुर्तावर्ष्यान्त्रे वित्राचे स्त्रीय क्षेत्रे व्याप्तान्त्रे वित्राची स्त्रीय ळुवःश्रेश्रश्नाद्वयः श्रुरः हेत्रः देः वह्रश्रः श्राधवाः हुः वर्षदः क्रुः वरः वृत्र वर्षः क्रुं वरः यम्भाम् वीत्रः श्रीत्रः द्राप्तरः दर्षदः भ्रीः क्षुः तरः वैवा डेमायः भ्रेवामा सेमायः सेमायः हेनः येतिः मुग्रायामुन् सर्द्रायरासा वर्षेत्रायसा विदायरास्त्रा दे तदा वर्षा विदरा য়৴য়ৢ৾য়৾য়৽ঀয়৽ঀঢ়ঀ৽য়ড়য়ড়ৢ৾য়ড়৾য়৽য়য়ড়য়ৼয়ৼয়৽য়ৼ৾ঀ৽য়ৼয়৽য়য়ৢয়৽য়য়৽য়ৢয়ৼয় दुषाः पुत्रः देटः दे। तङ्गवाः केतः ग्राट्याः कोदः सम्रादः प्ययः ययः ययः यञ्जादाः कुवाः दृदः । खिरायरातुः क्षेत्रास्त्रेत्वया सर्केना हुः क्यूरायदे । त्वरानीय विसायाः स्नात् केना कंसायारा सा श्चेरायर प्पेर्या तहें दान्यो प्रति प्रमेशया हेदा म्यार्था सेना या हेवा सहेरा पर मुरापीर । र्याः अहेशः यदिः यशः हैयः ईयः यदः या च्युत्रयः यरः इतः ददः वेशः विदः वताः येदः यः यावर्यायते स्रेटा यञ्चायाय द्वायते प्रेटायते र स्वित् स्रे याश्वरा क्वी हेया ह्ये र केया स्वितः য়ৢয়য়য়য়য়য়ঀৼ৻ড়ৢয়৻ঀৢয়য়ৼৢ৸ৼৢ৸ৼ৻ঢ়ৼ৻ৼৼৢয়ৢ৽য়ৣৄৼৢৼয়ঌয়৻য়৻ঀৼ৻য়য়৸ৢঀয়৻ बिर्नायर पुरिवें ब छिर हें विष्य यदि लेखार वार्क पा बुद पुर से दाय ন্সুন্ম:দ্বা यद्यःचराक्रियः वयः श्रीयावयः प्ययायाः योग्ययाः उत् क्षीः देवः दुः दृदेशः वक्कुदः शुवायाः वायुग्रः

वयान्ययायायायाययायच्चायान्यस्यायान्यस्यायायस्य য়ৢॱয়ॱয়৻ৼঢ়য়ৢ৻য়ড়ৢয়৾৽য়ৼৢ৾ৼয়ৢয়ৢয়ৢয়ৢঢ়ৢঢ়য়ৼৼ৾য়য়৽য়ৢয়৽ড়৾ঢ়য়৻ড়ঢ়য়৻য়ৢঢ়য়৾ৄয়৽ঀঢ়৽ श्चेत्याचरामह्म। दे.चल्चेत्राचीन्यायामव्याचित्राचीत्राचीन्याचीन्याचन्याचीचित्याचीन्याचीचित्याचीचित्याचीन्याचीन्याचीचित्याचीयाचीचित्याचीयाचीत्याचीच्याचीचित्याचीयाचीय्याचीच्याचीय्याचीय्याचीय्याचीय्याचीय्याचीय्याचीय्याच लेखान्त्रन्द्रियाम्। देःचलेबाम्बेषायायान्त्रेद्राक्षीत्र्यापदे सुवाद्रान्याया चलेत् ते लेया चहेर् प्रवेश या चलेत् चीया यते ते या वालया व्यया प्रवास के मा की युवायमावन्यायवे । श्चिरामान्त्रायवे विदान्यामान्या सुमामान्या । वतुवायायते दुर दुः क्षुेवर तुवार्येद। यर या क्षुवा ग्रीत्वया यर्षेट वार्यया क्षीया सूवा गलमः मुन्दाने निवायायते क्रिंस्यया मुन्दायया मुन्दायया मुन्दाले निवायाय स्थापने स्थायया मुन्दायया मुन्दायय क्वाने क्षेत्र यान्या यदे बिटानु प्पेन् वादवा वर्षेत्र सुटायर केंबा क्षेत्र न्दायकं याया येन वियायाश्रीतायदान्त्रे स्त्रीयदेशकुर्मेत्र क्ट्स्युर्गित् यदे यत्र मिनेयायायदे र्र्युत् यया ५८:५वो:इन्द्रेन्द्वत्राके:बेटःवाब्दायार्द्धर्यःत्त्रःवयःवःयेदन्द्रे। विद्नयर्देन्द्रा पर्दरायर विवास में स्वाप्त क्षेत्र मा सुरस्य। विवास में स्वाप्त स्वाप् तहवानन्दा वीवरायद्याक्चराश्चीस्यानायदेवास्यान्तित्वानारायदेवा वर्त्रा ।रेदुः द्वीरावन इःवह्यायम् वः सः स्ट्रां वार्यायाः वार्यात्राः वयात्वाः सः भेरतनुः चेत्राच । विविद्यः केषा शक्का सकेषा वर्षे रावा वेत्रा निष्या येत्। विवानी ययात् सदेव सुरायर्वि सुराहे। १८५ ५८ स्ट्रीट हेर्य यद्वा

कुन्नार वर विवा । डेशर्स्ट वी श्रेश्राय द्वायर न्वायदे न्नाय वहत ये न्ना बिट देर हुं नदे त्र द्व य द्व ये विट देर हुं नदे हुं विर ये ये ये ये ये दे दे त्य विषय तःभिजायपुःर्ययात्रायभ्रीत्। धुरःर्यातपुःभूयत्राजात्रात्रात्रायत्रायात्रीयात्रा इया परुषा स्ट्रेंट व पर्ने पा रुदा मुंदि । यह प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त । यह प्राप्त प्राप्त प्र नसूत्रा सुरुष्यत्रयः स्टार्ट्स् ले न सुर्वाया निवार्ति लेताया या स्वाया स्टिन्स् विवास स्वाया स्वाया स्वाया स्व म्रोट्स्मे स्क्रम् सह्माने स्वाप्ता वर्स्स् स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान स्वर्धान लुना । भारेचा.बुर.ची.उच्ची.च.उड्डेच.ची.दुना । कुन.चीश्रीरमा.सूर । भारेचा. बिट तर्देर से सुतर सुन्यर मासुरयाय प्रता विट तर्देर तसमायाय सेन यामाबन येदःयदेः में दिवः प्यदः त्वायः यः ययेवः है। यदें व्ययः यदेः यः इवः श्चीः युदः શ્રેશ્વરા સ્થાયા કરાવે : ર્ક્સેન :વાયા શ્રી: ၎વદ : વીચા સા વી દેવાયા સુ: સેન : શુદ : રહ્યા વા : સુ: વા यक्ति। योश्राम्याश्रास्य स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वीधित स्वाधित स्वाध भ्री: या यो विषा यो व्या विषय प्रति स्वाद स्वाय विषय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्व यमा ६५ व्रेम ग्रीन्नो तनुब वे योगमायम लुगमाय मेना यम लुगमाय महान पर भूतः भूवः बुग्रयः वद्ययः यव्ययः भ्रीत् द्वीः यत्रः स्वीतः वितः। येग्रयः यत्र्ययः यद्वे स्वीतः वन्याम्भीत्वम्या भ्रीरायदान्यादेयायात्वयायात्वे वयम्यायायाः भ्रीरास्त्री देन् अर्ने रु:वने व उत्र हु:क्रुेशय दे 'अर दिया य हिन् या देशय वित्र थित लेश ग्राट याशुरुषा नेतरः क्रुवः याञ्चयाः याशुरुषः यत्तेः येवः प्रवः याविः श्वः न् रः यत्वनः केवाः

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

तक्रम्यम् विद्वा ।

तक्ष्मा प्रमानकरः क्षेत्र त्यमः क्ष्मा स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वरः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वरः स्वर्वरः स्वर्वरः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्य

हेन-८८: में र विभाय में में त्रात्र स्थाय स्थित क्षेत्र होन विदायात्र या

देन्द्र-द्र-द्र-द्र-श्रिक्तं क्रियः युद्द- व्यक्तं क्ष्यः व्यक्तः व्यकः व्यक्तः व्यकः व्यवक्तः व्यक्तः व्यवक्तः व्यवक्तः व्यवक्तः व्यवक्तः व्यवक्त

यर्चर क्र्य द्राप्त्रा स्थान्य विभाग्या स्थान स् यान्त्रान्यान्त्री सुन्योन्द्वीन्यम्भून्योत्त्रम्यान्यम्भून्योत्त्रम्यान्यम्भून्योत्त्रम्यम् रुषःभ्रम्यारुः सुद्दान्यतेःभ्रम् कारबेयाये देवा सेन्। देवे सुरावस्यारुन् न्यीया गुर-वर्-वर-ध्रेर-वा-व्युष-धेंवि-क्ष्ववा-क्षेत्राचा-व्युर-वर-ध्रेर-ध्रेर-ख्रेर-षा न्युर-व योष्ट्रेयाचीयाकेषायायायीवायरायराष्ट्रम् स्ट्रेन्ने केंद्रा याचायते वया स्ट्रायक्रया चलवा सह्र ग्राट केवा या सुषा की वाहिषा की खेर राजगाव ग्राट रहर । दे वाहिषा ग्री विद यरक्षे स्वाकाञ्च कोन् मुक् कोन् भूकः कार्येदे । यया या वाषका स्वेन् प्रमा कार्येकः म्रेट-र्-चल्यान्याम्भारम्भारम्बयाद्या मुद्र-भीत्र-भूयान्य-भेरान्य-भीत्र-भीत् गहरा रचुग्रथायः श्रुःगरः रुदः त्रयः विद्यो देवदः स्यायः सुः सेदः सुदः सेदः गीः त्यायायास्य न्त्रास्य स्वार्थयास्य स्वार्थयास्य स्वार्थयास्य स्वार्थयास्य स्वार्थयाः स्वार्थयाः स्वार्थयाः स्व लूर्जा विष्युष्यक्ष्यक्ष्यः क्ष्युः स्वान्यक्षः स्वान्य स्वान् विद्युत्रा अर्देरः दन्त्वायः श्रीक्षुः चः स्टः वीयः श्रास्टः से केरिः चतेः द्यः चः लिवाः द्वीया भ्रमामिक्रानुसानुसाम् नारावसूनायस्य स्रमान्त्रेरान्द्रान्य स्रमानुसान पर्वेषायः वराणः वेषाः ग्रीतेर् सः तयायाः परातश्चरा श्वीरः श्रीयाः पर्वेषाय्याः स्वीयाः स्वीयाः स्वीयाः र्थेन सेन ने के जावम खुर्याय की । युर्याय विने संस्था मियाय की या मियाय की साम की या मियाय की साम की या मियाय की साम की स वयायावरायाचाहरायो राज्या याचीवायाचीवार्याचीवारायोवारायोवार्याची द्यायदी द्या है त्युका क्षीय द्या सुरका ध्येषा । क्षेत्रा क्ष्या दुवा त्युका क्षीय द्या सुरका द्या श्रेश्रयः क्री. चर्या विषयः चिश्वः चार्षेत्रः चार्पेत्रः चार्षेत्रः चार्षेत्रः चार्षेत्रः चार्षेत्रः चार्षेत्रः चार्पेत्रः चार्षेत्रः चार्षेत्रः चार्पेत्रः चार्पेते चार्पेत्रः चार्येत्रः चार्पेत्रः चार्पेत्रः चार्पेत्रः चार्पेत्रः चार्पेत्रः चार्पेत्रः

हेना[,]त्रह्य,चतुःह्रभःशुःश्रःतवदः,चरः,नश्चनभःतः,चारः,वः,चार्दः,तः,चेतः,स्रेटः,नुः,चात्रभः यं विवा त्र वृद्ध से विवा देवा देवा स्वा सम्बन्ध व दुस्य वास्त्र स्व व दुस्य विवा व दिस्य विवा व इस्राहेग्। ५८.५ सेदार्श्वस्त्रहेग्। ५८. सार्यस्यायदार्श्वसाहेग्। मे न्यास्या द्वीत्रा वरिः नवरः नुः से विक्रिं वरः वारः यः वाक्ष्यः वेरः से वायोरः वरः वर्षाः वरः सुनाः यरः सुनाः वरः वर्षः वायो वरः यमायोपराव्यात्रव्यात्रव्यात्रात्रव्यायात्रात्रात्र्यात्रक्ष्यायस्यात्र्यात्रक्ष्यात्रम्यात्रम्यात्रम्या यारःयान्द्रन्देश देख्ररःश्चेत्रायायाद्दःयेरातुःस्यायीत्रास्त्रस्यायस्त्राधिश्चेत्रा ५८। देवर पञ्चे सबेश या वै इव बिशाय दे देव प्येव। ५ ये राव। तु छ्या यी। હિંતાના ત્યાના ત बोरावकरातुषाने वार्नेरावी क्षेपार्द्धताकन वाष्यायर द्वा श्वायाय विवादा वार्वीवा र्थे देन न्यम येन ग्री भ्रासिन सेन सम्मायस या व्यस्त स्वर्म स्वर्म स्टर्म है। स्टर्म है। मार्डुमा हु सम्मिन से दिन न्यमा सेन है सूर यने क्लिन नु मुस्याय विवाय क्लिया बर वा न्द्र भू वा बुवाय सेवाय है त्यवा यदे त्वनु हो न त्यय हु ह न प्येत त्या त्रश्चानाम्यम् सेन्यम् । नेन्यान्ने सर्वेन् होन् उसान्त न्याने सेन्याने योष्ट्र क्रि.श्रूर्य देयो, यद्यु यन्त्रे अ.योष्ट्र प्रयोदः द्रका श्री.श्री दे विष्टः ब्रह्म यो, त्युं यो वा विष्ट र्देर यहे के बिर विद मुश्र हुया वेद हमना यह सम्मान के नाम के नाम

वर्हेंस्ररात्रात्रुवार्श्वेषायासुरस्याध्यान्त्रस्यारे राजनस्यात्रस्यात्रे । देवे श्वेराव परि द्या वे द्येया था हेव रहें साधेव श्वीदेव त्या यह श्वें वाय विवाद या सुरुषाया थेदायाम्बर्धाः सुर्वास्य म्यानिः सुर्वास्य म्यानिः सुर्वास्य स्वास्य स र्भवायात्राचायायात्राचाराहेत् स्रुमास्रवाचीया वर्गातात्राचार्याचार्याचीयात्राच ৢ ট্রিম'ম'র্মি'র্মমম'ঝ'[ববা'মী'বেরুবা'মম'র-রবা'বীম'মম'বী'র্ম্বী'র্মি'বার্ডুবা' वयःविःगरःरुं अः श्चीः यरः सूरः यः वेदः श्चीः वेषाः यो द्यरः ये विषाः यञ्जे अः येषाः वेषा नेतर विषा थे न्यर में न्वीत्र मुत्र में तिन् वेर म्याय विष्ट तर्रेर थ न्दर संविद योदःसद्वःक्षेःवस्यायाद्यस्याद्यस्याद्यस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्याद्धस्य नर्र्क्षेत्र:नुरु:रद:वी:वि:वाद:नु:दविंद:वादे:नद:वद:वद:विद्याराय:दीवा:वर्र्क्षेत्र)। नेतर विवायर विवायो न्यर ये निर्देश याने हिन रेया क्षेत्र तेन न्यवायोन नु निश्चर छो विषार्थेषा वैषार्थानेतरः वाषयः विषार्भेषायः विषार्भेषाया ने या में जिया त्रात्र के मार्था से प्रति प्रति स्त्र मार्था स्त्र प्रति स्त्र धिव। ने नुसर्वेन बेर क्रेंचिश्च होन नवेंस है। वैवा यो नुसर यें ने यस वेंन बेर पर्सेश्वासास्त्रीयोश्वासङ्घरम्भवानाः श्वासान्द्रान्तरम् । विदान्तरम् । विदान्द्रम् । विदान्द्रम् । विदान्द्रम् सर्केन्यस्या देन्चेरनेष्ठेन्य्यरः स्रुर्रं र्यायसूत्रा क्षुरः यदः वेरचेरने हेन्।वस्रयायस्य रावेर् वार्ये वार्यास्य विष्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स श्रैन श्रीन न्द्र नरुष मा देव वर्ष देव ने स्तुर नश्रूष हे श्रीन वर्ष प्राप्त स्तुर महिला के निवा के नि ब्रिया दे.क्षेर.प्रक्यं प्रक्य.श्री.ब्रट्य.क्षेत्र.त्र्येच.श्रेट.पश्चेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र. ५८ सी लेखान ५५ पति हेन संसाद विदायी सुयाला ५८ ५ ही रासेन शी सिया हो ५ सम्राह्म

अवर देन क्षे विवा यो नुसर ये ने हिन सर्वोत ये देन नुसवा सेन नु বন্ধ্রীম'শম'ন্ত্রা शुरावयार्या श्रीयावीदारदायी योगया केता यो वित्ता देशित द्वारा यो दारी सुवाया द्वार क्षिः ज्ञुरुष्युरुष्य। देवदः योग्रया क्षेत्रया क्षेत्रः क्षेत्रः वे दे दे दिव विवाय विवाय प्रति प्यो विया दरः यहिषासुः सामक्रिषायाः यदे विष्युवायाः यदे स्क्रियाः यदि स्विष्याः यदे स्विष्याः स्विष्या श्रेमराष्ट्रेन्द्रम् अप्तान्त्रीयः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्रान्त्रः स्रोत्रान्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्रः स्रोत्त्रः स्रोत्त्रः स्रोत्ते स्रोते स्रोत्ते स्रोते स् तपुर्ट्र देववयाय्यार्थ्य क्रियास्य क्रियास्य क्रियास्य वित्रास्त्र स्थायक्ष्य वित्रास्त्र स्थायक्ष्य स्थायक्ष रषायदी वर्षा कु केंद्रि त्या या सु विदारका यो षा स्वा त्यारा सक्ता त्यारा सक्ता त्यारा सु सि से से दिन से दिन দীব্যসাব্যমন্ত্রীর ইত্তি ব্যক্ষা মিব ব্যক্তির শ্রীপ্রদারী ব্যমন্ত্রীর অংশ্লম মা <u> ने सूरः सहसायर प्रताय मुन्देश हैया रेरा पर सेसरा ग्रीहर महिया तर् सेन सूर्वेण रा</u> तकरः सेन्। वरः यदः देश्रेषः से त्यदः रदः यरः चवनः स्रेः नदः वर्षः नसेन्यः । याहर्षियात्रात्राचित्रं में विद्राद्मयात्रोदाद्मात्रे द्वात्रं विद्राद्मयात्रोदाद्मयात्रे विद्यात्रे स्वर्थाया क्षेर हे दर अवीव ये दे दे द्या ये पाया स्रोत वार्य सार्व हो र स्रोत के वा प्रदे दर दु सक्रायर ब्रिया त्या क्रेन्। ५ म्क्रेंब फ़ैट दे त्यहेंब त्या यह या या रायहें या या ही दाया है या स्थार त्या स्थार या विया सी तर्वा प्रमानक्षेत्रास्यारे प्रमानम् । रदावी क्षेत्रीय से दार्वी से प्रमान स्था अन्तः वारः वीः वरः श्रूरः वः अवीवः धेः वेदः न्यवाः अनः चलुवायः वर्त्वाः यः वर्श्वेअः वेयः वः नेः ५८। अ.वेश.व.वेर्.क्षे.च्चा.जे.र्थर.वे.च्चा.चर्चेश्वराज्य.देर.र्थयाया.सं.

याठेयाः हुः या ५८ देः श्रेश्रश्रायाल्य दुःश्रीः प्येटश्चायदेः ८८ दुः । ५८ या ५८ स्रीटः हैः या ८ नर्झेयानुदेः सर्वेद में दिन न्यवा सेन श्री सुवायान्य न वियासेन नुस्य सेन नु रदःवीःशेस्रशःहिदःददःसर्वोदःयैविदःदयवाःसेदःक्चैःस्वायःससःस्यःसदःद्वःसविद्वयः त्रचें र स्नानशः श्रीः मुः रु: सर्वे सुर्भे अः दें हिते सुषा अः न र स्नाः अते : सुषा अः ने : वा र : बे : व : य श्रेमश्रिन् क्षेट्रें के न्दरन्तुं रस्रेन्य भीत्राया वर्षे स्यापित्र स्रासुन्य स्रास्त्र स्र स्रास्त्र स्रास्त्र स्रास्त्र स्रास्त्र स्रास्त्र स्र स्रास्त्र न्वेरसेन्द्रत्देशर्येन्ययी सर्वेदिन्स्र हेत्वेष्यस्य हेत्र चदःर्ण्यः क्ष्यःवः चः त्रादे द्वाः वर्त्ते रः वर्द्धे यः यः दरः यः च्याः वः वङ्गावः वः यरः यरः क्ष्यः श्चितः यदिः स्वेतिषा स्विषाया यद्या देतिः श्वेतः वो स्वेता स्वेता स्विता स्वेतः विष् यं क्रेंप्रशकेरें। ।देशव दश्यावायायायी धेर्याय स्क्रेंगिक विवाह सर्वेद से विद्याया बोदायाचित्र देखाश्चित्राकुर्केदाञ्चरायायाविरावेदार्गे वदीवीद्रियाया नाहन् अर्द्धन् अञ्चन की क्षेत्र में नाम त्यान् भेना या नाहन् के वा नम में अर्गेद में र्देन न्यमा सेन क्षेत्र मुन्द प्यम् व विमायो नसम् विदेशम्यया सूर द्वार प्योत्। ने वयार्तर् बेर ब्रैं नष्ट्रयार्धुम्य नड्ते क्वयान ख्रयान ख्रयान अर्केन्यास्य लिट तेन् बेर र्द्धरावसूर्य। सुरायदार्वेदान्नेराविष्ठ्यायार्स्चेत्रान्ने।वस्रयाविस्यादिरावादेवाया दुवा वी 'यय हें द स्वेवा स्वेव 'त्रवा कवाय दर 'यडय' य दवा यर प्रयाय दय य दें द से र र्द्धरायसुर्या देनित्रयरश्चित्रयायो ने हिन्यमें विदेशन या योन द्रश्चर व्यवस्था र व्याचेया देवया मुज्ञया धीन न्तुरे सोन न्तुर वहेया यर होन हिर न्सी वाया सोन सर्वा सन्दः व्याप्तदे दरः नुः वावयाय स्वीतः नवीय। स्टः वीः यो स्यापितः वितः स्वीतः सी देन न्यमा सेन भी सुमार है। वन लेख न सेमार मानन भी प्याप न न वने दे लेखा यक्ष्य.यहूर.कु.लीज.री.या.क्री.राता र्याप्र.कुप्र.च्यार.कुर.कुय्याया.व.रूया.र्ट्या.

चले मुं म्युअ ब्रुअ र्ये केंग्रय वर्षे न्युवय सेन्य प्रयाप्य स्ट्रिस्य स्ट्र रटानुः अद्यायायावन दे से इस हेना वरा अटा हे या सुरी अवदार विदाद साहेना दे त्वुवानाधेमाया त्वुवानामे सुमास्त्रमान सुमाउम्मीन देवा धेमाधेम दिन ॔ख़ॣढ़ऀॱढ़ॿॣॎॖख़ॱॻढ़ऀॱॸॖॻॸॱॸॖॱख़ॱॺ॒॔॔ॸॱॸॸ॓ॱॻॱॸॸॱऄॱॻऻऄ॔ॱॻॱॿऀॺॱऄढ़ॱय़ॺॱॸ॓ढ़ऀॱॸॸॱॸॖॱ यभ्यायरायवयावयान्त्रयाञ्चरकाञ्चरकायायान्त्रयायायान्ययायरानुत् । देश्याश्चेयाळुर्वेद्राञ्चरा कः सः व्यक्तिः प्यकाने दिरा विकास्त्र स्थान्य स्थान स् श्रीकें विषया अर्थे विषया विषया अर्थे विषय तर.रे.कैर.यपु.लेष.क्षा.ज.धे.शपु.ईजा.पतुर्य.यधूषा.य.यभेजाय.शप.सूर.कू्येश. यश्चर्याचा प्रत्याच्या विष्याच्या विष्याची विष्याची विष्याची विष्याची विष्याची विषया विषया विषया विषया विषया व वित्र येत्। क्षुः सर वित्र व उत् दुः क्षुः व व्या हेत् वित विस्य स्थित या बीत् यर वित्र वि देन न्यमा सेन मह्यस्य निष्य कें तिन देश मुन मोग्य मरकन सेवा लिन मस्य देन नर्झेम:नर्गेम। नेतर:सुनमःगसुम:गुन:तन्म:ग्री:दे:वें:सुनमःनस्ते:लेर:रवः याहेबाखुं कोन्यर यञ्जेबानवींबा ने खूर रचा व हेव रेर झुव यति रेर्न रा ने भीव महिषारी यासवर प्यतः स्नूर क पडु उँसारे वा क्षेत्रा विदास विवा माया श्चेत्। देश्यत्रः व्यवास्य स्तुदः स्तुवः सर्केवाः तुः श्रेस्यः व्यक्तेदः यः वाले रः चलवाः वीः श्लेदः द्वा क्रयान्वना मुद्दान् नरुन् पदि सह्ना सम्माने त्या वार द्या स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व नर्भे बिटा अर्वोद भे दे दे द्वारा को दान दान के कि मार्थ सूर दि स्था निया चदुःटरःवशःश्चेरःजभःवादह्याःचर्चशःश्चे। देःजभःश्चेंवाःश्चेःश्चेमःभद्रःभर्ष्टरः

विदःद्रअः केंत्रः स्त्रुवः त्रवेदे विदः वादेदः विदः दुत्राकेंत्रः याददः द्वीतः वृद्दः केंदिः विदः याद्यः नुःविगानुःश्चेरुरा देःष्ट्ररातुषाक्तुवःश्चेत्रानक्वनावषास्वरःरेगार्डेद्याद्याद्या चलना नी नामाया सूर वितान सम्मान निया भीता स्वीत निया स् য়ৄ৴য়য়ৣ৾৾য়৾৾য়৺৸ড়৾৻য়য়ৼ৾ৼ৾৴৻য়য়য়৾ঌয় त्तुरकाचेत्रायराष्ट्रिंग्वायाम्बद्धात्रवाधेराचान्द्राचान्द्राचान्त्रेयाष्ट्रेत्राच्यायायाः त्तुरकाचेत्रायराष्ट्रिंग्वयाम्बद्धात्राचान्त्राचान्त्राचान्त्राचान्त्राचान्त्राचान्त्राचान्त्राचान्त्राचान्त्र हेतः स्नुत्रयः स्ट्रेंयः यो तः यः यः दुः दुर्वे यः सूत्र्य। ५ व्ये रः दुः उवा वद्वा वा वयः सुः वे दः वः *ॐ*८. बर. बर. ब्रॅंस. दें. पर्केंट. ट्रे. सैया. तक्ता ब्रॅंका ता खेता. चेंद्र्ये । हे. से स. क्र्या तकट. धेव. श्चेंयाञ्च्य न्युष्य प्रति द्वो प्रति स्याप्त देषा यहित यहाँ त्र वा रूट माल्य श्चे वा नुष्य मास्य नयम्बर्भः पदः नमे सः महिमा हुः नष्ट्रयः विदः नर्द्धेययः दयः गुदः यद्विदः क्रुयः नदेः नश्रुदः यः रेव से ब्रियाय द्या गाव हिन्दर बिर क्या या वसूव तहेव की स्रोध ग्राम व स्र चर्षयात्राच्यात्राचर स्रोतः कें लियका यदा चहुन लिया दिन हो हो हो बसका उदा शुमाना सर्भः विस्रमः वर्ष्ट्रानः प्राचीतः या मुख्यः क्षीः भेषः वर्षे द्वारः वर्षः वर्षे द्वारः प्रवेषः । वर्षे वर्षः हेत क्षी विस्रया वस्य यह निर्देशीत हैं विष्य स्वर क्षीत्य वार्य देश ही स्वर वियो. मुण्या. क्षेत्र, विषया. क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, हे पर्दुव तहस्रायते निव्यत्यान्य तस्यायायात्र पुरावन्य में स्याया ग्रीयावर्षे प्रावित्र वि <u> नुःहे भूरः पर्शेषः यः प्रतिष्ठः नुः पर्शे प्रते सुग्राषः तनुषः वयः श्रे गावरः परः लु।</u> वयायर्ने त्राया समाया उर्ने यो ह्या या होता । हिता वया होया समाय समाय समाय होती इटा अभ्रियः व तक्रुप्तः संग्रीट त्यविर्यायाया । अर्थिट त्यप्तः सक्रुप्तयाय स्थितः वरःवेच । वहस्रान्यवान्यवाचेषान्त्रात्राह्मरास्राह्मरायान्ता । गानानानानाना

<u> वियः यद्याः सः अप्यः अप्यः यत्रः स्रह्माः वीः लयः यासुरः।</u>

हेन गहेरा यदे यहे केन लेट यी क्षेन विदा

श्चित्रयात्र्वेदिः श्रेंयायात्रादरः या

या मुन्नाय क्रम् त्वेना स्वित्त स्वया या निविद्य स्वया स्वय

यरः वासुरुषा देः तद्वेः यवः प्रविः केः चः विवाः दः चरः दुः क्रुदः यः यः मुद्दशः यः वे विदः वर्ते क्षेत्रायदे म् तिवृद्दि देशय विषाणे । ५ सूदे ५ या वर्षे र श्री युश हे व श्री वाय देव ल्रेन् क्ष्माच्चेन् न्वीयानययात्रयास्यास्य स्थान्त्रयाच्चेत्राच्चेत्रायते क्षेत्रायात्रा स्थितः ढ़ॖॺॱॿॺॺॱड़ॸॱॹॖऀॻऻढ़ऻॱढ़ॖ॓ॺॱढ़ऻऀख़ख़ऻॿॺॺॱॵॺॱॴॱ॓ॸ॓ढ़ॏॹॱॻॱॴॹॗज़ॺॱढ़ॼऀढ़ऀॱॾॗॸॱ यितः प्रति । इस्ति । इस्ति । इस्ति । अस्ति । अ श्र्राचित्रक्रियात्राचीस्त्राचीःर्हेत्राताचारालेत्राचित्राचित्राचीयाचित्राचित्राचित्राचीयाचीत्राचीयाचीत्राचीता यः सेन्। नेतः स्त्रीर स्वर स्वार स्वार स्वर्था सम्बर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर्धाः स्वर वयार्श्वयान्वीयायया ने सुप्तुरि सुप्तयार्श्वया वे के या त्या प्रहेव वया त्येव प्यापीव प्यया व। ५८ में प्रवाश्वाशे स्रेंब या पर्डे अध्यव त्य वर्ष श्री स्वाश वर्ष वर्ष स्वाश न्यवा सेन न्दरन्ते र सेन न्द्रा प्रतिवाश या तदी त्या सुवा वाश्वस रे तर्क्या नवीं स्वा बुषाया दुषाया ग्रीया श्वापाय करेया प्रति से स्वापारी स्वापारी स्वापारी स्वापारी स्वापारी स्वापारी स्वापारी स्व याताः संस्थाः स्थान्य र्वे क्षेट वर क्वेंरा देव राष्ट्री विदेश मुर्खेय हि क्वेंरा देव राय क्वेंरा देव्याक्षरावराष्ट्रीय देवयाययायायाया देवेषुवादरायेषीत्। श्चरः यदः यदः यदः व्यव्यविष्यः यदः यद्विषः यदः यद्वाः यदः यद्वाः यदः यद्वाः यदः यद्वाः यदः यद्वाः यदः यद्वाः य क्वा वी ब्रेंब या नदा अर्वेब ये वित्तानया अना निया अना निया था ब्रेंब या निर्वेष क्री वर्ष क्रिया चलम् नर्यास्त्रम् मार्थुयाः चर्चयाः चर्ष्याः चर्षेत्र। चर्ने चर्लेत्रः श्रृेव्यः याः श्रुेव्रः यदिः श्रृेवः चर्ववः चर्वाः वर्वाः चर्वाः चर्वः चर्वाः चर्वाः चर्वाः चर्वाः चर्वाः चर्वाः चर्वाः चर्वाः चर्वाः इस्रमास्यान्द्रम्यान्त्रेत्रामान्त्रेत्। वरावयान्त्रुराक्षेत्राच्यान्त्रम्यान्ते

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

यदेरःयलुग्रमा देःवयःश्चेयःद्वेवःश्चेयःवदेःस्ररःगग्र्दमा ह्नेदःयरःदगावःयः र्वात्र्वेर् क्री हेत् विर्ध्य स्वर्हित्। अहवाय राष्ट्र वाय स्वर्धिय स्वर्य स्वर्धिय स्वर्य स्वर्य स्वर्धिय स्वर्या स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य <u> ५८ अहला वन्यालेग्रास्त्रेत्यते क्रीचिन्यां मे देव ५ ज्ञेर मुद्र</u>े षद्याक्क्याःश्चीत्रमृत्यायाव्यत्रमृत्रःश्चिद्यायाः भेदाधेत्रः श्चीत्रः या देः याः धेत्रः भवः श्चीः यिष्ट्रियः विस्रयः ग्रीनस्र्वायः यः स्विष्टा स्वर्यः स्वर्यः प्रस्ति स्वर्यः स्वरं स्वर्यः स्वर्यः स्वरं स सुतर्वो पते केंस्य पत्रेन तारमा यया यया है स्नेन हो नगेंत सकेंग यशिषाताः श्रीयशायम् । पहुर्याशासाः श्रीतः ताम्रायाः पर्वेता । विश्वायशित्रः याः सूरायवाः विवान्ति के। देवराञ्चा स्वते दुरावयाञ्चरावारी कियाः विवार्षेत् श्रीहेवः श्रेषाश्चर्त्वाश्चर्यात्वर्यात्वर्यात्वर्यात्वर्वेत्रः हेश्चाह्येत्रः स्त्रीयः स्त्रीयः द्वितः दर्वोदर्भासुः वार्वेत्या वदवाः भेदः तदेः लेखः वश्चीः वा दुर्भः तदेः दश्चा हे:ब्री८.५क्रॅंद्र.चर.टी भट.बाधेन.इशका.क्री.मक्र्य नटम.क्रीय.ज.सी.च मकुर्ता विरूट् क्यायार्ट विज्ञाचार्य माम्या कुरा कुरा वार्सी वर्षा मकुत्। क्रियामा समामा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा रुषात्रदीत्रषाम्बरुष्टा हे श्रीदावर्द्धति मात्राद्धा श्रीम्याम्बरुष्ठात्रहेव मात्रीद्वा पश्चेत्रन्तु। श्चेत्रन्त्र्वेराच्चेत्राचा इत्राच्चेत्राच्चा हेत्राञ्चेत्राचुः ग्रेंयाची मुन्यान प्रकार प्रकार विषय के लिया में मुन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या में मिन्या यम्द्रियम्बर्भाक्षेत्र्वे देवरः स्वानुरः इस्रवान्त्रेवायम् से स्वीवार्येदः विद्रान्ते ট্রিমামরি:ই্রমামান্টার মেমান্ট্রবামার্মার্ম্র ইমান্ত্র ।

श्चुवरादर्वेदिः वश्चवः वुः दगुः वश्वदः य

दे·सृते·सुवरातर्वेतेःस्वायःस्वाउधाःस्वाधाःस्वाधाःस्वाधाःस्वाधाःस्वाधाःस्वाधाःस्वाधाः नेवर वार प्रेव स्रुवाव सुवायवे वस्त्रुवाचु वास्त्रुवाद्या नवावायवे वस्त्रुवाद्या योशी कः भर्धेर. क्री. पर्धेरा वी. योशी श्री. र्योत्। विरासित्री श्री. योशी श्री. योशी श्री. थाःश्चेत्रश्राश्चरः दशायहेवाः हेदः प्रतेः ख्याः श्चेत्रश्राश्चात्रश्राः विकार्यः श्वेत्रश्राः विकार्यः श्वेत्रश्राः विकार्यः श्वेत्रश्राः विकार्यः श्रेट वर्षा श्रेमण उत्तर वा महिन वर्षे सी है। निमे वर्ष निम्या सुम्या सुम्या सुम्या सी मिला सिम्या सी सी सी सी सुः स्रेग्रायाञ्च स्रोग्यस्रेन प्यायञ्चाली । दिवर वितास्त्री स्रोग्राया प्रदेश सुर्ग वर्वुदः यदः श्रेवा उदः श्रेश्वेवा यद्दः वर्वेवा यः यदः श्रेश्ववे । विदेशः यदि। यरयाक्चियाताः श्रुप्तयाः शुः सेरावया यदे । यरावाविवायायते : श्रुप्ता बुवायाः वतः श्रुप्त्रहेते : स्वा र्यात्त्र कर्तात्र अरमा मियारेट्र मा मितरी विमायवया व मास्या मास्या मास्या प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र नगुरम्बर्भेद्या हेरायाञ्चनयासुर्येदान्वयाहेरान्त्रीत्र सहेनानी हेरानस्टरम्य क्रैंवा'त्रज्ञ्चाचेवा'प्यज्ञ'कर्'त्य'क्रेंबा'ग्री'तर्रु'वेबा'चलवा'ज्ञ बा'क्षुवा'अर्केर्'वाुबा'तर्रुर्'नगाुर' यङ्गे.वी रेगु.पर्रेथ.ज.श्रीयश्राश्रीर्यः यश्राप्ता.धे.वैंट.यपु.ङ्गे.रेट.घ.य.जैंथ.ता.श्राप्त चें प्यत्रः कर् त्यः द्रवो त्यतुत्रः दृशीत् ः सर्केवा : दृरे यः श्चीत्यतुः वे यः चत्रवा द्रवा सर्वेदः वाुयः वर्द्द्र नगुर नक्षे र्सेन्य सूर सूर दुर्दे । न्युस्य य दे। दुर्य ह्या हु द्या दि सर्क्रमा सर्क्रन् या या पर्क्रन् या या प्राप्ती वा मान के वा के वा के प्रमुद्रा मी सून् क्षीर सर्केन् या नृहा वरःवृतःश्रेषायःशुःश्चित्रयःवर्षेत्वज्ञातःयःवर्द्धेवःयःदरः। श्चेश्यःतःद्रयःयःवर्श्वेवःवयः केंबाग्रीहेबासुतह्वा केट केंबाद्या समुद्रायदे प्रमुद्रा चु वार्स्सिव केटा दे द्रा दे दे हैं नञ्जन कुर्ने अर्था कुर्ते कुर्ते कुर्य कुर्य कुर्य कि स्वाप्त कि स्वाप्त कुर्य ।

ख्नितः यन्याः स्चार्याः स्मृत्यः यत्र स्यार्केयाः यो 'ल्यः यास्ट्रा'

क्ष्मा । विरक्ष्यः भ्रम्भा । विष्यः विषयः प्रक्षाः विषयः व

মর্ক্রমমান্ত্রীমান্থা বাদ্যা

स्वायत्यत्रम्भूत्रयार्थेद्वायात्व्याः स्वायाव्याः स्वायाव्याः स्वायाव्याः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

ૹ૽ૢ૾ૺઌૢૹઃફે૱ૢ૱૽ૼૼૹઃૹુઃૹૄ૽ૢ૽૽ૼઽ૽ઐ૽ઃ૱ૢઽઃૹૢૢૢૢૢૢૢૹઃઌ૽૽ઽ૽૽ઌૹૹઃઌ૽ૹૣૼ૱ૢ૽ૹ૽ૼઽ૽૱ૹૄ विकर् १९४ म्वेर वर्षे प्रतर स्वर विर रहेया पर सब्दा त्या देव विवय से प्रत्ये स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ मॅरि-दुः सुदः इदयाया चलेवः चर्डेया खूवः स्वत्या ग्रीः चगायः खूरः दु। केया लुः दुयाः येग्रयम्भरम्य मुः १३ व राज्येन या वर्षेत्र न्वीं राष्ट्री चीन या सम्बद्ध व वित्र राज्ये तर्वायार्बेर्वात्वयर्बेर्यात् सुंबात्वयार्वे प्राप्ते प्रयोगित् वयार्वे यात्रे वर्षे यात्र सुंव्यायार्वे प्रा यासूरारी विकानियात्वात्राच्यात देवदःकेषाः ११ व स्वायवाः सदः पीवाः वाः सदः १३ दः दे दः दे दः दि दः श्रीकेषाः ११ वर्षे दः दे वर्षे व चर्यस्य वर्षः नदः संस्थितः चः चर्त्वेवः स्वेत्रः चायः नद्भः चर्त्वेत्रः चर्त्वेत्रः चर्त्वेत्रः चर्त्वेत्रः चर् श्रेमरा भ्रीमा ग्रीम स्त्रीम प्रवास में स्टान्स प्रवास माने स्वास प्रवास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स्वास स उत्रावस्य वास्तुसादिर पारेवाया दुवा वी वात्र स्युस्वा पस्या सी ही दि पासे प्रेत ने न्या म्याया उन् श्रीया पर हिन्दि चलित सूया चसूया सी तर्ने न या चने चा तर्ने न या तर्ने यदा सुनानसूथा क्री सः नः नरुद्दात्र रामदे नः द्राया स्टेना था स्ट्री द्रावेदा क्री स्ट्री स् यायवरः यर्वेदः क्रुं येदः परः ततुवानः वयाये श्रेष्टरः परः तद्वाः प्रयात् । वदेः वयः য়য়য়য়য়৻য়ৣঢ়য়৻৸ঀ৾৽ড়ৣ৽ঌ৾য়৽ঢ়য়৽য়য়৻য়ৣ৾য়৻৸য়৽ঢ়য়ৣঢ়৽৸য়৻ঢ়ৣ৽য়ৢয়৻ঢ়ৢৢৢৢৢৢৢৢৢ यानुदासुनास्रोत्रासानु सुदादार प्रमानित्राम् स्रोत्राम् स्रोत्राम् स्रोत्राम् स्रोत्राम् स्राप्तान्त्र स्राप्त व्यावहेंब न्वींबा व्युका क्षेत्रामुक ह्येन् वे न्न हिन मुका यदि ह्ये वका केंबा यवन यदि ह्या क्षेत्रायाद्वानाम् वितानुष्या कुत्रा

<u> वियः यद्याः सः अप्यः अप्यः यत्रः स्रह्माः वीः लयः यासुरः।</u>

श्चेंद्र-द्रद्रग्राम श्चेंद्र-यद्रद्रेश । इस्मिद्रश्च वययय प्रमिद्र स्थादि वया त्रमा । निर्मा सूना मानुमारा महत्र के के हिर हे स तर्जी । विसमासुर स प्राप्त स्थान १४ प्रमास्त्रीयाञ्चित्राचीराषी स्त्रीत्रमास्त्रीयराच्याया द्वासामा स्वासामा क्रिया प्रमासामा स्वासामा स्वासामा या नम्भायाद्वेयायरायाद्वावाद्वाद्वराष्ट्रराष्ट्रराष्ट्रराचनतादवाद्वीत्वयायाद्वीत्वरायाद्वीत्वरायाद्वीत्वरायाद्वी न्वो श्रेवा वे नश्चान वुदे वा त्वावाया नह्त्व क्षेत्र के कुर या शे श्रेवायया रेवा नुप्तायया श नवो न धोत त त्यका द्वाना वाद द्वाका की नवो नवर त्य सुरार्दे । नितः श्वीर सेवा केत सर यसः स्वान्यतः विदेशः यः इसः वास्त्रसः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स वयराक्चि.कुषे.योश्वर.य.क्रियोश.ग्री.यीष.ध्रीर.रेट.यक्ष.धे। शर्दे.क्रियोश.बेट.एच्रीता. क्कीकेंग तर्रे तकर १५४ ता तह्या पर मुते । । रे ता यार तकर पर मुनवे स्नेप गर्रे र क्ची केंग्रेश द्या पर्देन प्रसूथ पादीन क्ष्मण स्त्रीं वालवाय प्रत्येय न्या गुन सवित तहवारा द्वीट वी वास्तुट वित द्वाया उत् वार्येय तदेवरा द्वीत यस द्वीय सावदेवे ब्हेरव्याविर विर्विर में राज्या यहे या उवार मुंदी यह में या विर्वे मुंदी के स्वार राज्य राज्य प्राप्त स्वार र्यानवनान्या कुँ-८८: मुद्रेन विट नियमान्यान्य प्राप्त न्दर न्याम्य प्राप्त न्द्र न्द्रीयायमा न्दारीयायदार्वेदानुःचन्द्राचेदाने।

यर-र्-अर्देव-पर-हेर्यायायर-यर्थ-क्रुयाव्यावीर-विस्था-विर्-पर-र्-

বলমারান্রর্ভিতা

८८:मृ.च.२४.२.श्चे.चयुःश्चेतात्रम्श्चेतात्रम्

श्चेरावार वर्वा त्यरा पर स्मूर्य पर सर्केवा त्यून कें तर्दे श्चेति रर वात्नन वाहेरा देन त्या ह्रस न्ध्रिन् श्रीः ह्रीं देवा खूब या लेवा वीषा वदी वद्दे की खूब देव हैं के ह्रेन् यर नगाव या लेवा हुर्। रयात्व्रीराष्ट्रीक्रिक्यायक्रायक्षराक्षरा। ययार्वो ध्रेवाक्षयायायरायवा हु: भेंद्र: यदे: श्रूप्यायदेर: रूट: याल्य याह्य : श्री: स्यायायद्या देव: द्वात्र: याल्य याह्य : अर्क्याः हुः शुरुराया वर्ष्यायः दर्शास्य देशा व्याप्य स्वयं वर्षा स्वयं स्वयं वर्षा स्वयं स्वयं वर्षा स्वयं स्वयं वर्षा स्वयं शुर्य वे मद ले वा शेर दर ले य महिषा गाँव अद्यव य से मविष्य प्रिट व यथ तन्यायात्रम्या क्रिया क्री के तियम क्रियाया ने प्येता ने ख्रुवायते व्यवयाया क्रीवाया नुषा कुं बीर बर जर बी सैनका पर्ने पर्य ख़िया जा शकुर मेया निष्य प्राप्त कु मुनिर हुन बोद्दर्वयादकेकाबोद्दाद्वरावीःबाराबोद्धात्। सूचाद्दर्वेदाबेर्यायदेः ञ्चनाः सञ्चित्रः यः तम्रमः द्वेति निष्टः द्वा स्ट्रा स्ट्रा स्ट्रीत् स्ट्रीत्र स्ट्रीत्र स्ट्रीत्र स्ट्रीत्र स्ट्रीयः नश्चेद्रादेश्वर्ष्ट्रात्त्र्यात् अह्यात्त्रात्त्र्यात्र स्त्रात्त्र्यात्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत वर्षात्रारम् क्षेत्राम् वेत्रारम् व्याप्ते व्याप्त वित्राप्त वित्राप्त वित्राप्त वित्राप्त वित्र वित्राप्त वित्र व विगानु त्रशुरा चेरावा रूटा क्रुवार राया के या नारा यहा को हा है वा यहा के बारा में चन्द्रस्या में ब्राया में ब्र बीव बीद् । बेंबा बेंबा पारि देव व्यापबाया ह्यें लिय हु या पहर लिद देव खुद वाद रे की वतर रर क्रुन् या क्रुेंर या तुषायर केंबार दे त्र नी केंबाय ने क्रें क्रिंर वुन नुषा क्रेंग श्चेंद्रायावर द्वायुर द्वाया केंग्रायक्क में श्वेंद्र में व्याया उद्दे देव या या में द्वार में योध्याक्चित्रक्ष्यातास्त्रमञ्जूमात्री वेषायद्येषात्रस्यात्र्यात्रस्यात्रयायायाः के'नदे'र्ने' प्रायान् 'सूदे'केंश्रानदे'त्रन 'मी'नमे स्रोध्यास्त्रन् 'डेम'स्रायामा प्रापेन। हु क्रिंच श्रेम र क्रिंच प्राप्त प्राप्त प्राप्त क्रिंच क्रिं नुः सूना नसूत्रा श्रुदः दया गादा हेदा स्तुः तद्यया नहिया सुः विदः से प्याप्ता है। तिविदः सीदा प्रेता न्येरःम्। हेनःरेरःश्रेयशायः वरावदेः इयाहेषाः यराधेः नृतः। त्याः नृशः ववनः तर्भन्तः विष्यायान्त्रीयान्त्रयान्त्रीयान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्रयान्त्ययान्त्रयान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त्ययान्त् चित्राहो कूर्यः दयो प्रत्ये प्रचित्राचाहेत् स्राया क्षेत्राचित्रा स्त्री प्रायति स्त्री प्रायति स्त्री प्रायति स्त्री प्रायति स्त्री प्रायति स्त्री स न्वोःभ्रैवाःवाहेशःहेतुःन्यारःववाःवीः चारशः श्रीशःवश्चिशःवः कवाशः स्ट्रार्शेरशः वाश्चरः याधीदायदे र्स्त् न् नुःश्चेत्रवाधीन् यानेदे श्वीरास्तावाद्व र्शे र्वेदिःश्ची विषय स्थापी केवें । ने भ्रान न रेग न रामित भ्रामित भ्रामित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स ग्रीकेषा भ्रेकात्वं के तदीर कुर वास्त्राची त्यस देस पासूर पेर प्रमानार ता तुन्ना स र्ष्यायाः क्रीश्चराययाः वे स्वययाययः यान्यान्यायायायेन् क्षेत्रः याने ख्रीयायायेवायाये चलैत दुने वा सी त्रह्मा प्रमान कर त्र सामान वा चल्ले सा तर्म सी सा सी प्रमान है। षदःनुःश्चेःशुकार्चेनःश्चेन्रःशुक्षेत्रःभेत्रा न्याः नेःर्चेनःग्चादः केंत्रःन्दः तस्रन्ःश्चेनः केः वेषा तस्र : स्ट : स्टे दे : दर् : या धेव : व : स्ट्रें द : वेषा : ह : त सूर : हेव : धर : ग्रिकासेन्यरसासुरम्। वीपिते हेकासुष्यर ह्रोप्यासी यो वापर ह्या कारीन र्ने । ने या कें तदेते से दायद्या क्रिया की विषय में विषय से व यावर्षासुः सुः निः निः विष्यायाः विष्याः यावर्ष्यायाः स्त्राः स्त्रः सूर्वः स्वतः विष्यः यविः । नः सुः सूर्वः सविः विष्यः यविः । नः सुः सूर्वः सविः विष्यः यविः । यावर्षायदी साम्रोव प्रति लिट । विस्रायान्या प्रतिया त्यायन्त्र व प्रायान्य प्रति । या विष्या त्या विष्या त्या व न्वींबास्त्रयायाचुराव। वनेसवागावसवाउन्यवस्यासकेवानुः सुरायाचे ने हेन् धेना दु:तु:ठवा:वीश:देदे:क:वश:वनद:व। दवा:यदे:वेद:विश्वश:द्वशय:यश:वदे:व:ठव: याधीव या विवा त्या तर्व या या निर्देश विदा विदा विदा या राजवा विवा पि स्त्री या या ही या विद्या क्षेद्री: अ.डी:देवाय: दवा: दय: याच्युद्र: याच्चेत: या अदः कदः विवा: दवीय। विदः विययः वर्द्धर विवा मुः क्रुं न व्यानर्द्ध्वे राव्यस्य या विश्वास स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्व कुर-८, विग मुन्ने पर पर अन्दर में अर्बर यस देश सर बिन दर्गे अर्थो । निते धेर रदः रे खुः त्वीर के के विदः के वार्षा कर्कि व स्वरः यका मादः धीवः देका का बीवः के वार्षा का खुँदः য়ৢ৾৽ঀয়৻ঽয়৻৸ৼ৾৻য়৻য়ৢ৾য়৻৸৻ঀ৾য়৻ঀৼ৻ঀয়য়৻ৼ৾৻ৼয়৻ঢ়৻ৠৣ৾৾৽য়ৼ৻য়৻য়ৢয়৻য়৻ৠৄ৾য়৻ঽ৽ৼয়৾ৄয়৻ देशक् के क्षेत्र भीक भीक भारत्य के कि निर्माणक के ति । देरः<u>भ</u>्नेअ:पःभ्ने:पःवाङेवाःवीशःर्ववाशःपदेःर्हेवाशःपदेःश्रदशःम्बःशःग्रीःवीःदयदःर्विपःपः यशक्रुंच म्बद्धा योदा से प्रति स्था ने दे से दिस्त में सुन स्वा सुन स्वा स्था से स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा क्रूयायात्रात्रयात्रप्रत्यात्रेटा व्यायायायायायायायात्रात्र्यायात्रयायात्रयाया २८.जैथ.२.औज.च.उर्राथकेषाक्रीयार्ह्यावातपु.वर्षाक्रीयाक्री.वेंदाव्याक्र्याक्षेत्राती क्रूयायायाष्ट्रेयाक्षेत्राक्षित्रक्षेत्रात्त्र्यात्त्र्यात्यायन्त्र्यात्यात्त्र्यात्यात्त्र्यात्त्रात्त्र्यात्त सुनि यादाले व यदो या उव प्येव वि । । दो सु युदे लिया यथ लिया सेया यी सदाव प्येदा यन्ता नेर्षेत्यवित्वेरहेत्यमातृष्टिं वित्वातित्वे ने से सुन्या विद्वानित्व ब्रोब या धोव। देरा ही यह वा या है। ही या धोव या या नु न वहीं न न विन या या है। ही वा

<u> वितःपर्वाञ्चः अःपङ्कः श्रूषःपत्र स्यक्र्याः वीः ल्यः वास्रः।</u>

सक्ष्मा श्रीम् स्रीत्र प्रस्ति प्राप्त प्रस्ति प्राप्त प्रस्ति प्रस्त

यरे य उत्र क्षे लेट य रूप मदि यत्र येत् यसूत् य।

५५'य'यब'ग्रहेग'द्युर्थ'य'५८'। यदे'य'डब'क्के'बेट'गे''येब'फ्रव'यसूब'यदे'केंब्य'ग्री' इस्राचित्रायद्भःतात्रमः साम्राक्षेत्रः साम्रान्त्रमः साम्रान्त्रम् स्वरः साम्रान्त्रम् साम्रान्त्रम् साम्रान्त वशुरावाधीत्र वाशुरुषा यदार्थी समायात्रेत्रासम्बन्धान्यस्त्र विषायित्र के स्वायित्र विषायित्र विषयित्र विषय र्थेषायरः श्रीषा विदः दुः सुद्रायरः श्रीषा मलवः यादे मलेवः कुः केरः विदा म्रोग्रायायायाः स्रेत्रायते तर्नु त्रेया विष्णा स्रेत्या के स्रेत्या स्रोत्या विष्णा विष्णा स्रोत्या स्रोत्या यह्माह्रेव क्रीविस्रसासे प्रीतिस्राह्येव स्थानम् वान्याव स्थानम् वान्याव स्थानम् वान्याव स्थानम् वान्याव स्थानम् हेन्-चम्राथः वर्षः तर्वो चरः तेषः हे। डेते धुरः व चुरः कुचः बेध्यः न्ययः चुः च विषा विषाः यर्थास्याः भरः तृषाः कृषाः भीः देषाः चर्षाः पर्दः जाः भेषः प्रकाः पर्द्वरः पर्दः मीः सकूः कृषः तृ यम् वालिट श्रीत् यदे श्राद्य द्वर्या श्राप्त द्वर्या विष्य हो। रद वालव वाहिया देव सुवाया म्रास्त्रेन्द्रियायायते मुद्रान्त्रम् निर्मान स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स चब्रेन:र्नु:स्वायसःस्वायःगाऋःस्यायःस्रोन:श्चीःचने:क्चेनःध्याःस्टन:र्नु। दनिःहेनःस्यायः मेन् सुम्यायान्यायाद्वी । विष्यायायायायायायायान्यान्यान्याचीया । विष्यायायान्यान्यान्या यदःदेशःदेत्। शूरःदशःर्केशःवःर्वोग्रयःयःग्रेदःर्वेदःर्वेदःर्वेदःर्वेदःर्वेदः स्वाप्तः याचर्याया दे.क्षेर.क्षें.कूर्य.ब्र्ट.ब्र्यियाता.क्षेंचया.यी.या.क्षेंच्या.व्याक्षेत्रा.चया.कूर्याया.क्षेत्राया. यानस्यम्याग्राद्यान्त्रेयायान्त्रेयायान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् ने न्वा म्रम्य उन् साहें वाया परि न्वर वीया दुर वा धीया विवाहें वा उत्र है ही रेवा भुःस्रेग्रयायान्दरन्देवः स्वेग्रयाम्नाक्रयायाः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्व तव्यक्षः येन् धर्मे क्षुत्रे विष्या भूष्या विष्या प्रति द्विष्या विष्यु विष्या विष्यु विष्या विष्यु विष्या विषय यर बया दरा देशे श्वाका क्रेंब प्रवाध विषय प्रति द्वर वीका या बया क्रिक्त है। क़ॣॕॺॱॼॗॣॖॖॖॖॖॖॖॖॖज़ढ़ख़ॱढ़ॖॏॸॖऻॗॶॱॻढ़ऀॱॻॵढ़ॱॶॖड़ॱॻॸॖ॓ढ़ॱय़ढ़ऀॱऄॕॺॱख़ढ़ड़ॱऄॸॱऄॱक़ॆॺॱय़ढ़ऀॱ

वियःयन्याञ्चः यःयञ्चः श्रेयःय वरः यक्त्याः वी वयः यागुरः।

ज्ञाह्ना उन्ते । विक्रमाञ्च विश्वीरान्य पायर या मुरायते केया क्षेत्र लुवाया विद मक्र्याः वार्ष्याः स्त्रीयमः स्रात्वेद्देनः यरः द्याः यरुतः स्याः युष्यः स्विनः स्विनः स्विनः स्विनः स्विनः स्व उन्दुः शुरामर्थान्या परि लिटा यो प्येन एन परि तद् विर्यापान्। दे वि तस्यार्था परि स्री য়৾য়য়ৼয়য়ৢয়য়ৣ৾য়ড়৾য়য়ৼ৾য়য়ৼয়ৼয়য়ৣয়ৼয়৸ড়৾য়ড়৾য়ৼয় याड्या.यीयाद्वीर.भ्रा.केंचा.तर.यरयाक्चियात्वयाययात्रायायायात्वरा। यालवः यादरः पञ्चयायाः वया सरः यालवः यो यायाः उत्तरः यो लियाः देवः केवः यो यायाः कृतायाः यर चुेन्य ने वे चे के का भीवा ने ख़ते का है वा वा के वा चे के का ख़ारे वा वा स्वाप्त का ख़ारे वा वा स्वाप्त का देशः दशः धेदः द्वा ४८ वी व्ययः स्वायम् । या दे १८८ हे ५ मी श्रेयः स्वयः स्वाविदः । यालव दे दर दे तर्द ते देवाय उव स्त्रीर हे यसे या केव येया यस्ट वया स्वेत या केंद्र शरु:श्रीश.यं.रट.पर्नेथ.त.र्यशाज्ञाताज्ञी.यहेवा.ह्याया.लुथ.त। श्रटश.क्रीश.जु.श्रीय. ५८.५५४.त.त.रवोश्वात्रश्चात्रश् रदःवीबादेबायरामा वद्यावदायदर वी वराचेदादवीय। सूरायदावदा हीदा ঀ৾৴৻ঀয়য়৻৻ঽ৾৴৻য়৴য়৻য়ৢয়৻ঽ৾৴৻ঀয়৻য়৾৲ৢয়ৢ৻য়৻ড়৾য়৻ড়য়৻য়য়৻য়ৣ৾৻য়৴৻৻য়ৣ৴৻ देव दी पड़ेंब ख़्व तद्वा अर्वेव ये तेंद्र द्या यो से स्वरंब पर व्या साम्रा क्षा स्वरं **অ**হম:শ্রুম:শ্র্রু: *ब्रिट*:ब्राट्यात्रात्रात्रेया:पु:योन्,योन्,यान्यात्रया:योत्यात्रयाःयोः श्रीदार्चेबात्रवाद्याद्याद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्या য়ড়য়য়য়ঀ৾৴য়ৣয়৻য়য়৻ঀৢয়৻য়৻ঽৼ৻ঽয়৻য়৻ঽ৻ড়ৢয়৻য়ৄৼয়৻য়৻য়৻য়ঢ়ৢ৾য়ৢয়৻য়৻য়য়য়য়৻ঽঽ৻

है: श्रीन् लियावार्य ने राष्ट्री वर्षा वर्षे प्रताने श्रीन् नु वन्वा ह्या वर्षे ने प्राप्य प्रताप्य र र्ह्रवाषायदे:चुर-कुन-हु-सर्देव-पर-ह्रेवाषायर-दर्बर-कु:वर-क्षे:वर्छ)दे। याश्रीरमान्यान्यान्यतः सर्हेन्यान्ते सर्हे त्युदानु यायायान्य समूना ये नित्विनः रुंबिर द्यायायने याउदारु क्रेंबार्क् देशेया ब्रह्म या ब्रह्म या प्रति विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त श्रेषाश्रायते भेति । हत । दूर । खूत । या त्यत । लेवा । भेत । यर । यह । या श्राय । ब्रीटावस्थायाब्रदाययाब्राह्म पुराययायाया देरा ह्या या विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया वि क्रेंग्रथ:कुट:दुष:देव:केव:धें:तव्युव:ध:वे:यदश:क्रुष:वेद:द्यम:येद:ग्री:क्केंव:यय:दट: ल.चेश.ग्री.क्रेंचर्याचिर.तर.क्षे.ग्री.यर्थे.जर्थ.परींट.चर.ग्रीय। यश्रेज.य.ग्रीटरा <u> व</u>ुःतःग्रुडेगःगः प्यरःक्र्रेवःतु। अ८२०:क्वुरुःदेवःक्रेवःक्षेदःयदिःसत्वःवरुकःक्वुरःवेः য়ৢ৾৾ঢ়৵৻য়ৣ৾৾৻য়ৢ৻ড়ৣৼ৾৻ঢ়য়৵৻য়ৢ৾৾৾য়ৢ৻ঢ়য়৻য়য়৻য়ঢ়য়৻য়ৼয়৻য়ৢঌ৻য়ৣঌ৻ र्वियोग्नर्विर जिरावस्रेष योबर्गा वस्त्रीर वश्यायोषर वास्त्री जिरा विर स्वितः ୶୶୷୵୷୰ୢୖୠ୶୵୵୵ୡୢ୷ୢୖଌ୕ୣ୕୕୕୕୕୕୕୕୕୕୕୷୷୷୵୶ୄୢୄୢ୷୶ୄୖ୷୷ୄୖୠ୵୷ୠୄ୷ୣ୷୷୷ୠ୷୷ र्रेयाम्। वहिनाम्मेन श्रीन्ययान्यर र्योम्यानेन मुन्यहेषायानेयाश्चायाम्यानेया तपुरमञ्जयायायार मृतिसुरा मी हो सा स्रोत् तर्या स्मा स्माया श्वरः द्वीय वया ब्रिट् अटया क्रिया क्षेट्र दिया स्रोट् दि स्त्रीय विकास क्षेत्र स्त्रीय स्थापन व त.इ.चबुष.चर्.च.क्ष.क्री.बुर.विश्वश्चर्यः श्रीर.जूर्याः श्रीर.संष.भीशः क्रूचेशःत.रटर.र्जवः श्रेम्यात्राच्यात्र व्याप्त व्यापात्र व्याप्ते स्था भ्रेष्ट्र विष्णा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान म्रोत्तर्भामान्त्रम् । भूति ।

. हु: अर्वोद: दे: देन वा अद: अदेद: यर: हेवाय: यर अदय: क्वाय: देवाय: वा क्वाय: वा क्वाय: वा क्वाय: वा क्वाय: वा नेतर परे पाउन की लगा पड़ प्येन। परे पर गाने गान परे स्वरं स् ब्रुवायान्यकृतिः कुत्यानाः श्रयान्दरानक्यामयाः सर्वोदः विति निया। सेन्दरानने ना क्ष्र-ब्री:ब्रेट-यानसून्रायानहें द्रिक्तिया स्रीके सूर-विद्यायते सुवादी देवा स्रीके स्रीया यर बुष र्थे। हि स्नद्रा मद व वर्के बिद म बेराय दे कुषाया नेति। । पर्यवायायायहेर् यावारायादे स्वासीतासीता । याद्यासीया स्वासीया यर्डेन'यासी'तर्देरारी विभागसुरसायासूराधीन यदे'यासन्सी विभागस् यरे क्क्षेर व्यट्य क्केर विदाययाया उत्तर देवे व्यव्य प्रत्य क्षेर्य केर विद्याया विदाय विद वेषारमञ्जूमावी म्यीयाविमञ्जूयाविमञ्जूषाविष्या महत्त्रम् मुप्तर्गेन्या वे स्रिकेटि क्रुं विति र्त्तेयान्वयानराधीत्यानिराञ्चे केनानीयाने प्राच्या स्वर्धिताय स्वराधिता स्वराधिता हेब बिर विश्वस्था भी र व्या चे र या वे र य रे र य र यो कु य बिरी र र ये प्येव बिरा भी र व्या য়ৢ৾৴৻য়৻য়য়৽ঀ৾৽য়৾৽য়ৣ৾য়৾৽য়৻৽য়য়৽ড়য়৽য়য়ৼ৻ৼ৻ৼঢ়য়৾য়৽৴৻য়ৼয়য়ৼ৻য়৾৽য়ৣ৾৽ৼৼ৽ १९८७) द्वर पुरादर क्षे. वसूत तथा वकर १९४ दर क्षेत्र क्षुता की हो दावया को दा ने । नेया वा याने कुन वयाया उन नुः विदायमेनि या सुद्याया वे ये विद्या हेवानु वा नुः ये वि हेत् यः व्वेत् प्रदेशस्य क्षुयः क्षेयः स्रोदेः याद्वः यः क्रेयः स्वेतः द्या स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्त ब्रीबुर्यायाविष्टरास्त्रितिविरास्यापुरासेन्यति। प्रतिप्राचिष्टर्यान्यति। वर्षायस्त्रिवः वर्ष्याः स्वयः स्वर्या ययः में सु प्रते द्वीर से प्या की सूर्त परुत दिस्तीया यादा प्रति वा याद्य दिस्तीया नवर नर वसुत त्र वासुर वास्ति । द्या चे रास्ति । दुन तर्वो हार्चे वा वी इ वरःवरे व उत् श्ची भेत हत रेत ये केरे रे वे प्रतः रेत ये केरे रे वे प्रतः रेत ये केरे श्वें त निर से वास वहें र त र्वोचरक्षेत्रया वयानेन्द्रात्वेदियक्षेत्रम्वीत्रदेरस्यावन्त्रह्याद्यस्य

द्याः तर्ने व जीवा क्षां व विषय क्षां व विषय क्षेत्र क्षां व विषय क्षां व विषय क्षेत्र क्षेत्र क्षां व विषय क्षेत्र क्षां व विषय क्षेत्र क्षां व विषय क्षेत्र क्षां व विषय क्षेत्र क्षेत्र क्षां व विषय क्षेत्र क्षेत

यने या उत् श्री केंन् युक्त न्या या यहात या

देवर हेब दर यहेब यदे इस यावया यस दर ये हेब बिर विस्था दर दे ब्रायहेब या NEN क्रिया मुर्जे विक्राय क्रिया क्रिया में त्राया हेत् विष्ठा विश्व श्राया स्मृत्या वा म्हिम्मी भे भे भागी है सामार त्युवान भेत्र मारात्य में मिन्सार महिम्सार मिन्सार मिनसार मिनस NEN क्रिया क्रिया व स्था प्रस्था भी क्षित की प्रमानित प्राप्त कर देश की विद्या क्षित की विद्या की क्षित की क्षि अट्याक्चित्रायर्ट्यात्तेय.यट्याक्ची.खकायया गीय.ट्याय.च्. ट्राप्तेप.ट्या.श्चेट. उन् यः नवनः वते सः रेवः हु स्वेतः यर क्यूरः हैं। विश्वा ग्रह्म राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र श्चेंतःरुषःशुःनगेःर्केन्याक्चःकेःबेदःहेषःश्चेंतःनदःयायदेषःयरःश्चेषःनगःययः यदयः क्रिशयते दुशः सुतर लिट वी प्येत हत नव राव राव राय लिट वित के वा प्येत । दे विवर्त्तः स्वर्वा क्रिया ग्री सुदिः सर्वेष द्वी द्वारे दिन विवर्तः विवर्ते । ५८। वन्यक्ष्यक्षयाः श्रीः भीः वोः र्वसः यदः वाद्वः यदः देतः क्षेतः यदः यदः चर्त्रेत्र क्षेत्रेत्र स्तुः सुर्देश । देते स्वीरात्र स्तुषायादायी स्त्रे यादा वया यादा दिया यीषा सूत्रा <u>स्र रयःक्र</u>ीचर्यात्रः स्रक्रियः पद्मितः हेत्रः क्री विस्थान्य विषा द्याः स्थाः स्या हुः चुर्याः यदेः ग्रम्याद्यादे स्त्रेन न्दर्याक्रयायाने स्त्रेन ग्री तहेवा हेत विस्रया वस्य उत् व्यान्तर सी पी रेत ये के सूर्वे विषय ग्रीका नगार सूरे सुद्धार पान हर नायक। नार खुलिया वीका करका *ক্কুষ*'র্নি,'ব্রুমার্ম,'শ্রী,সার্মুর,'ব্রু,'বর্,ব্রু, ব্রু, ভ্রু, ব্রু, বর্, ব্রু, ব্রু, বর্, ব্রু, বর্, ব্রু,

इस्रयार्श्वरात्रयादे त्याद्वर् केराद्यायायादे व्यास्यार्थे त्यत्याचेया देवे क्षेत्राया सुर्धे रात्र वर्षेत् वस्रमः हेर्दे । वर्ते रः वर्ते वः च्यः व्यः वितः वः त्वादः वितः स्री वर्ते व्यः स्री वर्ते स्री रः तुः ধ্রিবামার্কমার্ক্সমার। ষ্ট্রীমানই নাড়র দ্রী ঐরি দ্রন বি মানড স্ট্রামার নাত্র মানত স্থানি यहें न यह न विकास का विकास के ८८.त्र.बाब्र.ब.चीब्र.बाब्र.बाब्र.चीब्रा वार्ब्य.व.चीव्र.व.चीव्या सञ्चयः नदः। विष्ठभायते न्यो व्यास्त्रे स्वायते त्याया ह्या है। व्रिः ह्ये न स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः यासुरस्य प्रान्दरः। स्रावस्य श्रुवः स्वासः स्रोदः स्वासः स्वासः स्वासः स्वासः स्वासः स्वासः स्वासः स्वासः स्वासः विन् क्षेत्रयायमा सम्मा । यह या विन क्षेत्र क्षेत्र के मायया विन विन मेर वयम् । व्यवस्य वेश विष्य विषय विषय विषय । विषय विषय विषय । विरानेराञ्चेष्य । डेराम्युर्यायासूरानुः यामिने विराम्यायाने विराम्याया तत्र सेन केर देश सक्रायतम विन ह्रीस्यायति क द्राया वित दुति त्या सहिता सून्या मि.कृ.धुर.तारमायपु.क्षयमाये.खेर्य्याचीत्रीर्यं.या.कृष्मायविपु.वि.मि.कृ.कृ.खेर.मचत श्री सर्दे विदः केंद्र मा बुदः दुः सेदः या नमस्य स्थाया या या या स्वरः स्था विदः स्था मा विदः स्य स्था मा विदः स्था मा विदः स्था मा विदः स्था मा विदः स्था मा विद बुर्यायायवरावयवायन्द्रपृष्टितायायाय्यात्रित्वाकायाः निर्वाचित्रप्राच्यायायाः य। अ.योधुः सम्भान्न द्वानु स्वानु स्व यर देव में किते क्रुव कथा बूं केंग्रावा क्षुवाया। देव में किते रहा देव प्राप्त वारा मुर्था ग्री सुदिदि । वेराधिवा प्रथा या विष्यु स्थाय । उत्तर । विषय । यानसूत्राग्रहात्रम्यान्वातः विदायीन् नुति द्वा स्टानेते प्युवासूत्राम्य विवायाः सुवारेवा वी द्वारा रुवाया रुवाया भेवाया राष्ट्र राष्ट्री तर्वेचा सूवाय विवासववाय वेसाय रेवा द्वा

यहमाय। मक्त्रमायाक्त्रमायाः देव द्वाक्त्रम्यायाः महान्यायाः महान्यायाः विकासाः यामहिनाया यीप्यायलेव सुनायनेव श्रीयायस्यायायीव ययाश्रीनारेट प्र ५८:देव:वेंकि:५गार:५सर:ब्रू:वेँवाय:ग्री:से:५वा:वग्रावा ववाव:रेवी:५५वा:वा र्शेष्रायायत्यात्रयात्रयाः भीत्रेत्राचे के त्यया मुनाया त्यातारे ने स्टासुदायी स्वाची कु.चोचु.रेट.भी.शुरे.रेट.स्रीचा.रेट.स.लश.भूच्यालालश.चीय.ता चालर.लट.स्रैय.क्री. रैवायाद्वीयसुराद्दराख्यायास्रुवावीदा। रैतायाक्वेस्वावाव्यायाक्वेस्वावायाक्वेस्वावायाक्वेस्वावायाक्वेस्वावायाक् ८८। क्षेत्र.तू.रटा च.यात्रा.केंत्र.क्यात्राता रेतु.कें.यज्ञ्.यात्रा.तत्रा.घट. यार हीयायया ग्राम्स अर्द्धेन पुरायो देन भे के स्टाम्स स्टाम्स स्टाम्स स्टाम्स स्टामस स स्टामस रेर.से.शु.श्रू.भू.मूर्याया र.घशयाक्र. अह्यर लट्याक्षर द्वारा प्रस्था ही. यगेरि:सर्थासहर्षाम। ययायः रे.सूत्र सूत्रा हिट:रेत से के केंग्र सुर्याम। रे. तवातः रेते से के के वियानगर ये व्ययम् व्यवता रेतु के वियान र रे स्नेन प्यव वि. शुरु क्रियाचीयाता यावयालयः दुर्य ह्या क्रुप्त या है रावा स्री क्रुप्यायायायाया वि. स्री हिंदि । रेन्द्र बर मी म मुदि हिंद्र मसस्य उद्या रेत्र ये के सूर् केंग्निय गुरुय दुः नग्रास्य ने प्रवित र्ह्येन विर प्यर देन ये के स्नू रे रे यम मुप्त य दर्ग प्रमा प्रमा समा स्वी ह्येन विर रेव ये के सूर्य तर् पर्व पर्व पर्व प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्त्र प्रमान न्येर.व.इ.च.चार्बार.दरा ह्यूर.चू.र्टेला लज.चा.चु.प्रेला जू.थ.चाली वन्यः यय वेवा ये हेवा सूर्य बेतुः वसुः सुर्या न्यायः न्यायः वस्यासुः र्दे हैं य यस सुन्तु सेंग्रस सुन्दी से देन देन के दूर दिया तर में से द वी साम हैं द सार यस पति ।

सर्वेट विष्यं सुरा सुराया वर्षे र रेत में के सुरायत्त्र मासूर सामी मासे रा न्द्र्या वै: तुर्क्वा वेया सुन सुनि सुनि: न्यर:यें। हें हें यं यस चक्रमाचनुबन्दुःचासुद्रमा व्येवःवीदःत्वादःरे।वन्द्रवाःस्रुःक्रियायाया तवादःरे।वः र्देवा'विष्ठवा'ख्वा रेव'र्ये'के'वद्रेष'स'द्रर रेते'ववाष'र्स्य श्रीष'रे घर श्रीवाष'ग्राव' भाइसात्रात्र विष्युत्र विष्युत्र विषया अत्युत्र भीत्र विषया बुर-दु-दु-प-भ्रो है-भ्रद-दु। देव-केव-भ्र-पद्व-प्ययागुन-धूवि-पः वै। । न्यवाः कॅनः स्ट्रेनः न्यः नुवाः वक्कितेः तयस्यः सुः वस्त्रेवाया । वियः वासुर्यः यः त्रूरः भेतः थ। देः चलेतः मार्थरः श्रेमार्थः देतः दें कितः दुः चः दरः दुः द्वेदः द्वेशः दुः दरः याल्याच्याच्याच्याच्या श्रास्त्रवाचा श्रास्त्रवाचा क्र्या.तपु.र्तत्या.यश्रभाक्ची.र्जूच.ता.ययप्यव्यव्या.च्री ।र्न.पर्न.या.क्षा.लाच.वश्रभातपु.ख र्केंब्राक्षी युः बेशायर ब्रूट व्यवाय्यायाय विषयि । यद् विषया यद् विषया विषयि । यद देवा गर्भर र्श्वेग्रयाया रेता र्ये केरावर् नेश्वाया सुरार् प्वहें राया रेंग्रायश रेताया हैताया हुरा ळुवःविदःवीश्वःस्वःषुःचक्कुवःविदःश्वेःविदःवग्वशःळ्यःश्चेःश्रेदःखंशःषदःश्रेदःयरः मस्रम्य। नेसाध्वीराविरानेराययानविः स्त्रीरान्यायानविष्यायानविष्यायो न्द्यःश्रेषिशःग्रहःस्रेन्श्रेन्। रहःरेन्न्षायःश्चेश्राकेःवश्रवःस्त्रःश्वहःष्ववयःस्रेन् षाक्रुयः द्वीदः द्वार्तः देः स्वरं या स्वरं या विष्यं द्वीतः द्वीतः स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं न्वातः वास्त्रीन्या है स्नानः नुगत् स्वावितः तहेवासः स्वीतः वीसा ने स्नोनः सुवानितः वा र्केनियाः सून् सून्य । । वयान्य क्रिकेते केवा ग्री: सुर्स्वेनियाय। । देर यह सक्तेन

र्येदिः बिदः देरः श्चे प्रयः विषा । ठेराः षासुद्रमा देः प्रबेदः प्यदः गुदः स्रिवः देशः वेदः त्रमा र्कुर-विर-द्या-त्रम-स्रुत-विदेन्द्रम्यम-स्रुर-दर-स-म्। श्र्यायान्नः देवायायादा द्वायाद्वाद्वाया सुव्यानदेनु स्वायान्ने स्वायान्ने स्वायान्ने स्वायान्ने स्वायान्या स्व यदेः सः स्ट्रान्तदरः द्वित्राः स्त्रुवः यार्च्याः दुः याः चेदः देवः चतः र्वे व्रेक्राः ग्रीः स्टाः स्त्रु व्यव वा नेन्वानीयास्रीयात्यासहैसायास्रीरायरास्राचनाधीनावानीरावहितान्दान्वाता सर्वा सहस्य पदे करी सु पर्वे स्वाप्य प्रयापार पर्वे र तु सहस्य पर ही साथ सु तु। क्र्यायन्यास्र क्रियायायहेराः विटार्स्स्य विवास्त्रया ववायः रेवायाः स्वयः विटा क्रिया वर्षावः रे.वृ:रु:वृ:र-त्रारः बिटः श्रुयः या वर्षावः रे.रु:दः वृ:र-त्रारः या त्यातः रे।वः र्ने माञ्चः स्वीयायाय हतः स्वीतः स्वीः रे से या या । स्वीतः यते स्वास्त्र स्वीता चलेत्र-तुःत्रव्याव्यावयः दरः सेटः स्रेतेः चरःत्रः स्रेतः त्रेहिः स्रेवः वारः स्रुतः च। वः देवावानेः न्वाः श्वरः इस्रायः भ्रुः स्रीतेः स्रुन् रक्यः नयवाः नयस्यः वीरः वीः स्रे स्रे र्वतः नवः श्री स्वायः क्याः यः म्बर्या स्त्राच्या विष्या स्वरं स्वर में । यदे य उद क्षे से हें माय इदि यद य वि मिड मार्थि कि दि स्पेर्द है स्थान स्वते प्रस् योचेयायाय्वयायायीः यद्रेन्ययायीयः यायदे याउव ख्रीः सूर्यायदे यगे दिः यदि यो चेया ख्रीः रदः अन्दर्भः भीतः प्रशासीतेः स्नानः श्रीकाः हैः चलितः चार्हेनः वच्या स्रोनः पर्दे । । नेः चलितः द्याः देवाबान्ध्रुःर्क्ववाबाग्रीःस्नद्विद्वदार्यान्ध्राद्वरःस्र्वेत्वयान्ध्रात्र्वेवावान्त्रद्वदायान्याः केवा

र्श्वेराक्रीक्ष्यां द्वाप्तात्र विष्याचित्र विषयाचित्र विषयाच्य विषयाचित्र वी रिव केव सूर्यन्तुव होया सूर्याय गुर्याय सूर्या । यो हेगा यञ्च दे वियाय द्वारा सु त्रेया । प्रश्चितः तर्राचे र द्वापा मुख्या । प्रति । वर्षे । व यायययः सुन्दर्षेत्रया स्वाप्त्रया सुन्दर् । सुन्दर र्ट क्रिय प्रतु क व्या प्रमाण विष्या विषय क्रिया क्रिया क्रिया विषय क्रिया क्रिया विषय क्रिया क्राय क्रिया क्र <u> ५८ : वयः कॅ५ : व्यः ५ वयः कॅ५ : वर्षः वर्षे व्यः व्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व</u> याडेवा हु देश या उत्रासीत हो। या दार देन पीन देंदर वी द्वार या क्री वेंदि शेसराया न्यायः यः श्रेरः द्येनः यनयः लेवाः धेवा नेः चलेवः श्रुः श्रुः स्थूरः श्रुरः सुरः नुः यनयः पतर प्रति केवा अवतः वाठवा हु रह रहे स्नाया व स्रवे हुँ नि प्युवा नह स्वाव नि वि यामाणीवाही यदे याउवादा श्रीकायती द्वादा ख्रीयाकी सम्बद्धा से सम्बद्धा से सम्बद्धा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान वेट्रबन्ध्यः द्वान्यवाः केन् स्वरः ये व्येन् स्वरः स्वरः वास्ट्रबन्धः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः गीतियायान्, क्षेत्रः वीटा ५ या व्यान्दराष्ट्राचा न्यान्दराष्ट्राचा या न्यान्य स्थानिया स्या स्थानिया स इ.च.क्रेर.र्वेय.त्रस्ट्र.ध्रुप्र.क्रि.प्रेंर.ज.विच.क्रुर.। यश्रुर.क्वे.ये.प्र.प्रव्येषात्रपुर्थःप्रीर. ने न्यान्यश्रेया बिरायहरा यदी प्यमानक्षित् स्वान्तु सुन्ति । नेदर सुदी सुः प्यन लवा.चक्केंट.टट.शुदु.की.लब.जवा.चक्केंट.र्जिब.की.लुब.धेब.ब्राक्य.कट.क्ट.च। हे. चलेन सुन्दर की भी को होना को देवाका सुन्दर्भाका खीका खिन छैट दया तमन सून पति सुन्दर ख़ॣढ़ॱऄ॓ऀऀ॔ॺॱॾॢॺॱॸ॔ॸॱॸॖऀॱॿढ़ऀॱक़ॗॖॸॱॺॸॺॱॺॺॱॻॖॸॱॹॢॺॱढ़ॏॸॱक़॓॔ॺॱॻॖऀॱॸ॔ॿॱॾॗऀ॔ॺऻॺॱय़। A. न्दःरेवान्नुःव्रस्रस्यः वृदःवःवादःवःविदः विदेशः सुःवर्त्ते । द्विदः तुःन्दः। ळॅ. सुरा अर्केता अर्केकिन स्वा त्रवा सेरामा अर्वा अर् **S**5'

दयाः वर्ते व द्विवः क्ष्म्यश्चितां विष्याश्चीयार्थे व र्ष्मुवः क्ष्मुवः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्या

यर विश्व के स्वा त्र के स्व क

यरे य उत् श्री वेरिका श्री र यसूत या

यद्भः स्वाःश्चेशः स्वाःशः स्वाःशः स्वाःश्चेशः स्वाः स्वाःश्चेशः स्वःश्चेशः स्वःशेशः स्वःशेशः स्वःश्चेशः स्वःशेशः स्वाःशेशः स्वःशेशः स्वः

वया वययान्य वययान्य मुस्य व्यापार मुस्य विषयान्य । देश्ययाम्य वया चक्केषःस्रुवः प्रदेशः । । स्रायतः द्वीरकः यारः द्वीयावः स्रवः स्रुवः स्रुवः । या ।र्क्स-दिश्व-स्याद्या-विदान्देर-स्रो-यर-विवा ।डेस-वास्ट्र-स्यादि-स्वा-स यार्क्यन्तिद्याद्वयान्वादिरावेषाययाक्कायानदेःयोःवेषायरः स्त्रूरःवीःवर्गोन्।याधेदः यर प्रस्ता बैट देवे परे श्चेर वेट रा श्चेर ग्चेर प्रहेग हे त यथ प्रद्या यवे अग मेन हिर तहें मुं चेर ने न प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान स्थापन प्रमान स्थापन प्रमान स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था यर हैं ग्रथा वुषा दे सूर विर दर यहीं कु सुर व्य र्शे ग्रथ या विति क्रिव प्रवित हो। यवर्यातर में क्रियाय पर पर्या अविष्य मुचारा क्रिया वर्षा यरत्देर् केंद्रेव केव वालया प्रशायर । । १६०१ वरतेर् केंद्रेव केव विषव र म्नेटा । १८४: वर्षः स्रवे स्वयः स्वयः स्वयः १८४० । विषः १८१ गुवः यद्वित तह्या या श्वीर वीया वर सूर या तिर्वित वालय से दावर या म्मा विमानाक्षाक्षिमाहास्यान्त्रेषान्त्रेषा चिमान्या यालया सेन्।यन वि नेंद्राया नेदा केदा स्था केंद्राया श्रीया सहिया विना वाद्रया यसा थीं। श्चित्रस्त्र स्त्रुयः स्त्रियायाये स्तर्दे से स्त्रियः यदिवे तिष्यायावयः स्रीत्रुयः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः देवर देव ये के त्यक श्वादा प्रवेश क्षेत्र देवर प्रवेश देवर प्रवेश के त्या प्रवेश के त्या प्रवेश के त्या प्रवेश क्वेन्द्रम्भरविराव्यक्षमाञ्चर्ता देवार्यकेत्रस्यवेन्ग्रीयायहेयायवेन्गायाद्द यदिः अत्राद्धाः अर्थाया अर्थाया वर्द्दः इयाद्दः इत्याया अर्थाया यहतः वर्द्दः

क्षेत्रेरेशःशुःविद्याय। विदानेराञ्चेषायारे रेवे श्चेति पुरायायाया विदासीया विदासीया विदासीया विदासीया विदासीया र्धे प्रेन्या ने न्वारे रेरप्पर तर्वे तकवा ५०। तन्वा वी ह्येन प्रयान्य सम्बन्धित थें बुद्रस्थ र्रेंबिययायायार वर्देर् चलेव पर वर्षाय हु थेंद्र या वितर वितर वितर <u>२८.भज.प्रि.२८.र्जेश.र्जुयोश.ज.सूर्योश.र्ज्यायस्था.लट.य.जै.र्ह्या.जश.र्</u>चीय.त.यह्यो. हेब सेवि हेर हुँ निर्मास्त्रामा ने सूर्व मालय सेन विमासे से स्वेत सुन्म सुर्वे यर्वः क्ट्रेंटः वीयः सर्केटः क्ट्रेंयः क्ट्रेंययः यदे। । वयः क्ट्रीः कः वयः यत्रदा पदेः यः उतः શુ:લે૮:ટ્રેર:શ્રુેઅ:સ્ટ્ર-:શ્રઅઅ:સ્ટ્ર-:શ્રેઅ'વઅ:વઅ:સ્વાઅ:ત:શ્રે:વર્ક્ષેત્ર:તર:ટ્રેન્સ:અઅ:ક્ષ્ર્અ: तालुबालटा यहुबाहुबाद्धीः इसायान्दरासह्वायामा वास्ट्रिका से सिवाये ॺॎॱॿॺॱॺऻॸॱढ़ॎॸॕज़ॱॸ॓ॺॹॺॹॱॸॖॱढ़ॼॗ॔ॸॱॻऻॎॱॱॱॸ॓ॱॸॿऀॺॱॺॗॱॸॸॱॸॖ॓ॱॿऀॺॱय़ढ़॓ॱऄॗ॔ॺॱॸॸॱऻ श्रेवाःवःश्रहेंशःयदेःक्कृतःकः दरः वादुवाशः दरः चः दतः दरः। इः चरः धेः सरः दरः श्रेवः स्त्रवायार्श्वेषायायायीदायाद्ववायार्थ्याश्चित्राद्वेदाद्वेदाव। देवदात्त्वदार्थाः वेष गुर्व क्षेत्र प्रस्ति । स्टर्म ह्रम्य व्यावा स्वावा विष्ठ वर्दरने व्रायाधीन यर द्वर ये गुन् क्षेयायर होत्। श्रेप्तरेन यदे के न वे हा इस्रमान्त्राच्याः भ्रास्त्रमान्याः व्यक्षितः हो। सर्वोदः विष्याः सुन्याः व्यवसान्यः इयान्द्रात्युयायाचन्त्रात्वहेत्राचय। ।धीनायान्त्रत्याम्यान्तर्वेनावर्नेनात् उर्वेरा बियायसिर्यात्र सम्मानु सामिति होता वियासि । वियासिर्या क्वरही श्वेरप्तरे व्यवलिय वी श्वेरि श्वेर्प्रेयोप गेरिया अर्धि रेषा व्यविश्वा वी श्वेर्प् युवान्दरःसम्बद्धाः स्वरं स

<u>षियः पर्यासः अपायः अपायः प्रकृताः वीः लयः वास्रुरः।</u>

यालाया हास्रीरारी द्रयाक्ष्यायाबुरमध्यात्तरास्याचा क्रि.मक्स् र्रेथः ब्लीटः ब्लीटः वालवः मन्दरः सेद्रा । वाष्ययः लेटः वेदः त्वरः यदेः लेटः क्रस्यः द्वावः [इस:५म:कुय:मदे:बैट:५ेर:ब्रें]:मर:बेंग [डेस:मस्ट्रा বিমাঝারমাঝারে দুর্ভার্তির প্রান্তির ক্রিল্পির ক্রিকার্যার ক্রিকার প্রান্তির বিশ্বর ক্রিকার বিশ্বর ক্রিকার প্রান্তির ক্রিকার ক্ र्र्या र्रोदिः श्चाः स्नुव र्श्वेवायः प्रविव रो र्हेवा स्नुर्येवायः स्नियः स्वयायः विदः। यानुवायः ५८ कुवा सर्वे ना ५ व राष्ट्रा प्यताया सेवा साम हैवा साव सास हें ना यह सुन हों ना तहतःश्चेत्र तेर् चेर बूर केंग्राय उत् श्चेया श्चेत्राय वस्य उत् सहेंया पर शूया विराव हुन श्चेते.बुंकर:वहें व। कुंवहेंब:५८:श्रुवा:श्चेव:वर:वेंट:५.कुंव। शृद्देते:५८४:४: धुँग्रयायाविष्याः देवियायद्यायिः सुदायह्याये राष्ट्रीदायया देवाये केते हिंदा विदायी <u> พณเสรุนารุราชิโฟารรู้สังเพาหัฐรารูพาพาหัฐทาติโดหานายูพาสูนาสุพาพิเศติราชีพาสมนา</u> देवर भ्रे तिर्मेर मर्बेर म्यारमा स्थानियम पालेम मास्र मास्र पाल स्थान देवै देव वाषाया हे सेवै खुरार्स्य पत्त र्डमायया वादे रातु वाय रावशुरारे स्नुसायवे व्यविः हेवाः क्षेत्राचरस्याः चुः हो। वद्विः स्योदः वचोदः स्वदः दिनः होतः सस्त्रः स्ववासः त्रेः प्रस्तिः स्वासः स्वतः स्ववासः त्रेः स्वतः स र्श्वेर प्यत्य दर वसूत्र हे वे ही र डिंग दु वा सुर या ये। । श्वेर दु उवा वी खुया के दि वे रदःरदःकी विःचले रुंग्राक्की मन्त्रम्थार्थी सुदःदुः तदिः धीवः य। सुः धुवा सुः चुते खुवाः वबर में न्यवा कॅन न्दर क्वर ज्ञावायाययायक्याय के भी त्योर वन्द्र न्तुव पर सी त्रशुरारी । दे प्रवित रूट रेदी प्रश्नियाय गरिया परे पारुव शिवया गरिया हु स्वरूप नेदि हैन सक्न क्रिक ने नेन हैं रेट नर पर नस्यायर से क्रिके है। है सूर है। बूद न अवत प्रवादि नियम व । विषय । यदि ने मार्स दे ने प्रवादे ने प् यय। क्षित्र-५८-अर्द्धनः श्री-भीर-प्यर-भोर्। विश्वानाश्चर्यायाः स्वीत्रायाः स्वीत्रायाः स्वीत्रायाः स्वीत्रायाः

श्चरक्षायर द्वित् । स्टाइँदि दुषायद्षाया दा से हिंगा हिराया समस्य स्टासे स्थार श्रूरा है 'द्रिये ब्रिटा 'द्रिया था' द्रिया 'द्रिया 'द्रिय नर्रा के ते सुर करार्ट के किंगा की करा नार्ट के ला की है। नस्टावस्था सेट की चरःब्रैटः विश्वश्राश्वरः देववाः क्र्यः चक्किः क्रेटः वीः ख्रेत्रः ख्रीः युवाः चीतः दवादः राजाः दरः क्रीटः म्बार्या क्रिया में क्षित्र क्षेत्र क् चलेत्र यानि रु.चालवा सेन्।वर सेनाया कन्यायर सा वन् खू प्याय स्वर स्वर विस्रकार्युदर क्रम् वाया है। है स्नूर्त्य वर सूर वा सूया मुल्या सेर वर वा र्श्यम् । मालमातसुव्यानम् स्त्रीन् स्त्रीम् । विष्याम् सुन्याने बिट (यस्र अपने राष्ट्री अपने देश मुक्त प्रतान हैं । यह सम्बन्ध स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान म्बर् तसुय न्नर होन रीका स्ट त्रम् न नु सेन या वनिते नये त्या सेन विकास यह्मा हेव श्री प्युया क्री सूर में विर्देश विषय द्या नियम बिर मा नुमाया श्री सूना मारी सर्वे सा न्गुर्यायक्रुत्रायात्रके स्रूप्त्रवाया वे यहेन् स्रोन्या लेवा विवस्त वे स्यायस्त्र स्राया क्रुया विवस्त क्षेत्र-र्यर मु.चक्के ब्रीय-क्री-र्यर-र्ये र व्यवर हे. यविष त्याय हे. यो र या व्यवर तस्यान्नर होन् ने नने न उन् हो निर मो ने ज्ञा श्री न प्राप्त किर ने ते हिन् त्यमाया हो प्राप्त हर नमूर्व। वीट श्रेरियानविदायोदी प्राप्त निर्मा वर्षेत्र निर्मा श्रीत प्राप्त प्राप्त निर्मा वर्षेत्र निर्मा वर्षेत्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र शुष्टुं क्ष्मा चीरा बुर विश्वरा की सम्बद्ध विश्वरा स्थित के स्था स्थित के स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स त्वेषा'नसूत'य'र्डं अ'यथ'र्देर् 'य'त्वेद'विस्रश्चाती'र्येर 'हत'र्से गाुत'त्र य'पात्य'य'य'युदे' श्रीवा वीषा ग्राम्य अर्थेन वित्र स्वादा से स्वेत स्वादा स् য়য়য়ড়য়য়ৣয়ৼয়৻ৼৼয়৾য়য়য়ড়ৢয়৻য়ঢ়য়ৼয়৻য়ৢয়৻য়ৣয়৻য়য়ৢয়৻য়য়ৢয়৻য়ঢ়ৢ৾ঢ়য়ৼয়ঢ়ৢ৾৻য়ড়য়৻য়ৢ

ख्यःयन्याञ्चः अःयङ्कः श्रूयःय वटः अर्केवा वी लयः यास्टा

यने या उत् श्री यञ्जन श्री भेति कृत यत्न या

दवा तर्देन वसूर्य या ब्रैन क्रवया क्रेंबा लवाया सुर्देश वसून त्या केंबा केंद्र की वित्रं प्रति वित्रं वित्रं वित्रं के वित्रं वित्रं के प्रति वित्रं के वित्रं यन्तर्यते यने खून लेट यो रायानिते प्रयानितान यर्जे अखून तर्या कुषाय ते प्रयान योर् ग्रीनुर कुन ग्रीकेर पोर्प हे स्नर्त्। वुर कुन किर पा स्निक्त नहेत शह्र-री वियोगः हुः श्रियः क्रीयः क्रीयः स्थान्य न्यान्य नियाः यान्य नियाः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स नुषायार ने प्रतिव प्रदेशियाय र व्या विष्य व विषय है व साने दे से साने व का प्रति स्थाप के साम के साम के साम के श.चेश.तश.चेट.खेया.क्षर.शटश.क्यैश.चेया.चर्षेयाय.खेयात.क्षे.चेंश.श्र.च्टा वैट. क्वाः व्वेतः यदिः विदः देवेः सर्वतः यः देवः ये के यक्कें इस्रायरः सूदः यः बेरा देः क्षूरः द्ययाः यर्गेव त्यवायायाया सुता श्रीया वार्ष्य या है। देव केव यहीं इया यर सूर लेया व। विर.क्य.कुर.मक्त्रा.क्रुर.रेर.र्येग.चक्चि.य। ।ष्र.ध्र्य.प्यंक्य.यं.क्येय.ह्यर.रे. ययः वक्कुत्। १२ वर्षेदः प्येतः ५ तः सूः द्वीवायः वेदाः यरः विवा । देयः वासुरया ब्रेंट द्र द्वा नकु वे द्रमा कंद ग्री म्हार अद्दर देवे अक्व रंग ब्रेंस व्याप्त प्याप्त स्व केव दि प्यान साम होत् के का के राधी सुवा प्यान सुवा का ता है वा का ने हिन सहित

त्रश्नुशा विरःक्ष्यःबुरःदेवःश्रक्ष्यः व्यवस्यःदरः विष्वेरःक्षःविष्यः व्यवस्याः वि क्रॅंट.रेट.रेंचे.चक्री.लूरे.तो अ.चयु.झूंश.क्र्रे.क्री.शबय.सूंच.रेंचेतवी.क्रेरे.की.चक्री. र्थेन् यर वाशुरुषा अर्ने श्चे न्त्रीत अर्केवा चर्रे वाषा य न स्त्रीर हे यह न्त्रा र ये न र्रमायविरायम्यायाक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याः विष्टात्रम् । वास्याक्ष्याः विष्टा बन्। तर्न् श्रीव वि स्त्रीय शर्ने व प्रत्य स्त्रीय व क्षेत्र श्रीय श्री क्कुलायेन्द्रित्देवान्त्रेत्व्यू श्रेषायळेवान्तु चुन्वर्ते रातु रेत्ये के विन्ते वासू ळेवाषाया यश्ज्याचित्रः अहेरा सम्बुर्यामा व्हेर्या सम्वेरी हेर्द्या ने निष्या मान्दर वेरि साम् ये में वा न्दर त्व्या तु नरुष दे स्वरूप न्दर ते ने वे निवर्ष वित्या स्वा नु स्वरूप न्या ना व्यातन्त्रम् अ.मे.च.ता.स्राचान्यात्रप्रम् नामान्यात्रम् अ.स.स.म् इत.स्.क्रेट.क्रिय.क्रीमानीयः वयायाह्यातराचम्वेवात। चम्चेवार्ष्यात्मराच्चेवार्षाः सार्यायरायाया म्मान्यायात्रायात्रायात्रीयात्रीयात्रायात्रीयात्रायात्रीयात्रायाः विष्यात्रीयात्रायाः रेवाबाःवाञ्चायाः सूर्यः बूरायदे वे रायुः दरायकुः वीवा बीबा विवाशायदे वे रायुः वेवाबादिवाः हेब से प्युत्य ब से द स द द प्राप्त के प्रायति व स्वाय किया प्रायति से से स्वाय प्रायति स्वाय प्रायति स्वाय स यायाञ्चा द्वीतः द्वीयात् यायो प्रायदे । यद्वीया उत्तर्वा दे । त्वा क्षुतः यो या विक्री । यदे । यदे । यदे । यदे । स्नुव र्रो तहेना हेव र्श्वी विस्रकास र्यो स्थित हैट । देते ह्यू र्श्वका स्वेत र्रमा साधित प्राप्त विराने अर्वेर न्दर क्रें आन्दर त्वा आवृति रे क्रिंट वान्दर तेन त्यु आत्य केवा कर्न न्दर प्येन त्या चुकार्क्षन्त्वाः श्रीवाःन्दः श्रूःन्दः सुन्दः सुन्दः त्युकात्वः वृत्तः श्रीकाः श्रीः स्रोवकः वृदः क्षेत्रकाः सु यरम्पोर पर से त्र सुर लेख मास्ट्र र से । क्विय पर तेर प्रमा सेर सी से सेर क्रेंब् यदी वाबका है। केंब्रा प्यट द्वा यर क्षुट यदी विट वाबट लेब्रा यदी देव केंब्र

रेव भें के दर वे र चुते रेवा या सूर केंवा या या या चुन भरे केंया ग्री म्बराध्याप्यापरा विः केतः चेतिः स्ट्रेटः। ५वाः वार्यायाय व व तिरः व याः व तिः तेतः व व तिरायाः व तिः व व व व व व व व व व व व व गन्दरहे। अर्गेदर्भेत्राञ्चयर्भेषा पर्ह्वेदरगन्दरअर्केनाने तद्रअर्वेदरयर र्वेच । डेर्थायदे मन्दर सेट देवट विस्तर मेंदे महिलाय देवे निर्मा सेट चर्षयात्राज्ञा । रेवरा क्र्य.धेर.धा.पश्चीर.क्रैर.च.भवर.लय.वे। । वेद्य.तव. क्र्याकृत्रात्रश्चरावेषाययाव्याव्यास्याव्यास्याव्यास्याव्यास्याव्यास्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस् यानुवार्याञ्चार-वर्षरायान्त्रेयाः स्वतः क्वायाः योदः प्रमायाः योदः प्रमूतः क्वायाः योदः र्देवः यो विष्रः व्याक्षेत्राचा । यक्ष्यः च च द्रात्रा विष्यः च च द्रात्रा च विष्यः यश्चित्राः यश्चित्राः यश्चित्रः यश्चित्रः यश्चित्रः यश्चित्रः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः यश्चित्रः यश्चितः विद्याः विद्या बिरःश्चेथःगुरःवीय। ।यर्क्चेर्सेरःय्वनःश्चःयदेःवान्वःसेरःन्। ।व्यरःख्यःवीरःयःसु क्चित्र यहेत् स्यह्र दे। । श्वाय सहेते स्रुवः क्येय क्या प्रवाय स्या यञ्जिया विषयम्बर्धर्यायासूरा द्विम्यायस्त्रीतिक्षयार्याः यरयाक्कियात्र्रीत्रियाः योत् श्रीत्रेत्रियाः श्रियः प्रयाप्त्रायः यात्रायः यात्रायः यात्रायः यो बेर-अवतः प्यम् सुः सेन् प्यादर्भे प्रयादेन प्रमा सेन्। सुं कें केन् सेन् प्रयाप्य यर प्रतिबाधार्यका के दिवया स्रोदः स्रीयाश्रास्त्र स्री के स्राज्य द्राप्त स्राप्त स्री के स्राप्त स्राप्त स्री विवायम्यमायम्यातवृदायादे क्वियायायदावी क्वित्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्यायात्रम्या धीयाहेवायायरातुया दर्वी वागाुतायाहेयासुरकवायायदी वहरासुर स्वी याद्यारा स्वी श्रॅर हें वाया थे खेया देवर यह्न रूपादे अर्देवा उदाव या शुरुदे युर ये र सूरा श्रीया

अक्ष्यःच बर द्वाः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः श्रुः । ध्रुषाः ब्विषः ब्विषः श्रेषः श्रुः विष्यः श्रुषः व रमःविर्व्यक्तर्श्वराष्ट्रयाष्ट्रयाया यदयाक्त्रयायवे स्त्रुव्यव्यक्तराष्ट्रयाय स्त्रुर्वे प्रविष्ठः युग्रयान्य । वयाग्रियायादी केंब्रा न्युंद्र सर्चेंब्रा न्या न्दर केंब्रा मुर्गि न्या । योड्याः सर्ष्ट्रतः प्रदेश्यद्गः न्याः विष्याः योड्याः स्वीत्रसः न्याः विष्यः स्वारः प्रदेशाः स्वारः स्वारः स्व ययात्रययाद्यात्र्याचा होया यहिष्याच्या विष्याचिष्याच्या विष्याचिष्याच्याचिष्याच्याचीया सूर वर्ने न बुराय दे । वर्ग न र कु के ते के या सिंद भी या तर्ने गुर के या पर सह्रम् संस्थान्य स्वाप्त स्वाप र्रेवा सर्के न्द्रा पड्या पति न्तुया दाया स्वरं प्रायम्य विद्यान् । यद्या क्रिया द्र्यान्याः भ्रोत् द्रीः स्वर्याः क्रीयः क्रीत्रितः विष्यस्य निर्देशः वाः क्रीत्रः वाः विष्यः वाः विष्यः वाः व भट्टे.तर.यसवोगा र्श्वा.ट्रेयर.क्रेंश.मु.क्रेंय.यु.क्रेंट.ट्र.क्रें। ध्वोग.चिभग.ट्र. क्ष्रीट हे प्ये लेख ह्वा हु तेर्द वायय यहमाहीद क्रेन चेति दट यया तदत या योद प्यया सूमा बो। देःयबःगर्यः वृद्धः बेबः देरः रदः बूदः चःग्रबुदः यव । यगः दुगः दुदेः चद्गः हेदः यर्षः भियः र्टा भिरः भे रूरः सुरायरः सैया सुरायष्य्रीयाया। रे विषयः श्वीयायः हे स्थितः ब्रीयाक्चरावयायायायाची वायाकुयाची क्षुप्रामुवाया हे त्याम्याया क्षुप्रामुवाया हे त्याम्याया क्षुप्रामुवाया क्ष्प्रामुवाया क्षुप्रामुवाया क्रामुवाया क्षुप्रामुवाया क्रुप्रामुवाया क्षुप्रामुवाया क्षुप्रामुवाया क्षुप्रामुवाया क्रियाया मुग्रमाही पञ्जयः विदःगर्भयः प्राप्तायः प्रम्पायते मुग्रमाही गर्यः चुः क्रेवः प्र तस्र पति स्वाया हेर्ते । १८ वे हिनाया हुन ही स्वाया हेने। १ वे न स्राया स्विति है। यदः द्र्यायान्य स्थान्य स्थान्

ब्रम्भारुद्रा भी देव स्था देवर स्थाय स्थाप्त व्याप्त व्याप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थाप जःश्लेषकारात्त्रव। दे.क्षे.शूर्रीय:वैर.चर्चेव:क्वे.चेवा:स्वा:धि:धु:वूर्राःवचकाश्रदेताः र्शे । १८५ य ५८ केश विद्वाय स्त्रुव लिट वार्शेय य य प्रतः स्त्रुव शहे दी। न्ये धुमायामित्र वित्रक्ष श्रीका स्त्रीका स्त्रीका स्त्रीका स्त्र श्चीप्रावेदायायलेदादी । वार्याचाक्चेदार्यायस्य स्वावादादी श्चीरा क्रियायाययायार्श्वेतार्श्वेट रटायीयायात्वयात्र हुं योदायीयदे तत्वयायदे तत्त्वयाया न्गातः सेन्। ने चुकायते वाषा हेवा सुवाय स्वाया सुवाय स्वाया स्वया स्वाया स्याया स्वाया सहयाबिदा। वास्रुदावी द्वाया द्वाया द्वाया द्वीया द्वाया द्वीया द्वाया द् यानुवायायम्भवावायाययाययस्य विवादी । निःसूरायदेरावायप्याक्कियादेनः रत्तवा स्रोतः क्रीस्त्रेतः स्त्रदः स्त्रवतः प्यस्यः प्यस्यः वास्त्रः स्त्रवास्यः स्त्रवासः स्त्रवासः श्ची:अद्वित:प:क्वु:के:बिद:अव्यत:अश्या दे:प्यवित:कुंय:विअय:प्रद:हिद:देंदर्दित:प्रद: ঀ৾য়৽৴য়৽৴ৼ৽য়য়ৢ৾য়৽য়৽য়৾য়য়য়৽য়য়৽ড়৾য়৽ঢ়য়৽য়য়৽য়ৼ৽ঀ৾য়৽ঢ়ৢ৽য়ৢ৽য়৾৽য়য়৾৽য়৾য়৽য়৽ यदयः वह्नेयः यः वै। हैं स्नूदः दु। हिंदः यदः यहेषाः हेवः यदेः वः वालवः यः यक्ष्या विषयम्बर्धरयायायविषये । । ने सूरायने सूत्र विषयो सम्बर्ध से क्रियाया देन न्यम सेन के सूर पीन या होन रहें या मुख्य तने मका ही मुखा करा मसूत पर्दा । दे. पर्वेष 'तं. पं. क्या चीया क्या पर्देश पर्दा या चिया पर्देश या परदेश या प द्येषात्रा वर्ष्ट्रच्यस्त्रमार्थस्य द्यान्तरम् सामिकः

गुनगाम्च कवाया यो देशे वार्ष स्वार्थ से देश के वार्ष से स्वार्थ से स्वार्थ से स्वार्थ से स्वार्थ से स्वार्थ से स ५८। वर्नरःगुक्रामधिकःवर्देगमाञ्चीरःगीम। वर्गामाःमेनःश्लेरःहेःवेरमाञ्चेनः श्चिव,रषाचीच्चवा विवासवाक्चितायीय,श्चेराईयु,रराचीच्चवावायु,क्रुव,श्चेव,रषा योत्रयान्य प्रत्य प्रत्य मेन स्वर्ष । स्वर्ष स्वर्थ स्वरं ক্রুথে শ্রেষ্য মধ্র ক্রর রিন দিন মুর থকা নদি ক্রির জিন লী বার্তীনি মাল্রর বারিষ্ণ দেন। दे निब्देन सिंद्य निवास के निवास मिल्य निवास मिल्य मिल बुरः कुरः यतरः ने 'नवा' यथा वाबव' नु 'शे' ये यथा बेरा । तवावा' ये न 'श्लेर हे 'ये र या ब्रैंन श्रुव रया नी वेनाया वियाय दे दिना ना सेना स्थान र्हेवायायदे सुर् रुष्ट्रायाद्या वेदिया हुँद् हेयायदे क्रिया वीया ग्राटा हीटा हेरा वेदिया श्चेंद्र-यः येत्रमः मुर्जेरः यद्भः युन्द्रमः श्चेः यद्मा छेदः तथम् यायः श्चुमः रमः मुत्रेम् यादेनः <u> न्यारः वाष्णः विष्यः वाद्यवाः वाद्येषः वोह्यः वोह्यः स्थृतः क्रेंबः उतः क्रुंबः क्रयः वदः वास्रुयः क्रीयः</u> यहूरातरःस्थाः भे पर्वेषायातायायात्राचारा प्रस्थात्राचीयात्रा विराग्रेषायाया केत् वितायाञ्जा अर्देवा क्षेत् यो कत् न्दा प्रकार पार्के विति वाष्य वाष्य नित्र सुन्य । शुः भेर्दायतर भेर्दार्र मार्थाय प्रस्तु। रे.वा.ववाव लेवा वीश श्रुव प्रश्ना श्रेवाश र्यट. यु. यट्य. क्रिय. त्रुय. य्यायस्यायायायीय। याट. क्रियाया त्रुय. यु. या. याया विंदः देवायात्यः देवायः विदायम् याचिवाः स्याद्यायाः यो द्यायाः विवायोः केंद्रा हिदः यहूर्य.श्रायवीय.श्रूचा.भ्रेंर.पवीय। जुर्गारय.श्रायवीय.ग्रुचा.क्रायवीय। ट्रे.क्रेर. वेंना यदे यम र तुन्न माने द वेंना यदे न यद मान सम्बद्ध माने या द व माने विकास है या द व माने विकास है या प्रा र्रे । दिश्व वॅदि-दुःक्कुश्य वःगुब क्किक्षेट हेते रदः वा बुवाश लेश यश दे हिद इस्य यः म्यायाः क्रीः क्षयाः क्ष्याः याक्षयः याक्षयः याक्षयः न्यान्यः स्यायाः स्यायाः स्यायाः स्यायाः स्यायाः स्यायाः सुःसूरः चः ५८। अळ्वः से ५.५.५ वर्षे सः ५ राष्ट्रावायः सुन् ५ ५८। से ५ रहे ५ से वायः श्रेन् स्वायतः स्वर्षः स्वरायतः स्वर्षः स्वरायन् । नेतरः यानुत्यः वुः तनुत्यः स्वर्षः स्वर्षः स्वर श्रेम्यात्रात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्य श्रेय्या अत्रया अत्र मार्चे स्वाप्त स्वापत स्वाप गहिबादरा ध्रमाक्षेराक्षुताक्षेरा तयम्बाबासकेमाक्षेत्राक्षेत्रस्याम्बो यसयोग्नातान्त्राचात्रास्त्री यसयोग्नामकृयायमान्त्राच्यान्त्राचात्रास्त्रम् ८८ श्रुपी पर्योत्या सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा । भ्रुपी हिंगी हिंग रमान्त्रीचेनामान्द्रा क्रियानाईनाक्रियाना चुरमान्यामान्द्राचाना साही लुवार्चेवाः भे क्ष्यासीर विश्वाचाष्ट्र हिंदाष्ट्र अस्तर रेपुः हिरालुवार्च । रेप्या ल्.मैथ.त्रेष्य.यर्ष्य.यर्ष्य.सैय.सैय.सैय.यर्ष्य.सी विष्य.त.यर्द्य.र्थय.यर्षेत्र.यर्ष्य.सीय. म्रम्यान्तर्भी स्वित्तरम् सुर्यापति स्टामानुष्या पुरास्त्रीयाया सम्यान्तरम् स्वामान्यस्य स्वामान या द्युवाया हे क्विया वा गाँदा यया खूवा यम खूम वा खूवा खूब के कि क्विन है। हे स्निन है। म् वारायक के वार्त त्यायाय देव के। । यह त्याय तिर्व स्थाय तिर्व स्थाय योद। वियापाः भूत्रः वियान् । व्यापाः व्यापाः वियाः विया गुः रु:र्ज्ञे व्यव अर्केष श्रेन न्दा अुके नदि र्योव क्रव अदय श्रुका अप्योव रिषा पर्विया श्चेरासुरो में वाया दिया है ते हिंदा विकास के ति हिंदा स्थान के ति है ता स्थान है से स्था से स्थान है से स्था से स्थान है से स योन्यतर नमूत्र ने पृते क्षेत्रे योन् क्षेत्रे वित्यत्य के तस्या के स्वर्ध व्यापकी पासे पासे हिये या सकेंगा पहेंगा है। रेगा पहें ता हमा प्रविदेशों प्रयूर सवर द्वित पतर त्वासाय हिंगाया सूर सवते स्वासाय दे दे पीवा हे द्वार ते सा

उत् श्ची क्चा अर्केर तर्थे राष्ट्रे राष्ट्रे साधी क्चु धिराया या सुद्धे राया धी क्चेत व्यर्था या स्वराय राष्ट्रित युषाचियान विकासेर क्षेत्रा विकेत के तहिना चया की क्षु र विकास विकास के विकास के किया ने ति प्यार क्षेत्र की विकास के विकास के किया ने विकास के वि का विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास क नःस्रमानक्कःन्द्रःमालदः धदः देवायः दुवाः वीः यादयः सुः दर्वे विनेदायः सर्दिः यदे व्युः सुः से रो विन्यम्नु अद्याक्तुयः भुन्देया ग्रीव्यया ग्रीया या यस्याया यदि या व्ययमेन प्याय विन्य वक्रुन र्शे सेंदि वसूत वहित क्री स्रुकात पेन क्रिन क्रा नुति स्रुवा व पीत पर सेंग्र है से য়ৄৗ । ॴटॱয়ৄয়ॱऄॗॕয়ॱয়ॱঢ়ৢ৾ॱॻॱख़ॺऻॱॻक़ॗॱढ़ॹॖॆॸऻ । श्वासॱॹॖऀॱढ़॓॔ॸ॔ॱॿ॓ॾॱয়ॺॱॷॣॺॱ यइ.उर्वेर.। ।लर.र्बेज.ख्र.क्रेय.वे.च.स्या.चक्च.उक्चेर। ।३४१.तथ.४.र्बेझेर.यूर्ट. २८.र्ज्यात्र.र्शःस्रीयत्रात्तेत्राक्चीःक्षेत्रस्यात्रात्रात्रात्वेताःवर्षेषःष्टरः। र्थाः श्चैम्यायायदेः श्चेन्यायदे र र्श्वेद् श्चेश्चम्यायश्चेत्र प्राप्त श्चेत्र प्रयाश्चेश्च श्चित्र स्वया ऄ॔ॱक़ॗॖढ़ॱय़ॸॱढ़ॻॗॖॖॖॣॸॱॺऻॺॖॖॺॱफ़ॏढ़ॱय़ॸॱॻॺॣढ़ऻॱॱॱढ़ॸऀॱॺऻॺॖख़ॱय़ॱॺऻऄ॔ख़ॱॻॱॻॸॖॻॱढ़ॱख़ॗॱ वालवः चर्मान्य व्यापार्थेवः यान्य विष्या विष्य याल्य व्याया अने व्यापा या नेतर के या स्वित स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व याश्वाक्षीत्रस्यायरःश्वायायाधितायसार्ख्यायस्त्रस्यात्राक्ष्यास्त्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस् थीन् या नुष्या ने से स्वाया स्वया स्वाया स्य स्रु:बेद:बेट:८८। ८द:र्शर:वी:क्वेंद्रवावा:बेट्रा सरस:क्वेंश:खेर्वेद्रव्यट:बेट्र:

वियः यर्गान्तः अप्यास्त्रः श्रेषाः यवसः स्रक्र्याः वीः लयः यास्तरः।

क्रियिष्ठ्यायास्यायायास्य स्थितः स्थितः

८८.मु.कूर्यात्राचलयात्रात्त्रवे त्राच्चेत्राची

श्चीरः र्ह्याश्चायश्चाश्चायश्चित्राश्चायश्चात्र विष्याः विष्यः विष्याः विष्यः विषयः विष्यः विष

च्यां म्यां म्यां

सिया.पक्ता.यपु.लय.जया.यप्ट.ता

क्रम्बार्यात्रेन्द्रम्भित्तः क्षेत्रः त्याः क्षेत्रः त्याः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्याः वयः व्यव्यः व्यव्याः व्यव्यवः व्यव्यः व्यव्

ब्रुटि: ब्रेट्-रहुव: लेवा: प्रेव: प्रकाः क्षेत्राच्युक्ष: युक्ष: प्रकाः प्रक्षेत्र: यः व्यः क्षेत्र वाद्यः व्यो म्नैयः चारः द्वीदः श्राद्यः त्रीयः स्वाः त्राद्यः याश्रियः क्षियः चाश्रियः प्रदेशः याश्रियः प्रदेशः याश्रियः व यदःयगः नर्दः चेत्रः नर्षः दः नर्षा वा वा श्रुषः द्वीयः वा श्रुषः दः तर् से। क्रियायाययायाया भ्रीयाञ्चीताञ्चीराया व्यययायायहेवावयार्याक्रियायायरा चॅरक्षेयाचरतर्दे । युषाग्चीसुनातर्द्याचि । वयार्वे क्षेत्रम्भीरानितः स्वित्रात्वरूवानान्त्री स्वित्रायान्त्रुते स्वितानास्र्यान्यस्यायाः स्वित्रयाः स्वित्रयाः स्वित्रयाः स्वित्रया तर्नेन-दर्भवाबीर-सिवातक्तानदुःर्म्याक्त्राक्त्राक्त्रीयमान्त्रे *चेशः* दशः ङ्चाः क्षेत्रः चीत्रः चीत्रः चीत्रः विष्यः वर्षः यस्त्रः विष्यः वर्षः विष्यः वर्षः विष्यः वर्षः विष्यः अर्वोद्गर्भारेत्रन् न्यवा सेन्या सेवायायात्रसास्या स्वायायात्रसाम्या स्वायायात्रसाम्या स्वायायात्रसाम्या स्वाय प्रवाद्यवायराष्ट्रवाया स्वापायक्यायविवासराक्षेत्राच्येत्राच्यायस्य स्वाप्त शिवश्वाचार विचारतीयाता शुर्वा त्याप्त त्याची विश्वास स्थित स्थित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स गुरुष्य केत्र में राष्ट्रमा तर्कया यस्य मान्य ने स्वर प्या से हुँ स्वर से स्वर प्या से हुँ स्वर से से स्वर प्य यश्चरमो स्वायश्चीश चेत्रय प्राची विद्या प्रत्यावि प्रयायश्चर प्रयायश्चरमो इ.मुन् क्रीमामान्यस्य विचायरः न्यायाया माननः वहात्रः विचायन् विचायरः विचायरः विचायरः विचायरः विचायरः विचायरः व मन्तर्द्रम् क्रिल्बु न सेन्या हेरानर्देन न सम्बद्धान क्रिल्म क्रिल्म हेरान हेरान हेरान हेरान हरा समानिक क्रिल्म म्रीयाबिटावविंदामाशुकान्द्रीयात्रात्मात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रीत्रेत्रात्रे स्त्रीता न्यो सक्ते स्त्रीता यरःश्चितःश्वरःदेःयश्व्यःदरःवद्ययःवरःश्चःद्वःत्वरः। वितःधरःदुःश्चिवशःदेवःववतः चै.लय.जया.यर्थ.क्रीय.यर्बेय.तपु.रयो.३.वयय.३२.४। यवय.लय.तपु.य्रायय.

क्व. वश्वश्व. वट. क्री. ट्रेंच. ट्रेंच. श्रेट. वीट. क्वेंच. तवींच. तपु. प्रवींच. प्रवींच. तप्रींच. त्रींच. त्रींच. तृःगयाकेःनयादिरायरः र्ह्नेयाने नहेंद्रायाधित। श्वीराकेयान सुद्रायाधित। श्रेशित्युम्बारायाञ्चमात्रक्रियायुम्बाराञ्चर वन् श्रीत्रदानानु सार्धेन् स्रेन्। ने न्मारे रे'अ'रद'रद'की'ब्रिद'ळेंब'दद'ऄंब'५ब'ऄंद'य'अब'बाईबा'विंब'अद'दबा'ऄब'क्की' म्बर् इस्र ने र्ड्या से दासूरा पर से प्रस्त में किया मुद्द रहेर तक्याव देर द्वेषाय प्रेंद्यर देया रहेया रहा त्वाषाया व मुह्य सुवा दह सुर सुवा <u> इट.जीयाजासुचाक्र्यामास्याज्ञानास्याज्ञानास्याज्ञानास्याज्ञास्याच्यास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्</u> म्परायदः खेरायुः वृद्धेशास्त्रसाय्ये विषया ग्रीसाहे साथा विद्धेवाया है। इर खेरा परायर बिटा। यनामित्राचीः वया से विना से टासे मिनामास्य मानिस्ती सार्या सार्च सारी है । বিস্ফ্রিসিন্ধ সাদার প্রসাবের অানবি অ্বাদ্র সির্মির স্কর্মানী ক্রিমানী ক্রিমানী ক্রিমানী ক্রিমানী ক্রিমানী ক্রিমানী क्कुर्यागुर्व। ।र्केर्याद्रदार्केष्म्याग्रीयकेषा प्रवस्थाय। ।बिदासूयागुर्वाश्चीम्या क्ले<u>न ज</u>्ञा ।त्युरायहुन्।यरादीयायर्ख्या ।देशयासुररायासूरः ૡુંવાત્રાનકેવુઃ઼થેઃવવુઃબુદઃ!વજાજાજાવવઃતજા.ઘોદજાજીટં.તા.વે.વરજાતવુઃટીજા.જો.ઘી્ય. ब्रेब:स:र्टा अ:दुर्य:सदु:र्यंत्रव:पत्तिव:सर:प्रश्नुर:प। र:व्रे:बुर:विश्वयःश्रः श्र्यः चर्तुम् रापत्रे स्वरं स युरः हेर्ग्यायात्रः केर्याप्तरः केर्यायाः अर्केग् प्रमो त्रुत्रः प्रमायाः या धुमा तक्यास्रावदः स्ट.वी. तीका ही वीका पश्चित करा पश्चित । देव । विषय अर्थे में या ही हो ने । तिका करा ही हो ने । तिका करा ही हो ने । तिका करा ही हो ने । ने स्नेन क्री व्याद्यान्य प्रतायि अवतः प्ययाप्य स्त्रीं या सूच्या है। युषा यह न प्यया वि

यद्याः स्वयाः वर्षेयाः विद्यायः स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास् <u> इट.शज.कॅ.श.ज.तच। ट्या.मीश.तपु.त्रैयो.पक्जा.यपु.क्रुयो.पर्ट्यो लूट.मीश.</u> ययः दर्गोत् यर्केवा वास्त्रा द्यी प्येत् प्रतः इतः चलेतः दुः द्वोदः लेयः ददः द्वी वाप्तरः यो ददः तयः क्षुमायक्तान्य मही मालव न्यान स्थान ৾ঀৼ*৾*য়ৢ৾৾৽য়৽ঢ়৾ঀ৾৾ঀৼয়য়য়ৼয়য়ৼ৽য়৽য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য় धुना न्वेना तर्क्या नाया यत प्येत के नम न्वेत्र या अर्वोत में तेन नमना सेना यदिया हेन सर्क्रिया या सुरुष गाँउ तर दूर्य की दें दिया या की साम दें दिया रहीं स ५८ तब्रियान्यान् सान्दायां विष्यां विष्यान्य स्त्रियाया स्त्रियाया स्त्रियाया स्त्रियाया स्त्रियाया स्त्रियाया गर्डमा मु नर्झे स्रावतर विवास नर्भाया सुरावित हो। नेतर वया से श्री विरास्था र्वेजा सेन द्रमानमामा यदि रदा जाल्य सेसमा उत्र वसमा उत् ग्री सुमान्या उद ষ্ট্রিয় বা নার্ভর বা ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্তর ক্রান্তর বা নার্ভর বা নার বা নার ক্রান্তর বা নার বা নার বা श्चरःतृषःरवाःवीःश्चीवःयःत्वाःकेरःवाशुरःवीःद्वीवःत्व्ववशःविवःयरःवयय। वयःर्वेः ૹ૾ૢઽૢૡઽૹૢૄઽઽૢૹ૽ઌ૽ઽૢૹ૽૽ૹ૽ૢૣ૽ઌઌઽૣઌ૽૽ૹ૾ઽૹૢઌૹૹ૽૽ૢ૽૽ૢ૱૱ઌ૽૽ૼઌઌઽઌ૱ यताः केंद्रयाः त्यवाः कं या वात्राः यात्रयः देशाः प्रदाः यो विषे । यो या या या विषे । यो विषे यो या या विषे यो म् । वियातक्तालीयात्री हास्मेराती विराक्षियाम्भामात्रीयविष्ट्रभाषा ५८। । अर्केन् हेव यदर वन्या सुवा दर्कया । अविव येन्ने विव ह्यें ने न्येंव २८.। । वर्षे म. अष्ट्र्या. जयर सिया. यक्त. मृत्री । ब्रिया. यद्व. सिय. युप्ता. क्रीमिलिने स्थर्या क्रिया क्रीम् मा ब्रुवाया न्दर विवादा केवा विति हो ह्रीने विवादा या विवादा केवा वित्र हो ह्रीने विवादा विवादा

केंश'वरुन'इन'होन'श्रवे'न्वीन'श्रेवराकेंश'वविंग्रेते 'येवि'हेन'यावि'न्न'। हेत्र दे परे पर प्राचे वाया परि स्वाया श्री हेत्र त्या वायर प्राचा सुया विवा है । तर्या परि हेत्र हिन प्रमार हत् प्रीत प्रमाने प्रमान प्रात्त्व प्रमान स्वीत स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्व यर्ने व्यवाया ग्री केंग केंत्र पारी केंत्र क्रूॅब्र य अटका क्वुंका ग्रीहेका सुरदह्या यदे ह्याका दकर बिर यका यञ्जय देवा य त्रप्राचान्त्रम् व्यवस्यान्यः व्यवस्य देशवर्षान्द्रक्षित्राच्याः भूति प्राप्ति हेर्या यहात्रा प्राप्ति । यहात्रा प्राप्ति । न्यमाः मुः सेन। नेनः स्मानसः नुषः श्चीः न्यनः मीसः सेनः श्चीं सः सेनः स्मानसः निषः सेनः सेनः सेनः स कु:ग्रॅंट में ग्रेंट में येन प्रतः प्रतः मान प्रतः मान प्रतः मान प्रति । नुषाधिवार्थेन। नुनायाचीन् स्वापन् स्टार्ट्यान्य स्वापन् स्वापन् स्वापन् स्वापन् स्वापन् स्वापन् स्वापन् स्वापन *`*बुग्रयायः बिग्राधितः धुत्रः भूतः यदेः यत्रयाय वदः तक्रमः यः वस्रयः छन्। यः बे। यः न्मः गुरु। यः (धर्मेर्न्स्त्रेर्न्न्स्य) विभाग्विम्यो सुन्स्रेर्म्स्रेर्म्स्रेर्म्स्रेर्म्स्रेर्म्स्रेर्म्स्रेर्म्स्रेर्म्स्र गुरुप्य होत् दर्वोद्यप्य स्था बद्या प्रमान्य विषय हुर दर्वोद्या वालव स्था सकेवा से न्यतःश्चीः श्चिनः यसः ने न्याः स्वाद्याः याः स्वाद्याः सः स्वाद्याः सः स्वाद्याः सः स्वाद्याः सः स्वाद्याः सः स ञ्जानासुर व्याचा हेत प्रेरे या स्वाची प्राप्त स्वाची सामित्र स्वाची सामित्र स्वाची सामित्र सामित सामित्र सामित्र सामित सामित्र सामित्र सक्य-र्यान्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्यान्यान्त्राच्चान्यान्त्राच्चान्त्रान्त्रान्त्रान्त्राच्यान्त्राच्यान्त यायक्रियाहे। न्येरावा यो वेर्येरानुरुषानात्याहे यात्री मात्रुषायात्रुवायात्र त्वरा म्बितः देशक्षेत्रे से स्ट्रिक्स स्वाप्ति है सायकर न स्वाप्ति । प्राप्ते प्राप्ति स्वाप्ति ।

ক্রিঅ:৴েমরে:অমার্মমার্মরের রেমান্মার্মানের্ছ্র-মার্ক্সাথমার্মন্যবাম্বার্মান্ तकरःभ्रातुषाःस्रुयात्। क्वाःवारःभ्राविवाःस्रुविवा । प्रवयायाःस्रुविवायस् यदिया । देखारा सूर सूर यहिया या यहिया या यह पार पार यह या या स्वार या या या याहर दे अवीं के से दिर द्यमा अर त्या है या है या है या स्था या से व्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्था से विश्व स्था से विश्व स्था से विश्व म्र्यादार्श्वर्यायात्र्वेत्रायाय्येत्। हिःस्मदाद्वा क्रियायायाद्वेताः स्वय्यायायाया वस्त्रवयःवर्गुव। ।डेयःवासुदयःयः५८ः। क्रवायःये५ःवनेःर्स्रेवः५। त्र्रं,र्तत्रवा.शुर्व कुषायाःक्षेत्रःयसवीषायाःक्षेषःत्रकावीत्रवीषात्रः वर्षः वर्षेत्रः योष्यान्तरः इ.पर्श्वः पत्तयोषाः याः श्रुतिः याः श्रुयोषाः सम्याः सन् रश्चीः श्रुषाः याविः वे :क्रुयः श्रुमु क्य यः सर्वोद्गः भेरित् द्रम्याः सेदः प्येद्रा देः चलेदः हेर्बः श्रीः द्वीद्रस्यः स्राः क्रुत्यः यः वसस्य छन् र्चेरःभर्गन्विषायाधेता क्षेत्रायास्य । स्वार्थायास्य स्वार्थास्य स्वार्य स्वार्थास्य स्वार्थास्य स्वार्थास्य स्वार्थास्य स्वार्यस्य स्वर्यस्य स्वार्यस्य स्वर्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वयस्य स्वर्यस्य स्वार्यस्य स्वार्यस्य स्वयस्य स्वार यः ब्रम्थर उद्देशका वार्षु अर्थे अर्थः द्वार दिन्दः हो पर्वु दः क्षेत्रियः अदि स्वार प्राप्त स्वार स्वार स्वार सः ब्रम्थर उद्देशका वार्षे अर्थे अर्थः दिन्दः स्वार स्वा र्शेनिश्राक्षीसूव्याचास्रीदायासून्यासून्यसून्यस्थान्। गुत्रास्रिक्षेत्रातेन्द्रम्यन्स्रोद्रास्य यन्त्रान्द्रम् स्यायाव्ययाउद्दन्त्रायाययायाउद्दर्गात्राची के न्यययायादाद्वर्ग्दरा के श्चरायादायत्। ३:व्रारायादाश्चराययात्राच्यायात्राच्यायात्राच्यात्राच्यायात्राच्यायात्राच्यायात्राच्यायात्राच्या याल्य प्यट तु तु उवा मीय तहेवा हेव से प्युय दु स्थेवा केव प्रयायाय या या यह से टि हो र र्वेन नुषान्य सुष्ठा स्रिवासिक स्थान इस्रकाश्चिमायाविष्यायरात्र्वा सर्वोदायेत्रित्रात्रेत्रात्रेत्रावेत्रावेत्रावेत्राह्यस्थ्रेत् क्चिंश हेत : अर्क्त : दुर्श दुवा : हु: रोअया : उत्तर : या दुव : या दुव : या दुव : या दुव : या देव : या देव : य व नते न् व ते न व त

त्रश्नाद्रव र्जूवा उद्याधिद प्रवास स्वास स व्ययम् उर्ने क्रिया मित्र वित्र । यद्भेष मित्र म येन वुषाय न्द्राया व्या सूर्या व्या भी न्द्राया स्थित । क्रेषा क्र-न्येर्व क्रीश्रासी विया । श्रेवा क्र्रा ह्या स्था से स्था हिया क्रा ह्या हिया क्रा हिया क्रा हिया क्रा हिया यशः क्रुयः प्रते सुर्या वीषा ग्राम्यः अविवा स्त्रीत्। ५५ छैटः गुरुष्यः यशः हो र्केसः ५८ : व्रायः चरः सर्वोदः र्योतेन् न्यायाः सेन् त्यायार्थेत् । त्रेन्य यायायाः स्वर्धावः चरः र्ने श्रेष्मश्राम् । युराया तर्रेष या तर्ने प्रायम् । यो बुँब बर्गायमाञ्चाद्रस्याने बिरायम्यायदे याउवादु वदेवायरावश्चर। देवे हुः য়ড়ৄঀ৾য়ৢ৴ৼ৾য়ৣয়য়৸৸য়ৣ৾ঀ৸৸য়৵৸৴য়৸য়ড়য়৸ৼয়ৣ৾য়৸য়য়৸য়৸য়৸য়৸য়৸ वियानवियानुयायाम्याया । भूति क्षी भूति त्याम्यया अत्राप्तिया सुन्। त्विर मुद्द रहुव स्रोधस्य द्वार प्रदान हरू हैं स्रोधि सुंया च नुदान दि । स्रोधि स्रोधि स्रोधि स्रोधि स्रोधि स् ग्रम् विष्याकारमञ्जूष्य केत्र में निर्माणकार में नि चिर्यास्य प्राच्चार प्याप्त प्रचार प्राच्चे साले साले स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स तर्दितः तुषा दवः क्री को अवा उवः तुष्ठाया चरः सूदः चः अदः प्यदः विदेशाः हेवः वा ववः क्री को अवाः ॱ७ढ़ॱॸढ़ॾ॔ॺॱक़ॣऀॸॱॺॺॱॹॖऀॱॺॱॸॱढ़ॺॱॸड़॓ॱॸॱ७ढ़ॱॸॗॱऄॗॖॱॸढ़ऀॱॼ॒ॸॺॱॺऀॱक़ॗॸॱ દેં | | અર્વે(ત.દ્રાં.ફ્રે:ન્ધવા.ઝોન્.કેઅ.ત.જોઅઅ.ક્લ.ક્રઅઅ.ક્ષે:અ.વને.વ.ક્લ.નુ.ક્ષે).વતે. <u>देक्षेत्रकेंद्रित्यत्देश्याद्यायस्य यस्य स्तुत्रकेंग्रस्य समस्य स्तुत्र</u>केंग्रस्य समस्य स्तुत्रकें यहवालीट वर्षा वर वर्षा व ক্ট্রির ক্ট্রীঝ ঠে'ঝ নম ক্রন্ মী ঊন নম মর্লীর মি ঠে'ব্যবা মীন নম বিন্দ্র ন্যালীর আ गर्भेयानानम्नायायमाञ्चनायानामायायायात्रीत्। वतात्रत्यं वर्त्वात्रात्र्यायम् क्रेव प्रवास्त्र स्वाप्त प्रवास्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वा हेन्त्र। शुरियायङवायरमायम् वीयायायने ह्वेत् वर्नेत विमावर्ने नित्रायायाय में मिर्डम हिर्मिन दर से निसु देश या पीता देते हिर निसु से दाने खूत लिट मी भवीव र्यालेश तर्रेव प्राय होत् पर्या । स्थर श क्षा श्रेत प्राय सेत् श्री स्वाय होत्र रदः हेन् ग्रे:न्न् गुरायन्तु या से खेन्य परि क्षेत्र यस ग्रिस स्टा से से प्राया है साम परि से प्राया ग्रीस यदे या उत्राद्ध भी या राष्ट्र भी विकार में प्राप्त के प क्रैवायते क्रेंवया क्रीया विवाहेते तहेवाया सुवा क्रेंवया हो प्राप्त वार्या विवाह तदेवरातदेव यते तुराय सेन् ग्राट सर्वेद में तेन् द्रमण सेन् पीन् ता द्रद रहें सर्ग्ये राज्य विर्मानी सुनाया है मुयाया या विष्या या की खीन स्वरं या सम्बन्धा स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं सहया ଵୖ୵୵୵୵ୖୠ୵୵୵୶ୖ୶୵୕୵ୢ୵ୢୢୠୢ୷୵ୖୠ୕୕ୣ୴ୣ୕ୣୠ୕୕ୣ୷ଽୡ୕୶୴୕ଌ୕୷୴୷୕ଌ୵ୖ୵୷ଽ୶୲୵ୠ୲୕୶୕ୡ୷ୡ୕ୡ୵ଊ୶୲ <u>५गार घॅदि ५ र ख्या वर्कु ५ ५ ५ र ५ गार घॅ क्</u>रूट बीबा वर्क्केट या वर्षेत्र वर्ने व उत्तर ५ दर्शे नरत्र मुरानाया मेर्के अपने निष्या ने स्थान्ति सुन्य प्राया माना स्थानि स न्यम् योन् यासुम् तर्क्याम् वे न्या कुन् की क्ष्यायोन् या कम् योन् न्या विष् नेवदःयने क्केंब्रक्षयःयः द्वा क्केंब्रक्षेत्र क्षेत्र विष्या क्षेत्र क सर्वेद में देन न्यवा सेन त्या ध्रवा तक्या थे। विने वा उदा मुं क्री वा स्वीदा श्री सा क्रेंचर्या विषयम्बुर्यास्य स्वित्रस्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य स्वित्रस्य चक्र्यात्त्रव्यत्यादे चल्लेव वालेवायाया न्या चक्र्याया प्यतः द्वा या स्ट्रा वालवाया वाल्याया वालवाया वालवाया व क्रुयासर्वेद : वें तेंद्र द्रमन : हु सेद : या या सुना तक या वें सकेंद्र : दें : सुनया सु मकेरी विमानदीरमातर्भेन प्रमानम्भानमान्त्रीयम् स्थानि । विमानदीरमान्त्रीयम् ।

ब्रिन्सब्रित् । ब्रिन्सिन्स्यायाय्यस्य । यन्त्र यन्त्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र । यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्र यन्त्य । यन्त्र यन्त्र यन्त्र वित्र यन्त्र यन्त्य यन्

हेत् महेत्रायर व्रियाय में से त्रात्रस्य स्थान स्थान सुरा होत् होत् मात्र मा

दे:देरः सर्वस्थायः दिरः कुः क्रेन् : श्रूरः स्थायः व्यावस्थाः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थाः स्थायः स्य

सिया.याध्रेत्रात्राधेत्रा.याच्या.या.सेंट.र्ट.सेंट.याच्ये.यर्टेट.स्रेत्रा.याट.य.यत्रैत्रात्रा सें. अ.क्रूब्राच्रीब्राः इत्राचार्युव्याचार्यव्यावेदाः त्राक्ष्यः चात्राच्याः व्याच्याः च्याः च्या श्रूयाया देन न्दर देन ने राष्ट्रीयाया यह सामे हिन ने देन निवास है सामे हिन निवास है सामे हिन है से सामे है से स यॅ.४८.ची.जीयाक्री.पर्या.क्रॅट्र या.क्रॅट्र या.क्रंच.ता.क्रंच.ता.क्रंच.व्यंच.क्रंच.क्रंच.च्यंची बेंवा सेन् क्रीन्त्य सुन्नित्र पर्सेचा ने वा न्या न्या सूर सुर बन् वेंवा से वेंन् बेर र्श्वे प्रमुदे द्रीम् राज्य द्राप्त प्रमुख्य प्रमुख्य कुर्के द्रमुक्त स्राप्त प्रमुख्य प्रम्य प्रमुख्य प्रमुष्य प्रमुख्य प्रमुख्य प्रमुष प्रमुख्य प न्वानीयात्री यदयाक्क्यार्देन्न्यवायेन् ग्रीसुन्यस्ट श्वायाग्रीन्यस्ट नावस्य सर्वेत पते तेन की बेवा येतस तेन की वीट तु नसर सेर तेन तर्बे य लेवा श्री वेति वार्डवा हुः भेदः धरावर्श्वेसः बिदः। देः धरावेदः वर्श्वेसः धरास्यः स्वास्यः सर्वेदः। र्ह्यः पर्वा श्वरः पर रेद् ने र र र्स्या प्राया यो या या ये विष्या भी विष्या स्था विष्या विष्या स्था विषय स्था विष्या स्था विषय स्या स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था स्था विषय यदे न्रीवायाया से वाडेवा हु तहेवा ने सूर तिर तिर्यायया स्वार श्रीया ह्री देर्ज्या श्रीका स्नारा स्वार्थित श्रुदा देवदा यदका क्रुवा श्रीस्ना वा वा वा विद्या स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित ५८: बर्था केवाया ग्रीस्वाया यदे स्नाय द्वारा तुरे खारा ५८: बरावादे देर ब्रेकाया स्नायुरे येवःर्केर्म्भाष्मेत्रःम। नःविषाःचीषःग्रुवःमदेःस्रेःत्युषःहःविष्ठःस्रेःषार्केरःवदरःसःधीतः वें। ।देवर देंद् ग्री:युष्पःय पो:वेषाग्री:क्षेर चें उत्र पोत ग्री:वहत केंद्र हे पत्रेत होंगः ८८.चेत्रात्वयत्त्रात्त्र्येषे रूट् क्रीच्यूट चेत्रात्र च्यूच्यायाया के ही रेह्याया रेगा न्दावहें वायर भी वुषायषा सूदाया स्टाचिव भेना यदे हें वान्दा सह्य । ने व्हरा

<u>बूदःयः स्टःचलेवः सेदः सर्र्ह्हे वीस्रश्यस्य वस्य लेवाः बूदःयः स्टःचलेवः सेदः सदेः देवः </u> सर्देन'र्'तकीर'विरा रर'श्रेमकासर्वोत्र'र्रो'तर्र'र्पमा'सेर्'री:श्वेषकार्रर'तर्देशसें रदःवीःत्युषःदवाःधीदःवाश्रुष्ठाःष्यदःसर्वोदःधेःदेदःद्यवाःसेदःश्चेःभ्रुःवाश्रुदः झुवाषाःवाश्रुष्ठाः न्दःन्द्वेरकोन्दुःवद्देषःयःधीव। नेःस्रूरःस्दःन्दःसर्वोदःयेविनःन्धवाःसेन्द्वेरः येन नु नक्षे नवि केन नु। रूप मीय समेनि में विन न्यम सेन नक्षे सामिय में स्थानित में सिर्म स्थानित में सिर्म सेन स्थानित स्थानि वयालेगारमानेनायां वर्षातेनायां वर्षातेनायां वर्षात्रेनायां वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे वर्षात्रे व श्री । नि.क्रे.र.पश्चीयायक्यायक्ष्यायक्ष्यात्रम् अत्रित्वात्रियाया <u>दे हे अ ह्ये वितः वार्ड्या वी अर्वोद से दिन न्यवा ये न ह्यु वया खुयः गुदा तन्या की हे वि हे त</u> ळेब इ न न न न कुन पर न रुष पर देश हैं । से न न न हो र से न ने हिन के न तु जा न सार्वे न बेरप्रयस्मित्राष्ट्राष्ट्रारहेर्रात्राधियायरमञ्जूषा देप्तरायह्या श्रेमराष्ट्रियायात्रम्यायदे प्रमाणियायाय स्त्रीत स्त्रीत स्त्रीय स्त्र बन्द्रमञोन्यादन्त्रेतित्व्यानाधोनाय। नेत्वृदेत्वव्यानान्त्रेनामायमञ्जूमाबेमान यातिवितायात्रवाचीता रेत्रेया की. की. याहेराया रेत्र याहेराया है. याहेराया बुरा ज्वयश्रादराहें जा अव्यालेराद्रर अनेरा ज्ञायया विकास के सके जा के प्राचित्र हैं योष्ट्रात्ते, येपुर, मुष्ट्राया क्षेत्र विष्ट्राया त्रात्त्र क्षेत्र क विस्रकायने मिलेयाका क्षेट सेविं । ने वे कोस्रका उन सम्रका उन सी कुन व र्यो प्राप्त । क्वा वीय यदय क्वय वर्षेय द द्वीय य प्रेम हो। दे हिन येन में स्थाति मुख ययावया क्री सुन्ता सी सुन्ता प्रवित प्रवित प्रवित स्रोता वया क्री सार्वेद प्रवित से दिन से दिन से दिन से दिन स योचेर.पहूरात्तरानेपु.श्री.यी.श्री.य.क्षेत्र। रट.रु.ज.यट्याक्किंग.ग्री.रूयोग.विश्वया यने यो भे यो अप्ती द्वारा या अपता त्या की स्तीया या ने या की आहे से स्तुते स्ट यर्ट्यायह्यात्राच्चेत्राय्याक्चेयात्याच्या ।र्वराया व्रेट्रायाह्या व्रेट्रायाह्या यानः स्त्रीयात्राः सुः निरंताः याः सूत्राः श्चीः द्वीः सत्राः योत्राः सत्रोत्राः यान्यः स्त्रीयात्राः सत्रीयात्राः सत्रीयात्रीयात्रीयात्राः सत्रीयात्राः सत्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीय त्राचलेत्र। देवायावस्याचने वालेवाया श्लेट चें प्योप्यात्र वारासदेव पुरास्त्र स्ट श्रेम्यान्त्रम् सर्वोद्गर्भेत्रम् न्यान्यान्येन् क्षेत्रम्यान्येन् स्वीत्रम्यान्ते स्वीत्रम्यान्ते स्वीत्रम्य धुरररररे अर्के अञ्चताय पीत्। देख्यर देन चेरन् सर्धरर या वस हे अर्दे र लिट यारायायायायायाः विद्यास्त्रीतः या क्षेत्रः यारायाः क्षेत्रः यारायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद ब्रैंट द्वीर भेर या वर्षे वर्ष पर्या देश वर्ष स्वार्थ इस्राहेंगानीयासानक्ष्या देख्यान्येवायासेन्स्राह्यान्यानदेष्ट र्नुः कुर्दुन् स्नूर्या शृष्ठं या या यह या या रावहें या विष्या कुरा कुरा स्नूर्या शृष्ट्र स्नूर्या शृष्ट्र स् वैरा श्रुषायह्मायद्यायात्रीयस्य द्याउरावर्तातह्न कार्च्याद्याद्याद्यात्र <u>ख्र</u>न्दरन्त्रुःर्ड्याद्देश्वरत्व्यायदर्श्वार्चेद्द्र। डे.स्टर्शःर्वेद्दर्गाहेशः योशीया. पुष्ट, इत्रासी. त्राधेषा. त्राधीया. त्राचीर. त्राचीर. त्राधी पुष्टी. त्राधीया. पुष्टी स्थापीया. त्राधीया. च्यायायपुर्वे अव र्या सूर्वे व्यायायपुर्वे यायायपुर्वे यायायपुर्वे यायायपुर्वे यायायपुर्वे यायायपुर्वे यायायपुर यसम्बादित में निर्मान्य स्वादित्र के त्रि त्री स्वीत स्व व। श्चित्रस्यायीत्रस्यायात्र्याचे स्वायात्र्याचे स्वायात्र्यात्रस्य स्वायात्रस्य स्वायात्रस्य स्वायात्रस्य स्व तर्न नश्चित्राश्चर तर्दे तथा ख्रेया या खेता । श्रु रेशा वरुत वा केत्र ये श्रुवाया श्रु प्रेति त्रुशा लूर् क्रीश प्रचीय ता जा वाष्ट्र क्रीश रे प्रचे रे प्रचार प्रचार प्रचे के स्वार प्रचार प्रच प्रचार प् यरे.यो.चेयात्रःश्लेट.स्.र्याग्रादात्यः वियः स्रकार् स्त्रेत्रः स्त्रात्रः श्लेष्टः श्लेष्टः स्त्रात्रः स्त्रात क्षेत्रायान्वत्रायात् द्वराहेनायदानु वर्षे नयाक्षेत्रायराधीतुरासूरानु सीनयसासूर इसम्बादकरपाञ्चेरान्द्रीयान्चेराक्षान्यान्यान्यान्यान्त्राप्तान्यस्यान्त्राप्तान्यस्य थान्नेयात्रहुँ वासी निर्वेश न भरावरादेशकीत्। देःवावत्वाःचें वुश्वत्वश्रहेशःशुःतव्वतःवः द्वस्तिः विकाहेशः यप्रियायमुद्दार्श्वीयादर्भ्वयाते। क्यायासूदार्भेद्द्यायास्यायम् स्वीतियायास्य ल्रेट्रा देख्रम्बस्कित्वायान्याचेत्रीत्वानम्बर्धस्त्रीत्वेत्रात्वारेषायान्यस्याने योचेयात्राङ्गीर से हें र योत्राय तर्ज्ञाय स्वाधित्र स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्व <u> ब्रॅ</u>न:५८:देश:ग्रुट:केंग देवट:५७:७८:ब्र्रेअ:केश:य:म्| = प्रत्य:७:प्यट:की:ग्रु:बेट:। ५७८-१भ्रें ५ केश्राय-दुशःक्रुव-१भ्रूय-१दुशः नवदः ५व८-१४। नवसः शेयरानिश्रानान्द्रेन्द्रेन्द्राचित्रं स्त्रीयान्त्रेत्रास्त्रेत्रास्त्रेत्रास्त्रेत्रास्त्रेत्रास्त्रेत्रास्त्र वरः अर्वेदि 'से'वेद 'द्रमग्' सेद 'द्रद्र' चर्दे 'त्रु' साद्येद रसेद 'त्रा वार्षेत्रा च 'तरेद साद्ये हा বাৰব অন্যন্ত্ৰীন ক্ৰবা মাণ্ডিমানা ইপ্ৰমানীমান্ত্ৰপ্ৰমান্তৰ প্ৰমান্তৰ শ্ৰীনুৰ নিৰ্মাণ यश्चेर्-प्रार्श्वर-र्वे वर्षे वर्षः अर्थेव से वर्षः वर्षे र्वे स्वार्थित से वर्षः वर्षे वर्षे वर्षः वरवर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर् वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर् इया भे प्रत्यक्रमा निर्मा वर्षमा स्वरं स्वरं स्वरं प्रत्ये वर्षमा स्वरं <u> द्यायर हैं या या यद यद या के या या विकास के या प्राप्त प्राप्त के या प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त</u> सर्केन्द्री सुनमासुः सर्केरी विमायायर्देश ने सीम् हे चेरायर्जे पार्ट्र ययागाचित्रपदिः स्रें वतर स्रुः स्रें र स्रायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य देॱसूरः नर्से सः दः सुरुः ग्रीरुः दयः वार्ये सः यरः सः चदः सेस्रुरः ग्रीटः दयः वार्ये सः यः पीत्र । देॱसूरः सहस्रायत्वा उः पर से द्रीया साया वा स्वरं प्रदेश हिंदा सुत् सर्के स्वरं स्वा

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्कः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

सूर वार्य विवासेन यदे देश के वार्य वार्य हो। ने हेन सर्व नुसासुर यर गुर्देन हुं या भू तुरे केंग्या यथवा ५८। यथा यव्या वहुं वा यो प्राप्त हिंदा होता तर्श्वर बुट मेच तर विषय श्वेट है विट क्व त्री श्वेष्ठ श्वेष्ठ राष्ट्र विषय श्री १२.केंर.क्र्य.तकर.धेर.स्रीय.श्रीय.वीय.तपु.र्या.तपु.स.य.पर्द्र्य.प्रास्तूर.य. रट.चावमः श्रीयः द्याः वासुयः चयवायः यदिः दवो सः वास्त्रवाः द्वाः द्वाः वस्य विदः चर्स्रेययः दयः गुत्र सिंदेर क्विया परी पसूत्र या रेताये के से ज्ञान रुषा गुत्र कुर र दिर क्वियाय। नसूत तहेंत क्षेत्रे सुभान् वाद त सुनत्त्वा या ब्राया स्वाया स्व र सुदि से त्वया यद नहत् ति । मॅरिन्स्यामॅरिन्द्रात्येत्य। यहेन्।हेन् श्चीन्यस्याध्यस्यस्यन्द्रन्तिन् श्चीन्यस्यस्यस्यस्यस्य रतताता.ज्रार्थर्थः हैंदि.द्री अधर ध्या.श्रुश्या.श्रुश्यात्रभ्यः ध्याया.क्रि.चीर. क्वार्गी:में तयर वारमें र पदे श्वीर हे पर्श्व तहस्र पदे निवस्य पर तयम्य या गाव है चनर संस्थान भी अपरो चित्र देव दे हैं से र चर्ते अप या चले व दे चर्ते चर्त श्री मा पर्दे व वयः भेराव्यान्य स्त्रात्व वर्षात्र व्याप्तर्ने । प्रेष्याः व्याप्त्र व्याप्त व्याप्त । वर्षात्र व्याप्त व्याप्त वयानेयायदे:र्म्याद्वययाययाचेर्च्दरा ।श्चेम् वावकदे:स्रामेर्वद्वययायः थे। शिन्यदे अर्हे वया दर्शे नः श्रें वा वाह्य न्यवान्य देश है। 'भूरत्याद्वेत'य'त्र'। ।गुत्र'हु'नवर'ये'दे'ष्पर'दे'नवेत्र'तु। ।दे'द्रम'गुत्र'क्कीहेर्यः स्याप्त्र मार्थिया । प्रमीयाय दे प्रमा म्हार स्वाप्त स्वर्थ । स्वर्य । स्वर

हेन गर्या स्वापित निर्मे केन निर्मे हीन विरा

মক্ষম ক্রুহি:বিলানান্মমা

तर्देरः म्रम्या उत् ग्रीया द्या यी स्थापा प्रस्था पर प्राप्ति । स्थापा प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था यविराह्मकाष्ट्री भ्राचारानुकायमुद्धाः साध्यवानुका स्क्रीत्यस्य त्यादह्याः परा चुर्ते । नेतर हे सूर वया यावर वियय या यावर नर सु से रा प्र विव नु से स्था क्य. द्यी विश्वरात्रायदः सम्रवः दृष्णु वैषा साद्दः मार्यदे देशायः वदी क्या विश्वराद्ये दे नुः स्रोन् स्पर्वः नुषाः प्युत् । देरः द्वाः तदीः भ्रुः तुरः स्टः वाल्वतः बोस्रवाः स्वतः स्रस्याः स्वतः श्रीकाः श्रीः त्ताः व तकः रेषा र्शेषा सुर्होत् विता हेव तहीया वहु विहेषा शित्रिय वित्र वित्र वित्र सर्वे स्था वहूं वा क्रुं यो द्राय क्ष्या वर्ष्य वा श्रुया क्ष्या या या व्यवस्था वर्षे वा वर्षे सर्त्रः वर्ष्यः वर्ष्यः विद्या देवदः रदः क्षेत्रः विश्ववाद्यः वर्ष्यः श्चीर्यः से स्क्रीयः विश्ववाद्यः वर्ष्यः यरःश्रेयश्वरुतः वयश्वरुतः वरः वरः वुः दुर्वोश्च। रदः क्षेत्रः हैः भ्रुः तुरः वृत्वरु व्यायश्वरुः क्चें निहर द निर्ने न तर्दे र हैन हुन नहू या है या तर्दे र धर गुद्द गुद्द न हैन सहूद र प्येद र्थेत्। यदे यञ्जूय व्यवसाय सर्वे द्वेत्सा हे यदे त्यदेत सूवा यञ्जूय क्षु विवस तयन् यते रदः वाववं तिर्वर यते से समा उत् ही हैं दर्श यते प्रस्त ही निर्वर या वाय से रटः क्षेत्रः ग्राटः दिवरः नदिः स्वा नस्या मुसानास्या यात्रा यात्रा यात्रा यात्रः स्वा स्वा नदिः त्रा स्वा र यात्रीयाञ्चवात्रम्यात्रस्यात्रम्याः स्रावेष्याः स्रावेष्याः स्रावेष्याः स्रावेष्याः स्रावेष्याः स्रावेष्याः स् श्रॅट मश्रुया मुर्जुका के नेति सुमा मसूया से सेति के सम्मान केमा या मुक्ता य ૹૢઽ૽ઌ૽૽૽ૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼઌૹ૽ૻૹ૽ઽૢૻઌ૽ૻ૽ૢૺઌઙૢઌૹૢ૽ઌઌ૽ૻ૱ૹઽ૽ઌ૽ૼ૱ૢ૾ૢૺૼૼૼૼૼૼૼૼઌ૽૽ૡ૽૽ૡ૽૽ૡ૽૽ૡ૽ૺૡ૽ૹૢઌ૽૽૽૽ૺઌ૽૽ૹૢઌ रदः रे अर्वे रे अं शेरे त्रहेषा हे ब दु वने वने श्चिन श्चिन दर्र वर्ने द वर्ने द वरे पी वायद सेन यदः र्क्षेत्रः यः सुष्पः प्येत्। दे उदे दे द्वैतः बोत्रायाः उत्तरम् स्वययः उत्तरम् स्वयः सुर्यः सुर्यः यःयनेतःयरःङ्कायवेःयगावःखुरःस्ट्रं सम्भाग्वाय। नेःवात्ररःयःस्टर्भःक्वास्यवेः यसून क्षेत्र त्वारायाधीन धुन धीन की केराया की श्रीन यर सामन्। ने कीन यानन रटः त्रें या पह प्रयास्य स्ट्राट्स स्ट्रीया प्रविदः स्रीपा या सम्यास्य स्वापा स्रीपा स्वीपा स यवार्के केराया आर्थेन प्रेकायकाया अदि । या अवदा शुक्ता ओन । यो ने व्यून स्ट्री वा अट.तूर्या.केंश्वा.केट.कु.वर्टुयु.स.अयट.अट.तू.बुचा.वकु.चयु.ल.चर्चाताचेश्वा.वहुचा.हेव. धुः सर्शेरः बैदः यन्दः। ५ व्यः यस्य सर्गे व्हेर्यः यः प्येदः पदः सुद्दः सुदः श्रेरः न्दः छाः थे'छा क्षेत्रेर्वेषाय द्विया रे'त्रय है'र्ड्या यह या वेटिंग है 'सूर वे चे चि च डेया ह्या या या वे भ्रमाम्बद्धरम्भेषाम्बद्धर्भातम् । त्रित्राच्याम्बद्धरम् । त्रित्राच्याम्बद्धरम् । विदायविता रुषाने वर्षाय बुरायव स्वतं वर्षाय स्वतं वर्षाय स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं श्चित्रयासे न्यात्र्यं से न्यात्रया श्चित्रयात्रया श्चित्रयात्रया श्चित्रयात्रया श्चित्रयात्रया श्चित्रया स्था इटा यवाय:रूषाक्चित:यंबार्ट्रेट्री क्यायाः सुरावित्रःक्चिटः दीक्किंवाः सुरावित्रः वस्त्रम् मुन्त्रम् स्रुवाववास्त्रीः स्रवेत्यः स्रुवान्तरः निः निः निः स्तान्तरः सत्तरः स्तान्तरः स्तान्तरः स्तान्तरः सत्तरः सत्तरः सत्तान्तरः सत्तरः सत्तरः सत्ति सत्तरः सत्तरः सत्तरः सत्तरः सत्तरः सत्तरः सत्तरः ग्रीयायहताययान्त्राम्यम् निम्नायते विदायययात्रात्री यान्त्रात्रा यान्त्रात्री त्याकें अपने के हो हे व पवर होते हो। विदाय हो देश देश प्रकार होता खेट स्रुमायते भेदाके भाद्या देशाया सुर्या भेद्र । दे द्रवा वी स्राव्या के स्टारे सुर्या सी इस्रयायार्केषान्वी प्रदेश्याप्रदेशीयार्विन प्राप्ती स्वाप्ती स्वापी स्वापी स्वापी स्वाप्ती स्वापती स्वाप्ती स्वापती स्वापती स्वाप

क्या.चीयार्क्या.टे.चीया.चधुप.ह.टेजा.वर्षेटा.ची.की.लीया.जायटा.जाया.चटु.चर.परीया. व्ययाः भेर्ना न्या विष्या विषया र्देषः यः वर्ष्णुरः वर्षः सूर्याः वसूयः दरः व्रिवः यः वर्दः व्रीदः ग्रीः सूर्याः वसूयः यश्वाः यद्य। नेतर न्युय नते न्युर सुन्तुते सुन्न नसूय ने या द्वा में सीद प्यर या या हे द सीया तयरमायते द्वर मीमा यर दायर दुः दिवेर प्रमादमा देवा रदा में र मी सूचा प्रसूचा श्चित्रक्षेत्रयम् वात्यत्वस्य नेयात्रःश्चित्रः स्वात्यत्वस्य स्वात्यात्रयाः त्रमः भेरा व्यमः द्योः श्रीया दे वार्डे विः स्रोधाना स्रो यदःश्रेटःवयःनवोःश्रेवाःवीःवीन्ययःवनेःश्र्वाःवनैःख्रःवुटःवःधेव। वर्वेरःवःन्दः શુદ તદ્દન્ય લેચ યતદ શેસરા શું શેદ્દ વસ્ત્રા અસા એસરા તદ્દે છે દ તિલ્લા દ્વારા તાલુવા यदः ब्रूटः यः वरः र्सुयः र्स्यः धीवः यरः यर् वाः यथा । यर् १ हेन् हेः यदीवः वाहवः याः ययः श्चेरमायवितायोथ्यः योष्ट्रियाष्ट्रियाष्ट्रियास्त्रीमाया राप्ट्रमायाया नदे शेदे त्यु अ हे द दिना विन पेद पर न समा दिर । के अ दर न दे प्यु अ दु हु स केंबाह्रेव या बुव यर ५ ५६ जावबा वसूव या यह वा यदि ह्ये केव ५ ५८ यह वा। र्ने नर्ने अर्थे के अर्थे के अर्थे के स्थान के स ୴୶⁻क़ॸॱॹॖॖॱऄॱऄ॔ॱख़ॱक़॔ॺॱख़ॗॿॱॹॖऀॱॶख़ॱढ़ॺॱक़ॕॺॱऒॸॱॸॖॱॸॖॺॱऄॱॳॹढ़ॎऻॻॱढ़ॸॺॱॺॴ देवै:रदःबीय:रदःक्षेय:बुयःवःवेयःवेदः। ५:५६:दे:प्ववेदःसुःसञ्चरःदयःसुरःदयःसुरः ययाग्राट देव येद यर शुराय विवास प्येव वया देया व कें तदे दे या या वेद र शुरा

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्कः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

सुन्र सुम्र केर्मामाया सुदि माम्यया दिन्या

त्रायदेवित्वस्थात् स्थान्त्रस्थात् स्थान्त्रस्थात् स्थान्त्रस्थात् स्थान्त्रस्थात् स्थान्त्रस्थात् स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य

ख्र-रिक्यायायाय प्रतिस्थान विषय के स्वा विषय के स्व देन न्यमा सेन न्युं र सेन प्रते र प्रते र प्रते र प्रते र प्रत्य स्था वार्य र स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स धरःवरे केव द्वा धरे बिर वर्देय। दुश हवा धः क्रुव क्री वर्षेर वे व्या यक्ते संस्थित स्वार्थ के नित्र हैं है नि नित्र स्तु राष्ट्र राष्ट्र स्वार्ध स्वार्ध स्वार्थ स्वार्ध स्वार्थ स क्षेत्रया विवरः ६५ याये विरास्त्रया सेससान्यवः नरास्रस्य स्वराद्या विष् केंद्र देवाबादेवाग्री ह्यें दराख़दाय धुराकी खेंचा यदे वादा ववा वास्वा धिदायर प्रवास ने भूरायने या उत्रानु क्री यदी क्रुप्य विदेशन स्था हेता विदाय स्था स्था से नाम स्था से नाम स्था से नाम से साम स याञ्चयानरकेषातकन्त्रमायादह्यान्वीय। नेप्निवागुनाक्केन्यीक्षाक्षान्या क्रें म्दर्भम्वकुदे व साध्य म्विम् हेर्या सूर्य विस्थित्र द्रुष्टेर्या से स्व हैन रेर कु केंद्र गहिश र्डम रो देवर द वे प्येंद्र ग्राट श्रद सेंद्र छो प्येंद्र है ने श सूम्रा सदःर्नोत्रसदेवर्त्वयाग्रीयाम्यव विदा क्रीय्यायायान्य स्वाप्तायाया દ્રૈબ કે ર્જેંચ ગ્રી ઢેંગ બ કર લેંદ દેવ બ લેંગ કુ નચ્ચા ક્રે નક્દ રુચ સુદ ગ્રુદ ધો પ્રદે वरीन नेयान में प्रति विकासित हो हो हो के वार्ष के विकासित हो ने के विकासित है ने के विकासित वरः वी कुं वे राष्ट्रा तुः यतर छ तद्वे राष्ट्रा स्वा के विष्टा विष्ट्रा स्व स्व राष्ट्रा स्व स्व राष्ट्रा स्य बिर रद म्बब्द महद नदे त्वुद नदे केंब्र या नवस कें महिंद स बुबाद वीया या या युरःब्रिश्यःयःवस्रस्रासेन्द्रःवदःस्रे। न्येरःस्। स्रेरःवःद्रवाःस्वयःयदेःस्रेरः रैवावार्रेन ये के कु नेवावश्याम्य परि हे रायुरावयुवानशास्य शाहिरानु विकटाया क्षेत्र:पश्चित्र:र्रो।

क्र्यायाययायाञ्चीताञ्चराञ्चीरावसूत्राया

वियायन्यात्त्रायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स्रायायाः स

ने या यनि रामान यक न चु मने या उन खें कु मने से । हेन। র্থীযাসা <u>ā</u>] क्रेव पति यम में ८ दु कु दर में हेव लिट विस्रम भी द या हो द स में ८ वमा वर्देर योश्रायःयः यद्रेयशः श्राब्यः यद्राः याबुदः स्ट्रियाः यः यह्रेवः वयः क्रुः यद्रियः यः स्ट्रियायः ययायः तकर्मः स्रो धुनातर्कयः पदिः यदः यन् । यर्केन्यातत्व्यानते प्यमान्त्री श्चीरकेषाः श्चारेन्यमा योनान्या भुः श्रुवः रवाः मञ्जवा श्रुवः भुः र्छोः क्रुवः यदः त्युदः मध्याः वार्ववः यायाः यहतः यार क्रिया नते : सुन्न का हे : क्रोस का उत्तर क्री निस्त्र का या : सून : केना यार : ना यो या ना सोन : सेन्। श्रेश्रश्चर प्रदानीश क्रुं केविशायश्वाश श्रीय श्रुट सुद स्वर सार स्वाया है। वि म्र्रेट नदे न्या के वा त्र वा के चॅरः ह्रेंग्र अञ्चेतः श्चुरः प्रतेः श्चेंद्रः या कुः अर्कें व्या शेः वेंद्रः यर रकें वदीः त्र या वक्षेः प्रते शेषाः नर्डुमःमःम्। ननेःनःडमःनुःभ्रेमःनेःध्वैरःविरःनवैःनम्मःसुःभैःविद्यायःमे। सर्ने पी सुर यस पीत या नेतर सूना मान्दा तदीया त निता हु सुर वदी यस पीता वें। ।देते ध्वीरावर्ष्व व्यवसासुवदे वास्त्र दुनु स्त्री विदायस्व साम्री व्यसाय दिने । ग्रव्य क्रिय्यायर्था क्रिया वेद्राप्ता येदा श्री सुग्र्या यक्ष्री द क्रिया या यहेवाया येदा र्वेत्। देरञ्जेनदे कुदेः कः १ वर्षः शुः शुरायः यदः भूतिवार्वे श्रिः श्रवायायवाः ग्रहः वसूतः बुषायावी स्टामीषा ग्राटा छुटा बदाया चुन्यावा चरे चाउव पुराने विवास विवास विविधार्म् तस्त्रे स्थित स्राप्त के स्था के स जभाक्तीकृत्यं मुखायदे बिट विभवादी यास्वा यमुदे खेता है। त्या सुवा यास्वा विभवादी स्वा

ૡ૱૱ૹ૽૽ૹ૽૽ૹ૽૽ૹ૽૽ૹ૽૽ૡ૽ૡૡઽ૽૱ૹ૽ૢૺૡૢ૱૱ૡ૽ૺઌૡૹૢઌ૱૱ઽ૱૱ૹૢ૽૱ૹ૾૽ नर्गोत्। देनविवनम्भयानस्य स्टिस्स्मायानस्रोत्रस्य न्यानस्य सर्दि। देर्स्यस पश्चित्रभाने हें ज्ञारा श्रीत श्रुट पार सहित। श्री श्री वितर हिट हो र श्री तुरा परि श्रीत থমান্ত্রহ্রামান্তর্বাবাদ্বামান্ত্রীহ্রামান্ত্র্বাত্রীবেমান্ত্রামান্তর্বাত্রামান্তর্বাত্রামান্তর্বাত্রামান্তর্বাত্র <u>क्य.क्</u>री.धुर.चित्रायाचरीर.येषाचस्रीजाच.चर्च.बुर्टा। ट्रेश.य.पर.प्र.इषायाक्रीयाक्षर. <u>ने:न्नः क्ष</u>्रिंग्र्यायद्व:नवि:यद्व:न:यय्याद्वेन्:क्षेत्र:श्री:यह्नन्ययःसेन्:नु:श्रुःर:पेन्:ययःस्। न् भः हेत्र लिन् विरायस्य धीन् या दीन्य ते लिन् श्रुम् न्या। कुं केवाया यसवाया वे वर्षेन् वस्रयाश्ची द्वाराचा प्रमेत्र वस्याची सेयाश्ची द्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स मुर्चामा मिराक्ष्या मध्या प्रमुक्ता मध्या मुक्ता मिरामा मध्या मिरामा मध्या मिरामा मध्या मिरामा मध्या मध्या मध्य য়ৣ৾ৢ৾৾৴ॱয়য়৾৽য়য়য়৽য়ৢৼ৽য়ড়য়৽য়য়৾৴৻য়য়য়৽য়ৣ৽য়য়য়ৼ৽ঢ়ৼ৽ঀয়৽য়য়৽য়ৢৼ৽য়৸৽ড়য়ড় क्र्यायाः ह्यायाः यस्त्रान्त्रेयायते ख्रीस्त्रा यार्थायाः तनेत्रयाः स्वीयाः विश्वान्तरः तनेत्रयः हे कु वरवा गहिरा है प्रसुव रहें वारे राया गहिर हुरा के वार्ष वार्ष वार्ष हैं वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष अक्त्रशः श्रुंद्रिरः तर्द्रवः प्रकाषः चर्श्वेद्रः च। द्येरः व। हः विः श्रवः श्रीकाः श्रुद्रः चः वः वः बुद्दान्दान्दान्दान्दान्दान्द्रमुन्दान्द्रमुन्दान्द्रमुन्दान्द्रम् न्द्रम् न्द्रम् न्द्रम् न्द्रम् र्रोक्तिया सुव्याद्यीते, दुः सूचार्ययाया । व्युः धीया वीया यायायाय रा अर्बर। ।शुरःश्चेतिःवीत्रःश्चित्रःश्चेत्रःश्चेरःश्वेरः। ।तक्वेःतृत्रःवीरःपरः र्चुचा । इन्नाचान्त्रहरूपः याद्मरः हो । वालकः प्यतः क्रियः चः तेन्द्रपः हो स्वानाः । यश्चेद्र-अह्द-ताः श्चेः अर्क्वः तयाः खेवा नाः खेव अध्ययः उत्तर्भवः अपेत्राः विद्रः

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्कः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

चतः वावर्थः सुः ख्रुवाः सुर्यः सेन् स्यरः नवाः सदिः हिनः नुः सद्देवः सातुः सात्रः सीचरः नुः यन् वाः तर्हनः भ्री क्षु प्रतर विवा डेकाया सूर रद रेका ग्राट क्षेत्र प्राया प्रदेषका प्रवेष । सेया उत्र रे रेते देव द्वाद्या प्रभूषाया अदायेते प्रस्तु दुष्या प्रस्यावस्यावस्य विसास्य स्था यरःश्चरःद्वेषाःवस्रसःद्वेषा यदेःवःद्वरःश्चेःश्चःवविःषद्विषाःवःषद्वेषःविदः। क्रुं चलिते वात्र न तर्या या प्रीय हो। क्रुं चलि यया वाया के लेखा वे हेत लिया प्राया प्रीय प्रीय याचेत्रपर्वे ।देःयावत्वर्यदेःह्वेव्ययाचित्रावावह्युरावःविदादेरःह्येव्ययरा मस्रकायमार्थो । ने या तर्नम्। के माने न से प्रमुदान सम्राप्त २८। वियोगि.शुरे.शुरे.हैं.जुर्थाश्चेरि.श्चेष.प्रायोज्जीया ।जुर्मेष.त्रिष.प्रेष. ह्र्यः क्रुकः क्रुवः नदिः क्रुष् । वार्वेवः नदिनयः व्यन्तिः नदः कर्वेवा । विषः यदे यक्ष्यं व्यापकर्या धुः या यहे या उत्तर् हुं क्षे प्राप्त विकास न्वींबारीटा ने श्रूपायर त्वाया क्रियायर करावव्यानवींबा बार्टेन स्वींवी हैन यादेशायेग्रायाच्याचाद्याचाद्यांचा यदाङ्ग्रीता विभाषार्थास्य स्त्रीता स्त्रीता वें र घर वरें द दे सुद कें न राष्ट्रे न वि या केंद्र द या या दे द या वेंदि वर्ते र न यो केंद्र विद । देःकॅरःचरःश्वेंबःश्चेःकुःवःश्वेंबायरःवाचरःकेंविदेवे केंविषःचयवावावावायरःचःरेःवा यक्ष्याव स्वान्त्रं कर प्रति हिर तु है प्रतिव रहा वीर व रवव कु सेर प्रस्ति व रा मुक् मतुर मुकान विधा कु के क्या के प्यान विद्या मित्र यर दशुर य वे केंब्र छेट धेव यथ श्रम्भ उट श्रीक्ष केंब्र या वोब्रा द्वीं व बेर्ग

मक्रेन्यदेः यम् यम् यम् यम्

ने या सकेंद्र या तत्या लेका या है। या या का तदी ख़ूर वेंद्र का क्रेंद्र केंद्र यें ख़ूद्र यका यर्केन्याकेन्यां तत्त्वा तुषार्थेन्। रदारेक्नु योन् वे रायोन्य विष्यक्रा कुराया यर्केन्या वन्यः क्रुं सेन् प्रयासी तुर्यासी सूत्रा सेन् ने सूत्र प्रयापित्तुसाय र सी मुः सूत्रे। सिन् सिन् प्र यःश्चेर-दर्भःश्वर्वेर-वदःभक्ते-यन्दः। धेर्-भ्रीकःश्चर्यःवदःभक्ते-यःश्वर्षाः केदें। ।धीतःषदः व्यवशदे द्वाः श्रेः वेशः यदेः स्नुवशः वदे रद्देशः वर्धे रख्ये सकेदः यः वन्यः दर्वे र्यः है। यावरा मुनः मार्सः कवार्यः यो द्या मार्गः वी व्या विष्यः प्राप्तः विष्या विष्याश्चित्रप्रे मान्या । प्रतिष्यासुर्वित्रप्रविष्यकेत्या केषा या विषयपत्रिरन्देशतर्द्धराष्ट्रीयक्ष्यित्राच्यात्रम्भः हो रद्धिन्यीत्युषान्दः व्यट्याङ्ग्रीत् प्रतः द्वाप्ति सः या मासुसारी या द्वाप्ति स्त्रीय व्यट्यास्त्र स्त्राप्त स्त्र प्रति या वि गर्युयाध्येत्राय। देवदाग्रहेषास्त्रियास्यासार्यस्यो त्युषाय्यसाञ्च्यासायेदायसा युषाद्रमा देःश्रीव्राश्चें सम्बास्यास्रोद्रान्तुम् स्कृतिवद्गात्रवाष्ट्रायास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य व्यट्याङ्केट्रिन्द्रा वालव्यन्द्रवाचर क्रेयाके चावि नुयावायुयानु चयवायाय दिन्द्रवी वतः सःवास्त्री दःस्रेतः अर्धिरेशः र्वेवः यतः कुः दः यः वेद्रशः वरः वः र्वेवः यतः क्रेतः विद्वाः वि वदिः सः वः वदिः क्षेत्रः धेत्र। देवेः क्षेत्रः त्युकाः वेदिकाः क्षेत्रः दक्षेत्रः दक्षेत्रः वक्षः वः कर्केतः इटा रे.रेबालकाक्षर.रेबा.स.बार्ट्स्ट्रायाच्यायकाराष्ट्रस्य रेबालाहो क्रैलास्ययः क्रेब चे लि.च.क्रेपु क्रिंच त्रह्या पि.चीट क्ष्या क्रीक्षा का क्रीका या क्री या या क्रिव या वर्ष भ्रम्य भी कैल. २८. में श्रमा स्थान स्थान में भी स्थान स्थान

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्कः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

यान्त्र-तुःत्र-त्युःय-प्रस्ति । विष्य-याुष्यु-रूष-विष्टः। देःयः विष्ठेयाः वद्वे व्यूप्र-विष्ट्रः क्वेनित्रवायन्तरम्वोद्धन्वायक्षेत्रकेनित्वरक्षिण्यातः। युष्यक्षेत्रविद्ध्यार्थे त्र्वाः कॅटः चः तदीः दरा वर्षे दः द्रुयाश्योदः यदिः श्रेषाः यः दरः तद्रेषः यदिः वेदिषः श्रेष्टिः ५८। रदावर्देन ५८ वर्दे अयवि ५ को स्वाप्तान वाया के सकेंद्र द्वार विकास स्वाप्ता का क्कुलानः खुकानक्रमात्राने निवास विनिधास का धिवासेन्। रूटा क्षेत्रा क्री किवास हिवासा यदे क्षुन्त्र्। वहेवा हेव विर्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं वित्र रदाया भेदा र्केंद्र र्क्या वर्षाया विदा वार्केंद्र रवस्या यदि वार्केंद्र र्या स्थित रामित वयार्क्यायार्ह्म्यायायराद्येदाद्यायाहो। क्वायाय्यायक्रवायाद्याया नर्भेन् त्रस्य सी खूद निर्मोद केद है। । सर्केन् पदि दे र मालद निर्माण उट सा सकेश | देश'व'यालव'र्देव'दवेदिश'यदि'सर्वेव'श्चेश'वे। |पदया'वी'र्देव'श्चर' हेन्:ग्रे:अ*द्यु*अ:पलेका । हेका वासुरका के। । नर्देका सुः वर्द्वेर पते सर्हेन् या थायन्वार्थेकार्थेन्वासुपवर्द्धरायदेश्यकेन्यान्ना सामग्रहायदेश्यकेन्यान्ना त्युषात्वत्याचतिः सर्केन् यास्त्रे वास्तुसार्येन् ययः वास्तुस्य। नेषात्रः त्युषात्वत्याः वतिः सर्केन्यान्ने प्येन्सास्यान्नुन प्रते सर्केन्यते हो ह्यमान्न त्वत्या ने न की न न्यान्या वया य पतित है।

यन्याः येषाः व्येष्ट्रषाः स्युः यञ्चरः यदिः स्रकेन् या

रट. छेट् ग्री त्र हुँ र त्रिका प्रदेश मा विकास स्थान केंद्र स्थान हुँ र स्थान हिंद्र स्थान हिंद

इ.चवु.जूट्या इ.बुय.त्र्या इ.यट्या इ.यट्या इ.यट्या रेवा वु तहस्य य त्युषा क्षेत्रें पृत्य पुरा कुरा स्व कुया वा सर्हे न यदी सहेषा स्वा सु स्वा केंग सकेंद्र प्येता विषया न्येत्या से हेंग पर्वा ह्येया सरसी यश्यकेर्प्याचतुत्रकंरप्येत्। यकेर्प्येत्वेत्वयातुः वार्शेयात्वदेष्यतुराचा विचयान्यायाः वे विचयात्याः वे रेषा चे द्रायत्या विचया विषयः चे द्रायते हिष् याञ्चयायायाद्यायायो स्वर्धायाञ्चेता स्वर्धायाचीत्र यरसे। सुर्यादेखियानर्सेनिदेदेखन। धून्यायार्सेसररान्वयात्रया सूर्यायाः सूर्यास्त्ररायाः रेवास्त्री देवास्त्रीयाः देवास्त्रीयाः विस्तरास्त्रीः विस्तरास्त्रीः विस्तरास्त्रीः इयायर्ट्स, मुन्न, क्रिनेन क्रिया यहन प्रति ह्यायान देश मान्यान में या प्रति वा यान में या प्रति वा यान में या प वबर व ध्रुवा ये क्षेत्र प्रथा क्षेत्र व्यवस्था यस् क्षेत्र हो। प्रथम ब्रुवा ये क्षेत्र व श्रु उत् श्री कुं ते वारोप सा वर हें है या यस धीत प्या प्रति या पर्देश से प्रवा यालेकायावी वेजातर्केन्द्रस्थायम् यात्रदेकानेदा राक्कवान्द्रस्याकेकासु याशुराया योराञ्चायहरायमोगायाशीयायायकेरयायावीयारमेविया देखरायावी न्दें अ'र्ये न्वा'यदे हु 'प्येद'यया हुव्य'न ख्रुषाचरुषा श्री अनुद्रा स्वर अर्केन् यदे 'वे केन्। র্মূব অৎম ক্রিকা এইরা প্রব বেশ মুশ্ব এরিবাকা দ্বম দ্বিব বিবা এমা বি স্ট্রেরিকা যা বাদ্বিম ग्रीभाषान्द्रम् धीषाञ्चेदार्थाञ्च प्ववेदा वदी विप्तदायवी वदी वेप्तदायहिंदि। देर देन ये के बू केंग्र प्येन् देने बेर पान्। देर यह या कुरा पर्वेस पून प्रदेश या गुरु-द्रमादः वेद्याल्ययात् वेदः सह्दः देः येवया यदः स्री व्रीयः यं स्वाः वेद्याः वेद्याः वेद्याः स्वाः यद्याः

क्कुरायह्यायराधीन् रवातुः न्वादाङ्गी रेताये के धीता वेरावदे सेन् करारा से में से त्रमञ्जूरः विराद्यस्य स्याक्ष्यायायवृत्यानुः स्यां ने से द्वीयाया वृत्त्रस्य वि यबाबरबाक्किंबाक्किंदियां सर्दितां स्थाने स्थ जीयायश्चीरायपुरस्याः स्रेटारीः जटार्डीःसीजा हे.क्रु.यट्याः क्रीयाःश्चेयाः श्चीरारीः वश्रीद्रशायशाद्वीशायाद्रवादाङ्की द्रात्तवस्थावित्र शास्त्री देशि सुरावादा सुरावने दात्तुवा <u>शर्याक्र मार्था क्रीया दे हिन् गाुव द्यादा देदी सुवा हु या हु वा वा स्वार्य वा व</u> र्शेय.ज.पर्यय.क्रीर.क्रीश.क्र्या.याबीरका ट्रे.चधुष.ब्रियं.पर्ट्र स्ट्रीःक्षीत्रातायार.सीज. चतः चर्त्रान् वस्रया श्रीयार पर स्याप्तर्या वस्यावस्य वसा व्याचि । स्वाप्त स्थापि । स्वाप्त स्थापि । स्वाप्त स ष्णार्च मालेबाचा प्रमासे लिट हित्र हेवा स्वेबा वे दित्र होत होता हो या हा दिवा हो है वा तह्यानुः न्नीर-नु-नु-राष्ठियाः या अर्केन् ह्रेष-प्रकुन् वि:पवि:सूर-पविरुषः यर-रायुर-विषाः सर्ने तात्वर सकेन हेत हो न लेका सह न स्वर्धर केन हेते तात्वावान योदादी । यात्रवः पदः द्वायः यो तस्ने वः द्वायः यो चे राज्ञे दः विकः यात्रवः र्थेन् क्वै:व्विभः क्वें त्व्वैभवाद्यायक्ष्मरवाद्येत्यः द्वेतः क्वें व्याचेत्रः स्वरं क्वें व्याचेत्रः स्वरं व ग्रीट चु वाट त्यहेँ अया व प्येन न्याद चलिव वार्ड्वा त्यवा विट नु खेट व वा यह वा की सन्तन्तुः सुव्याने। नःश्लाचन्वाः सूदः स्रोत्रः सुत्रः प्रसाने स्वराध्यस्य विद्यास्य स्वराधिका यर्ने होन अर्था क्रियाया सुवायते पर्यान् स्थाया क्री समुवास विष्या सार्वे स्थाय स्था स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय શું અમ્સો ૧૬ ભૂત પ્રમાશુમાને વિશ્વ સો અયા કતા ક્રમાયા કર્યા શું ક્રીયા વિદેશ સાંધાયા છે. यर:ब्रिवा:डेश:ड्रेंब्:ययायम्य:ब्रश:ब्रिटः। दे:ह्रेश:तयवाश:य:ब्रित्:ववाय:ब्री:त्:ब्रिवः <u>ૢ૽ૺ૽૾ૢ૽ૺ૱૽ૻ૱ૻ૱ૻૹૣૻ૱૽૽ઌૹૻઌ૱ૼ૱૱૽ૼ૱ૡ૱૱ૢ૽ૺૹ૽૽૱૽ૺ૱૽ઌૢૼઽ૽ૢ૱ૹૣ૱૱૽</u> येवायाः सुरावयाः याचे सामान्यस्य वित्ति हुम्या स्वाप्तियाः स्वापतियाः स्वा

तस्याक्षीः सर्क्रमा प्येतः स्रेन् स्राम्या तर्ने राष्ट्रमा स्राप्ते राष्ट्रमा स्राप्ते स्रापते स्राप्ते स्रापते स्रापते स्राप्ते स्रापते यरः यातुषा देः कें वर्षे याचे यात्रवाची लया वया यर यो दे वि १३व विषा चीया वीया यर विद्वुर तुषाया साधित है। विर्धिषा सम्रता प्रष्या यदि बोसा स्वता क्षी देवा दुः प्रष्या या *য়ৢ*ॱळेर:पश्चेतःदे:सु२।पःभेतःगशुद्य। दे:पत्नेतःदुर:सदयःक्वयःग्चेतः न्तुयार्थाः क्षेत्रान्वादार्थेका चन्वा त्यास्य स्था स्था स्वितः क्षेत्रा त्यसा चन्ना पर्वा सम्भासा हैं। विदे हिंदायर या क्रियायर ये यह देवाय हुर विदायीय ग्राहर दे स्रेर:ध्यायानभ्रीन्यत् स्याधिन्यः । वाववन्यायः मुख्यः वर्षान्यस् वर्षान्यस् न्दरनेदन्द्रमें भ्रीक्ष्यायाया स्रोत्ताया देश होता स्रोत्ताया वहिता होता न्नान्नान्ने लिट क्रीनाय गुन्ना । ने न्नान्नोनि सर्केना सर्केन स्थला वहार न |ह्नाः हुः नृगेवः अर्केनः अर्केनः यः न्यक्षेत्रः यः रः श्रीय। । विषः नासुरय। नेतर नर्देश ये निवास ते अर्केन यात्रा कुष्व व व निवास व वबर वर क्यूर व प्येत्। सुरा द्वापा ब्वेराय दे रामेस व वापर व स्वाप द र दिसा र्येतिः रेषाया ग्रीया यहेन् या राष्ट्रा स्त्री। सुन् ग्री स्त्रीं या न्दा र्यो याते यो राया या सेन् रियो सुन् तरः वाश्रुह्यः है। इद्रेशेयः श्रुरः या रुवा विदः व्यात्रा सेराया श्रुरः या सेदाया से न्ये अर्क्षेत् श्रीश्रास्ता में शामना वारा श्री सुदाना विष्युत नुष्येत विष्ये में त्या स्वार्थ सिंहर यरकीरिवाया देलद्रयायळेंद्रायां निर्वाययां वित्रात्वीत्रात्वीत्रात्वीत्रात्वीत्रात्वीत्रात्वीत्रात्वीत्रात्वीत्र बन्दिन्दुन्दुरुक्षुरुद्धेन्य्यन्ते। वर्गेन्योग्यायालेयायदी रन्दिन् सर्केन्यते स्यात्रस्य त्रस्य वर्गेन्यो वर्षा वर्षेन् स्रेस्स्य स्या स्थिन दुर्वेन्या यहैं र कवा या विवाद वेरिया देवर वार्ष र दर हुँ या दवा वर्गे द खेवा या वेर र देवर यग् नयः रुट बैट । दे से दे सुट ग्रह्म स्युट स्वयं रुष । वियायं यं रहे स्वयं रुष । इयावार धीत प्यर धीं विद्या सेर धर दर धेर प्यवस्था वर्त्त क्रंस प्यर प्रकर स के'वर्ष्वर्याके'वर्गु'ध्रीय'योग्यायार्थराष्ट्रा दे'वर्ष्वत्र'कु'गर्यर'गीय'गर'याकेयावीर'या यार पतर सीव या अर्केन गोंद मुन्या त्यु तर्धेर पा अर्केन सीवाया पर नर्देया याञ्चयात्रात्राक्षेत्र हेत्र सेवात्रात्राया स्वयः ह्वात्रात्रा द्योः सुस्रात्यः स्वयास्या श्र्वाशः श्रद्धाः वार्ष्टः द्वाः वुः द्वेशि देः प्रवेशः विद्वाः व्यवः विद्वाः व्यवः विद्वाः व्यवः विद्वाः व्यवः सियो.यर्रःस्रि.वुर.तयर.यशूर्यय्वात्राशूर्यो.तयु.क्री.कुरे.कुर.तूर्यःवकी रे.ज. रदःदेश्वर्षाहेश्वर्षाधारदशादीद्वायाधित्। ज्ञाब्वरायदःहेवाज्ञासुसासहयाचाद्दः भक्ट्रायचीताचीर्यास्त्राचीरायास्याचार्याः भीत्रायास्यात्राः स्त्रायास्यात्राः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स् चैराय.धेरात.पवैंट.झे। य.जुइँपु.शिषय.तू.कैज.पवैंट.शकुज.जैश.श.सीट.तर. यदियाःलयाः विराद्धे स्टायदे देशाः श्रीयः श्रीयः श्रीयः सर्वाद्धे राष्ट्रियाः पृः श्रीयः स्ट्रीया स्टार्या गया हे ज्ञारा वार्ष्टा या योदा वार्षेद्राया ये या योदा वार्षेद्राया ये वार्षेद्राया ये वार्षेद्राया वार्षेद्राय वार्षेद यदियाःजयाः विराविरात्त्रयाः यो १६०४ हिला ख्रियाः वे स्वराधितः वे स्वराधितः विरावितः विरावितः विरावितः विरावित भूरः र्रे । वित्यरः तुषः श्रीषः दर्देषः स्थः श्रीः वातः श्लीवाषः ते देवाषः वार्षदः त्वाः वेतः व विराण्याची त्रत् श्रीव प्राप्त होतु र रेप्याय प्राप्त स्थिताय हेता स्थाय प्रस्ति स्थाय स्थित स्थाय स्थाय स्थाय र्धेर.लट.उर्केर.श्रेश.धू।

यन्वायेंबायेंन्बायुं यावतुं प्राते अर्केन्यादी।

है: स्नूर: र्रा व्ये: केंग्रायव्यव्य चु:है: स्नेर: व्येर: य: र्रा । स्नुव: क्री: यव्यव्य चु: यार: र्रा व्यन्यन्ता विद्याहेत्रचेत्रकेत्देश्चेत्रव्यन्यन्ता व्रिव्वर्द्यन्त्र्र्त्र यक्षेत्रप्ति । देव केव रेवें प्रत्वे देवें प्रत्वे प्रत्ये । विषय केव रेवें प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्र द्वेतः ब्रेटः कुराकः द्वादः दृदः। ब्रेकः वासुद्रकः यः श्लूरः। योः क्रेंवाः यः वस्यायद्वदः यन्याः विकार्यस्थाः यञ्चरः यः न्रायञ्चरः यः यञ्जिषः याः विकार्यस्थाः विकार्यस्थाः विकार्यस्थाः विकारम् विकारम् ढ़ॆ॔ज़ॱढ़क़ऀॱऄॸॱॸ॓ॱॻढ़ॻॱढ़ॺॱॺॖख़ॱढ़ॱॺक़ॆ॔ॸॱऄॱॺॖख़ॱॻॱॸ॒ॸॱढ़ॾॱॿ॓ॸॱॺॖॕख़ॱऄऀॸ॒। हेंग[्]षर देथ है वेंद् तदेर वद्य येंब थेंद्र अपूर्य स्वास्त्र स्व यवार्वेश यो कुः ववार्श्ववाश सुतर से हिवा तदेते देवा श ही र यो र से देवा स यें तर्दे तदः सेदा व्यवस्था है दार्थ है दार्य है दार्थ है दार्थ है दार्थ है दार्थ है दार्थ है दार्य है दार्थ है दार्य है सर्केन्:ह्रमःसु:तुर:पर:सु:वार्डर:स:दर:से:हेवा:वर:द्वेथ:धेन्। वाथ:हे:क्कु:वार:नु: *बेर्फिन्-वर-देवरवर्द-वर्द्यन्वर्वाचीयरबर्द्धनः द्वाचेदर-दुव्ववर-खेर्द्यन्वर्वः* ৾ঽয়৾৽য়য়ৢৼয়। <u>
৾</u>ঽ৾৽য়৾৾ঀয়৾ঀয়ৼয়৸য়৽য়৽ড়য়৸য়ৼয়৾য়ড়৾য়৽ঢ়য়ৼ৾ৼ৽য়ৼ৾ৼ৽য়ৼঢ়য়৸ <u>५८ (य देवा ५८ दे लेस देवा वु वाट बद दस्य भेद ५ देंद्र य दे सुद्र सुद्रा स्वाय स्वीय स्वीय स्वीय स्वीय स्वीय स</u> यर्केन् स्याधित। यो में वादी ही रागुत वान्वावान हीन्यवे स्याधिवाधित स्याविन क्षेत्रायोग्रास्त्रुव्याद्वरायार्केत्रायाः व्यव्यायात्रात्याः स्वीत्रायाः स्वीत्रायः स्वात्रायः स्वीत्रायः स्वीत्रायः स्वीत्रायः स्वीत्रायः स्वीत्रायः स हिन्दिन्य वासी देश यद साधित है। नियम मुखारी के वासी की साधित है। यवः र्द्धवः यः योग्राषा सुरेषः मञ्जूरः वदरः वेदाः विरास्त्रक्ष्य्य। देः चिवव सुमा यो क्रिवः ये ॐॱढ़ड़ॱ୴८ॱऄॱॸॖॕॺऻॱॺ॓ऀॱऒऄ॔ॸ॒ॱॾॣ॔ॺॱॻॖऀॱऒऄ॔ॺऻॱॵढ़ऻॱॱॱॾॣॗॸॱऄ॔ॱढ़ॕ॔॔॔॔॔॔॔॔॔ऄॸॱॵढ़ॱ୴८ॱऄॱॸॕॖॺऻॱ

बु.धुर.श्च.बुर.श्चीय.श्ची कुंदु.लीय.कु.भिय.क्यर.श्र.ध्या.बुराय.ही ह.सेर. चर्त्रेव सहैर्य सङ्घर स्थि हिन् केटया उन् । वियायाया सैनायाया सङ्ग्वाया चलैव से 'हें वा चीका क्किव 'ही दें त्या सद 'दें 'सहैका हो व दें 'दें 'तहे वा हो व 'दें वा स्टें दें 'दें वा स्टें चीका स्टें वा स्टें 'दें 'दें वा स्टें चीका स्टें च पतः सक्रम् ग्रामः प्रीतः प्रकासी द्वस्य मानः त्यान् मातः प्रतिः निर्देशः ये दिः सक्रमः प्रमः स्वयातः क्रियायान्ने प्रतिवर्धे स्थायान्त्रीययाक्षे याव्यस्य प्रतिवर्धाः याव्यस्य प्रतिवर्धाः स्थायस्य प्रतिवर्धाः हेंग्'य'से'सदतःचर्याम्येर'सेम्य'देर्याके'सुव्य'चर्याम्'से'चक्के'सूर् योश्रर्भर चेर चार्यक्रम यदे त्यवाया स्वीयाया । वित्र चित्र स्व स्वीया नसूनर्या स्ट्राप्त स्ट्राप यान्याः से न्यायायाने व न्याया म्चीर वीश्वापने र्मेन हो। प्रास्त्रा स्वीर प्रति त्वापन शामित हो । विक्रा स्वापन स्वीपन स्वीपन स्वीपन स्वीपन स बैच.क्री.हिचार्यास्त्रीय.हेंबे.जा ।त्रा.ध्या.चाष्ट्रम.वर्षा.चर्या.श्री.चीया.हे। ।बेर्या. याश्रद्यायात्वेरायद्याक्क्षयात्राष्ट्रीयात्राद्यात्राच्यात्राच्यात्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्राचीत्र यात्रत्यानु प्रमुक्षान् क्रा क्रियाचारे दे दिन्या स्रोदाया स्यान स्थान स्यान स्थान स सर्देव:र्वोर्याय:इवावर्देव:सर्द्र्राय:भीवाव। रे.प्रविवावस्वायाय:हवा:हु:र्यः वुरः कुवः सेस्रसः न्यवः गुतः हुः वबरः येः विषाः स्रसः सहयः नुसः सेः हिषाः सुयः बिरः। चिर-क्रिय-म्रोमन्य-देय-वर्षेर-प्रचर-वीन्य-हें-पर्वेन-विमन्य-मर्ग्य-हेंन्य-मर-महत्य-दुन्य-स्य-स्य-स्य-स्य-स्य-स्य भ्रोक्ति स्थान्य प्राप्त स्थान्य स्थान चुतिः या इसा त्या से 'हिया प्रचार 'चे 'या हिर हे 'देशी दासकेया सकेर 'यर खुरा दा चा है' ह्येत्र[ः]सृत्वदेःन्यनः वनः स्थतः बिनः। योः केंगा यादेशःयः स्थान् द्वेतः स्थानः हतः विनः यान्यः। र्गा.जम.मैज.बुर.म.कुर.तूर.सूर्य.त.मूजाम.२८.। यावय.लर.मरम.मैम.ज.म.

हेंवा सुया नते सन् पोन ने तर्या न युराय शासा स्वाप हेंग'नी'अर्केन्'य'ने अर्केन्'इर्याम्बन्'यहंग्य'तुर्वे कु'म्येर 'यय'म्यून'यदे स्रून्'न्'न्वन्म वर्षासुवानावर्षाम् नर्वेद्वयराकेन्यम् वर्षे क्षेत्रयकेद्वानावा न्देशयाक्षीयार्केन्यस्यायार्की विसामसूदस्यायस्य देत्र वदार्वेद्र क्षेत्रक्षेत्र योश्ररक्रेंट्रियोश्ररक्रीश्राचयोट्यक्रेंश्रिश्चर्यात्रीश्राच श्चिम्राज्ञीस्राम्याचीस्राचित्रान्त्रम्यस्यायान्यस्याचास्याच्यान्याचीस्य देतिः ध्वीरास्यः देवै:दे:अर्वेक्शवार्डट:वी:अे:फ्रेंबा:दुवा:अेद:इअअ:व:ववा:वार्डट:अअ:वफ़ुअ:फ़े। हु: यानगुराविदावाङ्गदर्यासार्येषायमस्ययात्रायदार्येदाङे।विदानेयाङ्कार्येदात्रास क्षरः क्षेरः क्षेर् नव्याया अपया रेरः क्षेर् हिना स्था क्षेत्रीया या से क्षेर स्था या स्था या स र्त्ते प्रमान्द्रमाने तत्त्व केंगाय। रदानी विराध्या द्राप्ता द्राप्ता विराध्या द्राप्ता विराध्या विराध्या विराधिक विषय विराधिक ५८ मुरम्बुस्य स्वायाया प्रमान विश्व स्वाया स्वया स्वाया स् श्रीयायम्बाकीरानुयायदेश्योक्तिवार्यवायायम् धिन्शीयास्वयः स्वेत योक्तिवास्वयः यर.चर्याच.रट.सॅट.मूर.सॅटयात.पत्नैट.पर्तेज.म्री.र्थातपुरेच.च.र्ये.स्रेट.ज.सूर्यायात यदः अहं अवादः येवा अरुप्तर्गे दः देवत्यः द्वे अर्थे । विद्वाः येवः व्यव्यः सुः अः चर्चर चर्ष अर्केर या व्यापाय हिन्न राज्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप श्लेन प्याने श्लेन निर्मा निर्माय स्थित स्थित श्लेस स्थित श्लेस स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित म्चें प्रिकास्त्र स्था हे त्वत्या अंहें वा देवाका श्री अर्केन या स्थान विदास के किया स्रिर-५८। व्यकान्द्रि-रेग्राकान्त्रीत्यु-स्रुव-वर्षान्त्र-वर्ष्ट्र-वर्ष्ट्र-स्रुव-

र्देव ये केते रेवाय इसय सुवा वया द्वीय तर्दे द मस्या उद् वर:र्रःवज्ञ्या ववृत्। देन्वाः मृत्वारमः सुरः वर्षे वयस्य स्वरं विवादिवाः हेवः वस्य स्युः सेदः दे ड्या क्लें प्राथित सकूरे ता हो। क्लिया ख्राया क्रेया क्लें पा क्लिया स्वा क्लेया क्लेय ५८-वि-१-१-१०विव-१
१००० विकामास्य स्थानास्य स्य स्थानास्य स्थानास् मी इस्रायन्ता माल्य प्यतः देव क्रेव स्था क्रेनियायदे महिरा श्रीया महस्रायदे दे ५८:अर्के धुँवायायदी:देव:यो:के:ययायुव:यदे:दे:५व८:वी:कुय:वें:५८:अवदःक्र्रेरः योश्रेरक्कि: रे.चर्त्रक्ष्या देवर रेते क्रुय केरेर रच डेश्वर्य है स्वते हिंश क्रुर्य है रियर . तीया. धे. भारत तीया के तीया क प्रमा भी प्रमा के स्वायायते स्वाया वसूत्रः श्रीः नवीं वात्रः वात्रवासूत्रः वात्रः सूत्रितः याः याः वनवाः श्रोनः व्योन् व्याः सूत्रेतः नेवावाः वीनः । मस्रस्यायरामतुम्यानुसान्। द्वामीयाग्याराञ्चानयसाम्हिन्। स्रोत्राग्रीः नर्गेर्यायाने हेंवायारेवायायाँ । रि.स्याधीयावीयाधीयाधीरायावितानुः संधिः सासेन्यस्वरेन्याः वै। दे:रैट वी:हेश शुःशद हेद सेद सर वर्देद सादद वाईवा सर्ह् दशाधीद समादे दे श्चितः में देशाया स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप दे.जयर.अष्ट्ररे.तपु.अष्ट्रेज.अष्ट्ररे.ची.रेट.क्रींच.तपु.अष्ट्रेज.अष्ट्ररे.लीज.क्रीज.यपु.रेग्रीज. विरागित्रभाग्रीन्रीम् माने वात्रभाष्ट्रमा नेति श्वीता स्वीता श्वीता श्वीति वि यायर अर्देव निर्मरमा है चलेष नुःस्वाय ग्रीन्ग्रीय विर्मन हार वहेवा ग्रीय चस्रेष श्चून प्यवानविदेश्वावन र्द्धन यर होन्य प्यवास वर्षेत्र व्यवस्य स्थान स्य श्चेंबावयवान्नर्तियानवायाव्यक्तर्त्तर्त्वायाव्यव्यक्तर्त्तर्त्वा

क्रेन् श्लेट विवा वीय विवा न्यानया धीन स्थान । अङ्गय धन स्थेट विवा वी सङ्ग्यः स्नेत्रमा सूर्यः सूर्यः सूर्यः सूर्यः सूर्यः सूर्यः सङ्ग्यः सूरः सूर्यः सूर्यः सूर्यः सङ्ग्यः दरः। र्जर्यासुतिः सङ्ग्या द्वाराद्वीत् रहेकासुतिः सङ्ग्याम् सुसाद्वी मी नित्रास्य स्वाराय स्वाराय स्वाराय स्वाराय स रुदःबिदः। देःक्षरःयद्याःधेंबाःभेदवाःबुदःददःवायत्रदःय। ददेवाःवर्धेरः न्दः भेन् सुवा सुन्दः भेन्या धुन्दः ग्रयः नदेः अर्केन्यः स्रयः क्न'तर्नुषायंतर तर्ने प्येत हो । भ्रम्माया तर्ने र त्याया नर से प्येत हो ने प्याया निवास विकास स्थापन लूर्याकीयावरीर पपुरायक्रियाच्यायायायायाया हास्रीर पहुर्याहेष की विषयायायी १ अर्थः द्रमादः चः व्यः व्यव्याया अर्देरः वः मावयः यः चरः स्रूटः मीवः चसूर्यः यदेः स्रूटः पञ्ज ग्री:पवर प्रमुद्धि रविरापा सहस्य प्रमुख प्रमुख प्राप्ति परिष्ठे मा रविषा के मा देवरः वरः भेः ज्ञः यभिषाः श्रेः क्षेत्रं यो विद्रां केवा विद्रां स्वापाः श्रीः यद्गाः श्रेषाः देः विया बुनः न्यारयारायारा श्रीः भ्रायावेषा यार्षाया वारा स्वारास्त्र विया भ्रितः सर्केन : प्रेन : वर्षाया । वर्षाः वर्षाः स्थाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः व त्वुवा वी रें या से विवास विवेश वासे राष्ट्री से विवास विवेश विवास के राष्ट्री वासे रा ह्यायुर्केष्या सेटायुण्याकीतर्देराणेता देवायुण्याकी वेद्रास् यिष्येयात्रास्त्र्यं स्त्रेन् स्त्रेन् स्त्रान् स्त्रेन् यिर बुर अक्टर लेंज की बिर तर हैं यो या पश्चेर बुर राया रायियाया प्र प्रिया या प्र वाश्वरायस्यायातव्याच। वद्गीन्वादीन्द्र्यावर्द्धिमञ्जीस्रेकेन्यावर्द्धिमम्ब वसूत्र य प्येत हो । ४८ रेदे लिट स्यूच ५८ रोध यथ वस्तु ५ वत्या यहें ५ राधि हें ना

वियःयन्याञ्चः यःयञ्चः श्रेयःय वरः यक्त्याः वी वयः यासुरः।

या नर्सून्यन्त्वर्याधीयकेन्याधित्राच्छ्याधीन्त्वेन्यस्याधित्राच्छ्यान्यन्यस्य स्थ्रियान्यस्य स्थिति स्थ्रियान्यस्य स्थिति स्थ्रियान्यस्य स्थ्रियान्यस्य स्थिति स्थानियस्य स्थिति स्यानि स्थिति स्यानि स्थिति स्थिति

भैन् ग्रीस सुयानदे सकेन्या

दियान्दः अस्ति विश्वास्ति क्ष्यास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्त्र स

यर्थत। विषयः सः से प्रचार द्रेपः श्चीयाः वी वी वा वा वो प्रचार से प्रचार से स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर वै. ब्रुच यः ब्रुष्यः श्रुष्टे इस्य यः स्ट्रूर्यः ययः श्रुष्टे यदे स्वः युष्ययः स्युष्यः यः इस्ययः यः तद्ययः वः र्टा ग्रुश्चायबर श्रयाका तह्या या श्रू श्रुण्या प्रमुख्या यक्किया विष् क्षर-दर्वजन्तर-पश्ची विषायषायर यह सम्बन्धिय विषय सुदि स्वाय सुदि स्वाय स्व ५८। वर्षिर वर्षेश श्रुर वर्ष श्रुवा वर्षिर कतु ५ ४४ १ इस १ हे वर्षु देश वह या यतः नृत्युरुषः नृरः तथवाषा यः यः श्रुषः रुषः वाञ्चेषा यः श्रेषिषः यः यः विरुषः श्रुषेतः नृरः नृरः विषः क्किन त्वत्या नेतर स्था स्वन मार्चमा यमा मिर मी स्वेन या स्वायते प्रवर सेति स्नाया हैं। वेंदिः सक्तं श्रीकारवेंद् सेट वेंद्र का सुदि क सुद स्वतं दु र स्वसूद र विश्व विद विद विद विद विद विद विद विद वि वर्शेन् द्रम्म भी से विषय में विषय प्रति केन् न् निर्देश में किये न् न् मुक्त मुक्त से विषय स्वानायायेटसासुरावयानसुरानावेषाग्रारानहेन्। र्नेनायार्केषायावेरा केन न्दु देन देन के के देश होता लु के वार्य सुवा हे इसाया वश्चुर वार्ड आर्सी । व्रुप्य दे हिं वि दे श्चीर श्चेंत्र या न्यूरी द्वार ये प्रीताय। हे ते लिया या श्चेंत्र ख़ाया से ता स्थार श्चेत्र ख़ाया से लिया हो लिया या से लिया से लिया हो लिया हो से लिया हो है से लिया हो से लिया है से लिया यायायाडेयायीटावेया याळावदी द्वीयायायीयाखात्तावीयाद्वारा देटावर्द्वयायीया कःतवातःरेरः न नुदःवादातः वितः स्नान् या १ अर्थायर हे हिन्दः आहे विश्वायविन्य। दे प्रवित हें के विषय महे के दि देव प्रवित या पर्द्व का या है के विषय वे स्वति स्वा मी बाद पेंद्र मा स्तर्भा । भेरार्श्वेन त्वत्यायते सर्हन यात्री स्नेन मासुसागुरा है न न स्वराया यो । इ. मध्या १ मध्या र्देर वुष्य या भूरा विद्रास्माषा त्वराय राज्य राज्या वुषा यर वश्ची विष्य या भूर दि चबर देति क्रवा क्रीया ब्रव लिया स्त्रुव स्त्रुव स्त्रुव स्त्रिक स्त्रुव स्त्रु

वियः यन्याञ्च स्यायञ्च स्राथः यञ्च र स्रोठेया यो लयः यास्टा

ब्रेंद्र यस ब्रेंच्या ग्री सकेंद्र या

टवा'तर्देब'द्वैब'क्ववशःक्षेत्रा'लवाशःग्रीवार्शेयःक्षेत्र'क्किश'तक्षेत्र'लेट'सर्केवा'क्षुर'वर्षेद्री पतः न्वर्या सेव्या साम्राज्य साम्राज्य स्थान स्थान स्थान साम्राज्य न्नान्दरहेरासम्बद्धानुत्वसुरानासुरारी । माल्यायदा रेवासीयीनारेटा र्येट्यः श्रेषः क्रियः तः शूर्यायाः श्रुष्याय्वयः श्रीः श्रृयाः तश्र्यः श्रेयः त्र्यः श्रीयः त्र्यः श्रीयः त्र क्रैंग्रथः बन् या येन् या वितरः स्रकेन् यते ह्येतः त्रेयाया दे स्पेर्यास्युत्तन् विरः बन् या येदायायाः भ्रीतालेयायहेदादे यदेतायहेदायीः स्वयायीयायहेतायरा स्वयाः में ।ने सूर र्शे श्रेर म्वया विराधिया परि सर्वे राय ने निमा में श्रेरा - द्रयः केंगः द्रयोदः यकेंगः व्यव्यायः उत् : द्राः । । यकेंदः हेवः इययः द्राः श्लाः या श्लायः । वा दिव केव से हिंगा वा र्श्वायाया । क्रुव से कदायर वयवायर र्वेष विश्वः श्चेर्यः या महेर्द्रः या श्चेर्यः यथाः यीदः श्चीः यकेर्द्रः यदे विष्टरः श्चेर्यः यथाः त्वीयःताताः क्रीं क्रिंताः विश्वशास्त्राः तर्याः तर्यायाः देव्यायाः श्राम्याः श्राम्यायाः विश्वायाः विश्वायः बूँरायायर पेर्राप्ट कुँदायान्य पारा देर्वा पेर्वा सुर्वा सुर्वा स्व त्रश्रुद:बुद्धः इसः <u>ज</u>दसः इसः पदः से स्वरायदेः यसः दूरः देः सः द्वाः वीसः दसवासः सः तह्मान्ययान्वित्रायाः सेवासायसाहे सूत्रायाकेन्यायवित्रायन्वा वीसायाना सर्केन् यर:बु:चर्यस्यःस्री।

वर्षेत् यन्ध्रद्भा श्री सर्वेत् या

यसयास्रात्यत्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्व इतः । प्रात्ते त्याः स्वात्याः स्व

वियःयन्याञ्चः यःयञ्चः श्रेयःय वरः यक्त्याः वी वयः यागुरः।

पक्षित् प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

ब्रे:ब्रग्राफु:सरसेदे:सर्केद्र:य:चन्द्र:या

याश्चान्त्रीत्वत्त्रात्त्रयात्रात्त्रीत्त्रात्त्रीत्त्रात्त्रीत्त्रात्त्रीत्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रय याश्चान्त्रम् स्वत्त्रात्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्यम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्यम् स्वत्त्यस्यस्यत्त्वस्त्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्यम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत्त्रम् स्वत

<u>ख़ॱज़ऒढ़ॖॕॸॱज़ऀज़ॱॸऺॸॱॻॹॖ॔</u>ॸ॔ॳॴॱक़ॖऀॱॸऺॻऻॖ॔ॴय़ॱॻॾॕॺॱग़

 चन्नदःचतः अर्केन् यः वै:न्रेयायाः योन् श्री:अर्केन् यः प्येवः विदः। नेतदः न्रेयायाः चरुयः यक्षं या उव क्षे यकें न या या नहेव वया न से न या से न य वनुवाक्षेत्रान्वीत्राने। न्योत्यकेषानाव्यवेश्वरीत्रा यानाव्यावकेन्यान्वया यायवःवर् र वेयावेट । वाद वीयाये र येवायावाद र वह व र यो वि वैॱसर्केन्ॱयःगुवःक्चेॱन्सःयःस्रो । । भेःवेसःग्वयःसेन् प्रस्यः प्रसः विवायरः श्रीत् वर्षा सक्ष्या सुरा सुरा देता हो। देता तुषा स्वीता स्वीत स्व ज्ञातवादः वर्षाय्यायसूर्वयावाद्वात्वरः वर्षायवरः। विभागः स्रात्वात्वरः करकु:नुषासु:बी:तवव:हिटा वि:बैंट व्यय:नु:बी:बेंट्र राया विह्या:वीय:त्युव: त्र गीष क्रिश्न भ्रात्यीय भूरी वाश्वर प्रतृर सिंग क्षिय प्रात्यीय क्षिय प्राप्त वाश्वर वाश्व स्राचित्रुर्। देख्ररत्वेद्यायम्यदम्बारम्यम्यम् स्राव्युरम्यस्य र्बेर्-यानवरःक्ष्रयायाधेर्। देन्नादीःनर्बर्नात्रयायायाः कृतःयोद्राययायाः बिटा दर्ने य रेस में सूच या मालम यस ग्राह्म रेस मानसमा हु या माया है। दे श्रीवायदो क्वाया निवा की मार्वेदाया प्रोदा मार्था वाया मार्थिया है। मार्थिया मार्थिय र्सुय स्व रेड्रिय में अर्वे तुर वर्षे व श्रीय द्यार या सुर पर्से पार्ट अर्केन या सर्केन से *ଵୖ*୵ୖ୴୕୵୷୕ୡ୕୳ୄୠ୶୲ୠ୕୶୷ୖ୶୵୳୵ୣୠ୷ୡୖ୵ୠ୵ୣଌୣ୶୳୰୕ଽ୷୰୷ୠୠ୷୷୷୶୷ୖୄ୷୷ୢୠ୵ୄ यानवरास्त्रमा नेतरास्रीतीसर्करायार्थनानुनाना रहासुनार्थरातनुना র্হুমান্মার্মানম্মান্মান্মার্মান্তর্বান্তন্বল্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তন্বল্বান্তর্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বান্তন্বল্বা

द्यायर्न् व च्चित्र क्ष्म क्ष्म व क्ष्म क

বমমাষ্ট্রিম:ব্যান্ত্র্যাবন্দ্রা

प्रथा अर्केन्यत्वरुषः चित्रभावन्य च्याः च

ख्यःयन्याञ्चः अःयङ्कः श्रूयःय वटः अर्केयाः वीः लयः यास्टा

सुर चें कॅन सेन नर ख़्र या पर्सेन राम सेन सम्मान के वा पर सेन से के ना के में इसम्याम् मुस्राधीन या देरासके दायात्वाया दुसासा निमाना स्वापा स्वापा કેષાર્સુક શૈઃક સંસ્થાર્સ સંસ્થાપાર એર યમ સુવાન રિવો નહે ફસાર્સુક શૈન શૈઃવર્સ માનું સ્રેન્ એર यत्ववृत्। देवे ध्वेरद्रोत्यावर्षेषाः यावर्षेद्रायात्वयः दुव्याद्वयः वार्षेद्रायः द्रा वार्डर:ब्रुप्ते:ख्रुप:पान्दर। दे:र्ड्या:ब्रीका:र्क्रवा:ब्रुय:वर्दे:र्क्टेन:खेन:वर्दे:न्दर:ब्रुन:वर्देन:प् ध्रेन'चलेन'क्या'सेन्'नु'तव्युथ'र्केन्'सेन'स्नुस'यदे'ये'ये'न्-। सर्केन्'स्य'य'सेर'सू' स्रोत्यार्श्वामाः क्रीत्रात्र न्यायायायावित्र स्वामा न्यात्र सर्वे स्वामा न्यात्र स्वामा स्वा <u> ५५:य:५८:५े:य:सर्कें,य:संवायवे:सर्वें,क्री:क्रिं,यरःश्वीय:वेय:सर्वें,याःस्वाय:वेयःस्या</u> सर्हेर्-यर्टेर-प्रसूत्रत्या देवर मेर हेर्या वित्र कु प्रवर पा न्देशयें नर्डरा नर्यस्य न्वा हैर ह्यें राम न्वा सदी हों त्या है स्नून हु यसयोश्वात्त्रचन्द्रम् सुर्वेत्रपद्धः सुर्वेत्रप्वा चर्गोन्द्रपाद्धन्यम् स्वर्षेत्रप्वा गुक् क्रिया । क्रियाना ने प्राप्त स्थाने स्थान स्यान स्थान स नर्गेन् येग्रम् यार्ट्याव्य सुरासर्वे प्यटासेस्य यान्ट्य प्राप्त स्थित सुन् विन् देवर देंबा केंबा दर यो वाबा क्षेत्र की क्षेत्राचा खारा और वालिया दर्वी बार्की वादे स्थर क्रियायाययायाञ्चीताञ्चराची स्त्रीर यो उत्र ही सक्रेर्य या प्रतायन विषय या प्रती प्रती स्त्री यष्ट्रियाञ्चर विवासमायकर द्वीया सुसार या वहें रासदे।

यवयात्रात्रपुः यत्र । ययाः यवदः या

५८:धेः श्चीयः पर्वः ५व्रे:वा

यर यन्यम्य मुर्ग स्वर्धा द्वीय या देवर क्षेत्राय विकास है विवेशक क्षाय हमाय यदे:श्रीट:५८। श्रीव:य:लेशय:ग्री५:थश्राग्रीक:व्यायम्बाय:यदे:श्रीट:देः। ।५व्री: व.चधु.क्रे.जब.२८.। धृष्.क्र्य.चर.। वेब.चि.२८.। चब.क्रबाब.क्री.क्रीच. मर्दे। ११ यश्राश्चित्राम्बी स्टानबित्राद्वास्यस्यामदीवात्रास्त्रीया म्री रट.त्र. रट. यथुष. क्री. सेव. तथा यश्या यश्या याहर प्रति स्राह्म हैवा वयायर वी दे वि स्थिताय दे या वा विषय स्थित वा विषय स्थित वा विषय स्थित वा विषय वा विषय वा विषय वा विषय वा विषय स्वःम। देवरःक्र्यायायान्नर्यायदेःगरः वर्षाययाययान्नुवाःग्रहःक्र्याः यरायीः वशुरावा द्येरवा सुर्खेवागुर्देन्याद्ररायादेशवदीवायुःवा वस्याद्रः रदानित्रक्षित्रक्षित्रम् अर्थेन महिषामा तनुदान निर्मेश्वर स्वर्षित्र स्वर्षामा स्वर्षेत्र स्वर्षामा स्वर्षेत्र यःभ्रातुः न्दा रदाविषा श्रीः श्रीयाया वे स्रीः नयो या यसुः न्दा सर्वस्थाया स्रोता या स्रात्रा स्रात्रा स्रात्रा देशःग्रादः वः श्चीतः छे दः यो शेरियः यो स्थितः वे स्थान्य देशे स्थान्य देशे स्थान्य स्थितः विद्यान्य स्थानितः व हेर्व स्ट्रिंग्य प्रति श्चीय प्राची स्ट्रिंग्य स्ट्रिंग गञ्जि दे.ज.र.चे.व.धूर.जूर.ज.त.चक्चर.च्चि.चल्च.कूर.क्ट्रंर.चर्चे.व.धूर.कूर.चर्चे.व.धूर.कूर.चर्चे.व.धूर.क्ट्रं म्री पर्नेन्कग्या ले.मूटा ट.क्या ध्रमानेन योर.सू.पठया ८८। देवर वसुन रुवा वासुस्र स्रो वर्रे र कवास ले स्ट वा है स्वा वासुस ही

वित्यासुप्तत्। देवे सप्तादी सुवा सीदा धीदा ही दा ही पा व दिया तर्नुते । तर्नेश्वानः वाञ्चीनः छेतः वर्षः नः क्षाः वीः वीः तथरः विन्यायः वाञ्चीनः यरः बेरार्ने १३ नेषान्त्रते क्षेत्रायाने। हिस्सरान्। वर्षेत्राणस्यास्यायरा हेंग्यायान्। १२ वे वे अञ्चले ह्येयायर वरेंद्। १३ अञ्चल्याया सूर विदेश म्यायायायनेवायम्बेवायदि हिंगायदे । । नेतम् क्षेत्राम् हैया विष्यामा वे हेवा क्षेत्रचःक्षेत्रःश्चीयःस्यत्रःवहूर्याःसःदरः। कृषात्रःक्षेत्रःवःश्चरःवाश्वरःवद्यःववः कवाया है। क्रुवायवदे व्ययक्त व्ययक्त व्ययक्त हैं हैं सुन्तु देते हैं दे वहें व क्रिवा क्रिया है। थेव। देख्देखेशक्ष्मितः स्वत्यायम् कम्याक्षिक्षेत्रः यद्यान्यः स्वत्यानम् व श्चेर् वर्षानश्चेतः प्रमः त्रश्चरः प्रदेशा द्वारा वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः रामा केरा हिन्दे ने प्रतिम हिन्द्र सामद द्वापाद सम्बद्ध सम्बद्ध साम होता है । यः देवः याद्याः स्रोदः यो द्वयः याद्याः यो देवदः श्चीयः याद्याः श्चीयः याद्ययः श्चीयः याद्ययः श्चैन नित्रें विष्यान स्थान स् श्रेवाधिर। क्रेंशकिर देव क्रीम्बर्यायुवायाययावियायाञ्चीतायावाराष्यराया चैय। विकायम्भिर्भः श्री द्रिया श्री द्राया है या श्री वा श्री डेबायदे मञ्जून निष्या ने सुर श्चेन यदे श्वेर श्चेन श्चेन श्चेन यव श्चेन या तन्ना ययात श्चिर प्रवेशिको है अप प्राप्त श्चित याप प्रवास है वायाप प्राप्त से वायाप प्रवास स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स तकर। विषानासुरमाही यर द्वायो विषानी हेना सायत सुर हेना स अवरः ध्रीतः यः नवाः यः वाहेशः ध्रुवः क्वीः दें विष्यः हैः विष्यः यः नेः विषयः अदेवः नुः होन् यः नेः हेन्

गहेत् ये हेंच्या पत्रिपत्र

য়ৢ৾৴ৼৄয়ৢয়ৢয়য়ঀয়য়৻য়ৢয়য়৻য়ৼ৾য়৴য়ৢ৴ৼৢয়য়য়য়ৠয়৻য়ৢ৻ৠয়য়ৼ৾য়৾য়৴য়৻ वयरायसूर्वासेत्। यादासूरायदायाहेर्वासेत्रियरायदीसार्स्टावयरासेत्र्तुःसुरा र्थित। देवर श्रुर मुश्रेमा प्रवेश श्रुर मुल्य होर मित्र मित्र प्रवेश श्रुर कुंवार्झ्नेर-८६४ हेयावयुमार्कराव। सुरयावत्रयात्वराविरादवापरासुरा यदे । श्रुट इश्विग यदे श्रें द्वा दे। द्य श्रेशें गुद श्रेंट ने श्लें। नयम्बर्धाः वर्षेत्रः द्वीति द्वी युवाक्षः द्वी क्वेनःवयः क्षीत्रः द्वी १5ुषः वै:विवेरः व:वेवा:येद्राव्यः द्रायः द्रावः वर्षः वरः वर्षावः वर्षावः वर्षावः वर्षेतः द्रवाः वाय्ययः ক্রীম'নশ্বদম'ন। শ্বন্যবাম'ন'ঝুম'নো'ঋী-'বাম্কুম'ক্রী'ঝমা ৺ই'ব্র'নড্ম' न्दः स्दः चलेव क्षेत्रभूवा या ५ स्था श्रीनः न्दः ले चत्र सः विच्यत्र स्वाचारः वा चहेवः वयातवायाहेयावयवायाया ५ होन् ययाळे तदी ही वहियायाळी तदीन या तदेवाया यक्षाःश्री । श्रुट् : ग्रेन् : या होत्र या से प्राप्त : या प्राप्त : य वित्र यदे सेवया हेत शेषिया महेत ये महेत ये महित से महित से सेवया रहे. कुन्यते कूँचर्या वरुषान्त्र। वर्षन्यते वी देश देश देश वर्षान्त्रे वी स्थित प्रवास प्रवास वर्षान्त्र विष् শম:গ্রুই()

४ ५८:ये हेव की हेन्य की

ख्यःयन्याञ्चः अःयङ्कः श्रूयःय वटः अर्केवा वी लयः यास्टा

स्वा-यायम्बान्यायदेष्ण्यानुः सद्याः क्रुत्रः स्वान्यायाय प्रम् देवः प्रदेवः स्वान्यः स्वान्य

यं योष्ट्रेयायास्त्रमः वदीनः यदः स्रेवयाने।

कवायासेन्यने क्केंद्रायय। यास्य विवादस्य यन्त्रा स्वायाद्यीं गुद्र श्चिम। विद्याः सामेन् प्राते पुरुषः दुषान् ना सुन् । विद्याः या सिन् सामिन् सामिन् सामिन् सामिन् सामिन् सामिन क्र्यार्श्वेर्। विश्वार्ययायायाय्यायार्या क्रियाय्यायाय्येया म्याः संभित्तः स्वेतः द्विरः यत्वया । स्थाः यत्रः यद्भः तसः यात्वतः द्वाः सु। । यद्वाः म्बर्भात्र व्यास्थ्रीय विश्वेषाय। विश्वेष्ठ प्रात्त स्थ्रिय विश्वेष्ठ प्रात्त स्थ्रिय विश्वेष्ठ विष्यान्य विष्याने विषयाने विषया शर्म्हर श्रुप्त विवास या विवास या विवास या विवास या विवास स्था विवास स्या विवास स्था विव श्चैतःयःश्चेर्त्वान्दरःवर्षेयःवःवद्देर्वान्दरःवीयःवश्चेयःयःदरः। वालवःयःवश्चेदःदः पश्ची'स'र्दर। ग्राबद'श्चीश्रापश्चीश्रास'तार्चग्रत'राश्चार्श्वास'र् उर् त्युका ग्रीका की तकवा यत्वा की सुदा को अवा ग्रीका की स्वेद्रायत्वा की ग्रावदा। रवा बीबा अर्थेया चत्रया चन्द्रा दे त्रकवा बाध्य राष्ट्री द्वा या विष्ट्र राष्ट्री वा चा विष्ट्र राष्ट्री वा चा विष्ट्र राष्ट्र यह्रवाराञ्चवायक्तिरायक्रेत्रयाक्रित्रयाक्ष्यवार्थात्रयाच्या स्टारेश्यवात्रव्यक्तियास्य षरः श्रेषा प्रति त्यषा रे व्यषा स्रीत्। रदाया प्रसा हेषा दे तदा स्रोति स्रीया प्रसा स्रीति । ही कैयाय श्रमायक्याया महिन प्रदेश महेन से मार्थ स्थान हो हो है। इट श्रॅट ज्ञुन यदे केंन्य जीय से नेय य से श्रेट में वियम स्ट्रिय से

श्रेवा क्षेत्र चक्कु प्रेश चक्क्ष्रेर चरि द्वारा श्री विद चर्या स्ट वीश सामार्थेर चरा वालत श्रीयाग्राम् स्री सर्वेद् स्रुयाया द्रमा विवा सर्वेद्या धीत्। देते श्री मस्य स्रुया ग्री स्रूवा या यार्टे के तहेन्या भूना वर्केन या केत्र येया नम्न या या मुत्र विषान्य सुर्याया सूर् देवर दें स्थायविर विर वहिवाय सुवा वीय विद्यार देवर दे वस्याय स्थाप होता हैया द क्षे केर देया पर विर क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हेया योत्रयाला क्रियायाकेम् रोजिदी सादयायर राज्य स्थान स्था र्द्याद्रम् अष्ठाद्रु रहे द्वीः सदि प्युवावा से म् व क्वा स्राह्म स्टिन द्वा स्राह्म यानुषः इतः स्रः पह्यायः पह्यायः स्रोत। । वः स्यायः यतः श्रीयः पत्रः स्यायः स्रोतः उटा । तहेवायाळेत् त्र <u>र</u>ाज्या वेत्रया । प्रताप्तु प्रयावना क्रेस्या वे न्वीं विश्वान्यस्यायास्य । कुवार्चावान्यस्य स्वीत्या याया श्री द्वाया स्थ्या विष्ठुर व द्वाया व विषय हे स्रुवाया विषय है स्रुवाया विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय भ्रुम देते के के अपने मार्ने मारा भ्रुम्य मालक से दा सर्मे क मालक से दा न्युन मालव सेन्। मावय मालव सेन्। क्रुय में केव में निके के के के के मानव न्दःसर्वोद्धःन्दःन्ध्दःवाक्षेत्रःधोत्रःलेत्रःवात्रुद्धःयःयःव्युद्दःरें। ।नेतदः स्दःवाल्वतःत्रुदिः र्देन'तु'श्चेया'य'त्रसम्बर्गास्य म्याद्रा म्यास्य स्वर्गास्य स्वरत्य स्वर्गास्य स्वरत्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वर्गास्य स्वरत्य स्वर्गास्य स्वरत्य स्वरत व या व विवाय के प्यार यो द प्रयाप विवाय विवाय प्रयाप विवाय प्रयाप विवाय प्रयाप विवाय प्रयाप विवाय प्रयाप विवाय र्टानेतुः प्रचयान्य राद्यायाः स्वापा क्रेक् राष्ट्रीय। नुवा विटानु स्वापायायाः स्वापा स्रुयायास्री नुवाकीयास्रुप्ताविकाकी स्रिवायर्देरावरा होना स्रेवा के वासे वनवारायराने न के रवरायरायर यो है। दशुवायो वर्षे दिवायारे या पर वर्षेण । डेस्रायासूराधितायसात्। वहिन्यायरावहन्यायावर्धेन्या

वियःयन्याञ्चः यःयञ्चः श्रेयःय वरः यक्त्याः वी वयः यागुरः।

स्त्रीत्रा क्षेत्रा विश्वान्य स्त्रा विश्वान्य स्त्रीत्र स्त्रीत्

चे चोर्युस्रायः सेर् स्कुर् पदिः स्र्रेवसः दी।

 क्रेत्। विषयायाम्बर्धायात्वे राज्यायात्वे राजयायात्वे राज्यायात्वे राज्यायायात्वे राज्यायात्वे राज्यायात्वे राज्यायात्वे राज्यायात्वे राज्यायात्वे राज्यायात्वे

्य निक्षः मानेन में ग्रानः हुः क्चेन् प्रते केन्या है।

श्चीरः वी प्रति वि वि वि स्वर्थितः विद्युरः प्रति प्रवि संस्थितः या स्वर्थाः उत् दि । । पे व्यूरः श्चीर्थः वःश्रम्यः प्रश्नाः विषाः श्रम्भः श्रम्। देवः श्रमः विष्यः स्वरः प्रविः के नदेः देषायः বস্থাব। বান্তবংশিশ্যবাদ্ধ স্থানি বান্ধী ব্ৰবাশাষ্ট্ৰ মান্ধ ম क्षीः अर्ढ्यतः मात्रुदः च 'ददः मार्डम अनुमात्रुम् या अर्केदः हेवः चलेदयः यः ददः मार्वेया हेव गर्रुयाय सुगा ब्रेन्स्य केर्न्य प्रमाण्या यही क्रुन् वय से जिल्लामा प्रमान प्रमान धेवाःतकुःसेवासःवात्रुद्धाः सूर्वासःतक्षाः तत्त्वः । सूर्वः केनःवक्षेत्रः यः वरुसः दुवाः हुः गशुरुषा दे:क्षेत्र:श्रद्याक्चियाचुद:श्रेय्याची:यर्क्यःव्यव:गञ्जा वेवा:वेव्यःयत्रःयदःयदः र्णेव न्द्रयम् यो न्यक्रिया व ने रहेया वे निष्ठ्य ने यहा निष्ठ्य प्रत्य प्रत्य स्था प्रत्य व स्था निष्ठ्य व स्था निष्य स्था निष्ठ्य व स्था निष्ठ्य स्था निष्ठ्य स्था निष्ठ स्था निष्ठ स्था निष्ठ्य स्था निष्ठ्य स्था निष्ठ्य स्था निष्य स्था निष्ठ स्य न्दः अर्केन् हेव यहिषायने यस्य विवायायते आहे व न्दः श्वायाहेव प्येव प्या नेतः नुवारात्यावासुर हेर प्वत्रायत्र स्वराधित के प्रशासीय ही प्रत्वाया वी हो। चलेत्र मनेवारायदे सुमान्वारायार्थर दुम्बिर्यात्र हुँ राष्ट्र दर्गेय। रथाय दर सक्त्रयात्रोत्। यदी त्यया प्रयाप्त प्राप्तः न्युत्य प्रम्या प्रम्या केत् पे स्थितः सी न्यूया स्थापति । त्रम्बर्वेषाः व्रवाः वर्षेषाः वर्षे स्पर्ने स्पर्वेषाः स्वर्षे वर्षे स्वर्षेष्

चतरःश्रीः अर्देनः धरः तशुरः चाः वृरः श्रेषाः धः वन्षाः धरः अर्दे व्यवाः वाशुरुषा श्चेन विया विया विया वि तत्यु अर्छी ने निविद्या मिने वा सारा व्यान हेत् त्र सान वो निविद्य ना निश्चान स याधी अक्ष्रमा सेन्यते वाका ग्राम्य विष्य मान्य विष्य मान्य विष्य है। यह विषय ह योशीर प्रयापद्मी तकर प्रीयो तप्र ताला तथर त्राये हे प्रयाप प्राया प्राया प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्रयाप प्र र्ये हुँ द्रियते हुँ द्रियायया अर्क्स्या से द्रिया में हिया या हु स्था । या द वीषाभ्रीः भेषान्वरावीषानुषायान्व । ने प्षेषाव वरायाः श्रुन् पादने प्राहेनः व। श्रिंदर्दः सार्युकार्योद्दर्भाश्चिदरावदः त्वश्चुद्दा विकाददः। वादः प्यदः वबर यें हुँ दिन्य वे हुँ दिन्य वे हुँ दिन्य वे हुँ दिन्य हुँ दिन्य हुँ दिन्य वे हुँ त्राच्यायरःश्चेत्रायदःश्वदशःश्चित्रायाद्वेत्। विदःकृतःश्चेत्राशेताःश्चेतःश्चेतः क्रेया । वेश ब्रेक्टिंग द्वा की नवेशिय स्वास्त्र मार्थ है । वेश स्त्र स्त्र मार्थ मार्थ है । वेश स्त्र स्त्र स ५५.त.स्रीर.वयर.वीव.स्याय.क.बीर.स्रीय.स्रीट.रं.वर्चेर.सूर्य। दे.प्रयायदायायदः रवादी दे विदेश में ने मार्थ स्था देश सुन्दर्भ सुन्य ह्या देश हैं से प्रमान देश हैं से प्रमान है से प्रमान हैं से प्रमान है से म्रदःर्द्रःश्चिःवावयःर्क्षेवःययाव। वास्रदःरवःवकदः१४वःश्चेवःवास्रुयःददःवद्वैःवकदः र्मेज्यम् नुस्या ५:५८:५यो क्रुवः श्वेयः च:५८:५व्ययः ग्रहः ५व्याः यद्वेयः यः वै: चश्ववः यानु पार्के में नियामा प्रवासकात। प्रमु पार्कि पार्के मुंदा स्त्रुपारी यानु पार्कि पार्कि स्त्रुपारी यानु पार्कि पार्कि स्त्रुपारी स तर्मुनायाययाग्राम् द्वो सम्बादनादम् द्रायदे सर्दि यम् श्रुरादर्गा प्रथमः नित्र प्येत्। दे सूरान्ययायार्ज्यादे वारा वर्षा विष्या की सूर्ज्या प्येत प्यायावारा

यश्चित्र मुद्रम् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् । यात्र स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान याडिया प्येत लिटा। दे त्याहेत लेखाया दर्गोत सकेया यासूमा क्री होता त्रमा क्री वार्य है। याबर याब्युम क्री हेन त्यावीं नवीं बा ध्वाप्तर्क्या नवीं सन प्येन वीं र नु नवन सासूर वा भ्रेरियानुष्यपदेष्यम् वे द्वियानद्याद्ययाभ्रेषार्भेम् स्वाप्तः भ्रेष्यप्राप्तः त.क्षेर.र्रा विर्टरविवा.रट.अक्ट्रता.श्रीर.व.श्रष्टेजायवीया.व.क्र्याया.क्र्याया.व्राचाया वययायञ्च प्रदा विष्याय प्रमुख्याया श्री स्वीयाय स्वेत् प्रदा स्वीयाय विषय प्रदार्थ स्वायाय स्वीय प्रदार्थ स्वीय अहेशः व्यवशः श्रेष्यायः वे : र्क्षेष्यः या श्रेष्यः यो श्रव्ययः यथः ऋतः ५ दुः दुः दः वर्ते । हिः स्नू ५ ५ । वर्षे ५ तम् । वे १ तम् । वे १ तम् । वे १ तम् व कैरा विमोग्रयाद्यात्रक्षात्राद्या विश्वास्याविक कुणाविः बुरा ।गुरु:हु:चबर:ये:ब्रिय:घर:वशुरा ।बेश:५८:। दे:चबुर:ब्रु:घ:अहेश: तपुःसयः त्र्यं भी क्रिंट योगट या श्लीट र्त्ता या श्लीयः प्रीया व्याप्त स्थापितः स्थापा स्थापितः स्थापा स्थापा म्या । प्राप्त म्या मित्र मित् यः धेरा । हे पते प्रीया प्रियः ह्यू राष्ट्रीया । हे या या स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्र ५८। । प्रेंब मुन बर्ग उर् वियाय र त्यूरा । बियाय सूर रें। । दे प्रविवः ८८.मू.अ८४.क्रैअ.वै८.मुअ४.क्री.भक्ष.चार्थ.च। चार्थ्य.त.सी.चार्चेयात्रासक्ट्र. हेत्र प्रलेट्याया नासुयायाहेत्र नासुयाया धुना यर्केन स्ट्रीय प्राचीन या प्रलेपा यर्ने कुन् चन से में निष्म प्राप्त विष्म निष्म न

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

त्रियाश्चर्यायक्ष्मायक्ष्माय्यक्ष्मायक्ष्मायक्ष्मायक्ष्माय्यक्ष्माय्यक्ष्माय्यक्ष्माय्यक्ष्मायक्ष्यक्ष्मायक्य

ब्रेंट हेन नर्बेयाय है। इन ह नब्बन या

वाश्वरात्राक्षयः वर्ष्ण्याव्यात्राक्ष्याः क्ष्याः वर्ष्ण्याः वर्षः वर्ष्ण्यः वर्षः वर्ष्ण्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर

हेर्यायतः वार्तिया । प्याः तेषा वार्तिवा वी दे चित्रः तेषा विष्या । या वर्तेषा या विषय विषय । केव र्येते होत्र मुं प्राप्त विषयमते स्वापित्र त्रीय मुं या सुर्य स्वाप्त मुं या विषयमते स्वाप्त स्वाप्त स्वाप चलेत्र'धेत्र'र्केत्। १९'च्'रुष्'ग्रीयात्रयाः क्रुत्र'त्रेर'र्केत्र'त्रकर्'रुत्र'चेर्'यायतरः ह्वा तहिंद वु से देवा या जीरा विष्य विषय विषय विषय है दिन देवा ति सुरा से देवा ति से प्राप्त के देवा ति से प्र क्र्याचालावर्द्रमः बियाया साम्या । सिन् स्ट्रीया क्रिमास्याया निम् स्त्रीया <u> বী:শ্রদ্ম ঐদ্যান্যরমম ডদ্ মৌ বাউবা বেদ্র দারীবা ঐর মদ্যবিধ্</u>রদ্যার ঐদ্য र्श्वा अ.ग्री.र आ.कुवा.जा.पवाजा.धेशका.पटर अ.रजा.कुव.त्रा.आ.कुट.वरा ट्रेंब.सर्थ. क्रमा क्री क्रों वा मार्ग प्रीम प्राप्त है साम मान्य स्था मान्य स्था त्र क्री मान्य है से स्था होता है से साम स ब्रिन् क्या से सुर्धे से स्वयं श्रीय श्रीय श्रीय श्रीय । ब्रिन् क्या त्यः क्केंबार्येन् कॅन्ने तद्वे विवस्य क्षेत्र के केन्य क्षेत्र केन्य क त्रयायोरः भ्रुष्या भ्रिया त्या वरः यदः भ्रेया या स्टूरः रुः प्यवः स्टूर् वया या या स्टूरः भ्रेया या ग्रीः बेषा'यदे'चर'बस्रयान्डन्'ग्रीयान्दर'ये'वरून्'५४'न्द्र। सबर'६४'चयसाचुयार्कन्' नर्झेम्यायायाम् वार्ष्येन् हेम्यान् खेत्रनाम्बन् विम् ने स्रीमायहेवा स्ते यादी त्यसा <u>বার্বাঝ বার্বাঝ ঐ ন শ্রী শ্লু থেঝ ঐর ধর্ম অন ক্রু শ্লু অঝ বের্বা বী বর্ম সাদ্রর </u> पश्चेरियम् द्रमात्रव्यम् तुःश्चे प्रदेश्वम् याम् द्रम् द्रम् विष्यः विषयः विष्यः विषयः व मुंजिर्द्रमास्रक्रमा क्रीयन्या में रिस्सिन्य स्वया के यस्य न तहिया हेन पति यस्य स्वराम्य स्वराम वर्क्नुन्यरत्वहैवा हेव यथायन्य यदे वयस्य वाह्य वयः व्यक्ति स्वयः क्रीया सर्वेदः वर्वेदः म्रेन् तुरुप्य न्यादि । नितः ध्रीरः रोस्रयः यात्रयः यत्यः यत्यः न्याः व्यायः राम्यायः यस्रेतः यरत्देर् सेम्रमः मुर्वेषायार्चमायार त्युराद्रगादायर प्रमासम्बर्गा 55:3

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

य्याक्तिक्ष्यः स्वात्त्र स्वात्त्र

यनेव यति सूर सर्ने उसायहेन या

स्वारित्व स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्व

त्यायर्ट् व. च्रीव. मंत्रप्त श्रीया विष्या श्रीया श्रीया श्रीव. श्रीय श

ञ्ज्ञाम्बुर्याप्ये विया विवा वी दे विराप्ये वया व्यवस्थ

देवर-द्यीरयाम्र-वाययाञ्चीः योद्र-याद्यय-द्युय-दर-व्यय-वाळ्याञ्चीदेः दर्वोदयाय-दर्ग सन्दर्भात्रदः म्रायायायायाया स्रोतः त्यायाः या स्रोतः या तिह्यः स्रोतः श्रीः तितः या यायायायायायायायायायायाया श्रुति दर्गे दर्भाय। दे यश्रामद्रश्य श्रुता मार्थि मार्थ स्त्रा स्त्री स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त तकर विर के प्यर खूर पा श्वामा हे गाँव विष खूरा सुरी र मेरिया या रे विर सु यव्यान्त्रास्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्यायाः वाद्यास्यास्यास्याः त.भर्य.क्री.रक्षी.श्ररकाक्षीश्राटर व्यचित्राची.र्याताचीक्षेत्राक्षीयाक्षीत्राचीता ह्यति । तदिवै मेरिया वै यादवा यादवा दवा या विव हु दवा या वाय्युया धीव। दे चलवा नतर कुरायायम विवाकेम के विवास मान्याया विवास मान्याय विवास डे·WK:सप्पेत्रप्राञ्चे केंबाड्य सेसबा की केंबाड़ित हैं प्रेंद्रप्य हैं दि । वितर स्वराया नर्भेरत्राक्षेत्रकार्भेद्रायाक्षेत्रात्रा कुरायानभ्रेत्रत्राभेद्रायाक्षेत्रा शेस्रयायशक्रिंदायां हेदावाब्रायां श्रेंदायां हेदायां ह ध्येत त्रीं । तर्दे ते हें द हे द प्रवेश हो देश ने शाधित त्या देश ने शादेश हो पानत यावींबानिदासूदावबार्सेदावावायायाच्चीवबायरास्ट्रिदाहेबातवुदाद्वीरासेदासुदावहवा नेषानुःरेजिडेवाया नेख्रयण्यासूरिक्तिन्येन्यानुराकन्त्रीयानवायायासूरः बुटा यहेशक्राक्रीयविकायाम्यायस्यायम्भायहेशस्य मुर्भात्वेशक्रियायायास्य क्रुयःवेयः वृत्रे । गानेवः येः गावः हुर्द्वा यदेः हुर्वयः यः नवेः ह्वे द्वाः व्यदः यः ययः यर्केन शुर हेट हेट नर्झे यर्क्य देखारी देश प्रेंच है वित्र के के कि ना कर स्थापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन के स ୭.ଓ/-.୯୭୧.୬୬୯୬.୬୭.୩.୯.୯ଓ/୧.୬୯୭.୭୬୯.୭୬୯.୭୬୯.୭୬୯.୭୬୯.୯୬୯.୯୬୯.୭୬୯.୯୬୯ ययभा भवयःलयः मुभयः ३४ वयमः ३५ मुभ्यः ४८ मान्यः ४४ मान्यः अर्थः अर्थः मुभः श्चित्रात्रोत्रात्रात्र स्त्रात्र स्त्र स् धेव वा वर्रे वे व्यवस्तु पर्देश या लुग्न संव में हिन यस मुद्दीन या धेव यस र्क्रेवायान्तरेयासूनयान्वेवा हुः हेवाया हे स्त्रीयान्तरेया दुर्यायया स्वाप्त स्त्रीया हिया सद्यः दें विक्रीयात्राचा त्राच्या की या की या वह समान प्रत्या के प्राचित्र के या प्रत्या की या विक्रा की या वि यते । तद्रैरःदवाःतद्रेवःवःश्वरःहेःहेरःश्रेयशःवञ्चेत्रःवञ्चरःश्चेःवञ्चेदःहेर्वाशःश्रेयशः येव दर वसूव व वर्डे वे वर्द से त्वेवया हुँ र वी दस्री वाया हुया वाया दें। चलेब चर्चा र्रेब केंब्र सूर्व चत्रुष चत्रुष

दयाः वर्दे व द्विव द्वयाः क्षेत्रां लयायाः ग्रीयार्थे वा क्षेत्र क्वया वर्षे वा ख्वेत्र स्वर्थे वा ख्वेत्र वर्षे व

भ्रम्याश्वार्श्वेद्दः क्षेत्रः न्द्रः स्वार्णः विद्याः म्यान्त्रः स्वार्णः स्वारं स्वरं स्वारं स्वरं स्वारं स्वर

মহ্বা'মধ্ব 'ৰেথ' বা ব্যম্ম।

 प्रथान्द्र भेत्र श्रीका केंका भुक्षका सुर्यो के ना या या यद राय में मित्र के के में स्थित । ने दे री सी ना ये द रदःवी'धी'वोदी'धीवा'र्केट्रार्थायाचाददी'देव'के। दर्ह्यानु'ब्रीदाददीर'धीवा'रेवाया न्वर वीश धेत्र बिरा धुँवाश वाडेवा त्रा चत्र चत्र चेवा देवाश चाडेवा वा चत्र चीश धेवा देवाश चाडेवा वा चत्र चीश धेवा च र्टेचें १९ सर्वा प्रतर हो द्रायर स्नुद प्येवा १९ सर्वा प्रमान १७ तथा द्रवें वा देव रहेर से द्रायर व देव ग्राम विन ग्री स्निन प्येया तरीते स्नेम नु वे तर्हा सीम सीम प्राप्त साम सिन विन ग्री वें र प्रति क्वित व्यक्ति त्र र प्रति प्रसूत प्रति केंग्र प्रम् र वी व्यक्ति कार्य प्रति विश्व विश्व विश्व विश्व स्नैन प्रमाना वार्ष के स्वास्त्र के स्वास्त् वर येयय ग्रीनि देशका निष्या न देशवाय तर्व वार्के विर हो र यद र या से निया है। तह्याचीर वि.चनेदे झूब वे तरे हेर वि.ब. या महिमाया मावत मार मीया ग्राट चु थे तु या यय। ने छेन कुन खूत ते चेन से प्येत त चेन मोर्न न सर की दे चे लेया देवा न र यक्षायायक्ष्मायरक्षेत्रीद्वाराक्षेत्रे क्षायादायाको देवे विद्यायाक्षेत्रे देवाषायीः श्ची देव लिया ग्राट प्येव। यायमा यदि वें र वे तह वा श्चीट वें र श्ची वार्केया श्चीर प्येव प्यम यन्याः योश्यः व्याक्तृतः यत्वनः यः यत्वेतः व्येः सुदः देः सुदेः तः केन्। याः योशः कुः वेन्यः न क्वितःकतेः वदः वद्याप्परायाः यायाः स्वरायाः स्वरा केवाः विद्याः सेदाः स्वर्ते राष्ट्रीद्याः स्वर्ते । नरानुद्रित्याहेद्द्रायरायदानुद्रा वेषार्यमार्येद्वान्वदानुद्राह्यात्रायस्यायात्रयाया यार्भेषा धेर्नान्नयार्देश्वरायान्दरक्षियायात्रोन्यरार्भेट्या केंत्रने धेरितान्दर यालव याहिकार्देव त्या यायदा क्रीं क्रीं वे प्येव प्रवासिक यादे वदा वे कारीया यी स्ट्रीट विका यालव देव अन् कुन बेब स्थाया हैन च रन प्रतिव प्रदेश हैव की सेव के कि परित्र के

स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः विद्यायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रायाक्ष्यः स्वित्रः स्वत्रः स्वित्रः स्वत्रः स्वतः स्वत्रः स्वतः स्व

क्षेत्र वार्ष्य सम्द्विया सम्बन्धि स्थान स्यान स्थान स

न्त्रीत्रुं क्यां यी श्राकुर्वे न्यू स्वार्थित् व्याया स्वर्थित् स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्थित् स्वार्ये स

बूद सर्वत संस्था स्वरं पर्वे स्वरं स ह्यायान्दरः स्टावी योग्यान् द्वीरायोन् न्दुः तद्वेयात्रयायास्त्रः योन् न्द्रयेवायानययानहेन्। च्यायायाम्भ्यायरायल्यायायायीवावया देख्यावायभ्रीत्रीयाचीयायसेत्वययाची क्रुयाया. ह्याया. येट. ह्याया. द्रया श्रीयायो. येया श्री. क्र्याया ह्याया. यया या वि. यदेव. यहिषा बुद तह्या यहिर वुषा यस देवा रायहिषा बुद तह्या या यहे र प्रा वच्यान् भूगाहेया बुदावह्या कुवानवे कुवाया या या स्वेनया या है विदानवे वया सर्वे वयावित्यतेत्रये देवे प्येवा दे येव स्ट्रास्य स्थान्यतः यावया स्थान्यतः स्यान्यतः स्थान्यतः स्यान्यतः स्थान्यतः स्यान्यतः स्थान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान्यतः स्यान नर्झेम्यायावरी सेंद्र हिन्द्रेम्यस्त्र यार्डमायदान्य यार्यस्य यार्यस्य यार्यस्य स्वर् वर्देरः ब्रेंद्रः व्रेद्रः वेषाया वेद्रिः दुः वेद्रः कुद्रः यदेः ब्रेंद्रवषा दुवा वी वदः क्रेंद्रः दुः क्रुषाय रायवदः याने हिन खुब विषय पञ्ची स्थाप्य स्थिता श्चीय रि. राया र्यस्य त्या प्रायत स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप ने ।देःवःवःषरःपवःकनःवदेःवःक्वःश्चेःवेदःवीःवार्डेविःसर्वोदःवेदिःन्यवाःसेदः क्षीः भूर्या अर्द्धन द्रयो वाष्ट्रया व्या द्वित्व व्या व्या विद्या विद्य सर्वेद रे दे दे दे प्रमासे द रहा मास स्रुद्ध प्रमास स्रुद र र मा ने मास गर्भेन मुन्न स्थाय सम्बद्धित वित्र क्रिया नित्र क्रिया क्रिया विद्या क्रिया विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या गर्अर्ये रे कुवा सुद में निवेदा । सुद में सुद दे सुद्य हो स्वार्य र मत्ता विरा विषाम्बर्धरम्यास्त्ररायास्त्ररायस्य स्टारेति विटास्त्रुवार्के मान्यमा सेन्सुरायसा क्षेत्रः पश्चेर्यः प्रद्राः हो। तद्दे त्रे श्चे विदेश पश्चिर्यः प्रद्रायः प्रद्रायः या प्रदेशः यद्देशः प्रदेशः षरषाक्चित्रात्रेन् न्यवाः सेन् स्नु सर्नेवायद्वा रावादे ख़ुत्र से वा है। साद्वी प्रषात्र हुन्या सू

नुदेश्याचे अन्दर्भ स्वाप्याके या अक्षाया विषय । नुद्रा विषय । वतुषाया धुषावासुरावनेदावतुदार्श्वयाषारावाचयुयाय। दराद्यरायोरा श्ची:न्याः व्यव्या व्रेतः येदिः त्रुः योवा न्यरः येदिः ब्रुयः ब्रुयः केवाके याराया सुर्यः बिटा देःचबिदान्त्रवेःबार्डुवार्हेराचसूराधेः अर्देदायार्थेवायाः अर्वतान्तरान्येः वुनः क्रिंश चक्कित या वेर्त प्रतः वेर वेर विदेश चर्ति चरित्र चर्ति विदेश स्त्री चर्ति विदेश स्त्री चर्ति विदेश स्त्री विदेश स्त्री चर्ति विदेश स्त्री विदेश स्त्री चर्ति विदेश स्त्री स् र्थे भुः तुः लेवा हुः पञ्चेत्र। देवे वाषयः धुविषः सुः चुरः सुवः स्रेसयः सुदः रसः ग्रेचेग्राः भू अर्देग् 'द्रग्रर'ग्रयायय 'ले' वर्ह्या प्रल्प 'प्रवे 'स्क्रेंय 'उत्र 'दर्के 'प्रवे 'द्रेव 'य वर्षेट्र स्वर्षः सर्देन्यः विष वर्षेत्रः नुः चुट्र कुवः स्रेस्र स्वरः समुः केतः सूर सर्ने में के ने ने तुस् लुव सदी सद्भारक र वर्षे पदी देव या प्रे के स्मूप्त र उव चिर-छेच-मुष्रयार्यप्रस्याम्भेयाः ग्रीयाः योष्यायाय्यायाः सक्रमाः श्रीवः श्रीस्याः क्रान्याः । गर्भेव प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय प्रमाय विष्य होत् । विषय ८८. दुर. तु. तु. कुर. क्रा. प्रकीय त्रा. तुर. कुर. तुर. वहर. हु. प्रबीय वाया तरी प्रया. શ્કેુંદ્રઆ દેવદ ભ્રુપ્તર્સે અનુ અર્જે અમામ અમામી દુષ્ટ્રી ખુબાનુ દેવા શ્કેરિયાન સે આ દેવ वयान्तर सेति प्यान्य स्वाप्त स योहरी इंट्यारेराक्कियार्ट्या ख्यायायार्ट्याच्यायायाचीहरी लटा इंट्यारेरा र्याः इवः द्वः स्रो लयः यद्भियाः स्रेयाः स्रेयाः यद्भियः सर्वेदः विद्याः स्रियाः यद्भियः स्रायः द्या त्रवादः विवा वीवा प्रदेश क्रिवा या वे द्यादः वे द्यादः व्यवा दे व्यव्य क्रियः वयः क्रिवा यः शुःश्लुरायाववृदःश्चेदःश्चेदार्भे देनेद्वेद्द्वेदाय्याः श्वेत्रायाः श्वेत्रायाः श्वेत्रायाः श्वेत्रायाः श्वेत्रायाः दर्वीयात्यात्वत्रः से दर्वीयाययात्राचिद्वासी सेसया ग्रीयाययस द्वीतात्राचीया र्डमापीत्र प्रयाययाञ्चा स्त्री यो स्रोत्रा स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत हेर् विक्राक्षेत्रा क्षुर प्रते कुथा धेर विक्रुर प्रवर प्रथा केवा र दिया क्षेत्रा की की प्र धुःरेंवामुः र्वेदान् देवे इसायायमा वसासेराधेराया नामवा केवा से । देवदावयरा र्देश्या येन प्रसः येन वीया वियापार्ड्या क्षीया प्रीन दिन्य स्थित । दे प्रवित नुः यवीत वि देन न्यम सेन मर्डे विक्र की माराय सूर है सर्क नहेंन्य रंग की साथेन या माराय वराष्ट्रेयायोरावकराद्यवायालेगाचुरात्। युषावरीवहेषायाद्यवायाद्वियारु त्वावर्षे त्रूरः तक्षे : तक्षे : विक्रां के : विक्रां चतर दे चल्चि हों । देते श्वीर सर्क्त श्वी स्थान सहयायरायक्षेत्रान्वीया न्वीत्रुळेन्जूरायावृतिप्तुनायातुष्ठवावीयाक्षेत्राचेन्। ૡૢૹૹ૽૾ૢ૽ૺૡૢૼૢ૾ૢ૽ૢૹૢઽૹૡ૽ઽ૽૽ૹૺ૱ૹ૽ૢ૿ૹૢૹૣઌ૽ૹઌૹ૽૾ૺઌઽઌૹૢૢૢ૱ઌ૽ૺૺ૾ૄૼૢૹ૾ૺઽૢ૽ૹૼૡૹૣ युषात्र्यासूर केंगानत्त्र श्रीय। येययात्यान्यस श्रीत्र सहिनानी ननर न्ये महिरानरासम्बन्धाः वर्षान्या स्थान्या स् सम्मास्याः स्वाप्ताः स्वाप्ताः स्वाप्ताः सम्भागाः सम्भागा यदेवया यदे:व:ठव:र्:श्रु:वर:ध्रैव:ध्रैय:श्रृंवया बेय:य:द्युटय:द्रवरय: यव वर्षा श्री अध्या अध्या या स्त्री वर्षा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा स्त्री स्वाप्त स्त्री स्वाप्त स् देवे नक्केन्द्रेम द्राप्त विष्या निर्देश निर्द

वीट दु पञ्चेस्य पति सर्वीत र्ये देन द्रमा सेन वार्डे त्विर वास्स्य त्यस सुन् रसा वार्रामा <u> २८.शरीकुर मूच.त.मभागिक पूर्व १२.४१ मा. १८.४१ मा. १८.४५० मा.</u> योन् ग्रामः तेन् नृत्वु व्याप्य त्या व्याप्य प्याप्य प्याप्य प्रमाण्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य व्याप्य विष् र्श्वेगःश्चेनःवस्रयः उदः वदः। शुःगस्रदः स्वायः ग्रेःवितः स्वयः दर्यः ग्रुनः वस्रयः उदः र्वेच। रटकी स्रेस्र की केंद्र हिन्दे चित्र मिने म्यापित स्वास्य निर्मा स्टानी स्थापित स्वास्य स्वास्य स्टानी स तदेशयरावश्यावश्य न्य्रीवाशावश्यावहेन्यान्दाव्यावदेःहेटादेवहेन्हेः र्क्याश्चित्रार्श्वेत् हेत्राम्बेत्रायानुत्रार्केत् स्त्रूप्तायानुत्वेत् स्त्रूप्ता न्दार्यामञ्जेत् देवा <u>२८.५चुज.पयु.२शुचेश.चो२२.पक्ष्य.जा.२४.पश्च</u>ेशका.येका.पश्चेर. द्या के कि का कि सक्य साम्यान्य स्टान् म्यान्य स्ट्री म्यान्य स्ट्री म्यान्य स्ट्री स्ट्री स्ट्री साम्यान्य स्ट्री स्ट्री स्ट्री साम्यान्य स्ट्री स्ट्री स्ट्री साम्यान्य स्ट्री स्ट्री साम्यान्य स्ट्री साम्यान्य स्ट्री साम्यान्य स्ट्री साम्यान्य साम्यान्य स्ट्री साम्यान्य स ৾ঀ[৽]৾৾য়৾ঀয়[৽]য়ঀৢয়৽ড়৾৾৾ঢ়য়ৼয়ৢ৾৾ৼৄয়য়৽য়৾৾য়৽য়য়য়ড়ৢয়৽য়ড়ৢঢ়৽ वर द्वेत्य भेता देख्र सुर विद्यापिकाय देखेत स्वाधित स् यमायोब दु महम क्षे मक्षे मक्षे अभियायदे के द दु धैव। क्षेम क्षेम क्षेम क्षेम स्थाय स्थित क्षेट हिद पर्सेश्वाराःजन्नः स्वीताः विवाः वारः प्यतः स्वीताः स्वीत्राः स्वीताः स्वीताः वार्षाः विवानाः वाराः विवानाः वारा ल.चेंबाग्रीकृष्यं बार्यक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राचित्राचित्राचित्राचात्राक्षेत्राचारात्राक्षेत्राचारा बिवानारायरायेत्। देवे भ्रयमायोदानाद्वर दुः देवादमारारा क्रुंताया स्वरा ह्यमाञ्जेर्यायाय्ययायायाके यायाब्रदायेदाययाञ्चीताकदारम् । शेसराग्रीशानिदादेव प्रदेशिया स्थानित स

श्चीर यो स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन यते केन नु हिन से न्यालेन सर्व से विसाय रासा वन वहिन खुन र्रस रेते ही त्यस नुतर वने वते केन नुक्काय भेता अक्त में तने क्या शक्त कन वे में नुर खुर यालेगाक्षेत्राओर्धेरारेष्वयात्रायरतुःवर्षयाप्यरायतेषाञ्चीःवयाक्षेत्राव्ययायायक्षेत्राते। कुः वेट्र श्रुंदि निर्मान्य विषा सुरुषा स्याप्त कुः वेद्र के के सामे विषय है। के सामे विषय है। वर्देः यः न्या स्वर्ता न्दः सुदः न्दः नक्ष न्या यदेः सुना नस्यः स्वर्ता न्दः से क्रिनः सः यार्श्रवात्रत्रस्या वरः ५ : वेद्याः स्वीतः स्वात्रः स्वात्रस्या स्वारः अम् अमतः भूरः च द्राद्रारः अमतः मृदः या के अन्तरः भीतः यथः च स्वायः यदेः सूवाः पर्वा विष्या के विष्या है कि विष्या स्थान है कि विष्या स्थान है कि विषय स्था स्थान है कि विषय स्था स्थान है कि विषय स्था स्थान है कि विषय स्थान स्था स्थान है कि विषय स्थान है कि विषय स्थान है कि विषय स्थान है क नुःविद्यस्य न्दरःविदेशस्य स्वर्तान्यस्य विष्यत्य निर्मात्रे स्वर्तान्यस्य स्वरंतिस्य स्वयंतिस्य स्वरंतिस्य स्वरंतिस्य स्वरंतिस्य स्वरंतिस्य स्वरं यम्बारा व्याप्त व्याप्त वित्र वित्र स्त्र वित्र स्त्र वित्र स्त्र स्त्र वित्र स्त्र स्त्र वित्र स्त्र स्त्र स् नेति:ध्वीरःवने:श्वीनःनर्देशकी:बरःशेयशःश्वीःश्वेरःवशःह्वेनःनर्वेशःवीरः। नेतरःसरः मैयामञ्जूषामञ्जूषात्रयान्त्राहिताचेयान्त्रयान्त्रयान्त्र्यान्त्र्राह्मिताच्या र्मम्या क्षीयम्बर्धाः मदिः स्त्रीयम्बर्धः क्षीत्रः स्त्रीयम्बर्धः स्त्रीयम्बर्धः स्त्रीयम्बर्धः स्त्रीयम्बर्धः धुँरःशेअशःग्रीशःदवोः वःश्चूवः यःश्चेत्वशःकेतः क्कुवः ये वृः तुः तुः तरः। युशः दवाः विहेशः ग्रीभः स्वानः पः स्वेन्यः सुरः नः व्यवः वार्षेवाः सुः तुः ययाः से त्वा्वा स्विनः नयस्यः परिः र्यदिः देवाया ग्रीत्यायदिः द्वार्टा विद्या केवा ये विवा देरा सुन विया सुन विद्या स्वा विद्या सिन्।

देशक्षक्षक्ष्यक्षर्भविष्यक्षित्राच्ये निष्यक्षेत्राच्ये निष्यक्षेत्राचित्रम् स्वर्थक्षेत्राचित्रम् यविष्यः पदः विद्रः विष्या विष्यः विष्या विष्यः विष्या विष्यः विष्या विष्यः विष्या विष्यः विष्या विष्यः विष्या वयःक्कें विद्येन्द्रयावाणये सन्दर्भान्द्रयान्दर्भे तृत्त्वविष्यहेन् अन्ये वियायायेन्या विदा वर सेस्र भी वरे स्त्रीत वरा से का से भ्रीयाययायायात्रित्रायात्रीयायीत्रायात्रीयायीत्। यदेःयाञ्चरद्वराञ्चेरायादेति वर्द्धः दश्यः वर्षे दिवे व्यायश्चे व्याद्धावायः दे दिये र द्या वर्षे वर्षः क्षायः स्वरं स् रुटाचा दे'र्रेट बर्था आर्बेर्था दाशे रुटाचा द्वारा वाहित कवा दाशे रुटाचा सूरा भ्रेंबा है दारे त्रिक्ष की तर्के वा से दान त्रुवा मनका से दाय लिया की साद दा। भ्रेंदि की मूट्रेष्ट्रियं.मु.सुंमूच्यायात्रयायात्रयात्रया र्याक्र्या र्याक्रियं.वित्रायात्रयः अपूर्वे र्रः मुर्यायायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्राय पर्यादेव क्षेट के लेट्। युवा की द्विमा सक्षेत्र त्या ज्ञानक नामार तहेव चुत्राव की रवःतायह्याः हेवः विरायस्यः सुःसरः पादः याववः रवः यसः सरः त्यः सीः यवितः सेरः सरः प्राचरः व देशकेंगा प्राण्येव। व ववतः कराव्या विष्या विषयः र् पार्वे देव सेर प्येव। यास्राम्बर यास्रुसाया विदे हे साप्येव प्रस्थाव दहसायया तह्याश्चिरादेव रेड्याया ब्राया ब्राय्या वारा स्टायी नार्ये दावया प्रेव प्रवास *য়्ची:*बिद:व्य:दर्गोब:ब्राळेचा:प्युत्य:वाह्रब:बिद:। इव:व्यव:ब्री:बिद:व्य:य:ब्राप्युत्य:वाह्रब। योष्टेश.तर.तन्तर.क्षेत्र.केष.रेषातपु.क्ष्यात्रीयोषात्रर.केषात्राचात्र.क्षेत्राचार्यः क्षेत्राचार.रे.वीर्यात्रर रदःगावनःगान्नेयायायनः वेर्मा केन्याये निष्यायाय्ये हर्षाः वर्षायाययाय्ये ।

ब्रेन्। यन्रेमकेंबामान्नेवानुन्यक्षेत्रायह्मयायम्यक्ष्यायम्। नर्मुस्रराया है नतित स्टारे वस्राया उत्तव्या सेत् सामुस्रा मुस्रित स्टार्स स्टार् यरपुः कुर्यास्तुर स्वयायदे विर्यास्तर स्रे स्वेत रे लिया यी र से सिर्ध से प्रिं पा प्रया यी या सी प्रा वन्दर्भः दर्षुनः दर्भः क्षेत्रः अक्षेत्रः भेत्रः स्वायः स्वायः स्वयः वद्याः देदः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः यमभभवन् मूर्यः दर्भा स्थायारः तवेयान्त्रुं योदाश्चिमाद्यादानादेदान्त्रुंदा वाबिदार्यानी तत्वायदि स्वित्रा श्चिमायदारी ब्रेंग'श्चेन'डेट'। ने'श्चेन'स्ट'सम्बा'कुर'कुर'सर्केन्।यर'कुर'र्,'न्याने'रेर'यलेन' स्रक्रानु स्पेन् तद्द प्रमुव स्क्री प्रमाणका निष्य का निष सक्षमायद्भरक्र सामदे संक्षिमा सर हेत्यम हेत्यम् हेन् सहया पेटा देशीवाददीव्यावद्यावुदाःष्यरः ययः तर्वो दुयाः ययः है तदः पदेःष्यदः क्रुद्याः दिवेरः र्टातर्सेताम्योषय् भटावटालुबालटार्वातराक्त्रीया स्मेरायाववादार्ययार्वेदास्य धुैः यः दर्गेषः यः देः देवाः प्पेर। रदः द्विष्यः क्वीः यदेः सूचाः क्वेः ष्यरः यथयः र्ह्वेः यह दः द्वा वर्चीयावर्चीताक्चीः यहे । वहवा ता वाचया ने वृष्या श्री । वि. ते मासूरा क्ष्या वस्त्र स्थ्रीया स्थिता चुर्यायतः नवो प्रति सः प्रायने या सर्वेतः वर्षा स्टः वालव छोरा नुष्या वास्त्र । प्रायम् न्वो सः वार्रवा तुः वसूषा विदः वसूँ अषा वषा गावा अधिव क्रुवा वविः वसूव या देवा ये किः ब्रुंग्रयानुष्यातुरातुरातुरातुरात्वा यसूर्यायस्यातुर्वे स्रुप्यातुर्वारात्वायाया विस्रयाम्बर्दः प्रस्रुपः या स्रुरा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्र क विस्रयाः स्रम्याः स्त्रीत् द्वीयाः स्वायाः स्वायः श्रेश्वरात्रम् विष्यात्रात्रम् स्थानः हित्तायात्रात्रीयः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः विष्यदः त्यात्र के दिः स्थाने स्थान

दयाः वर्ते व द्विवः क्ष्म्यश्चितां विष्याश्चीयार्थे व र्ष्मुवः क्ष्मुवः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्या

चक्र्यं तहस्रान्तर निवासीय क्षेत्र क्

हेन पति परि परे केन लिट मी क्रीन विदा

মর্ক্রমমার্ক্রীমার্বিয়ালার্ব্যমা

 वया विनासराववरानु र्श्वेनाया है नारा चुरा कुता सूताया ये पर हिन् श्री से स्वेरी सूरा श्रद्भान्त्राचार्याः स्त्रीयात्राः स्त्रेसालिया चुर्यात्रा विष्टे स्त्राः स्त्रीत्रायाः स्त्राः स्त्राः स्त्रा गहैकावें रिरावर्रेकात्रकाविवाहेतात्रकाविरादिरादार्केतायत्रकात्रेतात्रकावें ज्ञारुद्धः भेषः विचाः श्रीभारा क्रीः द्वेचाः श्रुरः भेः भाषाविषाः याः विरादा विष्यः प्रवास्यः विष्यः । त्रांबुयाःचर्य्यायाः स्वेता देवरावराः श्रीयाः वेत्रयाः व्यायाः दः श्रीयाः देवराः स्वेत्राः स्वेत्रयाः स्वेत्रया यहिंवाबाने सुरायन्वा वावयायायहरायायहिन्यानुनायवी नरासुना स्वर्गे सेरानु सुन्यायायायायायायायायायायायायायायायाया यन्देर्भ्यायम्यस्याव्यव्याप्त्रायायम्यस्यत्वित्रः विषात्र्युतार्थेद्राप्त्रा बरःचतःस्वरःभवःभेवः रे:भेदःस्याञ्चेत्रायाज्ञवाःवयःचयायाः । यःस्रवतःभदःस्वायः बेंगानी इ'याया नु नुगेंदि यार्केग नी यार्क्द विशायित यद प्रेंद ने र्ड्या दिया स्ट प्राद्य प्रेंद देशःश्लेषःश्री । श्लिम्बायाम्बदःबिमान्वयानयस्य न्दुनःवर्षेषान्दनःय ग्लेन् स्थान ५५ विना साम होन की ने का की ना विन्तु स्वा की हु ने की ना सर्वेन न्यूस क्षेत्र क्षेत्र प्रत्येन प्रत्य वित्य स्था क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र सक्य. २८. लूच. २व. इ. च. इ. इ. इ. ५८. त. २८. त. देव. त. क्षेंच य. श्. श्. च्या. व. व. श्. व. व. व. व. व. व. व. इस्रान्ना नित्र हरास्य क्रिया सेना सेना सेना स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स नुःतर्वो विनःश्चे त्ययाधीयान् नः। हःवे विवायायास्य स्वादि सम्भाने स्वादे सम् ञ्चवाया भी द्वीं या वाया है । भी दा सा से सा सा से से सी सा दा दे वा प्रमुखे द्वार पर दे । वयाद्याः भ्रेयाः भ्रेयाः व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्यापता व्या श्रॅट पु तर्वे निते कुतर विदादी । दे वृत्र या कुर ग्रुट भी पि केश में नित्र विदादी । बूँचर्याक्चित्र्याक्चित्र्यायायायात्रद्रदान्दरा। सुवाबिदार्भेद्र्याक्चेयायवेद्र्यात्रेयाक्चेया ब्रिंश क्रिन् इ नित्र भूग क्रिन ग्री क्रुन भूर सुर सुर सुर तर्वे निर भवे निर क्रिन क्रिन क्रिन श्री सा लुग्न स र्शे । नितः ध्वीराव केर्यायकन याया द्वायायायायाव्यव क्रुन्य यादी यादी यादी व्यायोज यःचन्नाःवन् :चर्यः रटः कुन् :चाल्नाः वायाचान् वयः चन् निः व दुटः चन् :चचटः दयः क्षुत्रः यः णेव। सूरःश्रूदःयःकेंब्रःयदेःग्र्व्युग्वायःदकदःयःणेवःवःदेःददःयाश्रुवःयदेःयुष्यःदगः मी केंग्रान्ता वर वेट कुं में र की केंग्रामार्थमा स्वर तु रे प्युवा की मेंग्रामा ग्वियान्द्रायम्बरायरायरायहेवार्स्यरायहेवार्म्यायहेवार्म्यायम्बरायदेशम्यायम् नेतर केंग मक्क न की निवर ने सामेर मालीयान मालीयान मालीयान के मालीयान मालीया मालीया मालीया मालीयान मालीया कुंतायोष्याञ्च्यात्रराचयायाच्या । श्रुचाताया वृत्त्रतातृ श्रुच्या । यायुर्या यः भूरः धेतः प्यदः ग्वित्र्रुं यः विश्वश्रः ग्रीः वदः त्रवा ग्रादः यो ग्वावः क्रेंतः दुः सः ग्रुदः यः विगः दर्गितः ततुःब्रीराम्। भ्रास्त्रेत्वाचायाध्याम् मार्चेमाचिमास्र्याम् मार्चाचा यर प्रश्चुत्र र्क्ष्य मृत्य विषय महत्र प्रश्चित स्वर्ग मेत्र की मुन्त स्वराधित त्रश्चात्र तुंबा कोन् या केंबा कीन् प्योत् या बानिय राजी विद्या व क्षें भूट वट दु शुरु रेपट लेबाय दे से स्वा क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्ट की से से दे वें क्रुं अ भी द्रो देव डेवा तदी द देवे वि मुद्द वा देवा यर द्रा केंद्र व द भी केंद्र बेयायर्गेम्यान्मेयायर्ग नेत्यान्य नेत्यान्य नेत्यान्य स्थितायम् स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्यापम् स्थितस्य स्यापस्य स्थितस्य स्यापस्य स्थितस्य स्यापस्य स्थितस्य स्थितस्य स्थितस्य स्यापस्य स्यापस्य स्यापस्य स्यापस्य स्यापस्य स्यापस्य वयरायायकेरायेन। ने देर वी है या न व्याप्य निवर हेर्न कन प्रति होर वन नुः शुरु के । यदः हेत्र नासूयात ने ने देट मी हे या ते तन्यायते नुया है। धै न्द्रत श्री यर प्यर श्री द्वा स्त्री वा बावा वव द्वीत वुरुष व त तुरु वा बोर्ब प्याया तुर्धित प्याया प्यापित वुर्याकेना से वित्र दिया सुर्द्या केंद्र ही ही देव वित्र के ना से स्थान के ना याया हे या बोर स्थ्रीका का या बीर या पार स्था के त्या नुका के हिंद सुर का या विवा यो । या बेर्ब साथ र ब्रेन के बुषा ने सूर वेषा व रेव बर उव क्री के कर ने ने व प्रेन के वा ब्रेन ने विषय वै। म्रेंक्ट्विट वी स्नुवया युविष्ठ प्राविष्ठ प्राविष्ठ र स्वेत र विष्ठ र स्वेत र विष्ठ र स्वेत र विष्ठ र स्वेत रेव बर त्यूव पर के की ह्वा या पीव या दर । विकास रावी द्वा वी की कारा क्वा सूची $x \in [x, y]$. તીળા વૃત્ય પ્રાથમથા શોદ : શ્રેને માં વે . વજીવું : શ્રેનો . વર્જીવા : શ્રેને શામાં સ્થાપ वा श्वीर स्वा पर्वे वर्ष स्वा महिषा वर्ष स्वा महिषा वर्ष स्वा स्वा स्वा स्वा स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स त्त्रया क्रिंदर वर्ष्यया पृति इसा मालमा क्रिंद सामा क्रिंग मा क्रिंस मा क्रिंग मा क्रिंस मा क्रिंग मा क्रिंस मा तपुरवर्ग्याचार्यपुरायुवार्यान्य देःवार्यायुवार्याच्याय्याय्याय्यायुवार्याः विद्यायाः यर क्रीन सूना तर नर के तर न में न्यते रे के निष्ठ न क्री का मर क्रे के निष्ठ न क्री यसः स्यायते कुं या या नहेत् या रातव्या नुष्धिः या पेरा स्वनसा ये न्यते द्वया निवा तर्ने यतर प्रमार्भे भी महिर ब्रम्म भेर भी भी मिन अर्थ वर्ष महिर ही यालया ता स्रान्ते रा क्षे तर दा क्षेत्रा स्राप्तव ते विद्या प्राप्तव ते विद्या स्राप्तव त नम्भार्भे विवासिंदि द्वीं भारते। द्वेराम् वीमान् हेमासिंदे वार्यमान् हे दूर तस्रदः स्त्रिन् स्रोन् त्यानस्रकात्रकात्रायदानु स्त्रीत्र स्त्राच्यात्र स्त्र स्त्राच्यात्र स्त्र स्त्राच्यात्र स्त्राच्यात्र स्त्र स्त्राच्यात्र स्त्र र्रे ।श्चिरमेर श्चेंश्वर्यति स्था केरियन स्थाय श्चिर से श्चेंम से दिन से स्थाप से स्थाप से स्थाप से स्थाप से स बद्दान्द्रम् क्रिन्द्रम् देशेद्दान्त्रभूते अर्बेद्रायुवानु यायाकेषायुद्दाने देशेषया हेषान्द्रा बूँदः बदःग्रीः व्याक्तुं याद्वतः प्युत्यादुः व्युव्याकेषा याव्याव। व्याव्याक्त्याक्षेत्रे व्याद्वतः वर्षिः आर्श्चेत्ररःवाथाने प्रवाणित् आद्युर्था के देवा श्रूष्याथा वेवायाने प्रेत्वायाने प्रवास प्रवास का व्याप्त का व्यापत का व्याप्त का व्याप्त का व्याप्त का व्याप्त का व्याप्त का व्यापत का व्याप्त का व्यापत योदादुःसुदानरार्देवायायवे द्वतःसुवारे त्वुदार्देश । दिवे ध्वीरायदावी देवा वया दर्केयः वेषाया विविषया ग्राटा की केवा की विविष्ठ विविष्य का की विविष्ठ विविष्य की विविष्ठ विवि यदः यः न्यः मुन्। क्रेप्णयः भ्री मुन्दः मुन्या विकासक्ष्यः स्वायायायः स्टः स्टः वया व्यापकृताकुंत्रव्यायाकुंत्रियतेशायाकुंत्रियतेश्वायाक्ष्यात्र्याः देते । શ્રેયત્ર મું.કુંદ રું.કુંદ્ર યાત્ર યાદ્યુયયા ક્ષેદ ફે.વા. વીંચ્યાત દુદ જ્વા મું.કોયયા દર વીંચા श्चे'चरत्रम् देवराश्चेर सेस्राच्याच्याचा वात्रमा श्चेरा स्टाम्बर श्चे देव केन'न'नुर'त्या्नायोन। वहिवाहेन'याविवर्यायते अर्केन थेन'यानवावीरायन रहेन श्चितः यो तुषाय्यायहैवा हेत् व्ययायद्यायते श्चित्रया विवायर्था त्या देवे वे विवयः रदःवीयानसूनयाने रदःक्षेत्रसम्बद्धान्दानुष्यायासूनयान्दासम्बद्धान्यस्यान्तान्त्रसम्बद्धान्यस्यान्त्रसम्बद्धान्यस्य इंशायवयःत्रायाः मुश्याः उत्तः यारा श्रुरः याः वययाः उतः क्रुंतिः यरः ग्रेतः द्वीतः । देःयः ॱॸ॔ॴक़ॖ॔ॴॿॻॱॺॖ॔ढ़ॎऀॱॿॻॺॱॸ॔ॸॱॴॺॱॸॻऻॱॻऻ॓ॱॻऻॺॸ॔ॱॿॴॴॱॶॸ॔ॱॳ॓ॴय़ॸॱॻॖॴढ़ॺॱॸ॔ॗॴॸ॓ॱ रैट ५८। यातुर ५ भू है ५ ५ केंग बेंग या देवाया विवाया हो सुरा वर्षा ववा हता. ब्रेन नविषा वालम नुःम्रमायाधेर न्दर यो येदि सी से प्रिया स्वर्म श्रीमायाली प्रियेर नदिः विराद्य उर्देयः पदः चेदः वनमा येदः पमा द्या है। या नक्काः वा हेदा पहिनः व वर्चेन्।बिर-दर-वर्चे केर-वी-वयारेन्यायाने रायावन सुःधेन प्यर-द्रगाव केन्याया *য়ৢ*८য়ॱतरः য়ेॱत्र्ज्ञुतः चे । । देतेः स्वेऽरः कें ज्ञाङेना 'ख्रुतः या स्वतः पतेः द्रसः पतेः कें या । र्ष्ट्र-श्री-रवशः क्रेंब् अदे द्वैब व्यव ग्रथवः वेदा क्षेत्रः ववुदः वुदः वर्षेदे वर्षेदः सबर.वै.सबद.तमार्थमाराज्य.तम्बर्.ब्र्या.वीट्रा रट.यावय.याप्य. वर् क्षुवायावर् थे थे दि स्क्षुर युगा मैशार् कर्टि पेया वका की वर्षा विद्रा इत सेंट इत सेन क्रे केन त्वीं सुट य ने दर्गे रामन माय केन द य है रामें साम द ने क्षाक्षात्वर्देरः वाद्यविष्

हेरासुधी रदावी प्यतायवा

न्द्रीः स्नायका स्यायायाया यान्द्र विवायक न्द्रीत विद्राया विद्राया स्वाया स्वायायाया विद्राया विद्राया विद्राय यम। गृष्टेम्यः संस्वायः नम्भायः श्चीतः श्चीतः नम्भायः प्रमायन्त्रमा देः यथः सुवा तर्र्ययः चन्दा । अर्केन् यः नदा । चनवायः या सुरा वीदः नुः सेन् वया नै:र्रेट:ह्रेथ:खु:पी:रट:वी:सर्क्स्यय:वर्ष:दक्द:द्वीय:है। स्रावय:ब्युव: ग्रामः कष्राया सेदः श्रीः लयः दया देवेः श्रीः तयष्रायः मस्ययः दरः से ह्यीः थेय। । नवो न वार न स्वान याप्त वार्षी रहाही। । स्वान से न सुन सके वार्षि । श्चिषायाम्भ्रीत्वया विश्वेत्त्वः क्रिक्तः क्षेत्रः सहत्वः व्याधीः स्टाहेत्। विषयः वास्युत्यायः क्षेत्र.यसयोषा.त.धेष.ब्रुका.टेटा रट.शट्या.क्रीका.क्री.का.जा.योषका.त.टेया.योषा. र्द्धेन्याययम्यायात्वेरासुराहेन्यायात्त्रीप्योः वियायह्रेयावयात्वे हिंदायाहेरायाहरा। वेवा केत् चुर सेअस तयवास य द्वा वीस स वहु त्यस वृत्र व स्थूस यदि व वा से द ही रवो.च.चङ्ग्रीच्याचा शुःश्चीःश्चेर्-छिवःश्चीःवारः चवाः ययाः यः त्वायाः नरः यः त्वायाः यथः वर्षातक्रांग्रीत्वोस्यव्यवायाय। यदेःचरःवानेवायःययात्त्रःयेदःग्रुदःस्त्रुवःसर्ह्याः पृः द्युवायायञ्चेदाय्याङ्केवायाञ्चेत्राञ्चेदायायवराञ्चेदाने यादेवायायरायद्या क्रुया हे केंया ग्री दिवस वे निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश केंद्र स्था केंद् द्यो'य'द्या'थ'हेर्रा'र्स्'प्रे'प्रे'रद'त्वेद्र'य'दी क्वुय'स्र्याकेद'र्से'दि'य'स्र्या सेसर्यः उत्रःगात्रःश्चीः दत्रः सेरः मी । सूना नसूयः दयः नसेरिः दनो नः नदः । । सूना नसूयः स्र-प्रावयान्त्रप्राव्याच्या विकानम् स्राव्यानम् स्राव्यानम्यानम् स्राव्यानम् स्रावयानम् स्रावयानम्यम् स्रावयानम् स

क्र्याग्रीतिव्यः ज्ञानक्रीयः ययः सुवायवे प्यवा

 र्वे श्वर हे मुर्वे वा प्रवेश अर्थ अर्थ स्था पर्वे वा पर्वे वा विकारी ब्रैंव ये सुर रु वर्षिय। विश्व वर्ष स्थाय सुर र र रेति विर सूर्य में के वा वे र्रेवाय गठेगात्रयाक्क्याञ्चयात्वेयाः स्वेदाः स्वेदाः विद्याः वीः स्वेदाः देत्। यस्यायः दरा। यक्रियात्र राज्यात्रात्रात्रीत् यादे द्वीत् यादे त्रीत् रायदे त्रायाय्येत राज्यात्र याद्वीत् याद्वीत् याद्वीत श्रुयः द्वो प्रति प्रवेश महेत य सेवास सुर द्र हेवास प्रते सहैद केत में सदय प्राय श्रेमश्रक्षः अर्भेषा प्रति सुन् प्रमः तर्वे अलिट तिर्वे र प्रति सुन् । प्रस्था सुन् । तिर् र्वाः स्वाः नस्यः इसः वास्त्रः श्रीः विकेटः स्वाः यसः श्रीवः यदेः श्रीः रः द्वा सः उतः यदिलाची योशी प्रमान स्थान स्था विर्यः विर्यः भूरायरः अह्र प्राचीविष्यः विषयः हेत् ग्रम्याये प्रत्यास्य स्वर्था मुर्या ग्रम्याये प्रत्येत् प्रत्येत् प्रत्येत् प्रत्येत् प्रत्येत् प्रत्येत् स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या योशीरश्रायपुःश्कृतासूर्याता हुःस्रोताती वयातुःसूर्यायापुर्यायापुर्या यानुया । पन्दर् से सुरानुदे रहेया भीवा विविधा होता । युराया नसूत्र ग्राम्य से साम वश्चरात्रमा । व्रीः श्चात्रम्यायात्रन्यमा हेन् न्त्रम्य स्थापार । विषया स्थापित स्थाप पदिः क्रें शः क्षें के च तर्दे व स्वे र क्रें श विव र क्रें र च र ख़्रे य च य र वो स क्रुं द य द द य हे । ঀ৾ঀ৾ঀ৾ঀৗয়ৼৼ৾য়য়ৢৼয়ৼঢ়৾৾৳য়য়য়ৠৢৼঢ়৻ঽ৾ঀয়৻ঀৼয়ৣ৻ঽয়য়য়য়৾ঀ৾ঀ৾ঀয়ৼয়ৼৣঢ় ८८। यमतः ब्रिया यीया यक्कु ५ वया २८ यी के या तर्दे व स्वी २ ५ वया यदि केंबा त्या श्वी या ग्रीभः ह्यायनेवमायावात्रायदायदे पुषाञ्जवमायदे । प्रायदे ह्योभाग्यात्रे प्रायदे ह्योभाग्यात्रे । यर्सेष. ५ हूष. श्वीका सैंट. सिका क्र्या. ये. यथीया या सीट. यो या वा वा क्राप्त क्राप्त क्राप्त हुका खेट. सीव.

दयाः वर्ते व द्विव द्विव द्विव स्वायः क्वीं या विषया श्रीया क्षेत्र क्वियः वर्षे व स्वायः विषयः स्वीताः स्वायः

यग्रम् देव यहिरकी सहित्यर यहिष्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वय्य स्वर्य स्वय स्वर्य स्वय स्वय्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स

য়ৢ৻ৼয়৾৽য়য়৽য়৾৽ড়ৼড়৽য়ৼ৽য়য়৾য়৽য়৽ড়ৼয়ৼয়ৼয়য়৽য়য়

क्यायासेन्द्रेत्राचेत्रेत्रेत्वयात्रया यद्यास्यान्यद्रात्राच्यात्रेत्राचेत्राचेत्र यवेषा । शुःरवः वदवः वरः चवेदः गुवः देः द्वाः य। । शुःदवः शेः वदवः चत्वाषः त्रम्यक्रियायायदेवका विकादरा क्वियासक्रिक्षकेत्रम्बितासूका क्वियाया शुःद्रवायद्रवायवेदाय। । वया से ह्यु राहे वा से या या दे। । वर्षे विद्रायदेश तर्वोद्रहरा विश्वयायाचारमा सेन्यत्वामा या विष्या विषया स्वाप्य स्व ५८। ग्रालक प्यतः भूक प्रमानम् विकासम् यम्यायायवित्। रदायुषायाद्यायोदानुः स्वयाने स्वयायो स्वार्थायाय स्वरी क्रियानाञ्चर्यानरुयान्द्रा विनायमानुषातन्त्रीमात्रावन्त्राचीमार्ययाञ्चेताञ्चीता न्यरः गर्बरः स्रमः देनः क्रीः वसूनः यः वहेन् स्रायनः वहेनाः हेनः क्रीः स्रेनाः गरिनाः सः स्रा र्वो प्रदे प्रक्रिया विष्ठ राष्ट्र राष्ट्र क्षेत्र राष्ट्र विष्ठ राष्ट्र विष्य राष्ट्र विष्ठ राष्ट्र विष्ठ राष्ट्र विष्ठ राष्ट्र विष्ठ राष्ट्र श्रेयशक्ष्यः क्षुन् न्यम् यश्याश्चायाः सुन् श्राक्षः त्युन् नयः न्यन् न्यः सुन् के स्पूनः न्यम् व चलुम्बरालु तत्त्वया लिट ह्येन व्यया तदेवया दे के कुवा च ख्राया दर वर्षायया दे ख़ॣॸॱॿॎ॔॓॓ॻॱॼॖऀॺॱॻढ़॓ॺॱय़ॸॱऄ॔ॺॱय़ॱॴॾॕॸॱढ़ढ़ॸॱॻऄ॔ॸ॒ॱढ़ॺॴॹॖॸॱढ़ॺॴॺॱॾढ़ॱ বশ্বশ্বশ্বস্থান্ত্র্

বর্ষ্ট্র বর অব অব

देवरः प्रथम् श्रम्भुदः श्रेथः मृश्यः यथः द्वो सम्मेरः मेरः द्वारः मुरः सुधः सुदः द्वारः सुदः सुधः सुदः सुधः स वा वर्रे दे कुं क्रेन्य ययम्य यर्द र ज्ञेन्य यह र क्रुव सक्रेन र से सम्बन्ध र पर वर्वेयावरामात्रम्। कुंविद्यार्श्वेतायमात्रम्यामक्ष्रम् स्वेत्राचरायम् वर्वेयान नर्देन्द्र-द्रम्भूत त्यम् ते मिले सह्य प्येत्। दे स्रोत्र-द्र-द्रम् हेन् स्त्रो प्रदे स्वा सम्प्रत्यायद्वेयायास्त्रिया दे प्रतिमानुद्वास्त्रायास्त्रियायास्त्रायास्त्रियायाः ल्रेन् स्रोन् क्रीक देश ने वो सः स्रोक्ष निवास विदेश में हैं। स्रोन् में स्रोक्ष नर्भे नदे कुल ने तदे वेंबादया । विद कुन सकेंबा वी हेबासु रन सेंबा विदा । व्यव डिवार्ड्य प्यदः द्वार्य सुद्धेन यादी । वर्षेन् वय्यान्य यदे यर्केन हि यर्न वर्ष्यम् । विभान्ता वर्ष्यायक्ष्य नुषाम् सुरा वर्षयायायाया परि निष्या वर्षयाया इसमा । तर्शे न से समा उदा गुदा श्री देत दु न स्था । विकास से न सा स বাৰ্ব অন্ ক্ৰুপ্ৰ প্ৰথা ক্ৰিন প্ৰেপ্ৰ বিশ্ব নিৰ্দাণ ক্ৰিপ্ৰ নিৰ্দাণ কৰিব নিৰ্দাণ কৰিব নিৰ্দাণ কৰিব নিৰ্দাণ কৰিব गुर्व। |देशदिश्रोत्रायद्यः व्रयायः उदःश्ची |सूर्वाः वस्यः यः युराः वस्यः वस्यः र्वेष । डेरायासुरस्य प्रस्ते । देवर यार व्यवर्धे व सेस्रस्य की देव दर यार विया पर्शे पार्व रह हिन् श्रीयाप्ययायान्य हर यार्थया पवित प्रति ह यो सार्व या सर्वेत हे प्यव व्यव विश्व श्रीय वसूय प्रवे द्वो व श्रीय दिया है । विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व ष्ठीरः पर्देश्व स्तु स्योदः सुदः स्तुवः स्रेवः स्तुः दुर्देश । दिवदः त्रवाः परुषः त्रवाः याये दः यदिः न्वो सः है क्षेत्र वस्रय उत् विवा है वर्षेत्रय दया वद्य क्षेत्रय या द्या स्थाय व्या स्थाय वद्य वस्यय उत् विरियान मार्थित की सूर्या मसूर्य विश्व किया मिर्देश मुंद्र मुद्र मार्थ ।

८मायर्ने ब द्वीत स्वाय स्वीमालयाया यो मार्थाय स्वेत स्वाय विष्टा यार्केमा सुरायस्ति।

ह्या श्रेश्वर वर्ष स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्व

য়ৢ৽ঀয়ৢয়৻য়য়৾ঀয়য়য়য়য়য়য়ৢঢ়৻ড়ৢয়য়য়য়ঀঢ়ৢয়য়য়য়য়ৠৢঢ়৻য়

रोम्यानक्षेत्रप्त कुत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रमुद्राय

द्यीय। शि.जीश्राच्यात्मीयात्मीयात्मीयात्मीयात्मीयात्मीयात्मीयाः श्रित्राच्यात्मीयाः श्रित्राच्यात्मीयाः श्रित्याच्यात्मीयात्मियात्मीयात्मियात्भियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्भियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्मियात्भियात्मियात्मियात्मियात्भियात्मियात्भ

नियं या स्वेत दिया स्टर्स स्वा विद्यालय स्वेत स्व त्ते तः स्रेते क्रेंत् तह्वा स्रूपः वतः र्रो स्यूप्त तरे क्रेंत्यः क्री त्युं वाषा तत्वे तः वुपः क्रेंतः क्रेय स्रोतः क्षीः श्रृं आया है तारे राये ताये ताये ताये प्राप्त है साथ है स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स इस्रमः श्रीम्यः स्रीन्यः वाश्रुमः वहितः यावितः द्वारः नवोः वस्रोतः श्रीः स्र्रेमः श्रीः स्रीयः वादः स्टाः नवेः नुः सर्वेन् य न्द न्य का द्वर क्षेत्र हे द त्य का यो द न्य क्षुत्र क न का का कु द न दे न न व केवें। ।श्चिरः वुरः कुराः येययः र्यादेः श्चिरः याः याः वह्नाः यदेः वसूतः वर्षेयाः वरी। वुर-कुन-ग्री-बोब्रबर-देन-घे-के-ब्र-ब्रुक्य-घ-ब्रुन-प्रदे-प्रदे-वोद्य-वासुम। क्रुक्य-घ-ब्री-क्रम्यायर हो न प्रति योतु वाश्वमा से क्रम्यायर वी न त्रावी न तुर्वियायर हो न पदः येतुः वासुस्रायक्षान् वाः नृतः । व्यकान् वात्रवान् वितः नृतः विद्यान् विवाः चरुषाचरुः धेषाचसूत्र। म्बद्धाः पद्याः प्रवाः चर्त्रः श्चीः सूरः स्नुव्यः सुः दर्शे विदेशः यम् विष्या प्रमानस्य प्रमुद्दान् । दे प्रमुद्धान्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स् वयात्रकृत्रमात्वरीयात्वपुः स्वयात्रमा सिर्यात्वपुरात्वपुः स्वरायया स्वीत्रमात्रम् यदः त्ययः वयः क्रियः यः यन्त्रया यदः तयः यक्षः यवः वर्षः क्रियः यन्त्रया यदः यदः तयः यक्षः वर्षः क्रियः यन्त्रय यर्चेश्राकुटा इंश्राश्रीक्षात्रराम्भात्रात्रयात्रात्रा क्रूश्रायवूरासूरायरासूत्रात्रात्र चदिः प्यतः त्यवाः चरुषाः वीदः कुवः श्रीः बोस्याः प्येत्यः स्युः वात्युः चिदः चदेः वोदः प्येतः स्थ्रीतः व पर्ग्रितः भूतर्यः सुप्तसूत्र वारान्ध्रमः वारान्ध्यमः वारान्ध्रमः वारान्ध्यमः वारान्ध्रमः वारान्ध्यमः वारान्ध्रमः वारान्ध्यमः व में दियान्यू त्युम्यार्थ्या दे से से सिंदि प्रदाम तुदामी प्रमेश मान्दा प्रदास्त्र पायस यद्यतः विद्याः तृत्यः देशः स्रो । । विष्यदः विदः दः विदः यः विद्यः सुवसः स्रुप्यः स्रोदः विदेः

यर वया वे वर प्रायर या क्या परि या व्या दे से से हो । क्या स्वर सुवया या वया न्ग्रेव सक्ता मश्रम् क्षेत्र क्षेत्र स्वाद्य स्वाद देशन प्रश्नेत यात्र शा की कें साथा प्यतः कर त्र शा यात्र र स्या शा की कें साथा स्यतः स्या शा उर् स्नुवर्ग सुतर्गे वर्ते र्वेस्य प्याप्य प्राप्य होस्य हेस्य प्रेस्य स्थाप गुत्र य पेर् सेर् स्री । अनुवर्ष सु स सेर व य सेर । । हेरा श्री र से्स य दे गुत्र श्चीः क्रुद्दान्न व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति स्थान स्था श्चित्रयात्रवृत्तः स्र्यायाये प्रति वादा वाद्यायाः स्राया स्राया स्राया स्राया स्राया स्राया स्राया स्राया स्र यर लर मृत्या संभेर तर प्रसेषी रेप ही राज शामिता तथा विराध र प्रसेषी राज सामिता स्थाप म्या के। नेतर तर्ने सूरा नर्ने रूप सुमार्थिय माम्युय श्रीय यहा सर सुमा श्चित्रयासुरवर्त्वात्वात्र्यस्थित्राञ्चीयायवित्रात्वत्या वित्रात्वात्वर्त्ता वित्रात्वात्वर्त्ता चुर्यान्द्रेयाविः क्रेंबाव्ह्यावी कें याया कुंया चित्र त्येव नवीं याया प्राप्ते व वस्थाय तर्दर। दर्गीव सर्वेवा वास्रुया वास्त्रीट दया स्नुवया सुराय है। । यो स्राया क्य. रूप. रे. वीट. क्य. मुमाया अक्र्या. यश्चीर। विष्य. तप्त. क्र्या. मेट. यश्चिम. या. <u>ञ्च</u>प्रयादर्शे त्रें कें सम्प्रयान विद्वासी स्थित स्थान स्यान स्थान स चदिः न्वें बार्के बार्नियान्य महिषान्य वार्षे मुन्य वर्षे प्यान विष्य वर्षे वर योषेयाबायदे:क्र्यासुरावकुन्दिविविवेक्ट्रिंग्नेराधावत्वायाधेन्यान्। नेवादेः वरःतात्रार्थाः क्रितायते ज्ञायानु रहुन्। या ने हिन् र्स्ट्रेयाया समस्य उन् क्रीहेनः म्बि:धेर्या दे:शेर्य:श्रुप्या:श्रुप्रेची:प्रया:श्रूर:ग्रुर्या:प्राःचर:प्ररात्युर:हे। श्चित्रयात्र्यो विराधरात्रम् क्षेत्राश्चीयायात्र्यायो सेत्रा सेत्र सेत्रा सेत्र सेत्रा सेत्र सेत्रा सेत्रा सेत्रा सेत्र सेत्रा सेत्रा सेत्रा सेत्रा सेत्रा स

पर्गुषु:क्ष्रुय।.क्ष्याःग्रीयायाः ह्रायाः हार्ययाः हार्ययाः विष्याः यात्रवाः यात्रवाः विषयः यात्रवाः विषयः या पर्शन्त्रम् क्रिक् क्रिं क्रिं यात्रमः भ्राप्तमः क्रिं देन स्ति स्ति । स्ति । स्ति । स्ति स्ति । वर्चेराच कुषा धुःसर वहेवा हेव त्यराव द्यापवे स्वापे से स्वाप्त स्वापे स्वापे स्वापे स्वापे स्वापे स्वापे स्वाप षरःश्चित्रयः तर्वे धियः वितः परः वेत्। क्रेतः दतः परः कतः ह्रेताः यः या वितः व्राप्तः या वितः व्राप्तः या वितः म्बर् तथा श्री प्रत्ये तर्ने प्रत्ये प न्गेंब्र अर्केषा रेब्र ये के लेब्र ग्रम् रूप या सूर्य रेब्र ये केवे अर्केषा वे प्येन प्रलेब्र ही । वेंरायुः धेवाया देखूराधेनाय विवाद्यी वेंरायुराय विवायाय प्रवाय निवास विवास त्वुद्दानासूर। द्रोति सकेवा या वार्षया ना निना व के नियस स्थापर त्वुन प्रेटा। देरः या बदः क्रुों पा कें रपया गाुव हु 'दव सेंद 'या यी ख़ुद 'विदासूर दु या देव 'वर्कद क्रुप श्रेवाशायवाध्येव द्रमवा सेन् त्युवा सुनशा सुनश्ची चित्र कुरी वार्के विवि द्रमा स्थाप ने वे तयम् रायते वे रायन् व की न्यार्य स्त्री न्यो राय विषय विषय की स्त्री राय विषय की न्यो राय विषय की न्यो राय विषय की न्यों राय की न्या की न्यों राय की न्या की न्यों राय की न्या की न्यों राय न्य कुलाचे कुला श्रेन देव ये के सूनन्व श्रीका पश्चित्र वक्षा स्वीत पत्व लाज्य नवत सुरू नवि से देवे स्वापद्मेव के प्रविद्यायी के प्रविद्या के प्रविद्या है कि प्रविद्या के प्रविद्य के प्रविद्या के प्रविद्या के प्रविद्य के प्र यदै विर्मेर विर्मेर के मिल्ला विष्य प्रक्रिया विष्य प्रक्रिया विष्य प्रमा न्यवासर्वेद्गात्रयवासायायुष्ट्वायाध्या न्नास्त्रवा विसा यः श्रेषिशादरः। देवाद्याया वैतिद्वायशहेषिशायर वृते । विश्वायते देवा वैतिद यसःविसःरवःइटसःहेः देवःदसःहेवासःयरः वश्चरःवः धेव। देःविवनः गुवः सिवेवः क्रॅंश हेते अव रण अहेरि यथ। वर्रे र यते र र यथ क्रुं वह्य स्तर रें र ब्रेना । डेरायायार्थेनायाग्रीयान्यायेन्यन्त्रेन्याभीन्यान्यस्याने ।

व्रया क्रेन ख्रुन र्योट यो श्रुप्य य वर्षेति । ख्रुन य रापति प्रसून या

तर्ची पुरा क्यी निवेशन स्वरा तर्दर हेवा केवा स्वराह्म स्वर्ग स्वराह्म निवेशन स्वराह्म निवेशन स्वराह्म स्वराह्म यम्रमायतः वित्रप्यस्त्र वित्राची तुमाची वित्रप्यस्त्र वित्रमा स्याची ख्र-प्र-प्र-प्रमुखा मृतुः ख्रि-प्र-प्र-प्रक्षः प्रते । प्र-प्री यमस्यायते विराधरारराज्ञालका सेसम्याउन वसस्य उर् की देवा दुः दुर्गोदासके जा गाुवा तर्भाग्रीदेनियरमामुमाग्रीनितयर वितायर द्वास्त्रमाया महिमाया दुमाग्री ष्ट्रिन्यरक्षेत्राने देत्रवयाव बुद्धे रदक्षेत्रहे श्रेन्द्व स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स विर श्रेश्रयः परः क्रिनः या वहित्रः या विष्यः या व्यवः क्रिनः या विष्यः क्रिनः या विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः त.चाधुर्य.र्जिय.क्री.यरत्याक्रीय.सीट.धुर्यात्राभवर.ह्रीय.त.२८.। जन्न.८चा.त.मह्य. श्चिरः यः मृतः तथवायः क्रेवः श्चीः भ्ववायः स्तृतः वलवायः यदः स्त्र्यः ततः । वितः ययः म्वेवाः यर्क्नाः हें हें श्लेट में खुद शेद नायट न सून्य राष्ट्री तया यहें र द श्लेनय प्याप्त यह रा क्यानग्रियः अर्केना वे सुरामशुर्या यनुष्या यदि यन्या छेन्। केष्यानग्रियः अर्केना वे त्युनः ५८ हें गुरुषा ५ में १८५ व ५ में १८५ व छें १ देश व छें १ देश व छें १ देश व छे १ देश व छे १ देश व छे १ देश व छे १ यक्ष्यः भ्रेन् क्ष्रं न्वरः होवा क्षेत्र तयवायाया धुरः भ्रेष्ट्रेवा या ने स्थेतः ने ग्रेत्र यार्थेवा ग्राप्तः वर्षाक्षेरिनिने। अन्यावर्षराञ्चायान्यायम् अर्वेद्वार्थराने मुक्रमा तर्रुषा से से होने प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रति प्रति प्रति प्रति प वर्ष्यात्रम् स्थात्रम् बुद्दायमान् बुद्दायमान्त्रीत् सूनायमान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रम् विद्वायमान्त्रेयान्त्रम् यावयायालव व सेन् सेया ही स्वाप्तर वया यस्ते । नवेरिया सुपार्य सेवा है व है वर्चे नदे हैं वया विद्युव से सम्बद्ध हैं स्थान क्षेत्र पानी से सम्बद्ध निष्य स्थान है । से सम्बद्ध निष्य स्थान है । कृत्यं.जर्मा वैट.क्य.क्षेट.तूर.भकृष.क्रीयर्। ।शरश.मैश.४भग.ज.क्षेप्य.शं. यकी क्रियन्दरन्तुदन्तुवन्येययन्त्री व्रिवियन्त्रवर्त्ते। भक्षे विश्वासदःक्ष्याःचीशःश्चित्रशः सुदिर्चात्रान्दरः। चुरःस्वाःभक्ष्याःमुःश्रेशशः नश्चेन्यन्द्रभावी गुवासहिव केषाहेते सेसमा हेन्या ने सूरा श्चित्रयार्थर हेत् श्ची वार वायायीय। विस्ययायदे याया विस्र श्चिर हेदे से हेवा नग्रम। |न्वातःचतेःश्रीनःचश्रेथःनहरःश्लेमश्रःसुंगरुंदःग्रीश। ।तश्रेःथःयतः धुैरःरदःवीःशेस्रशःश्चेदःदेः। विशःक्ष्दःस्रोदःह्रसःवविश्वःशेस्रशःश्चेदःद्वीशःयरः यसून बिरा देवर वुस्रयाय या बिदे द्येर यो दि। देख स्नेर हेदे से हिंग भ्रीयायात्र। न्वादावदाश्चीवावश्रेवान्दा। वहदाश्लेष्यश्चीकुवार्डदाशीयादश्ची यःगुत्रःथःयतः यदेः युद्रः क्रुयः ग्रीःश्रेश्रश्रः दुर्वाश्रः यस्य शुद्रशः विदः। देः यत्वेतः सर्-रवाः श्रेटः विनः श्रेः श्वन्यायः यात्रात् नवन द्वायः स्ट्रान्तः वास्त्रात्यः स्ट्रान्यः स्ट्रीयः विस्या ५८-श्लेट-इ-५वाद-च-५८-श्लेख्य-श्रु-चच्च-ख्रेद्र। अव-६वा-वी-युवाय-य-५८-क्षेत्रयाक्त्रं योत्राध्ये वर्षेत्राचर्षेत्रयाच्येत्र्यात्रे वर्षेत्रयाक्षेत्रयाक्षेत्रयाक्षेत्रयाक्षेत्रयाक्ष इस्रयाग्रीयायेस्यानञ्जीन् विवास्यान्यंन् सेन्यते प्रविश्वत्यन्न ने पञ्जीयायायी । देवर-दश्चर-वर्श्वेयावे त्रेंका वहवाया विर-दश्चर-या श्वेर्-तुयावया प्यर-वर्श्वेया केवा येर्। तहेवा क्षेत्राचे न्यायायायाया स्रोन् यदे स्रोन् यदे । यद्वीय मुक्ता मुक्ता स्राम्य स्रोका स्रोत्तर स्रोत्तर वा सूरकार्श्वाकार्श्वेर प्रदेश हेका वासुसार्सर प्रति श्वेष वकार्श्वेस प्रवेश स्राप्तर यन्द्राक्षेत्राक्षेत्राक्ष्यायायादे वार्षेद्राक्षेत्रादेशे अदशक्ष्याक्षेत्रायय दे वार्षेद्राक्षे

ट्या तर्ने व विव क्रियम् क्रिया विवाय ग्री या विवाय क्रिया क्रिया क्रिया विवाय क्रिया क्रिया विवाय क्रिया विवाय

नुर्वात्रात्र क्षेत्राक्ष्मणायम् स्टान्ने द्वार्थे । क्षुः स्रक्ष्मण्याये स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्

श्चेत्र तह्वा वी श्रोध्यय पश्चेत्र केंचाय योद रहेंया

देशक्षाद्राद्रस्याम्बिः चुरासुक्रियास्रक्रमाः हुः श्रेस्यायस्रुद्धाः स्वाप्त द्रसायस्य विद्याप्त स्वाप्त स्वाप क्र्या.चीय.जुब.रच्च्य.हे। ह.जैर.कृंय.बी.चर्.वीच्या.बीका विर.क्य.ध्यात्रा वै'चक्क्केर'य'र्रा विरक्षिय'सेसस्य र्यादे चक्किय'य'स्य विर्वेत स्थापनि यावर्षायासूरा । ने:नविवादर्शीर्यायवार्नेवान्। । व्याद्यास्यास्याने निर्मात्रीनास्या बैटा । १२ विबन्दु वै वश्चवायायवटा । १२ अया विबन्दु वश्चवायरा पञ्ची विशक्तित्विः स्वायन्त्रम् वार्षमायह्नि पदिः द्वायदः स्वरं म्यायन्त्रम् प्रायन्त्रम् यः व्याप्तरात् व्युरः विदा। व्युवायदे विषयः त्युवायागावाया विवायके विषयः विवायक्षितः प्रायः श्चेंत् तह्वा सूर्यश्चार्डवा मुः योत्र या पीत्र ते । । यात्रत् दुः श्चेंत् तह्वा शें शेंर योत्र स्तृया षदः षेदः दे। द्विमानः वानसः यदेः यसः ददः ये वदः देवासः उनः क्वीसः यहः वायदेः नक्ष्मन नुः र्रो कुराया बिट देवे सः सूर र्रो विवृद नवे केन नुः क्रें व यो या सामा निवास के धुमाः श्रें याः सूरातुः रुमाः मीर्यामाले या ने दारा से मिता से हु:सैर:कूर्य:कु:यर्,योर्षयोया:कुरा । विर:क्य:धेयायायु:यक्रुर:ताःसैरा । यर्याः ग्रम् तर्ज्ञात्य प्रमुन् । विम् कुम सेसम दे म्स्रीम महीते । विम के मार्थ क्रुयानसूयाग्रीविरायराजूराययास्यायायास्यायरास्यायायायायायाया कुर हेर क्षे दुर रस अपर र केंग्रिय हिर ग्रायय प्रति स्थे योर केंग्र केंग्र केंग्र से त्तरः यः दवाः वीयः दुयः क्रुवः दवाः वर्देवः दुवरः देः स्वरः वर्देवः दवीयः ययः वे व धेव हे विर क्वा रोयय द्राय प्रति प्रस्ता या स्त्रीव पुरा नु विषा विषा के वा कर्क प्रति के वी देवर-दर्देशःम्बि-द्रसःमञ्जरःमवि-स्रमादेव-द्वी है:सूर-व-र्श्व-कुवःमःवेद-द्रममः योद्र-द्रवो श्चेद्र-क्रेंब ग्री त्वुद्र-वाद्य बर्ग सुन्ते श्चेष्ठ प्रति वादेव अर्थे स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ होत्र द्रवर ध्याक्त्याचेद्राच्चरान्त्रम्याच्युन्द्ररा म्बाब्यायराञ्चरान्वरान्तराङ्गुरानदेः कुल में से नय क्रीस हिन क्री से दे से नाम हैया ने साम क्रिया में प्रत्य के से से प्रति । सर्वावयान्त्रीत्। देन्यायीयाहेन्स्य स्वावयान्त्रीत्रायन्त्रीत्रायन्त्रीत्रायन्त्रीत्रायन्त्रीत्रायन्त्रीत्रायन्त्रीत्रायन्त्रायन्त्रीत्रायन्तित्रीत्रायन्तित्रीत्रायन्तित्रीत्रायन्तित्रीत्रयम् क्या यो सेंब या अक्ष्य अर् अध्वेद र्यय येषा श्राम सेंब स्यापन श्री शितु सूर हो र तु सुर भ्र.बर्याक्रीयानिके द्वीया कुर्या की प्रारीया ये या धीया प्रारीया वा प्रारीया वा प्रारीया वा प्रारीया वा प्रारीया वा चर्सेन्,कुरा विरक्षियःश्रेश्वरात्रियःयस्त्रियःतःश्वरात्रश्चाःश्रेक्तंत्रंतायनेःयरः मनेग्रायाने न्या मेर्या स्वाया स्वया स यवरः अर्द्रवः परः हूँव्यवः परः बर्वः वाक्यः ग्रीः परं दृः हैः सूरः पश्चाः पः दृरः देः वाहः सूरः याह्य यहे मु: म: में या मार्थ व्याप्त व्यापत व्य क्रेन्-नु-रदःगी-तुषाक्रेन्-नदःनसूत्र-त्रषान्यस्यायन्त्रितःनुसुन्यस्यक्रीतः । लेषान्यः चरुतःचतिः स्वाःतदेः यदः वास्याः चहेदः यः प्येता देः सूरः सूर्याः यदेः स्वाः सस्यायः वेः यम् धुः यदः श्रीययः प्रोमः ययः द्याः देयः देयः यो कुनः यः वुनः कुनः यो ययः द्याः श्रीमः यहणः मी र्चेराय वित्र वुद स्रुयाय दे वित्र ह्में स्रुप्त मिया दे स्रीत ह्में त्र सेराया वित्र ह्में स्राया येव यर प्यर हेन हों हों हों या वर्ष या हिर हुन सकेंग हुन से स्थान हों र बेर:बैरः। देवर:वश्चेर:य:र्ड्यावाय:बी:के:वर:क्रुर:य:श्चेरायावाय:केर्दे।

ঽঽ৾ঀৢয়য়৾৽য়৾৽য়য়ৢঀয়য়ৼয়ৢয়৽ঀৢয়৽য়৾ঽয়৾ঽয়ৼৢয়৽য়ৣ৻ঽয়ৢঽ৽য়য়৽য়য়ৣয়৽য়ঢ়ৢয়৽ৠৢ৽ न्वीरमायास्य प्राचायाध्येत्। कें वादे विवासित प्राचीरमायस्य प्राचीरमायदेन <u>२८.२८.।</u> श.चर्.थ.चार्थात्राच्यात्राचीर.केच.श्राभाग.२तत.श्राभाग.२तत.क्रुप.च्या ५८। मुः अर्दे हे त्वेहें व ता केव में त्रु अषा निवा ता नवीं र श शु वा र्षे वा वे रायर न्वीर्यायार्थयः इसः वास्त्राचेरः विरा वावनः यनः वास्त्रायदेनः पदेः त्यवायः वी रेरेरेवात्वत् श्रीयानसुराने वेटयाम्युयारेरासुवानवे र्नेत् प्येतायरानवेत्। दे यिष्ठायार स्रेर प्यर भ्रातयाय बिर । भ्रीयश्र शुःतर्वे यायव याश्रु अप्येव स्वर वे र्देव.टे.क्षेत्र.ट्री निर्वाट्यायांश्रुयायांश्रुयाश्रीयायाः विष्यायाः श्रीवयायायाः क्रियायालेट यो स्थात्रस्या प्रयायायायायायायायायात्र स्थाय चुर्यायाधित। नेतरासुन्यासुन्यक्तियामसुर्याचीर्यास्त्रीयाधित्रम्बिन्तियासुन्यस्ति श्रेम्यान्त्रभुत्रित्रित्रेयान्त्रित्रान्यक्रत्यान्त्रीत्रात्रुः द्वीयायान्त्र्यात्रे स्वात्रात्रीयाः व्यवस्य तक्षायषानुहार्क्ष्यायोदार्द्धयान्त्रीयार्थेहरूषात्त्रीयार्थे । दिवहार्क्षेप्राद्यावायाः नर्झेम्यायायार्याच्याचेस्यायात्राच्याव्यावर्ष्यायात्राच्याव्याच्यावर्ष्यायात्राच्या <u> ५८.त्र.प्रमाध्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्याया</u> त्रुया ।रव.रेट.चेट.केव.मुश्रय.चर्चेट.येया ।यर्थे.केट.केय.तर.चे.चरु. धिरा । बोराबा दी पदी सुराम बेर बाप हिंदा हो । बोबा मासुर बाप दे दे दे हो। देॱसूरक्तेंद्रः विषारवाःसूर्याः पष्टिषाः बोस्यायाः सुराद्रः द्वाराः क्षेत्रं विषाद्राद्याः सुराद्याः सुराद्याः

सर्वेग मु सेसस न से द परि से साम मुद्दार पाया के राद्देश मुस्तर के राविता । श्रह्मे.श्रदःक्रीयात्रःचे.य.ङ्गे.श्रह्मे.लूट्य.श्रे.चींय.त्रत्यीथाययात्रद्यात्राच्यात्राच्यात्रा नर्भेन्द्रों व्हिंयाने हैं के बारा नेन्द्रमानन्या के वहार स्वार्थित । से पी श्चीन्यायेग्रयायम्ब्रित। १ने मेरायाया क्रुयाम्यायाया सुर्वे । । यह या क्रुया য়য়য়ৢ৻ৢৢৢৼড়ৢ৾ৼড়ৢ৾য় यम् महिमार् मिन प्याने स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्व मृगानमृथान्त्रीक्षुःतनदालेगान्त्रूनःमलेवः सेन्त्र। देवद्वेतः सेन्यः स्वायान्यः यार्चितःवःतवस्यस्यायार्थिन् स्वित्। तन्त्राची स्वितःस्वतःहेवः वित्यायायने वित्रायाय याशुरावरायेग्रयायराशुर। इतिःश्वीराले त्राग्वीराळ्यायळेग्। तुःयोययायश्वीराहे ॱॸॖॣॴॸॖ॓ॱॸऀॸॱॺॖॴॻॿॖॸॱॾॖॕॻऻॴय़ढ़ॱॴॸॴॱक़ॗॴॱॻॖऀॱॸऀॻऻॴॱॶॱक़ॗॖॗऒॱय़ढ़ॴॸॗ॓ढ़ॆॱॸऀॻऻॴॶॱ यर्षेत्राक्षर्भः। अरम्भुमाग्रीः स्वाम्याग्रीमान्याम् राज्यामानुरावर्क्षताः सुमान्याम् लुब.त्रन्थाची रे.बु.चर्चा.चार.जा.यह्मर.क्रिया.ता.क्रुब.तुषु.रूचान्नार्टर.प्रधिय.तुर. युः ययः नश्चू नः देवः यो अवा उवः श्चीः नाववः हेवः मुठेनाः युः नव्यव्यव्याः व्या श्चीवः स्रोतः पर्वेष प्रायास्य क्रिया पर्वेस प्रदेश त्रवा व्याप्त वा व्याप्त वा व्याप्त वा व्याप्त वा व्याप्त वा व्याप्त वा व नेव्यान्तः व्याया सुष्याची प्रसञ्चाया स्त्रीं वान् प्रीत् प्रमुन् या स्रय्या उत्तर प्रदेश प्रीत् होन र्शेषायाः ग्रीयाः में या स्थितः प्रदेशः प्रदेश <u> बुैन्यर में त्यदे हे श ख्र</u>ी अञ्चन्न यद्याय श्वाय पुष्य चुत्र स्वेता में श्वाय हे श स्वेत ह्मेंवा या धीया देवाया देवा यह क्षेत्र क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

व्हुरःस्नुयःनुःसरःन्वादःवःवङ्ग्रीयःवलैवःव्हरःस्नुवःशेययःन्यदेःश्चेन्यःस्नुवयःस्रेवःयः तह्नायरःश्चेतःश्चेता यरकेंनारा यन्नानीयानेरिरःश्चेतायाम्ययाउनः ह्या । श्रुमः स्ट्रार्ट्या वायदे वायेवाय हेन ५५६ हो । वार ५ वादे व्याय सहीत ५५ विया <u> इप.क्री क्षि.८८.के. भूष.७०. श्रूचाय.८ या प्राच्या विष्य.त्रायावय.जा.</u> न्वातः च मुक्ताय र तह्वाया नेतर र र वीषा चुर स्कृत मुख्याय मुने र य में हेन यदे सकेवा प्रेन यस न्वाद च नहीं साम स्वास सेन। वालन हेदे ही सन्वाद र्वोबायाधीत लेव। वर्वा वीबारे देर क्रिवाया सर्वा क्रिया दर विराग्नेस्या सम्बा <u> २८.श्रुव.२८४.४४.२८८.तूर.चथवा.३८.।</u> श.४४.श्रीचय.२८.श्रेश.तपु.श्रुशता. क्य. वर्षा अ. कर्न. भारतीय. री. तृषा यथा विराक्ता अवरा विया सि. भीरा अर्था की या की यो प्राप्त र वितायरा वु:वान्दा ने हिनाया विवायर नु गाव्या स्नावया सर्देव स्वविद्धा स्रीते वाने स्त्रीन स्व स्यु अ र विषय । या विषय विषय विषय विषय । या विषय सर्दिन्यायदीत्रस्त्रेत्रः द्वीतायाधीतायस्त्रा नग्रद्वीत्राकाः स्त्रीट्यते खुन्दर्देते । स्त्रीयाकाः स्त्रीत्यते खुन्दर्देते । <u> क्रेरःवर्हिन्याः क्रीरिवायाः क्रुप्रोत्रायाः ब्रह्मयाः वदार्यायः क्रियः विवार्वयः प्रतार्थः दित्रः </u> न्गो स्वी स्वीयान सक्ता चेर विन व न्याव नाम स्वीया या वि हे वा खुः धी रह वा धीव प्रवा वे । निः श्रीवः प्रदः देवा वका ग्राहः दे किं द्वीवा व्येष्टः ग्री हेवः तुः त्वश्रू रः प्रदे न वे विषयः व्येष्ट 311

चिर-किय-धि-म्रोभन्ना यश्चीर-तपु-सर्व-लूर्य-यश्चेर-ता

इं.सूर्री लूर्यस्याम्बर्यायस्यान्यार्थयात्र्यात्र्याः कृता वित्रयायान्याः ञ्चित्रात्रा विषयाः विषयः व श्रृयोयाःग्रीयाःमुयः कुषः चीरः क्षेतःग्रीःश्रीयायाः क्षेत्रः याः स्रीयाः ययायाः ययायाः स्वारायः म्री श्रीशेतिः भ्रीति त्रिटः पागाुवः स्वतः प्रीवः प्यदः क्वियः प्रते श्रायः प्रदः स्वार्थः स्वरः देवाबासुः शुरुरायबाद्यदाबोधावीटा हेन्द्रीयाबादीयाद्या है। पश्चितःव्यथाः उद्ग्यद्याः क्रियः व्यविद्याः पर्दः क्रियः प्रद्यक्ष्यः प्रद्याः व्यविदः प्रद्याः विदः प्रद्याः विद्याः बैट^ॱक्कैष'यर'षट'दश्चैर'हे। ग्रुट'रुव'ग्री'बेश्यय'य'श्चेष'य'दश्चेष'वैट'दे' र्क्याश्चित्राकेन्।यराभ्रीतिहेन्यराभ्रुकायाभ्रीक्ष्यत्रायराष्परावित्राञ्चरत्रायदेःश्चिरा र्रे । दितर स्रोधमाञ्च व्यामाञ्च स्यास्य क्रिया श्रीयाया तर्वीद प्राप्त दिवाया प्राप्त । <u> लर.शरश.भैश.ग्री.घोरश.२८.शर.श्रुशश.३५.व्री.घोरश.शघर.लश.त.चधुप.२ग्रे.स.</u> तसेवानरत्र सुरा देहेन् ग्रीय भ्रेनाय तन्ना भ्रेनयाय नयस्तर सुरास्त क्री:श्रेश्रय: दे:श्रुव:पदि:श्रूद:हेवा:य:देश:पदि:श्रूव:य:इश्रय:बेय:श्रुव:याद्दर। यादेशायते र्र्मेयाया व्यव्या उद्देष्या वर्षेत्रा या स्त्रेत्रा व्यव्या स्त्रेत्रा स्त्रेत्रा स्त्रेत्रा स्त्र र्टेर्यायवीयः दर्भ्यावीयः श्रीयः त्राच्यायवीयः ब्रेयः योद्यायः योश्या देः से रावीरः श्रीयः क्री:बोस्रयास्त्रेस्यास्त्रेस्यास्त्रेस्य स्त्रेस्य स्त्रिस्य स्त्रेस्य स्त् केंद्री क्रिकायर क्रेंद्रायह्वा यका यहवा क्रेंवा वी वावका या वर्षेद्राय क्रुराये वा चर्चा:लूर्-क्रि:जुर्देर्-रा जीयाश्रेशयाक्री:चिष्यः स्रेच्याःजात्वरः त्रहेबायाः स्रेयाः नवितःश्चीःयोत्। शुरःकुनःश्रेयशाश्चीःश्चीःश्चित्रश्चित्रश्चितः।वितःश्चितःनःनर्वेदःयतेःयोत्।

१ त्रायदेव निकास स्थान विषय स्थान स्यान स्थान स

र्यम्भातम्भीत् मीत्रम्यान्त्रम्या

ૄ૱૽ૹૢ૱ૹ૽ૢ૾ૺઐ૱ૹૹૹૢૢ૾ૺૹઌૹૢ૽ૢૺ૽૽૱૱૽૽ૢઽ૽ઌઽૣઽ૽ૢ૽૾૽૽ૹૢ૽૱ૹૢ૽ૺૹઌઌ૽ૹ૽૽ૹૹઌ૽૽૱ૹ૽ૢ૾ૹઌ૽ૻ૱ षरः वश्चवः वुः यः श्चेतः यः वायः केदे। । देवरः श्मवशः वदेवेः केदः दुः वुः ववेः वाद्यः वुः वेः ब्रियायार्थे के प्रीत्रायका ने निरामसूत्र तका मन्त्र । स्वीता के क्रियायात्र । र्हेव सेस्रय पश्चेत् प्र प्रेंत प्र संस्राय स्थ्रेत रियाय महिया पेता हिया सेस्य स्थ्रिय सेस्य यञ्चेद्राचे मालक देव द्रार्टेम् या श्वाद देव माले राश्ची हो लिया देव द्रारा येयाया सङ्चेद्राचे ब्रेंट हेट अदेव सुरानु हेवायायदे पो नेयाया वहेंन। गुत हेंच सेयया वश्चेट वा न्द्येत्। क्वियाश्रशकेत्रायाद्वेता वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्ये वर्षे व रोम्राचर्स्सेन्द्रा दर्शेन्द्रियान्द्रियात्राच्यात्रम् ग्यायहेत्त्व्यकुत्याक्चेत्र्याक्चेत्र्याक्चेत्राय्याक्ष्यायहाय्याच्यायहाय्याक्षेत्राचेत्रा र्देव द्यायेयया पश्चिद वे सेंद्र हेद हेव या पायेव लेट दे वे यया पश्चिया पाये सेंद्र या श्चिया शुः दर्गे याया स्वान के या हो दारी या स्वान स ब्रायाहिषाः स्वापायी । १८६ हिन्। यास्त्रीनः स्वापायस्ति। स्वापायसः। स्वापायसः। स्वापायसः। स्वापायसः। स्वापायसः। स्वापायसः। स्वापायसः। स

वियासी स्नैट ईंश श्रेस्र छत्। या दिया या प्राप्त क्षेत्र स्वारी स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ व्यन्त्रीम्बरम् नेत्रमहिषात्रामा सुरम्बहिषामे विदेशमा स्वरम् सेत्रम् सेत्रम् सेत्रम् सेत्रम् सेत्रम् वर्स्चेर-रु-श्रे वर्श्चर-र्रे । । नेवर-र्स्ट्रेन-वर्ग-व्रै श्रेर-५-रु-स्थर्न-रुग-व्रेन-श्रानित्र-श्चित्रक्षीयर दे विर कुर जार्येया श्चित्र महत्वेषा वर्षात्र से कुर य विर क्वा श्रमण सह्र-दे.पर्वेचाताल्यो क्या.प्रेच्च.पर्वेच्य.प्रेच.प्रेच्य.प्रेच.प्र ब्रॅन्। माल्य-नमाने-नुषान्त्रीयायाध्येत-प्रयाखोन्द्रत्योत्येय। नेयात-नेत्यानिया षया बुराविषेषाचे तरी या कॅटा व खेवा केवा केवा या मुने पुरी त खुराव या ने विषय है या यर-तृः स्ट-द्वेषा रट-रे-श्चुः सेर-सुः अट-रेक्स स्वा-वित्वे वितः स्वायः सुः वर्षः स क्षार्रात्रा वार्ड्याकार्वराष्ट्रीर क्षार्रावकारा वश्चरा क्षारा यरयाक्चियाक्चियाक्चियायात्राच्या योग्ययाक्ष्याव्ययाक्चियात्राच्या श्र्वायःश्चित्रयःश्रेययः विश्वः त्यवः वाश्युयः तर्देवः वेः रेदा । देवदः सर्क्रवाः वाश्युयः वः श्चित्रयासुःसेट प्रसाद्यायाः श्चित्र का समुद्रा श्ची प्रसाद्या श्ची प्रसाद्या स्वर्थ स्वर्थ होता दुर्जे स श्रेयशक्ष्यः विषाः श्रेतः वर्देन व। कुः वर्शनः वय्ययः वः नश्रेषायः यः नरः वद्ययः वः र्हेन्य नुरः वः क्रें वः प्रते। प्रत्याः मीः श्चेष्व स्वायः प्रश्चेषः प्रदेश्य सेर् व्ययः क्रीया विज्ञातात्वर द्वीर यह या क्रियात ज्ञुवायर विज्ञा वियायया वसूत्र वें। । श्रुर-नमें नदे सन्य भेंन क्रन्य सुव नक्षेन वस्य ग्रुन नदे मिल मासुस नु तर् श्रे। श्वेतःयः यशः शुदः यदिः यशेषः त्रस्याः यदिः परिसः यो प्रदः यश्चितः र्ह्यः विभगवम् जुरावदे वर्षे द्रभग जुरवदे दर्षे भेरित वर्षे भाग बुदःचविःचर्शेद्द्रम्भान्त्वःचविःद्देशःभाद्द्रम्भान्त्वास्त्रम्भान्त्वः ।देःयःद्वेःद्वःस्यःध्वेदःद्व्याः म् विष्यत् म् विष्यत् विषय्य विषय्य विषय्य विषय्य विषयः विष

वु:चन्राः श्रुवः योययाः ग्रीः नश्चनः चुः व्यानस्वः या

 यर में या भीत सेंद्र अध्यय उत्तर व्ययय उत्तर से या स्था भीत हैया । विषा भीत द्रया वयामहिंदायरावश्चरारी ।देवःश्चिरायोग्याञ्चराश्चरायदावर्दिदाश्चीयया मायकरायायायाकेते। १३ महिमामा स्वाधिवाद्वराम्यायहेवायम्या श्चेत्रप्रदेश्वर्षेष्यप्रप्रित्ते। । भू वर्षाःचा वर्ष्यप्रचित्रप्रकृतःतुः ज्ञानस्यः श्रेमराङ्ग्रीट्यर रमा यश्रास्त्रेर हे या द्वीत माश्रुम श्रेम श्रेमराम्भ्रीत् श्रीकृताः र्श्वीटः व। शेस्रश्चित्रं प्राप्ते स्थानित्रं व शेस्रश्चित्रं के स्थानित्रं के स् यङ्गार्श्वा । १८८: ये कुः वा क्षेट्रिं या के राम्या विषय के स्वार्थ । विषय के स्वर्य । विषय के स्वर्य । विषय विषय । विषय के स्वर्य । विषय विषय । विषय यरे यर प्रवाय देरे के बुर्याय सूत्रा यस्य र दिन्य वर्षे के से र है। भूगानमृथा सेन् प्रतीयने पान्य सेन् प्रतीय विषय प्रस्ति प्राप्ती निषय । हे प्रैर क्या स सूर-५८-च्यान-वे-नहर-क्षेत्रयानस्याधेव। दे-५वा-यव-६वा-वी-युवाया-सुन्यः यदे कें यह द कें यह द से कार्य के प्रति । यह के या के यह के यक्ष्यः द्याद्वायः श्चेदः वरः यात्यायारः द्वेदः रेविदः कवायायोदः दुः केवा सुयावस्यः ज.भ.र्जुय.तर.युभय.चश्चेर.चर.यंय.श्चेर.रेगुय.यू। विर्यंभ.त.चश्चेय.चे.ज.श्चे्य. त.योर्शेश.क्री यरेयो.योखेय.अधेश.तो यरेयो.योखेय.य.इ.यो यरेयो.यंश्र. यालव याडेका ५८ में वि मारे माझूम तर्ने ५ ५८ सूया मास्य लि तर्ने ५ या विकास मिल वयायन्यायालवात्रः यदः यदः यदः यद्भाया व्यक्षियाया वे यद्भाया यो यदे या यो यदे या यो यदे । याः ब्रेंब लिट वालव ब्री ख्रुवा चर्ष्य स्ट त्यायेव या वास्त्र स्ट हेव प्यया चर र्देरःवर्षःम्बदःर्देवःश्चरःयेवःयःवरुषःश्चेवःयदेःवश्चवःवुःख्वेवं ।थ यःव।

न्गार येवि केंग्यान विविध्ते केंग्यान नेवर न्यार वे किंग्यान विविध्यान विविष वश्चवःवुःदगरः यदिः र्केशः विदेशः दिविदः श्चिशः वश्चव। वशः ये रिकेशः विदेश र्बेस गर्म स्यादेश यथ। सकेंद्र तेश प्रसु द्रा पर्वेद्र से द र विकेद्र से द वश्चेता । न्यायर श्रुर वरेवया वर्षे व्यावार्ष श्चुया श्चेता । व्यावित केया वर्षे ञ्चर विर व्हेंना य दे। । ५ गार विते के अप्त विष्णे व प्य अप्ता व पुर । । । हे अप म्बर्धरम्यास्य स्वर्ते स्वरादेशस्य स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर वार्व्यक्तिमाञ्चीरायाद्या युवाद्यायारञ्जूराचारदेवयाया दर्वीव्यावार्षिञ्चा ब्रेन्यानरुषानित्रं । नितः व्रेवा क्षेवाषानित्रे स्वेवा त्यानन स्वर्धिषानित्रं । भुःश्चात्रा व्यवान्त्र-प्रीटः क्ष्यः ग्रीः वयात्र वर्षे दः यदेः वयवायस्रेवः या स्वा द्यायाक्चिताः ख्रेषाः क्षेत्राः खेषाया स्वायाः द्वेषायाः विष्याः द्वेषाः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्य व्रेंग्'य'वरुष'र्ये। १२े'५ग'र्ग्येष'र्र्के'रवर्ष'र्येर'व'गुत्र'तुर'र्द्ध्य'ग्री'र्येय्रष'५८'र्ये। तच्याबिरायाया क्रीयंत्र मृत्र म्रम्या उदायर देते ज्ञान प्राप्त स्वाया विदाय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया र्'त्रयेथःबिरःक्रुश्रःयरःत्रश्रुरःर्रे । ।देवरःबुरःश्रेश्रशःश्रुरःयवेःप्रश्लवःबुरः चिर्यामा भृष्टे राज्या यादा स्त्रीय स् য়য়য়৽ঽৼ৾য়ৗড়৾৾ঀ৽য়৾ঀ৾৽য়ড়৾য়ৼয়ঽয়৽য়৾৽য়ৼ৾৽য়ৼয়ড়ৼয়৽য়য়ৼয়ঢ়ৼয়৽ঀ৽৽ मूर्य र् र् रायानम्प्रतानुतिः म्र्रीयान्ति ते मुन्द्रात्यायान्त्रीतः मुन्द्रात्यायान्त्रीतः सुन्द्रात्यायाः ह्में अंभिन्न हिंदान देवाहिकाया दिनायर प्रमास स्थान स्थान

ब्रिन् उवा ब्रियान वान्यायया ने नवा सुन् वारान्यात सुयान्या राज्या विश्वास्य वार्या वार्या वार्या वार्या वार्य वहेंनाय न्दा न्द्रमा न्द्रमा न्द्रमा न्द्रमा प्रते विष्य विष्य प्रत्य स्था निष्य विष्य प्रत्य स्था निष्य विष्य ने सूर प्रवासी विद्यासर सूच विंत्रासर विषय विद्यास विद्यास वि देशायरावर्युवास्त्री वीस्रश्वास्त्राचरास्रीवर्युराचवी । नर्देशाने वादाप्यदार्थेन याधित। विषायासुरसायासुरारी क्विंकित सुरास्त्रसायासी श्रेमराश्राबिकात्तर तर्ज्ञा भरायी भवतः दरायसैजा भरायी लीका जायी देवी देवा व क्कुः अर्द्धेर स्थान और ने स्वर मानायायायीता व्यर यो अयायया नर से नया ने ॔ वृतेन्त्रातःवतेःक्वेन्यःन्दःनुःव्यद्यातः देवाः क्वेषाञ्चाःवरः त्व्युरः हे। र्हेणयः क्वेरः महेराक्षित्रक्षीः स्राप्त स्वरं प्राप्त स्वरं प्राप्त स्वरं तर्नेन्द्रात्वा वन्तुत्र श्रीयातकेंद्र क्वा वा प्येन्यत्य रेवा या यय र्वा या या सुवा तसम्बार्थाकेषः है मलेषः वहमायम् नगतः बत्ता क्रिम्याया सुर्वे प्राप्ता स्वार्थाः विषयायाः याबर तर्व क्रियीय श्रीर वि.य.का तयर रेवाला श्रीय ता से पर तर होया अर रेट्र रा र्भे इस्रयार्य स्वी त्यवा वालयाययायां वित स्वर हीत हिर वालेत स्वर वालयायर हीत स स्रमः वुः लेटा देः वया पर्देश यो स्तुरः दुः में यालवाया व्वीवावया श्वीवायमः श्वीदः प्रवीया ययाम्बर्ययां । तयम्यायायामानः प्यान्त्रयान्त्रीत्वेषाः वाञ्चर्याः हिनः ग्रीयानर्थे द्वययायानयायया मुख्ये दर्जे रामार्थे द्वीर साम्ये द्वीर सा नेयात ब्रिन् ग्रीयायनवा वी ख़ुरायबेन नु.कु.लेवा सुवायानर नेया ब्रिन् ग्रीय वेर्न त्रया है। केर तर्त्रो निश्दर्याया भूर प्येत। मैं स्वयान निया निया मुक्ति या दीन या स्वया स्या स्वया स्वया

द्यांवर् क्षेत्रकार क्षेत्र व्यक्ष्य क्षेत्र व्यक्ष्य व्यक्ष्य क्षेत्र व्यक्ष्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यक्ष्य क्षेत्र क्षेत्

*ব*র্বা'ম'মীমম'নষ্ট্রীন্'ট্রী'নমুন'ন্ত্র'র্বা

यश्रित्रा देशस्य प्राप्त स्वाप्त स्वापत स

शुःद्रवःययायद्रयायायीवःय। देवदःश्चेद्रविःग्रियागविःस्रवदःयःसीःग्रवयायीः ह्र्यायातपुरविराक्षयास्य स्वययास्य श्रुच्चिरायायास्र र्याति स्वियाता स्रुपास्तरेतः यायर द्वीत लेया प्रहित्। येयया उत्र वस्य उत्र द्वया यद्वित हें ज्या प्रहर जी याया तर्वोद्रायदे:केद्राद्री वहवा:मानुद्राक्ष्याक्षेत्राक्ष्याची:प्रमानुद्रीयानुवा:मानुद्राव:प्रमानुद्राव:प्रमानुद्र ब्रेन्यतः र्त्ते ते स्रेस्याय स्रोन्दि दे दे दे दे दे दे ते स्रोत्ता स्य स्रीतः वास्याय स्य द्वीता स्य स्रोति व शकुरा.शूर.पर्दे.व.व्या.विश्वरा.व.वं.वरं.वरं.व्या. हे.रेचा.बीर.चयु.घवरा.वु.रेव. नेयानवार्षेन् वासुस्रानु त्तु। नेतर वर्बेन् यासूर योदायावार्षेन् पीदा सुर वुःसे द्वो प्रदे व्ययः ग्रीयः से त्रदे द्वी यहियः सुः स्वा प्रस्य प्रस्य प्रस्य स्वयः स्वयः स्वयः । श्चेर्पायान्यस्य स्वराद्यास्य स्वरास्य स्वराद्या स्वराद्यास्य स्वराद्यास्य स्वराद्यास्य स्वराद्यास्य स्वराद्या क्रुराः क्री में तियर प्येत प्यान्यो ना स्वित स्वान द्या स्वा स्वा न्या स्वा न्या स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्व लेशयान्ते ने सुति इतायान्द्र लेशायलेता गृहेशा की यसूर्य और प्येता इतायाने सुद न्नर वी वावका की वहेन यर धीन वा वहें वा बीन ने निये हैंन सुर व्यु वी धीव यर वा सुर का नेतर न्वो नदे सब चेंब नर स्वैवा यदे हेश न्वीवाश बन गार नब यदे। विश वर्षेत्र ते वु र वत्रा र्शे वृ व वृ वु प्येत पर ग्रम् र र र मे प्रुर र ग पेर योशियाची प्रयास ही है। हैं। पहुँहें। जा कु दी है। श्री दें बें यो हो हो यो प्रवास प्रयास की या जा विकास की प्र यम्बाराक्षरा क्षेत्रास्या क्षेत्रास्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स् व्रेन् व्ययश्यी देशस्य भेता व्रे व्यवायह्वा सेस्रायी व्युट व्रुवे व्रेन्ट्र्यी स्रुव थेव यर यम् । दे द्या थया यहिंद से सम क्षेत्र यदे दे दे वि है सूद्र हु। भ्राभविष्ट्रियोग्राधेभायस्वेषःतार्टा विष्यात्रम्भ्राधेभारत्वेषाः विष्यात्रम्भ

ट्या तर्ने ब दीव स्वाय सेंगा लगाय ग्री गायें या सेंब स्वाय विष्ठा सेंवा सुर पर्से ना

बर्भषाउन प्यान्या हैन। । बोर्भषाउन बर्भषाउन प्यान्या हैन । **।**डेरा यदे विरक्तिं प्रविष्ट्र स्त्रीत्। रे प्रविष्ट्र हिंद सेस्र स्त्रीय दिस्य। त्व्यायायते यो स्वाप्त शेसरायरामान्त्। हेरारमाद्वरायद्वेत् श्रीशेसरावेशरमाश्री दे नियररा श्री । नि:न्या:रे:रेते:न्वे:य:न्ट:इयःयावया:वे:वुट:कुय:श्रेयथ:न्यते:क्वेन्यःयः तह्वायते वालुदायमाने भाषा हा द्वीं भाषी । ।तुः तुः स्वा वी भारदी सञ्जान वा रवा.पर्रेथ.चर्नेश.त.री क्र्य.धेर.श्र.पवीर.बैर.य.श्रधप.ताश.रर.। विवावी. योन् स्त्रीतः हे : व्येत्राः स्त्रीन् : सुत्राः स्त्रीयः स्त्राः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्राः स्त्रीयः स्त्राः स् यदः भ्रा विश्वायाय प्रदेयश्रश्ची विश्वायदः स्थानि भ्रेटा दशाम्ब्रायाय प्रदेशः ঽৼয়ৢঀয়ৼ৾য়ৼঀ৾ঢ়য়৸ঢ়৾য়ৣ৾৾ঀ৽য়য়৽য়য়ৢয়ৼঢ়৾য়ৢয়৾য়য়য়৸য়য়ঀ৽য়ৣ৾য়ৼৢৣ৾ৼ৽য়ঀৼৢৢৄ नेतर वेवा केत नवी नते सन्त स्वयं केत निवध्य स्वयं निवध्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं क्वायकेवा हु ये अध्याय सुद्धित वस्तुवा दे प्यवाकत श्रीका यदे या उदा श्री सुद्धा या व गहेश्यायार्क्षेत्रायाययायार्श्चेतार्श्चराद्वा गश्यायार्श्चेत्रायार्श्चेत्रायार्क्षेत्रायार्क्षेत्रायार्क्षेत्र स्रोस्रायसुर्वेत्र,यः स्वासः स्वायः स्वायन्त्र स्वायन्त्र स्वायन्त्र स्वायन्त्र स्वायन्त्र स्वायन्त्र स्वायन्त

मु पति पा मुन द्वीन त्या प्राप्त प्राप्त स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वय स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्व

श्चेरः वर्षोषायः ५८: वरः करः येरः यरः श्चेतः या

वर्ष्ट्रेचितः वेतुः इतः विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वासः য়৾য়য়ড়ড়য়য়ৢঢ়য়ৄ৾ঢ়ঀৣঢ়ৢঀয়য়ড়য়য়ৣ৾য়৽য়য়ঢ়ঢ়ঢ়য়য়য়ঢ়ঢ়য়য়য়য়ঢ়ঢ়ঢ়য়য়য়ঢ়ঢ় <u> १५-द्ध्रमायबेशकें माविमश्रस्य मोर्ट्</u>रायमायेदार् प्रसूरायार्ट्राक्रमश्रस्य हेमातु। तकर विदः द्वीतः क्षेत्रा मार्श्वेतः यः तरे यथा श्री बियाया प्यतः कर ग्रीशायरे या उत् ग्री क्रुं मार्थ्यः न्दः त्रबेशः चः चल्दः यः शुनः वर्षा देवेः यह्षाः वेषाः देवः याद्याः हु। वदः यदिवः चरः कर.श्रुजा विकृतिम् वर्षे रैवेंचें मृत्या विस्थायर्गिन्ययाष्ट्रीरेवें र श्लेष्ट्री वर्षेष्ठा विश्वायते स्वाप्तार योश्राक्षिराचिताक्तेत्रःक्षेत्रःक्षेत्रःवयाद्याययाय्यात्रक्ष्ययाःक्षेत्रःचःचस्त्रत्। देःवःक्षेत्रःवरः याञ्च्यायविःहेवावीः न्यावर्धे रार्कराववीः स्रोतिः सुरुष्ठाहेवः नरा। विन्ययः नुः वास्त्रवाः र् ञ्चे प्रति क्च प्रति क्च प्राप्त प्राप्त प्रति केत् प्रति केत् प्रति केति प्रति केति प्रति केति प्रति केति व यरत्रकेन्वत्रन्द्वत्र्वत्र्वत्र्वत्र्वेत्त्रःक्षेत्रम्भवत्रःश्रेष्वयास्यव्यत्त्रेष्याः देःव्यक्रेयः ૹ૾ૺૺૺૺૢૹ૾ૺ*ૢ*ૹૢૻૣૣૣૣૢૢૣૣૣૢૹૣૻૢૣૢૢૢૢૢૣૢઌૻૹૹૻૹૻૺૢ૽ૺૣઌ૽ૹ૽૽ૺૹઌૣઌૹૢઌૢ૽ૺ૱ઌ૽૽ૺઌ૽૽ૺૡ૽૽ૺઌ૽૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌ૽ૺઌૺઌૺ विद्यासुर्भुक्षुत्र रकाम् विषयः द्वाराष्ट्रकारा हेवा वर्षे गात्र वर्षे विषयः

५८। श्रुथःश्रुप्रइःवर्दुरःग्वयःॐक्रुयःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रुव्यःश्रु महेन ये क्रेंन्य ग्रीष्ट्र रुपबेट या है। यमेन ये कें न्यम ये न ग्रीय न से कें थे न्ययः व्वैतःत्रवाक्षं देरः वी निक्रम् रावर्के निविष्ठे भी निदेश मुना कुर्या निव्यम् वा निव्यम् वा निव्यम् वा निव्यम् श्चुत रसाम्बिम्स ग्रीस सुमाया ले पा सीट हे केत येति सी नार्नेत प्राप्त पाने माने साम साम साम साम साम साम साम स रैवाबा वस्रवा उद्दार वर्षा विदान देशीत स्नुवा वास्त्रा वर्षे सामित स्रोवे रेवा सी निर्मा का स्वापन क्चेंद्रायते यशुद्रद्र्याय चुँव केंग कें क्चिव यह केव ह्या क्चेंका खुया वरे सुवा क्रॅ्रेवर्यान्द्रस्याध्याध्येयाध्येयाध्येयाध्येयाध्येयाध्याप्याप्याप्याध्येया रवः वस्रयः उदः योयः लेटः। विदः परः स्त्रेग्यायायेः दुयः वदेरः क्रियः वर्षे दः वर्षे स्या क्वियातर्वेदिन्वीत्वस्तान्त्यानुर्द्वेवायानीया डेयानेत्वस्यावित्राचेत्रस्यावासुसाद्वीयासः तर्दिः शे अध्युत्र पदि मुन्या व्यव्यवा उन् योवा बिटा केवा समुत्र की प्रवास प्राप्त प्रवित प्र त्र्युवायाम्बिरानुषा क्रिक् भ्रेक त्र्यारमा प्रकारमा प्रकारमा प्रकारमा स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स वरः सर्वस्य श्रुप्तः वर्षे । दिवरः कषाया सेनः वर्षे देश्वरः द्वा सेन्दिरः द्या श्रेव पर हैं प्रकृत है। वित्र सेत् यह हैं कु स पर प्रवे प्रवासे प्रवासे प्रवासे प्रवासे प्रवासे प्रवासे प्रवास व्यवा । नमया वर्षे र वर्षे न स्वार में मुन्न निर्देश निर्देश वर्षे न स्वेर । <u> इट.र्ट्याक्र्याङ्ग्री</u> । प्रमयातपुःर्ट्यंगीयःक्र्याक्तयःल्ट्रंट्यंप्यीय। ।यक्षेयः र्टात्र्री या स्वर् र्वेषा या क्री केवा त्या विष्यु या स्वर् विषय स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् र्वेज ।डेरा:पर्यायसूर हैं।।

क्रेन क्रेन यम नवाय नहें या यहन या

तकीवर वेर् र्यमा सेर् के लिया सहया यर ह्रेनिया रूप विषयि वेषा है यरे विषय याचीवायायोदादुः श्चेतितः श्चेति याचीविया वदवाद्याः वदवाद्याः वदवायाः वदवयः न्यमा सेन। ।नमो क्षें र नमे त्वन्य विकासी साम । सन् मन् स्था वर्चेत्रः यरः वेव । नेः अर्वेदः पीनः नवावः श्रूटः चः श्रीता । वीः चविः सूवाः चस्र्वाः यस्याः सेनः तर.धुर्य विर.क्य.श्रमम्यन्तर.भक्त्रन्यक्ति.धु। व्रियर्सेज.क्रेयम्.क्रा.यम्. यविराधेंत्। विनेवाउत्रित्यों विष्याकेंत्रियाया र्वेच । डेराययायसूर हें। । यावयायायायात्राकवायाये हार्वेद वी छात्र प्रदर्स त्विरः मुः पः पालमः क्षेत्रिः प्रदः परुषाया प्रदे पारुमः पुरुषायते । देवरः न्नः अवै: म्रुज्य अः हे: व्यः हे: देटः प्येन् : यथः रटः वी: विवेटः हु सम्मान्यः विवः हुः विवः यः न्दः । गल्द न्या स्वार् न्यू रामा स्वार प्राप्त ने मल्द स्वार्थ ने मल्द स्वार्थ ने स मुजायाहे या ने प्रयास्तरे हे प्रेटा या यक्ष्या सेन्। रटा की यन्त्र या प्रटा सेवा या प्र न्भ्रीष्यायते हिरारे तहें वा से वा के वा निर्मा के वा निर्माय के वा निर् श्चरतः र्केमान् तत्रुमान्दान्यस्यायात्रक्रामान्यते । क्रियान्यान्यस्यान्यस्य वरत्रे हेर्ज्यातव्यात्रात्व्यात्रायायात्। तर्रे वे अर्रे द्वेंज्ञायाः क्षेत्रायाः यःभित्रःयरःश्च्याः चुेन्न्नः पठकाःयवे । । नः स्वेतः श्च्यायाः वर्षेतः । गहेत् हे अध्य ग्रीं ग्राया लगा रेर व्याप्पर ह्यें या ये वेंद्या या दे के वि प्राया स्थान वयान्य स्थ्रात्र का से दार् प्रति । से स्थानिय से स्थानिया से सामित्र से सामि

नेति धुर क्रेवि प्यया त्या प्राप्ति क्रुं केवाया वीर त्रन्त्र प्या या हिया प्राप्ते क्रेवि प्यया श्रीया या स्था र् विष्युर्भ्य विषय देन द्रम्या सेन मिल्या सर्वे विषय स्त्री स्त्री विषय स्त्री स्त् व्रेन्य वे र्रायम प्येव। गवतः श्रु वे रात्तु विमानी वार्के वाञ्ची नायर प्रवेव विन्तु नु रवर्षाः अर. तुर. षधेशारी विषयाता वचर रषा विषयः श्रीवर्षाः कृषाः वा श्रीवर्षाः विषयः व पवर देशकें। ष्राम्रमार्ट रेख्ने प्राम्पर देश में त्विया पार्ट कें माले प्राम्पर प्राम्पर यहमानु विदाने राष्ट्री प्रविश्व व्यवस्था स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स द्र-पद्रवाः वः तद्रोवः भ्रवा । विदे व्यः क्षे व्यव्यः श्रुप्तः स्वव । द्रेयः गशुरुषायाः सुरारदाः हिन् याचियाः सुनिने नाच्याः नुः क्षुः निवेरकेन् साधियः हो। नियेराया म्बर् कु:जर्भ क्रिंच याया पर प्यार कु:जर्भ व्यार विवार विवास अर्केन्। हु 'शेअयापश्चेत्'ने 'अरखुर'शेअयाउदातदेव'यदे केन्। नुपन्ना मीयाद्यहर स्वा श्चर्यायाधीत्। देशात्रायद्यायात्रयेथायालेशायात्रीयवाद्यायद्यायात्रयाया व्ययः इन् क्षीन्त्रा नेतरः चवरः त्वेयः क्षेत्राकेषाः यर या क्ष्या रवः त्वेयः विचेर्याम्य स्वरास्त्र लेकायासूरा वहिना हेता वदी सका कें विचेरा हेता हेता से वार्य हु'तर्वे नते स्नूनर्थास्। युर्यातव्ह्नात् नति तत्रायते सुर ये ति दिते सिते सास्य से स् मी त्युद्धार प्रति सुद्दुद्धा वर त्युद्धार यो स्राप्त स्थाप वर स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य व। रुषःक्रुवःस्टःवीःश्चेःवेरःवर्श्वेत्रायदेःश्च्यावदेःषरषःक्वर्षःवेर्दर्द्द्रपण्योदःदृः है:ब्रूरमञ्जूर्यायाने:ब्रूरम्। अनुवर्यामुद्रायने,वर्षायते हेर्निज्ञायान्यम् वर्षे रायेन हेर्ने

वियायन्यान्त्रायान्त्राः श्रीयायवटा सर्केयायी लयायासूटा

क्रूचीया.खेट.चझ्रेश.तपु.सेचया.केंट.रेगु.धुंट.रेगु.पर्थ.पुंच्र.श्रीया.चश्रेर.थेया.बुर. ंभ्रेयायोर:ब्रिंव:हो। रेवाया:क्षेत्र:पु:र्व:ब्रेंग्बिंप:रट:यावहेवायाया:सूटयावेयावासुट: क्ट्रायदे निव्यः क्षेत्रान्त्वायान् वृत्यवे स्वायः विवयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व यरः या चन्द्रन् वातः चलितः क्षेष्ट्राचलितः नुः सूदः चा हेः नुद्रयः नृदः देवा या हेः वायवा नुः त्युरा ने कें लिय हु प्यर अह्य लिया ग्रुय या वृत्र अर्थों व स्थें त्या सुरा ग्रीय या सुरा र्र्यः स्ट्रिंग् । ब्रू स्ट्रिंग्यः सर्हेन् प्रते स्ट्रीयः श्रीयः प्रश्राप्तः वर्षाः । स्रायदः यः ब्रुन्यित विरानेर विनायर विज । डेयाय व्यान्य न्या हे यन्या हेन के वार्या यर.र्ट्रपु.क्रॅंट.य.चेर.यर.क्रिंप.श.वच विष.श्रंथ.यक्रेंट.क्रुंथ.प्र.पंत्रायसेय. र्वेरःश्रेर्यदेल्याः सहयाः मुख्यः विष्यः । क्रुयः क्रुवः रुषः मृत्रेषः मुक्रः रुषः मृत्रेषः रुषः मृत्रेषः रुषः सर्वे क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र सर्वे ने प्रति स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्व यमः मूर्य होत् विरा ५ पतः चे ५८ ५ ५८ विराधितः स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स स्रुवःपतिः द्वान्त्वान्यः द्वीताः पतिवः सो मेनाः वी करः ययः छैरः। वहतः यसः क्वीः न्रः वयाः विष्यं त्वुदःवतेः क्चेत्रः त्यसः वहवः यते ।

क्यायालेब त्रिवायाचे दि द्वीयायर यसूब या

न्यायतः स्रुक्षान् प्येष्व प्यम् स्रुक्षात्वावः रेते न्यम् वीषाष्याय्यायाय्यस्य स्त्रम् सुमानविः वी

कुरायेन्त्र। र्रोत्रेतिःश्चेतेष्ठार्यायायायायम्हन्सेन्यायायार्थेन्। नेतिःश्चेरा रदः क्षेत्र त्वक्रे व्यवे कें व्यवे वा उत्र पुंचे व्यवे यो वा वा विक्र यदः यात्रश्रात्यः क्रयाश्रात्वेतः प्येन् यदः क्चें विन् । क्याश्रात्वेतः ने हिन् यार्वेन् यदेः क्रम् राष्ट्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रेत्र स्त्रम् प्रम्या प्रम्या स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स येत्। १२ अदि नते श्चित्र सम्बाद्य । १८ वः भ्रमः सेसमः श्चे नरः श्चें,यःश्चे,यरःवेच ।केषःयासुरम। देवरःदःक्षःररःदेवःत्युषःवःस्रेःस्वाःसःस्रेः रेख्रूर पत्र अन्त्र्व मुद्द मानी विद्दु दु रहेर्द मुठेवा य में अञ्च सर बे्द्र सदर है। वर्बेन्त्र। दर्नेदर्यन्तिमानीयान्स्यायदेःस्यावस्यान्तेःस्रमावर्वेन्त्रा ने नविव न स्थान कर भूका को न सम् १९ व विचा चित्र चा त्या स्थान यगोषाञ्जीयाची सूर्या प्रस्था के सूर्य पर्वे दिया माने प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था स्था प्रस्था प्रस्थ प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्था प्रस्थ प्रस्य प्रस्थ प् বাৰৰ ধ্বমন্ত্ৰীত শ্ৰীন্ত্ৰ প্ৰামান্ত্ৰ মন্ত্ৰ মামন দ্বীন্ত্ৰ প্ৰামান কৰি দ্বীন বিষ্ণা নামান ५:५८:४८:१९५:५वुवायावस्ययादयावार्थे५:य:५८:स्रोप्यउ५:दयावार्थे५:य:य:५:पय বাধ্যুমাথমাবাউবামৌদায়েদাবাউবাবীমামীবাদিদাম্বী মীত্ত্বিয়া মীত্ত্বিয়াবামূলার रदःवीः ह्येदः तर्थः वेश्वः यः वदैः धेव। देः सूर्रः देवाश्वः चुवाः वादः व्यावसूर्यः ग्रादः सूर्वाः पर्वेतायात्रीयायात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीत्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीय वयान्यात्रव्याप्त्राचेत्रात्र्यात्राच्यात्र्यात्रेत्राकेत्रात्रेत्राक्षेत्रात्रेत्राक्षेत्रात्रात्रे स्त्रीत्व श्ची दे.के.श्रु.श्रूर्ट्यर्वर्यरायपुरायात्रश्रीयात्रक्षीत्राच्यात्राश्चीर्यात्राश्चीरात्रम्यात्रात्रा इयायालेगा विवाया श्रीटा वरि द्वारा मीया स्नावया रेरा खुगा वर्ष्या या वरे वरा या विदाय स्वा

कवायालेव स्त्री वतर स्त्री निर्देश मार्थ स्त्री स्त्री वा स्तर्भ विष्य स्त्री स्त्री विष्य स्त्री विषय स्त्री विष्य स्त्री विषय स्त्री स्त्र मार्थराया ते क्रमाया स्थ्या पुरानु सुवा मार्थराया या विद्वारा या विद्वाराया या विद्वारायाया या विद्वाराया या विद्वारायाया या विद्वाराया या विद्वारायाया या विद्वाराया या विद्वारायाया या विद्वाराया या विद्वारायाया या विद्वाराया या विद्वाराया या विद्वाराया या विद्वाराया या विद्वाराया क्रेंबाचुेर्या दिवा प्येंचुराया कवा बाद बारे राष्ट्रया युषा सुरा। वा द्वारा ची वा प्येंचुरा देवि विश्वेषाया व श्रुवादे ले सूट मीया व मार्यु सेट । दे से विवय व मास्याद्या गञ्जाता शुर् हो वात्र यात्रे स्वर्ण के स्वर्ण के स्वर्ण स्वर्ण स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं न्सुयासेशक्षेत्र रेन्द्राचीसेणीशक्षेत्र नेत्यूराणेन्तुन्तुरानुस्यायाक्रम्या ययः देवः यद्वियः यः यो या सुरादे व्यवस्य क्या सः विदः विदः दः क्या सः युः या सः कुर या यक्ष्या है। धुवाया है लेवा तुर हैं व्या कवाया यदी वें कुया ग्राट पेंट्रा लेव <u> इट.क्योबात्तराबीरायाच्या वर्षा अध्यम्य प्राप्त वर्षायाचा वर्षायाच्या वर्षायाच्या वर्षायाच्या वर्षायाच्या वर्ष</u> त्वीरःश्चेष्टात्वेः सर्वस्य श्चेष्टाय । प्रियः से हे रेटः इस्यायः स्वायः व श्चेरः तर्ने त्युर्याये वातर प्येत्। र्द्येत् सी दिवा त्रेवा भामात्र पादिवा त्या दे कवार्यायायाः व मिरालायाङ्गात्रम् याराज्यात्रम् विराज्ञीयात्रप्तर्यः स्त्रीत्रात्रम् स्त्रीतिः इययाः ग्रीयायद्यायदेतः व्रेन्प्रते व्यक्तिया क्ष्रियाया विष्याया विषया स्थ्रिया स्थ्या स्थ्रिया स्थ्या स्थ्रिया स्या स्थ्रिया स्थ्रिया स्थ्रिया स्थ्रिया स्थ्रिया स्थ्रिया स्थ्रिया ययानेराञ्जेया श्रीत्रेयायाले.क्यायात्रयानीययानेराञ्जेया नव्यानेलियाञ्चरा म्पर्कियःकरे. कुर्याः लूटे. तत्र १७ प्रयोगाः तथा देवुः श्रीका यपुः श्रीयः यो राश्रीका ता श्रीयोगः यर नुः यक्रिया ने निवानि वालम निवासी सुवावानि स्वीवायान् स्वीवायान् स्वीवायान् स्वीवायान् स्वीवायान् स्वीवायान याधीताया षोः यदेतात्र्यास्त्रयायदे शेळें योदादे प्रस्तायायो यादायादायादा स्वीतायो व् । यर्ने य उत्र श्री श्रुप्त स्थूर य लेगा वश्चयाया या या राष्ट्री या विष् हे भुभाग्राम से हिनाय द्वीत स्थान से स म्बर्यायर होत् द्वीया दे हिदे ही र वे वे के या हाया या या विता है स्वर्

यदैः भें ज्ञुन् व्यः क्रम्यान् स्रुवान् क्कुर्याचर्डेबाखूदायद्वाध्यां सिद्धा वादानुः वायवाले दासर्ने दुःवासुदया म्बर्यायाः व्याप्तिम् विकासी विषयात्रे त्युका स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर्याया स्वर धीन केश वान्त्र त्राकी द्वीन यत्र की देवारा है। वह सामुद्वीन वी न धीन की वार्ष र्दः धुरः पर्व दुः ययः प्रमुः कते प्रदुः पत्ने र्चयाया मृतिवाया मययः उपः ग्रीयः रदः रदः मीः क्रॅबायुवाबायाधीन केबादीन। ने नवा हु कन सुना तवादा रे पेनि बतर सवा बें के वे से द्वी सामका यो न सम्बन्धना यो न स्टारे वें न सम्बन्धना स्वर्धन सम्बन्धना समित्र समित् चायान्दर्दायायान्त्रेषान्त्रीयास्य स्टेश्चायन्त्रीयात्रायसायस्य वित्राप्त्राच्यान्त्रा ५८ से तद पते हिंद से का जी मार्ग द मार्ग प्रदेश मार्ग मार्ग प्रदेश मार यालयाः क्रुवाः वार्षेदः वयः वः सैवासः वादः धैदः षदः विदः धरः वेदः द्यादः स्रो केत् क्षे को सूर्य प्येत् वे रामायत् रेषा ग्राम विम् केंबा केंत्र केंत्र पेम मेत्र से प्राप्त ने देश ही रा मालव न्दर हो तद् नदे तद् र दु होंब्र य लिया द्यार्थे । यदे न र क्र दु हो नदे न र कद क्षिण हेर् : वर्षे र : सह्य क्षेत्र क्षेत्र सम्मा विकास क्षेत्र क्षेत्र सम्मा चलेवा विकास लेव सुरक्ता से माना स्थान स्थान स्थान स्थान हिसा इसमा । भ्रे.जम.लेज.क्रि.विट.क्रिम.क्षेत्रा । वर्षेत्र.म.म.मंबिच.खेश.तर. र्वेष । वेषः वासुर्यायः सुरः रे । वालवः यदः वर्वे : वीरः र्वयः यदः सुरः वीः वर्नेन्यालेषा प्येता सेन्। श्चीयाने सम्बन्धा महिष्या स्वाप्ता स्वीपा साम्येता है। केंबा प्येन हिमान्य तके ना घर निते ह्यें केंद्रा प्येद्रा नित्र नित्र का नित्र का नित्र केंद्र केंद्र केंद्र के तकै'न'धीर्वा दे'त्यरा'र्धेन'से'कगरा'तेर उर्व'तिरंग्नर तह्ना'यते स्थितर दे हिन

वियःयन्याञ्चः यःयञ्चः श्रेयःयवरः यक्त्याः वी वयः यासुरः।

स्वा क्षेत्राचन्द्रस्य स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान स्थान्य स्था

बिट देर क्रेका साम्या परि सुट हेर्ग्या पर्स्व पा

योशन् रें रहें म्यार्थित स्वीत्र स्वीत् स्व

यर त्युर र्हो । श्रेंब प्यन्या ख्या यी श्लेंब पा लया पत्या विवाया पति से स्वा हैवा'वद्वि'वैद'वीय'यदयाक्कुय'ग्री'वीय'श्नु'वेद्'वेर'यात्वय'यहवा'व'द्द'व्युद्र'र्दु'यर्वेद' यया क्षे क्षेत्राया वस्रया उद्गाय उद्गाया प्रतिव के । । दे प्रतिव प्रदे प्राप्त उद्गाय प्रतिव व यहेशयान्द्रासुन्द्रम् द्वेषाञ्चासे से हेषाश्रायदे चुरासुन हिनासे सामित्र हिनासिस से स মাধকানভূধি টুষ সুসারীমানার্থনে ভূমি এবা প্রত্তিপাকার্মার্থাই বর্ষার প্রত্তিপাক্র প্রতিপাক্র প্রতিপাক্র প্রতিপাক্র প্রত্তিপাক্র প্রতিপাক্র প্রতিপাক্র क्कुश द्ये पा विषा विषा सर पे सकेंद्र केंद्र केंद्र स्थाय १५५ केंग ५ १२५ साथ पा विषा परि श्रेम्बर्द्धायात्राचित्राक्षेत्रे,श्रे श्रे श्रे श्रे प्रतिष्ट्वित्।वस्रवात्रान्त्रे, देवात्रवात्राच्या म्बर् इस्य ५८ स्थापार सहस्य पर नर्गे द्रुष है। सर्दे द्रम् दे बिर द्रा रत्रात्रात्र्व, ब्रेट म्यूर्याया क्रीया या द्रयाया ख्रीत ब्रेट प्रदेश विष्य प्राप्त या व्यवस्था स्थापन क्ची:क्षेत्रा:बेद:क्ष्रर:द:दयवायाय:ब्रुवाय:हे:केद:येदि:दीर:विययय:दे:वेर्चि:५:व्य:द्वयप:य:य: ब्रुन्। देव यान्या बिरान्या। बर्या सर्वेया न्यया क्री में चे यह रेदेन क्री यावया। लबाय.ख्रा.कीय.तर्वेर.लच.लेश.पव्र्र. द्या.पह्रय. ५ भीषु:क्र्यायाजीयायश्चेर.चषु. विचर्यानुदःश्रेषार्यास्युः सदःषीः श्रेर्यायनुत्रः सूरः सूरे । चर्ते । चर्ते । चर्ते । चर्ते । चर्ते । चर्ते । उत्रः तुः क्रेरे अत्रः विदः विश्वश्यावात्र सुर्ते । यस्य अस्य स्वाप्तः स्वीदः ह्ये अप्यवितः বমম্ম শ্রেষ্ঠ্য গ্রীম শ্লুদ উল্বালীম দ্বিম শ্লীবম দ্বি ক্রমে মে গ্রেষ্ঠ্য স্থাম মে মারদ্য त्रमा क्री है यो या त्रम्य या उर्दे या दे के दे या त्र हो या त्र हो या त्र हो या त्र हो या त्र या त्र या त्र य हेंग्रय तुय थे।

মহ্বা'মধ্বৈ'ৰেঅ'বাশ্মমা

প্রাইয়া,প্রমার্থার,প্রান্ত্রির,রেট্রয়ার,র্যারীন,র্যা,রার্থিন,ট্রীর,স্থিনপ্রসারর,র্যারর,র্যারর,র্যারর,র্যারর, यन्दरा मल्दरायदायाहै दरासी हैं स्वीया सुदारी देश देश देश देश स्वीया स्वी चैरायया चर्याययम्यायायस्य क्षेत्रीयः कुर्धन्य प्रहृत् कुर्विर तर र्युयाया द्या श्चिषाचेत्रायराष्ठ्रायायायाकेरी । १२.५४.५५८ मात्रेत्रायसूषायदेश्वाद्यपाद्या ট্টিমার'বারমামরি'বৃদ্যী'বশ্লীর'র্মি'রিমানুম'ট্রীমান্রথান'রেবারি'বৃদ্যীমান্রমি। वेशपान्ते वेट्यानेना प्वत्ना प्युत्याना नेनान्या सुरानेना हुरावेतानुसासा कार्यनेता स्थापाने स्थापाने स्थापाने पर्सैयोयायर्थयोत्ताताया सेंट्रमुच प्रप्तिक्या क्रीसीया क्रिक्षेत्र क्री विवाय स्थर याच्चित्रायाधीत। योः र्हेन् स्त्रराधरातुः हवा वीत्रार्हेत्रायदीः यन् द्रार्थिः सहवा सहरा स्रम्या प्रमुप्त तकत् देश ह्वा वहिंद की केंद्र से शहोत्र सातु रातु रातु राति देश प्रमेश नेया रुषाने रायन्यायीयायन्य परि सेन् की निर्मिन प्रयायायां सेन प्राचन रे म्यायाय प्रमेरिश्चे प्रक्रियाय स्ट्रिश्च स्ट्रियाय स् तुःक्वाः प्यरः वश्चुरः दुर्या क्रैवाया देरः तस्रदः चुदः वया वः वेदः वीः तस्रे यस्तुरः वया वयदः देरः वहेंत्र या सर पु पत्रुवाया विरा वालत भेवा रें उंसा सर से विया या वे से से दे'चर्षाःग्रहःसहःत्य। दे'स्रीदःतुःचुःस्वाःवीःर्केषात्रस्वनःयःयिदेःवासुदःवास्त्रवाःप्यदः यवाक्किः मक्कुरु हैं। देवीरकाला देवरा उद्दीराचा भूषे तमा गुष्या वर्षम् वा वर्षे वा वर्षे व

वयमासामुद्दा देवे ध्रिय स्माप्त वास्त्र राज्यात ये ब्रिस या से स्माय स्माय स्माय स्माय स्माय स्माय स्माय स्माय वीं आवुषावतर। वर्देर श्रेंद्रायाद्दर हवायादेव ओदा आधीव हे के शावा वीं श्रेंषा सद्यः त्रमा क्रमायार्क्या क्रुन् त्या त्रवमा ग्राम्य व्या विमा सम् विमा सम् मीया यो वा त्या विमा स्वा सा ल्रि। दे.श्रव.क्र्य.क्रेट.चर.ट्रेप्ट.श्रेच्य.यी.क्रंट.क्र्य.क्र्य.क्रंट.क्रंट.जा.पट.चर्षवे क्रिय. तकर पर्दः स्नुप्तरा भीवा ग्राम् श्रीदः त्या दे दुर्शः द्वरः या वार्यया पर्वा स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता हेर्यायायर प्रश्नुर प्रयायाय होर्याया हो। स्नियया देर दिर सूर साहियाय है स्वाया स्वायाय है स्वायाय है स्वायाय क्षेत्र्यर संक्षेत्रं यात्रकर वर प्यर मासुरकाकी । माल्य प्यर विरित्त दि द्वा या वदमा बीयार्क्रेयाद्विन् प्रमृत्र क्रिंन् स्रूप्त स्वित् धिवा र्वेजा मुख्य म्यान्य प्रमृते स्वर स्वित् वि वें चक्क्या सहंद चलेव प्येंद या क्षेत्र स्थिय विवाह स्वय या प्युव सेट द वावका सेंद्रा ઌૹૐ૽૽૽ૼ૱ઌૠૢ૾ૢૼ૱૱૾ૢઌ૽ૻઌૹ૾૽ૢઽૢૢૢૢૢૢૢઌઌૹ૱ૢ केंबाइसबारे हिन्दित हु ब्रेंबा सूराया । ब्रेंबिंदि क्रेंविंद्य हुन या त्व्या सूरा यथा । १६२:११:१२वाय: १५४:१५ । १६४:११ व । १६४:११वा मुँदिःकेश्वायरः वर्। विश्वामश्चर्यायाः सूरावरीरः यदारान्याः सूर्याः मुँदिः वर्षे क्रीयानम् न प्रतिक्रायाञ्चर वा न त्येवायायते क्षेत्रायाची वा स्वान्यायायाया स्वान्यायाया तर्यायम् वित्रायाचीत् रेपोर्ताम् न्यायाचीत् यति सुर्विम नत्त्र वित्रायाचीत् यति सुर्विम नत्त्र वित्रायाचीत् य यीत्र लिटा र्शे स्रेतिः क्रुं नितिः क्लें न्यात्र यायाया नुदान रहेया यदि काया ना क्रुं राजि न्वेंबा नेतर हुँ र पन्वा र हैन सु तु वेवा के बाग्री वि त्य प्रस्त व बार्क वा तकन यातर्ने हो। नुषारवषाग्रीन्वरावीषाष्ठ्रयात्री रवषासृष्ठिते वक्कृत्यस्यसास्य वित् त्युद्र वी क्वृत्र दे सेवाय दावेवाय वात्र की यत्व द्वाय को दे दुः शुद्र स्थित वात्र केवाय र क्रेंबान्यात्रकर्यायायीत् स्रोत्। वस्याउत् देव सम्मान्या स्रोत्तरा स्रोत्या <u> बिर्</u>यस्त्र, श्रे. श्रु. हेर श्रे. इसका व्यासक्ष्य हो। स्थान स्थान स्थान श्रे होता स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स वा देवे हे विक्रं त्राम् सुवायावत ग्राम्य श्री सहत है स्वर्ग ग्राम्य प्रमास्य स्वर्ग है वबर येंदि वायाध्येत प्रका श्वीर वालत प्रतर से विष्ठा विष्र केन चेंदि तिविषाणिन प्यट हुं। चेंचिं केंकिया सुत्या नसन प्यास प्यस निवह की देवा या यमभावमा भै: वायावमा सुर्पयि विरायर्ग मी सर्मभाया प्रीव विराय्तामा वर्दरमदे के देव में देव में प्रत्या वित्र के प्रत्या हिन स्वत्र मुद्रे मन्द्र स्वत् चतःतकर्तःसःस्राप्तरः देः द्वायाया द्योः स्रो प्योदः प्याप्ता चन्द्रः त्याप्ता स्राप्ता वा स्रोप्ता वा न्भेग्रथः वुः ब्रिनः रुगः यः न्भेग्रथः यया वः यन् विनः यः वश्चेनः यः यभे । नेः सूरः र्थाः क्रियः प्रथमः क्रियः द्वाः प्रविदः व्यवः त्राः विष्यः । प्रवाः अविदः व्यवः । इव रेग हो। र यज्ञ स्राया वा वा रेग किंद में किंद दर्ग वा वा वा रेग से स्वार स् यश्चेषात्रषाळेषात्रद्रोधालुषाळेत्। देःवेषात्ररः मानेतः र्शेषायश्चिषायास्य प्रस् महेंद्र-यामञ्जूवाक्द्र। देवदाश्चिराशेष्ट्रीष्ठीयायवेषमञ्जूद्र उदाधिदायाद्रा क्केंबर्नुबर्म्द्रवायात्रादेर्द्रवायायात्राचीयायेवर्मायायात्राक्षेत्रेत्राचार्विः द्वितिः क्केंब्रिवर्णिवः बेर्यायहेर्नायराधी रेवायाहे। क्षायाद्दाहेर्द्राधेर्या श्रीत्राया स्रीताया स्रीताया विद्याले हेर हेरा श्चरत्रत्रत्रह्मायास्त्रीयायायदेः स्टायावियाः स्ट्रायाः तत्तुन् सार्स्केयाः के निर्वायाः । हे अक्र-पदःगिष्ठाः प्रतिक्षाः व्याप्तरः अवः क्वितः श्रावाः व्यवः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वय वयापतः वयापत सवितःतन्नः सम्प्रात्मा । वित्रात्मः द्वार्यः । वित्रात्मः । वित्रात्मः । वित्रात्मः । वित्रात्मः । वित्रात्मः ।

याः भूरादेरः स्नेत्रवाः क्रीं सुरावतुरावाः क्रीं व्यक्ति। देः भूरावत् देवः देवः देवः वर्षः देवः वर्षः वर्षः वर्षः बुँद्र यदै न्याय इयय ग्री दर्शे नेंद्र या क्रेंद्र कुट न्द्र क्या रेया न्वी दिया यहंद सी सुट या दर्से भार्ते व : नृत्व : स्व : वयाक्किंट्राचन्द्राचात्राच्याः व्याज्ञायाः विष्यायकटाचत्रायतः स्त्रीय्त्राच्याः व्याज्ञायाः ८८.४.ज.मैं.चयु.सूचा.कवाय.८८। रयु.जी.स्.सूच्.मी.स्.सूच्याय.सूच. कर् त्रवेयः क्रिन्दि र्राट्य यार विवा डिया डिया यायाया विट वर्हेन् याने विवाधी यो रा यर विश्वर्णेत्। नेतर केंश्वर् नह्यु स्रेन् क्रीनित्र हेंन्य नर ख्रेन नयस सुन सेन ૹૻૺૡઽ૽ૺ૱ઌઽ૽ૡૢૺઽૹૢૢ૾ૺૢૢૢ૱ઌૹ૽ૢૺૹ૱ૹૹ૽ૼઽૺૹઽૣઽૹ૱ઌ૽૽ૼૹૹ૽ૢ૾ૹઌૹ૽૽ૢૼઽઌ૱ૹૢ૱૱ चर-क्षेत्र-लेज-ब्रैच्याय-पर्नुद्र-ब्रिय-य-चय्य-पर्य-भ्रु-क्रिय-भ्रु-क्रिय-च्याय-यर्नर लुवायाय प्राप्त लेवा र्यो र तिवाय प्राप्त विवाय प्राप्त विवाय प्राप्त विवाय प्राप्त विवाय वर्षः वर्षायम् व्यवस्था के व्यविदायदेवे के दार्पा वर्षा वर वर्षा वर्या वर्षा व वर्षाहेब। बेचावहेब कुवै केषा रूटा रुषा या महु कुवै में रेवेब यर प्रथा क्चें निहर न है केंबा वही निवह सक्षेत्र निवेंबा हैं हैं स्पेत्र हैं ने स्वर अहें र निक्षा है सुन्या वर्षुः येदः दर्गोवः यर्केनः नशुयः यः प्येदः रहेयः यदेः स्ट्रेटः वया ययः दगारः वनः दनोः मूनानी कुंत्रवर्षायातहें या दावसुंता यो दारा में दारा में दारा में विकास करा है वा स्वार ক্রিঅ'বাধ্যুদ'মার্ন্'ব্দ'বভম'ঘার''দ্রব্রাদমার্দ্রর'বারবিঅ'বরি'ঐম''মব'ষ্ট্রীর'ম''দ্রবা'আই্ট্রিম' क्षेत्रवींका वेंकायार्श्वेव केंद्र योद्यायती द्वाद पुरा द्वाद पीव प्याप द्वाद पीव प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त

यायातवर्यस्य श्रीमार्यः। देवार्यस्य देत्रायम् देवार्यस्य हेवायास्य हिवास्य विकासः तुःक्वाःबीयायवः नुः स्रमः क्रेंब्राः ने प्रमृदः विदा ने प्रविवः नु। स्रमः व्यान्त्रः स्रमः स्रमः विदान ख्या । ने त्यः श्रे र प्वते दर्श्यः मुत्रः हो । विषः मार्युद्धः प्यथः व। ५५ प्यः यो ५४ वः व्येत्रः त्रुत्र त्र त्रुत्रः प्रदूरः प्रदूरः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स यक्षेत्राव्याने ह्यूता ग्राटा भी तुत्रात्यात ग्राटा भी त्यूता ह्यूता विंभाष्य से भी ने हिंसू भाषा वै। र्केशः सूर्यः र्सुत्यः संस्थायः सेषाः प्रदेशः ह्याषाः प्रीवः होषाः क्रेवः स्कृतः स्वेस्र स्वार्यः स्वार्यः श्चेन्यः क्वाः यर्केष्यरः श्चेतः दुषाः यः तर्रः रहेषः वीनः नुष्यः वीनः नुष्यः वीनः नुष्यः वीनः नुष्यः वीनः वीन र्यया प्रमानित स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र त्यरामुद्रमुद्राधेद्रायरायरायरायाचद्रायरायोग्वस्रयराद्र्यराक्ष्र्र्याये न्वींबाक्षरा ने सूराकेंबा वेंबारान्दराचब्यायानुबाच्या वर्षयायान्दराक्कृत याञ्चरातानुषाम्बन्धेन कुनायाञ्चरातान्दायमायोगानुना यरः श्चेरिः द्रवेशि श्चे। देः सूरः सः धीवः यरः श्चीवः स्यान्ववाः वः वावदः श्चेवाः पुः श्चीवः यः सीः श्चित्र। र्केट्ट्रिक्ट्र यानर्वेद्रायानर्बेद्यानुः केरतह्यान्तेत्र। देरद्राचान्नेद्रायानान्नेद्रानुः स्थान्यान्ते लट.शु.उर्चिय। ट्रेश.य.पट.ब्रीश.पट.शु.चर्राश.त.ब्रीड्या.क्यट.शुट.तथा व्यवय. व्यः वार्वेन् यः स्रुव्यः वार्वेन् यः स्रूरः व्यः स्रम् वार्वेन् स्रिवा स्राप्तः स्राप्तः वार्वेन्। ने चलेत्र मालत् यायत् मान्मारा ते सुरस्यू टानु मालत् यायत् र्योन् यायर सुमार टायाने यशः भ्रमा यदे यद या द्वूरा ग्रम्बद महिंदा महिंदा प्रस्का महिंदा प्रदेश भ्रमा र्थाय.क्री.क्र्य.लूट्य.ह्याय.चर्च्या.क्रीट.। यावय.त्रय.याबु.ट्ट.चक्र्य.च.झ्या.त्रर. वेया केत की केंग पेट्या सुरत्। यी कें ते में या वेत में ते से से ते हैं साम प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्

युव देर ह्वा यहव क्षे ययय हो सुरा स्वर व हिर से दुर विर । व स्व्य देवें या स ॱॸ॔ॱॴॿढ़ॱॴढ़ढ़ॱज़ड़॓ढ़ॱड़ॕढ़ॱक़॓ढ़ॱॿॖऀॱॹ॒ॱॴॿऀॱॸ॔ॱऄख़ॺॱॸ॔ॱॱख़ॱज़ड़॓ॱज़ॱय़॓ॱढ़ॹॗज़ॱढ़ऻ ह्में यदे सेस्र यदेते दर दुसर्वे देश ही यदे यर या से द सा होत हा हो तह विया र्षेत्रभेत्। देख्यासप्पेर्यस्थेर्याम् वित्रस्थेर्याम् स्थित् स्थिति स्याति स्थिति स्याति स्थिति स्या स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति यर-द्राचर-द्राक्षदाक्षेत्र। क्षेत्र क्षेत्रिक्षद्रिक्षिः कष्ठिकाः व्यवस्त्र क्षेत्र क् थेन्। थयान्चःतानुरायान्। त्रमःत्ने नुरावीकेन्। स्वरावीकेन्।यासे विने स्वेरायदः। यदे केंद्र क्कें क्ष के लेगा थेंद्र द्या विदे क्काद कर मन्य प्राप्त प्रमुख्य विदे केंद्र यन्दर्भोक्तिः यन्ते लेगा थेद्। यन्दर्स्य अदः के याम्बनः श्रुकि थेवाया भ्रुव विव सर्वेद न वदि देव दे सर रद भ्रुव धिव है। से विद दु व व व वर्ष वानि सुरासूरायायार्रेयातुः सूरासेन्। देनायार् रेयार्रा सामितायान्या। ৾ঽ[৽]য়৾৾ঀৢ৾ঀ৽য়৾য়ৢ৾য়৽য়৾ৼৢয়ৢয়৽য়ৢ৾য়ৼয়৾ৼয়ৢৼ৽য়৽৾৾ঀ৽য়ৼ৽য়ৢ৾৽য়য়৽য়ৣ৾৾য়৽ড়৾৾ঀ৽য়৽য়ৄৼ৽ र्रे । अर्देरवास्य प्राप्य प्राप्य प्राप्त कर्न क्रिक्ट स्थित । निवास विकास स्थान चनर द्वारोग्ना हेया क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा चन्त्र विष्या चन्त्र विष्या चन्त्र विष्या चन्त्र विष्य र्वा खेत्रवर्रद्राच्या विष्या द्वेययाया स्टाहे चलेवा मालवा यादर विषा से यर्वा सूत्रा वयाम्ययान्तर्भीराहेत्याप्यानुन्देत्। देवायायायराम्यान्या श्लेट हे श्ले 'प्या रोग्रया उत्रायेद न यह या क्रिया की में त्यह प्या है सूर वित्र याञ्च याञ्च यातृत्यार्थे सूयायतर से सूर्त यत्न त्यत्य स्था से प्यार्थे प्यार्थे र तुः तह्या हे त्या

ब्रुव:ब्रेट:कुंव:पञ्चातक्र्य:व। यद्यायक्य:रयाय:याञ्चात्रय:याञ्चात्रय:याञ्चा यें तर्ने त्यः क्रुन् न् त्व्यान्दः त्रयान्दः में याक्कान्यते व्यानमें यान्ये व्यान्यते व्यान्ते व्यान्ते व्यान यर र्रोबिन ग्रीन थेन सेन्। धेन पर बेसका थान्या पर वर्षे वास्त्री राजा मुक्त विदा वश्चुरवर्डेबादवींबाश्चदार्डेबापदायावरावराकुण्यदायान्दरं द्वायदा र्वेरम् कुरम्यंता वहेवाहेव विष्यं । द्वायापर वायावि वारवावी दे यो पर्वे पक्क दाने दाने प्रमा अंग्रमा क्रिया में क्रिवाय क्रिक् प्रमान प्रमा नेतः वार्ष्णवाः र्यः त्युरुण्टवाः वाष्ठ्रेरुण्युवाः वर्ष्ययः श्रीः वर्षेत् ः यत्रः तस्यतः श्रीतः ने। श्रीः यदः र्थेषः रदः श्रेवा वर्षेद्रः ययदः श्रेश्रयः श्रीश्राययाः श्रेति वर्षेत्रा वर्षेत्रा *वै:*न्येर:व:क्रेंचर्य:क्रुट:वेंट:तुर्य:विव्य:क्रेव:श्रे:ब्रेवा:केट:तुट:व्यय:श्रे:केंन्:य:न्ट:वर्ड्] शेसराग्रीराञ्चन् देवा सदि प्युन्य वर्ह्याञ्चीन द्वीन स्त्रीन स्त्रीन स्त्राचन स्त्रीन वास्यापन भ्रीरकेंग देपलेक् भ्रेपन नर्पे में निर्मा महार क्षाले मार्ची भारत है अपने स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स सदर ह्यें स्नेन् केवा सावाकेवा वीका इत्यास स्वरा भीता । ने प्रवित सी प्रता वीवा वीका तह्राज्ञीर सुर न्याया था श्रुर यतर स्निन् हेवा वहिवा था द्वर धर द्वरा हेवा श्चिरः यहराया लिया प्येतः प्यरः स्टावीः श्चीः स्वीतः याः त्वीतः होतः दरा देशीतः स्टावेः विक्रिः न्रायुष्यायात् वास्त्री याते याते विवास्त्री धिष्यः स्नुन् देवाः यात् वास्त्रीय । देः सूरा चुेंद्र-स्रोत्रास्प्रीत्र-त्य-दृत्युत्य-त्यन्येत्र-चुेंद्र-ग्राद-स्रोत्रास्प्रास्प्रीत्र-प्यास्रोत्रास्य त्यास्य वह्नान्नेया क्रेंचयन्दरख्नायदेखेययन्तर्यकेत्यकेत्र्याकेत्वानेः

ঽ৾ঀ৾৾৻য়ড়ৢ৾৾৻য়ৼ৾৻ড়৾য়৻য়৻ড়৾ঀৼঀ৾৻য়ৼৼ৾য়৻ড়য়৻ড়ৢয়ৼড়৾ঢ়ৼয়য়ৼ৾য়৻ড়য়৻<u>ৠ</u>ৼ৾ঢ়৻ र्देर-तु-वाद-क्ष्मैवाबा-ग्री-सुद-वि-विवेद-वर्देर-देबाव्या दे-तुबाद्यर-बोधाबा-विध्यवाग्री: तुषानवदः विषा तकरादेषा ध्येष विषा । देषाषा खूष विषा वा निर्वेष खुषाषा ग्रीः त्रवर्राक्षाक्षात्रे विवासित प्रतान्ता व्याप्तान्त्रे विवासी प्रतान्त्रे विवासी प्रतान्त्रे विवासी प्रतान्त्र र्देश्चर प्रायुर प्येत् प्रति देश प्रायोत्। रे स्या येवा वीश्वर या संबंद प्रार्थ या श्वीश प्रदेश हो हेन ज्ञाबन येन पर ह्या ये नुया ग्राम के सूर प्येन हुंया पर स्वाप्य यया यह ही ये केन है। बिट ह्या ग्रम्भ स्रेन ग्री तहेवा हेव विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य तहवाचिन्। सम्रतः नृतः च्वा प्रते केंस् होन् भी देवा पातस्य स्यास्य प्रेस के स्वितः वित्र सम्मा केटा देवराञ्चावायोदायावी यह्या क्रुया श्री यो यो विषय श्री हिया यायोत्रायते द्वयान् श्रीन् श्रीक्षेत्राया यायो प्रताया यायो प्रताया यायो प्रताया यायो प्रताया यायो प्रताया यायो चगातः धीः इसा चालवाः ग्रामः श्चातः स्थानः द्वाने वा त्यातः धीनः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान यर देश श्री । यर्दे क्रिया यहिया हु प्रसूष द्या । यह्य स्था प्रस्ति रह प्रदेश बिटा क्वेंद्रायाम्बर्टायमाम्बदायदेवें। ।देवे:क्वेराद्वराद्वरायमा लूर्तात्मश्रीयाक्षेत्रारीयक्षेत्रायाव्ययाव्यत्त्राचीराक्षेत्रात्मीयायात्रीयात्रा त्रमञ्जूषा न्त्रिरायरायहूर् क्र्याचा द्वान्र वेषायव्यव त्या र्यन्य स्था क्रुव र् न्युव वयावावव यव न्युट रुव री यो यो या रे क्रुट या क्रुं न्य रवन पर री या त्दीवीयम्यस्याद्याप्ययाप्यतीयाप्रयावीयावित्यादिक्ष्या

हेन्-चले-चर-द्विमायार्थ-मिन्सम्भाग्याङ्गीमाकुषा-कुषाःश्चेन-विन्नव्यन्ना

सक्तर्यात्रदेरः परः तुः रुवाः क्षेत्रः क्विनः परे दिवा हिन्। वितरः हेतः दिवा हिन्। देवरः हेतः दिवा क्षीः भूतिः वार्ययः सूरः श्चीः विरः श्चीं स्राया देः स्रीः सुरुषः यः दवाः वीर्यः विरः दिनः द्वारः श्चीः विदः चुत्रअ दिन क्षेष्टिया यो न्यर मिलिया श्री यार्ड्या हु यश्चेर्या ओ नेय वेष्ट्रिया नेति स्रेन हु तेर् नेर ह्ये न सूर्व द्रीवाय देया यह हिंवाय रहेया लेवा न यह प्रति । यह वा सहर श्रेयशः इया हेर्गा तत्तुवा नवे नन न नुः संस्था में रानर रहा में श्रेयश के न नहा समें स्थित न्यवा सेन् श्री स्वायान्त्री र सेन्या केवा वर्षेया सुः सुर स्य के प्यत् से प्रीयाया प्रति प्रत नुःतहेनाः अः नेयाः द्वेषा अः प्यानः अये यात्रः ये ययः हेना नीः नुना सुः ये न्यतः निर्मा रुःदविरः संक्षिण्येदः दयाद्युवायया बदः कदः यदः यया या या विषा सर्हेन । १९४ वा १४ वा रायर विशेषित देश निया मार्थित विशेष मार्थित विशेष विः सदः हेतः वास्तुसः धरः होदः विस्रसः होदः चित्रः द्वीवासः देसः होः द्वावाः सोदः ह्युरः धराः हीः कें ना न्दर सह्य स्वरा अनुव क्षे वस स्वावर सर्वे व से दिन न्या से न न न योत्रमा स्थानितः क्षेत्रः स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य न्यतः सञ्च केत्र वितायात्रकाः वार्डे तिवितावासुसा क्षीत्रे विवासा वार्षायात्र वा अवर तेर्- नु. लु. द्वार र से अवर क्षेट्र वाया अवर त्वावा ओन् शी हैं के निर न्दी र ओन् नु. शुरूर वर वर्ज्जेश्वर्या दे देर रूट की श्चेष्वा द्वा स्वर्धि वर्ष स्वर्धि वर्ष स्वर्धि वर्ष स्वर्धि स्वरंधि वर्षे स्वरंधि स्व यरे.य.क्ष.क्री.ब्रेट.विश्वश्राहेब.रट.यहेब.त.री.रट.क्षेट.लूट.तवश्राट.क्षे.ब्रैट.यपु.पह्नी. हेब १२६ हिन पने पाउन की लिया प्रथम पीन पर प्रथम माने पाउन पने पाउन पने हों हैं। चयुः क्रिंदिर सुर्धिर विषय अत्तर्भिर क्षेत्र क नुःचर्क्केर्यायम् वुःक्षे। नेतरः नः वृःमरः क्षेनः तन्त्वाः यतेः वावयः तन्ते वेः मैवः ये केः कूः क्षेष्ट्रिट न्त्रा ये के किया यू वर्षिय यादी सुन्देश स्था याद्या याद्या याद्या स्थाप क्रमा निम्दिन् मर्बेन मर्बेन मर्बेन मर्मिन में भाषान्य ने भू मुद्दे लिया निष्य भी न्तुषासु देव भे के भर्के ते इसामर सूर नते ग्रुट कुन हे विर विषा ग्रुप्त न्दर। देवे इर-इ-र्वेन्यदे केंब्रायर-इन्यर सुन्यदे न्वया सेन्यर वेश्वा न न्तुषासुःन्वाःवाष्ययः न्वःवदेःवेदः न्रेरः उत्वेषः यदेः केषाः श्रीः विः यः यवीतः येविः न्यवाः मेर्-१८१ म्यायाम्पर्न-१,तयम्यायाम् मान्नेया वर्षेत्रम् स्याप्नेया म्बर्याद्रदायक्रयायायदार्थेयावर्भेदावरावययात्वेदा। रदाक्षेदादेवीयद्वर्याधीयोः र्नेजाःयज्ञतेःस्ट्रेटःस्यानेःस्रुवान्याः वयान्यान्यः क्रुःकेतेःकेवान्त्रन्यत्वेतः व्येन्।यराययया नेतर में र नु नम् न निवास निवास मान्या मान्या मान्या मीय के या सुन क्रिया से नेयःविरःश्चितःवित्राः भरःशः तर्वाः श्च्याः यत्रयः यः व्ययः यः व्यव्याः व्यययः उद्देशद्रद्रेश्चेयाव्यार्थर क्रिंट क्रिंट वस्त्र व्यायार्थ व्याया क्रिंट स्थाया व्याया क्रिंट स्थाया व्याया स् केन-नु:धेन। ने:श्रेन-नश्चेन-हेन्न्याः क्चेंकेन्नाः श्चेन-हान-प्य-न्यनाः सेन-सूर-प्यसः क्षेर्य। र्वार्यक्रिय्वर्वात्र्याचुवायदेव्ययुवास्त्रेष्वरार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वात्रः स्वार्वेत्रः स्वरंतेत्रः स्वार्वेत्रः स्वार्वेत्रः स्वार्वेत्रः स्वार्वेत्रः स्वर गरसेत्या वेषःश्वायाग्युरयायाः भूरतस्रोत्याः क्रीतः क्रीः भी ने दे दिन् क्रीते स्था मोरमान्यासुर छेट दे हेन्य इत्यर ये तद्वारा सेंद्र दर स्वार सुद्र विकास नु रे भीवा यश है अदे न् मुक्त विकास राज्य रहा वी इसायर ने सामा भी वी हैं इत्सर में यस द्रन् चेरत्युंचा तयम्बारायामर्हेना बोमबाउन् द्यीनेन पुरासुर तर्नु या वर्षाया च्रेय.ज.इमानाक्र्यायानभ्रम्भात्म्यात्मेत्रात्मेत्रात्मात्मेत्रात्मेत्रात्मात्मेत्रात्मेत्रात्मेत्रात्मा योश्याःश्रेदःस्व याद्याः वीश्वःश्रेयाशः क्षुदःश्रेष्वे द्वीः वीष्यश्चेदः क्रेयाः हुः श्रद्धाः स्व यश्चर में प्राव्धियान मन्त्र मान्या मीयानी प्राप्ति मान्या मीया प्राप्ति मान्या मीया प्राप्ति मान्या भीया मिन् यं उत्र क्षे लियावस्य सुन् त्यू वेता प्रेन प्रमास्य स्त्र । लिया ने स्त्र स्त् योन् क्षेत्र्न्य केरा त्या क्षेत्र प्रतित प्रतित प्रतित वित्र प्रतित वित्र प्रतित प्रतित वित्र प्रतित प्रतित वि र्क्यायमायायवीरासेन्। क्षेत्रावेमायहेन्यावनायदेरासेन्यायावसम्यन्त्रस्या बूद केंब्र यत्तु व्य बूंद श्राय होत् यादे हैं यवद से देत्र दे हैं अंतर दूर देशेंब्र केंब्र हैं तर्विषाः याः विष्यः प्यरः तर्वे त्यूरः रषाः चरुत् श्रीकाः केवायः कृषः याः वे तर्वे व्याणाव्यान् ग्रीवः वे लेव। वर्ष्यवायालीयान् श्रीमान्त्रमान् ढ़ॗऀ॔॔ॺॱॺॖॱढ़ॸऀॱढ़ॸ॔ॱऄ॔ॸॱक़ॢॺॱय़ॺॱॾॖ॓ॺॱॺॖॱऄॱॸॸॺॱॻॖॺॱॹ॒ॸॱॸॖॺ॓ॱॻॱक़ॗॱ केंद्री । सर्कस्य सद्देश सर्वोद्गर्शेद्देन द्यमा सेन् स्य मर्वेद्य प्राप्त देवस्य यरे.य.क्ष.रे.क्षे.यर.व्रेष.ब्रीकार्क्स्यका वेकातात्वयावीर्थकात्वीः क्षवरायक्षेत्रात्वरात्वी देवर धेवा दें शे केशय क्वर यें इससाय प्रमुद्ध हैं वास क्वी दें र र्डस दु वदे हैं दास बिटा बेस्यानुषान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र यार्चेरान्ध्रमान्यवान्वेषा वेषान्यस्यात्स्वान्ध्रम्यतान्द्वर्यान्द्रमान्द्रवान् सर्वोद्गः भेरित्र द्रम्याः सेर् त्यायार्थेया नात्र त्या नात्र त्या नात्र त्या नात्र त्या नात्र त्या नात्र त्या

चूँचर्या बुर्याःसून, दुःस्यासुर्याः मुस्याः हेर्याः साम्याः प्रस्ता देःसूरः पश्चेतः। देशः ५८ वर्षेयः प्रदेश्वायः प्रक्षायः प्रक्षायः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः स्त्रीयः वयार्वोदानु पञ्चेत्रायदे पदे पाउव क्षेत्रित हेव पहेव या द्वाप पठ्यादे न तु वया पदा प व्रियाययायर ख्रेययाळेया सुदिरे हे चिप्पानुया द्वापदि यह प्रतिन ह्वाया सुद्धाया य'तेर्-द्रयम्'सेर्-श्ची:ब्रुम्स सुँग्रस्य युदे:क्चुत्य'यदे:पो:लेस-र्-महेस्र-स्युःस सर्द्रसः यर:न्द्येर:येन:नु:श्रूर:यदे:८८:नु:हे:W८:ये।वयय:वे८:व्रट:नुदर:ये:हेवा:य। र्श्वेषाञ्चयात्रसास्रावदाः सुर्वदेष्टरायास्रहसायराज्ञता छिरा। ५५:५८:स्रीटा हेः नर्झेम्यायान्त्रसुम्बाद्धम् नार्डना तृ द्वीया तृ द्वीया मास्यो न सी दर्दा तु से दिन स्मारासा स्थाया यावर्यायर मु:बेर्यायायुर्या हेर्यायाव्यायर माने प्रवेश मु:खेराया विराज्या माने प्रवेश मु:खेराया विराज्या माने प्रवेश माने प्रव त्यराक्टरावदुः ब्रुष् स्प्रक्षया सुःश्चेत्रया है। ह्यर क्चेत्र सुर्वेत सुर्वेद र वेद्या है। क्रूम, विट. वेट. क्री. क्रूम, ता. ह्यू. ह्युंच. व्याचा व्याच्या विष्या विषय । व्याच्या विषय । व्याच्या विषय । वी'वार्षाया'सूर'न्र'सी'वज्ञय'वर'न्'सूवे'सूर्व'झ्रायर'न्वाय'वने'व'ठ्व'क्ची'बैर' पिराया पर्वेट देशासर रेवा साराया की या विकास है। रेवा वा केंट्र केंबाक्षुः ङ्गान्वह्याध्येषः यम्यञ्जेषा देवरः सध्येषः यात्यः धेषः यमः वर्ष्क्षेत्रः याः स्रीषः स्रीषः हैः व्याः भीत्रः प्रसारत्व्याः प्रदेश्यः प्रदेशः साम्याः प्रप्राद्यः विषाः स्वरः प्रसार विष्यः प्रदेशः स्वरः स्वरः बूदःदेर्श्वस्रक्षरुदःद्वायरायकर। देःसूरस्यद्वायवेःबूदःदेवेस्यद्वायद्दा न्यायदे सूर देर न्याय यहिषायक देव या यावकाय या यार प्रवास देवा प्रयास दे मूरायां वे सार्वा व्यापायां ने प्रवेश के स्वापा के स्वाप

मदः स्रात्व्यायदे सूरायाय विदावी । क्रम्या सेराय रे सूर्य हो यदे द्राय है स बुनःक्षेञ्चित्रवार्द्रवात्व। विवायात्रे सम्मान्त्रवात्त्रवात्त्रवाह्यात्रवार ववार्द्रदा न्यायदेखेर विस्रायस्य प्रतासम्बा इट वन् मेर न्यायस्य स्रायदे प्रयास व। वियासमाधिरायसमामाक्षीम् र्स्व क्रियामामामा क्षीप्रयापनित्रम् । इसायराद्यायदेनियाययापदेपाउन् । नियाययापसूत्र। देवर-द-ख्र-वदे-व-७४-क्वी-वाग्यय-सूर-व्य-वीग्यय-घर-वुग्य-वीर-व्विद्-धर-अवीद-धि-दि-न्यमा सेन न्द्रम्या स्थान निर्देश सेन निर्देश सम्भावी स्थानिया सेन हिंदा सेन स्थानिया स्थानिया सेन स्थानिया सेन स्थानिया सेन स्थानिया सेन स्थानिया सेन स्था सेन स्थानिया स्थानिया सेन स्थानिया स्थानिया सेन स्थानिया स्था स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया हे.जीयायह्यातपु:श्रेपयादी क्र्यायह्रकेप्युः हे.यायीयात्रात्रः श्रेप्यायीया नुषासहसाधीन यासूर। से वार्डर विते शुष्पादि क्षुर वान्र समे विते से विन निया योदःश्चीदुदःदुःवेदःशुकादुदकायायसूकानेःश्चीतायोवःयायानिकादुकायान्यायाने। देः चल्रेन'र्'तयवायायासुन्यस्याचीवायाग्रीलेर विस्वायार्भे चे चे चे चे प्राप्त । बर्या श्चेंत्रायमायन्त्रायने वित्वश्चेरा श्चेरा श्चेरायने वास्त्रायने वास्त्रायने वास्त्रायने वास्त्रायने वास्त्रायन बुषान्द्राधीतुषान् भूर्याच्याचा विष्या कुष्या विष्या कुष्या विष्या विष्या वर्हेन् सेन् नेन्या कुन्द्र पेर वद्यं कुंया में हिन्द्य वद्या सुर प्येत्र ने हिन्द्येत्र कर क्ष्यराज्येत् स्त्रान्त्र प्रवास्त्रीया क्रिया निवासीय देवर वित्रास्त्रीयया निवासीय वयःश्चेत्रायःर्ड्यःश्चेत्रात्रीर्वाययःहेवःरेयःश्चेत्रायदेःत्त्रात्वेत्रःर्यत्रात्वातःश्चेताः चुरान येग्रा दे सेन से सेंदि चु ग्वानगम् प्येन पर रस ग्वीस रहा या तकर योष्टित्वयादेशायरायहेवादवीस्य देशोदान्द्रम् स्वर्धितः स्वर्धान्द्रम् स्वर्धान्द्रम् स्वर्धान्द्रम् स्वर्धान्द्रम्

वरत्रधुरःश्चेत्। व्वेत्ररेरःकुर्केत्रवाद्वेत्रात्रकुर्वाद्वेत्रात्रवाद्ववात्र्यवाद्ववात्रात्वहर्वेत् हेरावि। ज्ञारेराववा सुराष्ट्रा वेरिराज्ञावावरु वहिरापेर्या यादेव हे सावसार्स यःगवयः व नन्गःगे र्रे स्र्रेन्यः के विगानसूनया र्रे स्रोनः यः के विगासूनः चर्त्वतः भेर्नः। कें सूनः या कें लेवा चर्सूनः नवें वा मार्वे रक्तरः वाले निर्मा वालवः स्रीवाः चर्चेचयात्रात्रेट्ट क्षाय्यात्रात्र्यात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्रे नवींया वाया हे क्रिन क्लें तुरावायकी यन्या वी यस्तु सास्तु न दे विकास ने दुसा वार्ने र येव तरी सूर होत प्रथम कुरी सूर्व सी तर्र लीया होत प्रवेश वालव र तरिया हेब विद्येरा वदवा विवासिक सिदान सुर उउ। मुन समा सिदान सुर उउ। लेकायाः भूरः सुका विद्याप्टः देवे हेका सु क्रुवाया भू तु लेवा के देवाका यर रदः वी प्रकार यदे वाहर से बिवा से र र वे स्था र से से र त र र र र वे कि से र विवा की वे र र र से र स तयवामा नेति: ध्रीर छिन् उच्चा वीमा है। सारे रे रावित ह्येस क्विया पति नुमाना है। यालव या र या मह्मिया किया मुना प्रमेशिय लेया यथ प्रमेश यहे ता प्रमा स्था शुक्र या हेर् सु यरक्षे'तशुरावरामा वर्षा भूता दुवरावशुराष्ट्रीत। वर्षावारेषा सेतामर्कराया यनरःश्चरःया तमातःरेषःब्रिन्:ग्रीषःके:बिमाःमञ्जीबःयःधीवःबेषःद्वेःव। देःदुषः रें मोर्वेर से नर्मे स्वायर रस्य यहे य उत् नु हु यहि हु यहि ते हर में हित हिर विस्था पीन याचेर्यायक्षेत्रायत्वेदार्थेर्छ्यायदायम्याकेषा देष्ठेत्रदार्थेदातदीदा यदारु र्देव वा रहा की बार्डी हारा या वा हिवा बारा होई हार से हारा लिया प्येव लिया हुए होंगी बारा है दें ष्ठीरकुं विवायमामायमा क्रुयर्के सूर वुद्राविद्राया सम्यास्य निवास्त्र दुर्सु विदेश कुं रेयापत्रिन वर्षेवा प्रवेषायायया सूर्यया वर्षेवा हु केतायी त्वापत्र व्यापा

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

व्ह्र्या हेत्रा व्याप्त क्ष्रा क्ष्र

यह्याः यद्यः पर्देः द्वेत्।

त्री स्ट्रिंग क्रिक्ष त्र त्र क्षेत्र क्षेत्र

बुर-रेग्, पर्ये की. ही. बारा १२८ विया माना विषय विषय वाक्रा प्रश्ने प्राधी. लूच. चिर-केच.ग्री:म्.यसर.ज.पम्रीर.तपु.मु.र.इ.चर्ष्य.पहनातपु.रचिरमार्टर.पत्रमानाता गुत्र हु नवर में सेवाय ग्रीय तर्शे नदे ने ने हु त्यूर नर्शेय या निवेद नु नर्शे नदे सुवाय तर्व वया से जावर प्रमाल्या प्रसिद्ध स्वाप्त दे प्रसिक्ष सम्बद्ध स्वाप्त स्व स्वाप्त स् हेन्। विवादयानेयानेयान्त्रयान्त्रयान्त्रयानेन्छिता व्रिनेन्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्र इत्रा वव्यक्षरायाची ।श्रेन्यवे सर्वे स्वर्धात्य वर्षे व ।वहस्रान्यवा न्यवःविषाक्षेत्र्यः अद्विष्ठायान्यः। ।गाषाक्षः प्राचन्यविष्ठः । ।ने न्वाःगुद्रःक्वैःहेशःसुःचन्वाःक्वेनःध्वैर। ।न्वोःचःवनैःन्वाःवस्रशःउनःरचःमुः पर्के । पर्मेथ.तपु.रेतज.क्री.मं.अपु.र्थयम.तर्नयम् । पर्मेथ.पह्न्य.मुन् तुषाषाक्षेराधेराधेर्यायाद्वित। । निष्मुषायदेः श्चेषात्रम्या स्रदाः वर्दे रातः क्रिया । प्रस्नेद्राया स्वर् द्रिया विषय । स्वर् से प्रायत । स्वर् से प्रायत । स्वर् से से प्रायत । स्वर् से स उत्तर्दर:द्याया:ख्रुव:ब्रद:या:बेका | प्रज्ञ:देवा:वर्देव:ब्रवका:या:वर्षेयाःवः यर्वयम् । प्रस्त्रयः प्रस्त्रयः द्रदः म्यावयः प्रदेशः विषयः विषयः प्रस्त्रः । स्वयः प्रस्त्रः । यतः क्वितः वार्डवाः स्ट्रेनिः क्वेतः य। । वन्तनः श्चितः वस्त्रेनः यदेः स्वरः सन्दर्गायः सेनः म्चीरा । यर्द्धर्यायेनम् यद्भवायाय्येन यम्भवायाय्येन यम्भवायाय्येन यम्भवायाय्येन । विविन् स्थ्रायाय्येन यमभः क्षेत्रः यमः तहेत् क्षुरः देव । प्रथयः ख्रुतः मावमः चुतः द्वेः पर्वः वार्द्ववाः वीः

वियःयर्गाञ्चः यःयङ्गः श्रेयःय वरः यक्त्रीयो वी वयः गर्यरः।

क्चियानः ह्रेनियाक्रेवः य। विवासे स्टेश्याम् विवासियाने स्वासीयाने स्वासीयाने स्वासीयाने स्वासीयाने स्वासीयाने र'वर्ष'र्भेगमा स्नूर'स'रव'रेव'सर'से'५८'। ।स्नु'स'वेथ'व'रु'तुर' न्दा । क्रे.जयाञ्चेनान्दाञ्चेवासान्। । तत्यानुयाकेयाक्यानास्याना चल्चा । सम्बरः भ्रुमः या सम्बरः सेन् स्त्रीमः चतेः चुन्यः या सम्बरः या चन्यः भेन् भूट वायय प्टर नु र्सुर या येवा विह्नेत सेन रह वायय रेवा परि स्था भूवाया व। विश्वराभेन्यने केव लिन विस्राया वर वया होना । सामर्थ्या सेसा होना होवा हेंद्र'त्व्वुव्य'चर्षायाचञ्चेचर्यायम्। ।यात्युर्यादर्वे च'गुद्दाक्चेर्यायर्वे चरा र्वेष । डेथः अर्ने श्चनः विः गार्ने रस्य व्यव्हान स्पृतः विश्वा विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः श्चितःश्चिरः रु.यः तहस्र न्वुरका केवा क्षी ह्वी ह्वीका सु तर्वे न प्रकार्वे न स्वा ह्वा का सेवा ह्वा त्तरः क्षेत्रः तान्त्यः तम् स्रायाः विदः तक्ष्यः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्राय वेंद्राक्षेत्रुः वेंदिः ज्ञुः विश्वायदेः क्रेंशायङ् क्वायासुरादहेँ समायदेः दुर्शास्त्रेशास्याः हुः द्वीः य। भक्भन्नः भी अहिया जाया ना स्वीता सार हितर । यहिन अवीत से विता यह या म् अदे त्याया से दे हिते या सुर यो क्षेत्र त्या से हि से द त्या से हि गीय हैं देर बुर क्रियाया विदाय रामाय अध्यायकी गीय परे क्रिय देश हैं देश तदेव'मदे'श्चम्यानश्चेद'वन'र्योगोग्यायोद'र्योदयास्युत्वयुत्रमदे'कु'रु'शुरुरेवा' ानमेदी ।नमेदी ।नमेदी ।य<u>ज्</u>ञायी ম্য